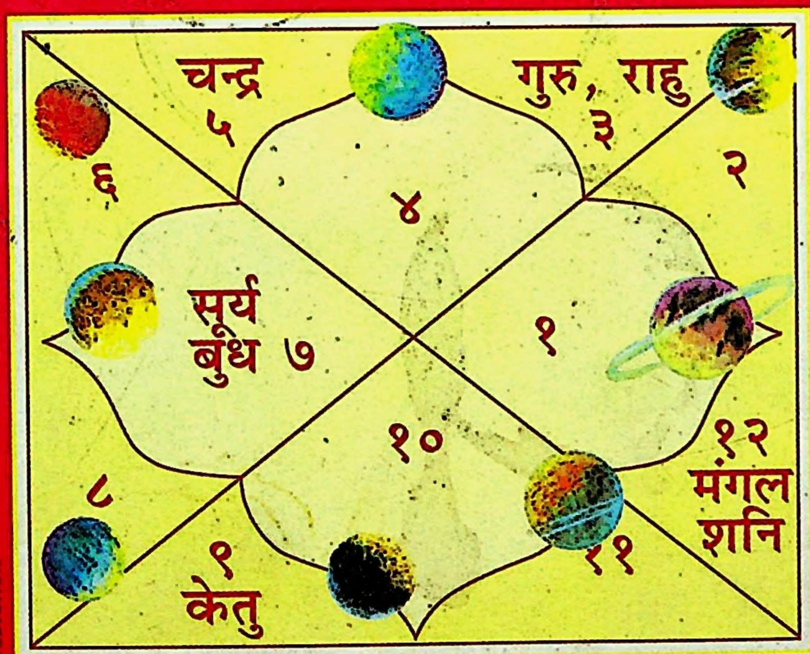
229
संजीवनी सीरीज़

पं० शशि मोहन बहल

असली प्राचीन लाल किताब



DESIGNER

मूल रूप में फारसी भाषा में लिखी गई ज्योतिषशास्त्र की सर्वाधिक प्रमाणिक पुस्तक! सरल एवम् अचूक टोने-टोटकों के विशेष अध्याय सहित।



2.2

असली प्राचीन लाल किताब

पं० शशि मोहन बहल की एक और जनउपयोगी, सर्वहितकारी, नवग्रहों के अनिष्ट से बचने के उपायों की जानकारी देने वाली प्रमाणिक व व्यवहारिक पुस्तक।

'लाल किताब' भारतीय ज्योतिष शास्त्र की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण व उपयोगी पुस्तक है। एक ऐसी पुस्तक जो जीवन के अनजाने घटनाक्रम को पहले से ही जानने, पहचानने व समय से पहले उसका अनुमान लगाने में विशेष रूप से सहायक है।

'लाल किताब' के द्वारा एक साधारण व्यक्ति भी अपनी कुण्डली और हस्तरेखाओं की सहायता से अपने भविष्य को जान सकता है और आने वाले अनिष्टों से बचने के उपायों को जान सकता है।

लाल किताब के सरल उपायों, सूत्रों, सिद्धांतों व मंगलकारी टोटकों, जो इधर-उधर उपेक्षित से पड़े हैं, को एक सूत्र व एक क्रम में पिरोने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है। इन उपायों व सूत्रों की सहायता से कोई भी व्यक्ति सुविधापूर्वक ढंग से ग्रहों के दुष्प्रभावों से बचने के उपायों को जान सकता है।

वास्तव में लाल किताब एक जनउपयोगी पुस्तक है–आशा है कि आप भी इस पुस्तक के द्वारा वृहद् लाभ की प्राप्ति करेंगे।

अनिष्टों के निवारण में सहायक लोकप्रिय पुस्तक

असली प्राचीन

लाल किताब

लाल किताब के सरल किन्तु अचूक उपायों की अनेकों टोटकों सहित जानकारी देती एक प्रमाणिक पुस्तक !

प्रस्तुति :

पं० शशि मोहन बहल

(सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं अनुभवी लेखक)

प्रकाशक

राधा पॉकेट बुक्स

- *पुस्तक :* असली प्राचीन लाल किताब
- *प्रस्तुति :* पं० शशि मोहन बहल
- *प्रकाशक :* राधा पॉकेट बुक्स,
  ए–152, देवलोक कॉलोनी, (स्पोर्ट्स कॉम्पलैक्स)
  दिल्ली रोड, मेरठ–250 002 (यू०पी०)
  फोन : (0121) 2518734, 2525386, 2901555, 3206684
- *कम्प्यूटरीकृत पृष्ठसज्जा : सैन्ट्रो ग्राफिक्स, मेरठ।*
- *मुद्रक : न्यू रिषभ ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।*

लाल किताब को लाल सलाम

प्रकृति के असीम रहस्य ब्रह्मांड, तारे, नक्षत्र इनसे जुड़ा हुआ जातक का भाग्य, इस प्रकार के प्रश्न सदियों से मनुष्य को आकर्षित करते रहे हैं। ब्रिटिश काल से पहले भी देश में ज्योतिष की शिक्षा राजघरानों द्वारा दी जाती थी। ज्योतिष के दो भेद हैं—गणित ज्योतिष और फलित ज्योतिष। गणित ज्योतिष में पंचांग बनाने, ग्रहों के रूप, अवस्था और गति का पता किया जाता है। इसी में ग्रहों की स्थिति आदि भी दिखायी जाती है। फलित ज्योतिष के द्वारा ग्रहों की स्थिति पर शुभाशुभ फलों का कथन होता है। इसके अंतर्गत योग मुहूर्त, ताजिक, प्रश्न ज्योतिष, भेदनीय ज्योतिष, संहिता खंड, भूकम्प, चन्द्र हेतु इत्यादि के उदय-अस्त का शुभ फल आदि का विचार किया जाता है। ज्योतिष गणित नियमों पर आधारित है अतः निश्चित गणितीय सिद्धांतों के द्वारा चलना पड़ता है लेकिन कठिनाई यह है कि फलित ज्योतिष पूर्णरूपेण प्राचीन ग्रंथों और अनुभवों पर आधारित है। लेकिन आज सभी कुछ बदल चुका है। प्राचीन सिद्धांतों का नये परिप्रेक्ष्य से तालमेल बैठाना आवश्यक है। प्राचीन सिद्धांतों को रटकर फलित करने से कई बार गणनाएं ठीक नहीं आती हैं। समय, काल और बदलते परिप्रेक्ष्य में शोध की आवश्यकता होती है।

पृथ्वी अपनी धुरी पर पश्चिम से पूर्व की ओर घूमती रहती है तथा वह औसतन 24 घंटे में एक चक्कर पूरा कर लेती है। पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने की प्रक्रिया से दिन और रात होते हैं। पृथ्वी का जो भाग सूर्य के सामने आता है, वहां दिन होता है और दूसरी तरफ रात्रि होती है। इसलिये विश्व के विभिन्न स्थानों पर कहीं पर प्रातःकाल होता है तो उसी समय किसी दूसरे स्थान पर संध्या का समय होता है। कहीं पर दोपहर होता है तो कहीं पर मध्य रात्रि। इस 24 घंटे में 12 राशियां क्रमशः लगभग दो-दो घंटे के अंतराल पर पूर्वी क्षितिज पर उदित होती रहती है। इन 24 घंटों में 24 होरा होती हैं अर्थात् प्रत्येक घंटे की एक होरा होती हैं। एक होरा 15 अंश की होती है तथा एक राशि में दो होरा होती हैं।

ज्योतिष शास्त्र में नौ ग्रह मुख्य रूप से माने गए हैं, जिनमें बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, सूर्य, गुरु, शनि, राहु और केतु मुख्य हैं। चंद्रमा पृथ्वी का उपग्रह है। हम पृथ्वी पर रहते हैं इसलिये पृथ्वी को ग्रहों में सम्मिलित न करके उसके स्थान पर चंद्रमा को पृथ्वी के स्थान पर ग्रह मान लिया गया है। राहु-केतु को छाया ग्रह के रूप में स्थापित किया गया है। ग्रहों का कक्षा क्रम इस प्रकार है—शनि, गुरु, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध तथा चन्द्र।

क्योंकि सर्वप्रथम सूर्य दिखाई पड़ता है, अतः प्रथम होरा सूर्य की होती है। उसके पश्चात् दूसरी होरा शुक्र की, तीसरी बुध, चौथी चंद्रमा, पांचवीं, शनि, छठी गुरु, सातवीं मंगल, आठवीं सूर्य, नवीं शुक्र, दसवीं बुध, ग्यारहवीं चंद्रमा, बारहवीं शनि, तेरहवीं गुरु, चौदहवीं मंगल, पंद्रहवीं सूर्य, सोलहवीं शुक्र, सत्रहवीं बुध, अठारहवीं चंद्रमा,

उन्नीसवीं शुक्र, बीसवीं गुरु, इक्कीसवीं मंगल, बाईसवीं सूर्य, तेईसवीं शुक्र और चौबीसवीं होरा बुध की होती है। उसके पश्चात् पच्चीसवीं अर्थात् दूसरे दिन की प्रथम होरा चन्द्र की होगी। जिस दिन की प्रथम होरा का जो ग्रह स्वामी होता है, उस दिन उसी ग्रह के नाम का वार रहता है। सौर पक्ष के अनुसार सबसे अधिक दूरी पर शनि, उससे कम दूरी पर गुरु, मंगल, रवि, शुक्र, बुध और चंद्रमा के कक्षा पथ हैं। इसी क्रम में होराएं होती हैं क्योंकि सृष्टि के आरम्भ में सर्वप्रथम सूर्य दिखाई पड़ता है, अतः प्रथम होरा का स्वामी सूर्य होता है और प्रथम वार आदित्यवार (रविवार) होता है। दूसरी होरा का स्वामी उससे निकट का ग्रह शुक्र है। तीसरी का बुध, चौथी का चंद्रमा, पांचवीं का शनि, छठी का गुरु, सातवीं का मंगल है। आठवीं होरा का स्वामी सूर्य, नवीं का शुक्र, दसवीं का बुध, ग्यारहवीं का चंद्रमा, बारहवीं का शनि, तेरहवीं का गुरु, चौदहवीं का मंगल, पंद्रहवीं का सूर्य, सोलहवीं का शुक्र, सत्रहवीं का बुध, अठारहवीं का चंद्रमा, उन्नीसवीं का शनि, बीसवीं का गुरु, इक्कीसवीं का मंगल, बाइसवीं का सूर्य, तेइसवीं का शुक्र और चौबीसवीं होरा का स्वामी बुध होता है।

ज्योतिष का सीधा सम्बंध काल की इस घड़ी से है। वैसे तो सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर घूमते हैं, मगर प्रत्यक्ष रूप में वे सूर्य सहित पृथ्वी के ही चारों ओर घूमते दृष्टिगोचर होते हैं। ज्योतिष सच्चाई को दिव्य दृष्टि से देखता है। इस धरा के चारों ओर घूमती सूर्य की चमक एक विशाल वलय का निर्माण करती है, जिसके घेरे में पृथ्वी पर जीवन गतिमान है। यही विकास, विनाश व कर्म के अनुसार पुनर्जन्म का सिद्धांत प्रतिपादित करता है। जीवन का रहस्य इसी वलय में छिपा है, अग्नि की तपन और प्रकाश जीवन के उन चार पुरुषार्थों को जगाते हैं, जो जातक में कर्म का निर्माण करते हैं।

किसी जातक की जन्म-पत्रिका में सूर्य उसके कर्मों का बोध कराता है। आत्मा कर्मों की साक्षी है और प्रारब्ध का निर्णय आत्मा ही करती है। जन्म-पत्रिका में सूर्य जातक में आध्यात्मिक विकास तथा कर्म की शक्ति देता है।

स्मरण रखें, लाल किताब ज्योतिष में जातक की जन्म-पत्रिका स्त्री की जन्म-पत्रिका को विवाह के पश्चात् ढक लिया करती है। लेकिन अनेक बार आपस में विपरीत भी हुआ करती है; अर्थात् लड़की का जब विवाह न हो उसके अपने लिए और माता-पिता, भाई-बंधु के विषय में जन्म-पत्रिका शुभ-अशुभ समय देखने के लिए सहायक हो सकती है; परन्तु विवाह होने के पश्चात् उसके पति की जन्म-पत्रिका के अनुसार पुरुष और स्त्री दोनों का इकट्ठा शुभ-अशुभ फल प्रारम्भ होगा और स्त्री की जन्म-पत्रिका विवाह के उपयोगी नहीं होगी। स्त्री की जन्म-पत्रिका के शुभ ग्रह पुरुष की कुंडली के शुभ ग्रहों को और बलवान कर देते हैं। स्त्री के जो अशुभ ग्रह हों, वे पुरुष की जन्म-पत्रिका के अशुभ ग्रहों को और अशुभ कर देते हैं। अगर एक का शुभ ग्रह और दूसरे का अशुभ हो, तो वह मध्यम या बराबर का हो जाता है।

जन्म-पत्रिका में लग्न भाव (प्रथम भाव) को महत्वपूर्ण माना जाता है। अगर लग्नेश बली हो, तो जातक उन्नति करता है। वह सम्पन्न होता है। जातक द्वारा किए गए कार्य पूर्णता प्राप्त करते हैं। लग्नेश के बलवान होने का सबसे महत्वपूर्ण लाभ

यह होता है कि अगर जन्म-पत्रिका में कोई अन्य ग्रह एवं भाव निर्बल हो, तो लग्नेश का उन पर शुभ प्रभाव जातक को अशुभ परिणाम नहीं मिलने देता। अगर कभी कुछ अशुभ परिणाम प्राप्त होते हैं, तो जातक स्वयं के प्रयासों से परिणामों को अपने अनुकूल कर लेता है। लग्न में 12 राशियां क्रमानुसार उदित होती हैं।

लाल किताब ज्योतिष प्रेमियों के लिए रुचिकर किताब है। लाल किताब की चर्चा उसके अनूठे उपायों को लेकर की जाती है। ग्रह शांति के लिए, जीवन में विभिन्न प्रकार की बाधाओं के निवारण के लिए लाल किताब के उपायों को ज्योतिष प्रेमी बड़ी श्रृद्धा से सम्पन्न करते हैं। ज्योतिष प्रेमी जहां लाल किताब के उपायों को जानने के उत्सुक होते हैं, वहीं ज्योतिषी वर्ग लाल किताब के फलित एवं उसके वर्षफल के फलादेश के सिद्धांतों को जानने के लिए प्रयासरत रहता है।

लाल किताब में ग्रहों की स्थिति को जानने के लिए चिन्तन अवश्य करना चाहिए तभी लाल किताब के सरल उपाय ठीक प्रकार से समझ में आ सकते हैं। लाल किताब में ग्रह अपना भाव बनाकर कारकत्व भी बदल देते हैं। चौथे भवन में चन्द्रमा को माता का प्रतिनिधि माना जाता है, वहीं छठे भवन में बैठा चन्द्रमा नानी का प्रतिनिधि बन जाता है। बारहवें भाव में बैठा चन्द्रमा स्वास्थ्य का प्रतिनिधि ग्रह होता है। इस तरह विभिन्न भावों में ग्रहों की स्थिति उनके कारकत्व में भिन्नता उत्पन्न कर देती है। लाल किताब में उपायों का विचार करते समय इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है। लाल किताब में ग्रहों की स्थिति को व्यावहारिक रूप से समझने के लिए ग्रहों के अशुभ होने की निशानियां भी बतायी गयी हैं, जिनको समझकर सम्बंधित ग्रह का सटीक उपाय किया जा सकता है, जैसे गुरु, बृहस्पति के द्वादश भावों में शुभ-अशुभ के सरल उपाय :

- गुरुवार का उपवास रखना।
- प्रभु का पूजन करना, या पीपल का वृक्ष लगाना। भगवान को नमस्कार करना।
- गुरु रत्न पुखराज धारण करना। पुखराज के अभाव में हल्दी की गाँठ, पीले रंग के धागे में बांधकर, भुजा पर बांधना।
- पीले फूलों के पौधे लगाएं। गुरु बृहस्पति उच्च हो, तो बृहस्पति की चीजों का दान न देना। बृहस्पति नीच हो, तो गुरु बृहस्पति की वस्तुओं का दान न लेना। केसर-हल्दी का ललाट पर तिलक करना।
- सोना धारण करना (बृहस्पति षष्ठ भाव को छोड़कर)।
- नाभि पर शुद्ध केसर लगाना। ब्राह्मण की सेवा करना। गरुड़ की पूजा करना। घर की दीवारों पर पीला रंग करना।

स्मरण रखें उपरोक्त उपाय 43 सप्ताह लगातार करने चाहियें।

प्रिय पाठकों! उपायों के विषय में एक उल्लेखनीय बात यह भी है कि लाल किताब में दिए गए सूत्रों के आधार पर विद्वान ऐसे जातक को भी उपाय बता सकता है जिसकी जन्म-पत्रिका न हो।

लाल किताब के अनुसार, दिन के विभिन्न समयों को भिन्न-भिंन्न ग्रहों का प्रतिनिधि माना जाता है। सूर्य उदय होने के पश्चात् दिन का प्रथम भाग्य गुरु के

आधिपत्य में होता है। दोपहर के पश्चात् का समय सूर्य का कहलाता है। चाँदनी रात चन्द्र का प्रतिनिधित्व करती है। रात्रि में चाँदनी के अभाव में समय का प्रतिनिधित्व शुक्र करता है। काली रात हो, तो उस दिन का प्रतिनिधि शनि होता है। रात्रि से पहले संध्या का समय राहु का होता है। प्रातःकाल सूर्योदय का समय केतु का प्रतिनिधित्व करता है। दोपहर का समय सेनापति मंगल का प्रतिनिधित्व करता है।

ग्रहों का प्रभाव किन-किन रूपों में हो सकता है–

- राशि पर कुप्रभाव।
- लग्न पर कुप्रभाव।
- जन्म-पत्रिका के भावों पर कुप्रभाव।
- कालपुरुष में भिन्न-भिन्न अंगों पर कुप्रभाव।
- धन एवं मानहानि पर कुप्रभाव।
- पारिवारिक एवं मित्रगणों पर कुप्रभाव।
- गोचर एवं दशान्तर्दशा का कुप्रभाव।
- नक्षत्रों का कुप्रभाव।

जैसा कि बतलाया गया है कि हर दुष्ट ग्रह किसी अच्छे ग्रह के लए अशुभ प्रभाव छोड़ सकता है, वैसे ही हर अच्छा ग्रह भी किसी दुष्ट ग्रह के लिए अशुभ सिद्ध हो सकता है।

उपाय करने से पहले किसी विद्वान ज्योतिषी से परामर्श अवश्य ले लें। कुछ लोग शौकीनी में उपाय करते रहते हैं, पर उन्हें उसके प्रभाव का पता नहीं होता और वह प्रायः हानि उठा बैठते हैं। उपाय करने के कुछ आधार इस प्रकार हैं–

अगर स्वास्थ्य ठीक हो, दिन भी सही चल रहे हों तो प्रसिद्ध नाम की राशि से उपाय किया जा सकता है।

जन्म की राशि से भी उपाय किया जा सकता है, मगर उपाय करने से पहले ये अवश्य देख लें कि जन्म-पत्रिका की दशा कौन-सी चल रही है; जैसे किसी की महादशा शनि की चल रही हो और व्यक्ति का नाम सिंह राशि में पड़ता हो तो सिंह राशि वाले को उपाय नहीं करना चाहिए, क्योंकि शनि और सिंह राशि के स्वामी सूर्य में शत्रुता है। इसी प्रकार सूर्य की दशा चल रही हो और जातक का नाम कुम्भ अथवा तुला राशि का हो तो भी उसे कोई उपाय नहीं करना चाहिए। अतः कोई भी उपाय करने से पहले महादशा और राशि का मेल-जोल अवश्य कर लेना चाहिए।

अगर किसी जातक को शनि की साढ़ेसाती अथवा ढैया लगा हो तो उसे राशि से सम्बन्धित उपाय न कर केवल शनि से सम्बन्धित धातु पहननी चाहिए। शनि अशुभ होने पर शनि सम्बन्धी उपाय अनिवार्य हैं। उस समय राशि कोई भी हो, कोई अंतर नहीं पड़ता है।

यूं तो शनि के उपाय घरों में प्रायः होते ही रहते हैं; जैसे काली वस्तुओं का दान। चना, उड़द, काला कपड़ा, लोहा, ताम्बा और तेल आदि का दान अच्छा माना जाता है। शनि के जाप के लिए अग्रलिखित मंत्र आवश्यक है–

मंत्र का जाप करने अथवा कथा करने से पूर्व इस मंत्र का उच्चारण शुभ होता है–

नीलांजन समामासं रवि पुत्र यमाग्रजम।
छाया मार्तण्ड सम्भूतं तं नमामि श्नैश्चरम्।।

जाप मंत्र इस प्रकार है–

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः (23000 बार)। हर शनिवार को भी इस मंत्र का जाप किया जा सकता है और किसी एक शनिवार को भी।

पुस्तक का अध्ययन करने के पश्चात् सहज ही यह प्रश्न उपस्थित है कि किसी भी कुण्डली के सामने आते ही, उस पर किस प्रकार से विचार प्रारम्भ करना चाहिए?

सर्वप्रथम कुण्डली का लग्न भाव प्रत्येक परिस्थिति में देखना आवश्यक है। प्रश्न, जन्म, वर्ष मुहूर्तादि सभी प्रसंगों में लग्न, लग्नेश व चन्द्रमा का अवश्य विचार करें। इसी प्रकार भावेश कहां पर स्थित है, भावेश व भाव कारक कहां हैं?

जो भाव अपने भावेश से या शुभ ग्रहों या कारक ग्रहों से युक्त है, अथवा दृष्ट है, वह भाव अपना फल देता है।

अगर भाव उक्त प्रकार से स्वस्वामिदृग्योग से रहित हो तो शुभ ग्रहों के मध्य में स्थित, पापदृग्योग से रहित होने पर भी अपना फल देता है। भाव में स्थित, ग्रहों का विचार भी करना चाहिए। इसी प्रकार भावेश व भाव कारक का भी शुभ दृग्योगादि व बलाबल देखना चाहिए। स्वोच्चगत, मूलत्रिकोणगत, स्वक्षेत्री अधिमित्रक्षेत्री, मित्रक्षेत्री ग्रह क्रमशः कम बलवान माना जाता है।

जिस भाव से सम्बन्धित विषय का विचार करना हो, उसी भाव को लग्न मान लें। तब उस लग्नवत् भाव का विचार पूर्वोक्त लग्न विचार की तरह ही करें। राशि स्थिति से बली ग्रह भी नवांश में निर्बल होकर निर्वल ही होगा। राश्यानुसार निर्वल ग्रह भी नवांश में बलवान् हो तो वली ही माना जाएगा।

मैं जब लाल किताब को लाल सलाम कहता हूं तो इसका सीधा अर्थ है मैं भी उन अनगिनत ज्योतिषियों में से एक हूं जो प्राचीन लाल किताव के प्रशंसक हैं या फिर अनुयायी हैं।

मानव का सदैव से ही उपायों के प्रति आकर्षण रहा है। हमारे दैनिक जीवन में अनिष्ट ग्रहों की शान्ति, सुख–समृद्धि एवं प्राकृतिक विपत्तियों से बचाव के लिए उपायों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। प्रस्तुत ग्रन्थ में मैंने अपने गहन अध्ययन एवं दीर्घकालीन अनुभव का परिणाम प्रस्तुत किया है। मैंने अत्यन्त परिश्रम से प्राचीन ग्रन्थों व आधुनिक नवीन खोजों के आधार पर इस पुस्तक की रचना की है।

मैं आपका हूं, आपकी सेवा में सदैव तत्पर हूं, वह भी उत्कृष्ट सेवाओं के आश्वासन सहित, तभी तो मैं कहता हूं मैं आपके लिए, आपके साथ सदैव।

–पं० शशि मोहन बहल
"तंत्र सबके लिए मिशन"
डी–4, राधापुरी, कृष्णानगर
(जमुनापार) देहली–110051
E-mail : tantrik_bahl@yahoo.com

विषयानुक्रमणिका

1 कैसे बनाएं जन्मकुण्डली?

लाल किताब के द्वारा पर्याप्त लाभ उठाने के लिए लाल किताब के आधार पर जन्मकुण्डली का निर्माण होना परम आवश्यक है, तभी लाल किताब के अनुसार जातक का भविष्य ज्ञात किया जा सकेगा। लाल किताब के अनुसार बनाई गयी कुण्डली भारतीय ज्योतिष के अनुसार बनाई गयी कुण्डली से एकदम अलग होती है। इन दोनों पद्धतियों में जो प्रमुख अन्तर हैं, वे निम्नलिखित हैं–

लाल किताब में विभिन्न घरों में राशियां सदैव स्थिर रहती हैं; अर्थात् पहले घर में मेष राशि, दूसरे घर में वृषभ तथा बारहवें घर में मीन इत्यादि। इसी प्रकार लाल किताब में सभी घरों में एक से बारह तक अंक निश्चित खानों में लिखे जाते हैं। लाल किताब के अनुसार कुण्डली में अंक लिखने का प्रारूप स्थायी होता है, जो इस प्रकार है–

2 12
3 लग्न 11
1
4 10
5 7 9
6 8

वैदिक ज्योतिष के अनुसार बनी जन्मकुण्डली का लाल किताब के अनुसार बनाने के लिए जन्मकुण्डली में लिखे 1 से लेकर 12 सभी अंकों को हटा देना चाहिए तथा ग्रहों को यथा स्थान लिखा रहने देना चाहिए। अब लाल किताब की कुण्डली में पहले घर में एक अंक लिखकर क्रमानुसार 12 अंक पूर्व में दी गयी कुण्डली के अनुसार लिख देना चाहिए। इस तथ्य को भली प्रकार समझने के लिए एक उदाहरण दे रहा हूं।

वैदिक ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली

शु. बु. 7 गु. मं. 5
के. 8 सू. च. 4
6
9 3
10 12 2 रा.
11 1 श.

शु. बु. 2 गु. मं. 12
के. 3 सू. च. 11
1
4 10
5 7 9 रा.
6 8 श.

"ग्रह" का अर्थ "गांठ अथवा जोड़ना" है। कुछ वस्तुओं को जोड़ना ही "ग्रह"

कहलाता है। लाल किताब के अनुसार वायु और आकाश को एक-दूसरे से मिलाने वाली शक्ति ही "ग्रह" कहलाती है। लाल किताब में केवल नौ ग्रहों को ही जन्मकुण्डली में स्थान दिया गया है। ग्रहों के नाम और चिन्ह भी इसमें परम्परागत ही हैं।

ग्रहों के नाम–

हिन्दी	अंग्रेजी	फारसी	वार	रंग
सूर्य	Sun	शमश	रविवार	ताम्र वर्ण
चन्द्र	Moon	कमर	सोमवार	श्वेत वर्ण
मंगल	Marks	मिरीख	मंगलवार	रक्त वर्ण
बुध	Mercury	अतारद	बुधवार	हरा
गुरु	Jupiter	मुश्तरी	गुरुवार	पीला
शुक्र	Venus	जुहरा	शुक्रवार	दूध जैसा सफेद
शनि	Saturn	जुहेल	शनिवार	काला
राहु	Dragon	रास	गुरुवार का संध्याकाल	नीला
केतु	Dragon's Tail	दुम्ब	रविवार का प्रात:काल	चितकबरा

ग्रहों के लिंग–

1. स्त्री ग्रह–इन्द्र एवं शुक्र।
2. पुरुष ग्रह–सूर्य, मंगल और गुरु।
3. नपुंसक ग्रह–बुध, शनि, राहु और केतु।

सूर्य का कारक भाव पहला; चन्द्र का चौथा; मंगल का तीसरा व आठवां; बुध का सातवां; गुरु का दूसरा, पांचवां, नौवां और ग्यारहवां; शुक्र का सातवां; शनि का आठवां एवं दसवां; राहु का बारहवां तथा केतु का कारक भाव छठा है।

ग्रहों की आयु–

ग्रह	साथी ग्रह	आयु
सूर्य	केतु के साथ	ग्यारह वर्ष
	अन्य ग्रह के साथ	बाईस बर्ष
चन्द्र	बुध, गुरु, शुक्र एवं राहु के साथ	बारह वर्ष
	शनि के साथ	आठ वर्ष
	अन्य ग्रहों के साथ	चौबीस वर्ष
मंगल	मंगल अशुभ होने पर	पन्द्रह वर्ष
	अन्य ग्रह के साथ	तेरह वर्ष
बुध	सूर्य एवं मंगल	सत्रह वर्ष
	अन्य ग्रह के साथ	चौंतीस वर्ष
गुरु	किसी भी ग्रह के साथ	सोलह वर्ष

ग्रह	साथी ग्रह	आयु
शुक्र	गुरु के साथ	साठ वर्ष
	सूर्य के साथ	चौंतीस वर्ष
	अन्य ग्रहों के साथ	पच्चीस वर्ष
शनि	गुरु के साथ	अट्ठारह वर्ष
	अन्य ग्रहों के साथ	छत्तीस वर्ष
राहु	केतु के साथ	पैंतालीस वर्ष
	अन्य ग्रहों के साथ	बयालीस वर्ष
केतु	गुरु के साथ	चालीस वर्ष
	सूर्य अथवा मंगल के साथ	चौबीस वर्ष
	राहु के साथ	पैंतालीस वर्ष
	अन्य ग्रहों के साथ	अड़तालीस वर्ष

लाल किताब में राशियों को "भावों" से सम्वन्धित किया गया है। निम्न सारिणी द्वारा इसको स्पष्ट किया जा सकता है–

भाव राशियां	स्वामी ग्रह	कारक ग्रह	उच्च ग्रह	नीच ग्रह
1.	मंगल	सूर्य	सूर्य	शनि
2.	शुक्र	गुरु	चन्द्र	–
3.	बुध	मंगल	राहु	केतु
4.	चन्द्र	चन्द्र	गुरु	मुंगल
5.	सूर्य	गुरु (बृहस्पति)	–	–
6.	बुध, केतु	केतु	बुध	शुक्र, केतु
7.	शुक्र	शुक्र, बुध	शनि, राहु	सूर्य
8.	मंगल	शनि, मंगल, चन्द्र	मंगल	चन्द्र
9.	गुरु (बृहस्पति)	गुरु	केतु	राहु
10.	शनि	शनि	मंगल	गुरु
11.	शनि	गुरु (बृहस्पति)	–	–
12.	गुरु, राहु	राहु	शुक्र, केतु	बुध, राहु

कुछ ग्रह फल की दृष्टि से एक-दूसरे के सम (बराबर) होते हैं। इसलिए इन्हें समग्रह कहा जाता है।



2 लाल किताब और ग्रहों का नामकरण

कहा जा रहा है कि आज के युग में धर्म के चार चरणों में से केवल एक चरण ही शेष रह जाएगा। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि यह युग अशुभ कर्मों के बाहुल्य से भरा रहेगा। तीन भाग पाप से घिरे पुण्य का इस युग में सदैव दम घुटता रहेगा। स्पष्ट है, ऐसे परिवेश में जन्म लेने वाले जातकों को अन्य युगों की तुलना में कुछ अधिक ही कष्टों का सामना करना पड़ेगा—और हम प्राचीन शास्त्रों में की गयी भविष्यवाणियों के न केवल गवाह हैं, बल्कि स्वयं भुक्तभोगी प्राणी भी हैं।

अब प्रश्न उठता है कि हमें इन कष्टों से मुक्ति पाने के लिए क्या उपाय करना चाहिए। क्या अनेक प्रकार की मुसीबतों से भरे इस समय में हमारा जन्म किसी अलौकिक सत्ता की प्रेरणा से हुआ है अथवा इसके लिए हम स्वयं उत्तरदायी हैं? वैसे तो जन्म व मरण दोनों को शास्त्रों में दुःखों से युक्त बताया गया है, किन्तु जन्म से मृत्यु के मध्य का जो हमारा जीवन है, इस अवधि में मिलने वाले दुःखों से बचने के लिए हमें क्या करना चाहिए?

काफी सोच-विचार के पश्चात् मैंने यह पाया है कि इस भयावह काल में जन्मे अधिकांश जातकों का वर्तमान जीवन केवल लाल किताब के उपायों में ही मुसीबतों से मुक्त हो सकता है, क्योंकि लोक-कल्याण की भावना से समय-समय पर शरीरधारण करने वाले महापुरुषों ने तत्कालीन परिवेश को ध्यान में रखते हुए सम-सामयिक लोगों को अपना इहलोक संवारने का जो-जो उपाय बताया है, उसमें यह बात स्पष्ट नजर आती है कि मनुष्य का वर्तमान जीवन अति महत्वपूर्ण है और उससे भी महत्वपूर्ण है मनुष्य द्वारा किए जाने वाले कर्म।

रामायण में भी कहा गया है—

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहिं सो तस फल चाखा॥

समय के प्रभाव से इस युग में अशुभ कर्मों का फल भोगने के लिए जन्म लेने वाले जातकों की संख्या अधिक हो गयी है, क्योंकि कर्मफल भोगने के लिए हर व्यक्ति बाध्य है। जिन कर्मों का फल भोगने के लिए जन्म मिलता है, उसे प्रारब्ध कहा जाता है। प्रारब्ध कुछ और नहीं, मनुष्य द्वारा किए अपने ही संचित कर्मों का ही एक अंश होता है, जिसे उसे वर्तमान जीवन में अवश्य ही भोगना होता है।

प्रत्येक ग्रह के प्रकाश में किसी विशेष रंग की किरणों का अनुपात अधिक होता है। शनि की किरणों में कालापन लिए नीला रंग, गुरु-बृहस्पति की किरणों में पीला रंग, शुक्र की किरणों में सफेद रंग, बुध की किरणों में हरा रंग, मंगल की किरणों में लाल रंग, चन्द्रमा की किरणों में हल्का पीलापन लिए सफेद रंग और सूर्य की किरणों में सुनहरे रंग का अनुपात अधिक दिखता है तथा इसी प्रकार शरीर पर भी इन किरणों का प्रभाव शरीर में स्थित विभिन्न तत्वों पर बराबर पड़ता रहता है। समय के इस दौर

में लाल किताब का अपना महत्व है। उसकी उपयोगिता को नकारना हठधर्मिता है, जो लोगों को इसका लाभ उठाने से रोकता है।

आइए अब लाल किताब में समय-समय पर प्रयोग किए गए विशेष नामों के विषय में जानते हैं। यही शब्द पुस्तक में स्थान-स्थान पर प्रयोग किए गए हैं। विभिन्न भावों में बैठे ग्रहों को लाल किताब में विशेष नाम से पुकारा गया है। ग्रहों को दिए जाने वाले विशेष नाम में संक्षिप्त रूप से उस घर में ग्रह की स्थिति का प्रभाव बताया जाता है। -विभिन्न ग्रहों की स्थिति के अनुसार उनके नामकरण इस प्रकार हैं-

राहु

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	सीढ़ी मंदी की निशानी
दूसरा	राजा गुरु के मातहत
तीसरा	आयु और धन का रईस
चौथा	धर्मी
पांचवां	शरारती
छठा	फांसी काटने वाला मददगार हाथी।
सातवां	दौलत का धुआं निकालने वाला चाण्डाल
आठवां	मौत की आवाज, कड़वा धुआं
नौवां	पागलों का सरताज हकीम, बेईमान
दसवां	सांप की मणि
ग्यारहवां	बाप को गोली मारे
बारहवां	शेख चिल्ली

केतु

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	ख्वाबों की जिंदगी
दूसरा	अच्छा हुक्मरान
तीसरा	टुनटुन करने वाला कुत्ता
चौथा	ज्वारभाटा
पांचवां	रक्षक
छठा	शेर के कद वाला खूंखार कुत्ता
सातवां	शेर का मुकाबला करने वाला कुत्ता
आठवां	बच्चों के मोहब्बत के गम में छत में रोने वाला कुत्ता
नौवां	इंसान की आवाज समझने वाला कुत्ता
दसवां	जड़ उखाड़ने वाला
ग्यारहवां	गीदड़ स्वभाव
बारहवां	ऐशो-आराम का तलबगार

चंद्रमा

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	माता के साथ मुकद्दर
दूसरा	खुद पैदा हुई माया की देवी
तीसरा	उम्र का मालिक फरिश्ता
चौथा	आमदनी का दरिया
पांचवां	दूध की नहर
छठा	शून्य
सातवां	लक्ष्मी का अवतार
आठवां	मुर्दा माता, जला हुआ दूध
नौवां	दु:खियों का रक्षक
दसवां	आक का दूध या जहरीला पानी
ग्यारहवां	खूनी कुआं
बारहवां	रात के वक्त का तूफान

सूर्य

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	सतयुगी व्यक्ति, हुक्मरान राजा
दूसरा	खजाने का टूटा ताला
तीसरा	दौलत का राजा
चौथा	दायीं आंख का ढेला
पांचवां	परिवार उन्नति का मालिक
छठा	आग जला दौलत से बेफिक्र
सातवां	अपनी गर्मी से खुद जलेगा
आठवां	तपस्वी राजा
नौवां	रोशनी का मालिक
दसवां	इज्जत और दौलत का मालिक
ग्यारहवां	ऐशो-आराम का तलबगार
बारहवां	पराई आग में जलने वाला

शुक्र

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	रंग-बिरंगी माया
दूसरा	मोह-माया का उम्दा गृहस्थ
तीसरा	सत्यवान औरत, इश्क का परवाना
चौथा	खुश्की का सफ़र

पांचवां	बच्चों से भरा हुआ घर-परिवार
छठा	लल्लू करे कव्वालियां रब्ब सिद्धियां पावे
सातवां	पांचों अंगुलियां घी में
आठवां	जली मिट्टी की चाण्डाल औरत
नौवां	बंजर मिट्टी या मिट्टी की काली आंधी
दसवां	परियों के ख्वाब
ग्यारहवां	माया का भंवरा
बारहवां	कामधेनु गाय

गुरु

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	गद्दीनशीन साधु
दूसरा	जगद्गुरु
तीसरा	गरजता शेर या खानदानी गुरु
चौथा	प्रसिद्धि का मालिक
पांचवां	आग का बांस, इज्जत-आबरू वाला
छठा	मुफ्तखोर मगर साधु स्वभाव
सातवां	गृहस्थ में फंसा गृहस्थ साधु
आठवां	दैवी सहायता का मालिक
नौवां	माया का त्यागी
दसवां	बच्चों को यतीम करने वाला वाप
ग्यारहवां	खजूर के दरख्त-सा अकेला
बारहवां	उत्तम ज्ञानी

शनि नवग्रहों में बहुत ही मंद गति से चलने वाले ग्रह हैं। शनि को एक राशि पार करने में ढाई वर्ष लगते हैं। द्वादश राशियों में भ्रमण करने में शनि को लगभग तीस वर्ष लगते हैं। नौ ग्रहों में इतना समय कोई ग्रह नहीं लेता। शनि वृष, मिथुन, तुला, मकर, कुंभ राशियों में अनुकूल व अच्छा माना जाता है। सिंह व वृश्चिक राशि में शनि को प्रतिकूल माना जाता है। शनि से मकान, अचल संपत्ति, कोर्ट-कचहरी के मामले, चोरी, आयु, धैर्य, संतोष, हानि, बाजुओं में पीड़ा, दुश्मनी, त्याग पत्र, गठिया, वायु, वात-विकार आदि रोगों का विचार किया जाता है। शनि कुण्डली के सातवें घर में बलवान् माना जाता है। शनि किसी वक्री ग्रह या चंद्रमा के साथ युति करके चेष्टाबली होता है। बुध और शुक्र के साथ शनि की मित्रता है। बृहस्पति के साथ न दोस्ती है, न दुश्मनी।

अगर शनि अष्टम भाव का स्वामी होकर किसी भी भाव में बैठता है तो उस भाव को हानि पहुंचती है। शनि जुआ खेलने, अनैतिक सम्बंध रखने, शराब पीने, मित्रता में दाग देने, माता-पिता की सेवा नहीं करने से मंदा होता है। ऐसा शनि जातक का जन्मपत्रिका में कितना भी अनुकूल क्यों न बैठा हो, सम्बंधित जातक को शुभ फल प्रदान नहीं करता है।

अगर शनि जातक की जन्मपत्रिका में किसी भी भाव में राहु-केतु के साथ सम्बंध

स्थापित कर रहा हो, तो शुभ शनि भी पापी हो जाता है और जातक को शुभ फल प्रदान नहीं करता। राहु व केतु के मध्य में शनि का प्रभाव अनुकूल नहीं होता है। शुभ शनि गुरु बृहस्पति के कारक भाव में (2, 9, 12) में स्थित होकर कभी हानि नहीं करता और कोई अशुभ प्रभाव भी नहीं डालता है। शनि का अनुकूल प्रभाव 36 वर्ष के पश्चात् प्रारम्भ होता है। अगर शनि पर सूर्य की दृष्टि हो तो शुक्र के फल की हानि होती है। अगर शनि पर शुक्र की दृष्टि हो तो शुक्र के फल की हानि होती है। अगर शनि पर शुक्र की दृष्टि हो तो शुक्र के फल की हानि होती है।

अगर शनि पर शुक्र की दृष्टि हो तो सम्बंधित जातक के धन की हानि होती है, परन्तु अगर शुक्र पर शनि की दृष्टि हो तो सम्बंधित जातक को लाभ प्राप्त होता है। शनि-चंद्र का टकराव आने पर सम्बंधित जातक को आंखों से सम्बंधित परेशानी होती है या शल्य चिकित्सा की भी नौबत आ सकती है। अगर शनि पांचवें भाव में हो तो मंगल अशुभ हो तो चंद्र पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शनि पहले घर में तीन गुना, तीसरे में दो गुना नीच होता है। छठे में मंदा, चौथे में पानी का सांप, पांचवें में बच्चे खाने वाला, दूसरे में गुरु की शरण में जाने वाला, आठवें में अशुभ तथा सातवें, नौवें व बारहवें घर में अनुकूल व अच्छा होता है। दसवें में स्थित शनि एक ऐसे कोरे कागज की तरह होता है, जिस पर जातक अपने परिश्रम से जो चाहे लिख ले। एकादश भाव में स्थित शनि को भाग्य का रक्षक कहा गया है। शनि का विशेष फल आरंभ व अंत में प्राप्त होता है। पैंतीसवां व बयालीसवां वर्ष जातक के लिए किसी महत्वपूर्ण घटना वाला होता है।

पक्का घर—दशम भाव; श्रेष्ठ घर—2, 3, 7, 12; मंदे घर—1, 4, 5, 5, 6; शत्रु ग्रह—सूर्य, चंद्रमा, मंगल; मित्र ग्रह—बुध, शुक्र, राहु; उच्च—7; नीच—1; बीमारी—खांसी, उदर पीड़ा, वात, गठिया, बाजुओं की पीड़ा; समय—सारी रात अंधेरा; दिन—शनिवार; रंग—काला या स्याह, मशनोई—शुक्र + बुध (केतु स्वभाव), मंगल + बुध (राहु स्वभाव)।

शनि

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	अच्छा तो बहुत और बुरा भी बहुत
दूसरा	गुरुशरण
तीसरा	मंदा तो दोगुना
चौथा	पानी का सांप
पांचवां	बुद्धू लड़का, बच्चे खाने वाला सांप
छठा	किस्मत लिखने वाला मालिक
सातवां	विधाता का मालिक
आठवां	मनमर्जी का मालिक
नौवां	कलम विधाता
दसवां	किस्मत को जगाने वाला
ग्यारहवां	खुद विधाता
बारहवां	कलम विधाता

शनि के दिन उड़द के आटे में तिल का तेल मिलाकर लड्डू बनाएं और उन्हें भूमि में दबा दें जहां खेती नहीं होती हो। उड़द, बादाम व जटा वाले नारियल बहते पानी में प्रवाहित करें। लोहे के कटोरे में तिल का तेल भरकर उसमें अपना चेहरा देखकर वह तेल किसी डाकोत को दे दें। लोहे की वस्तुएं यानि तवा, चिमटा, अंगीठी आदि का दान किसी संत या सज्जन पुरुष को करें। अगर व्यवसाय में घाटा हो रहा हो तो लगातार कौओं या कुत्तों के लिए रोटी डालें।

बुध

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	खुदगर्ज हाकिम
दूसरा	योगी राजा
तीसरा	थूकने वाला कोढ़ी
चौथा	नरमंद
पांचवां	फकीर का आशीर्वाद
छठा	गुमनाम योगी, दिल का राजा
सातवां	दुनिया के लिए पारस
आठवां	बीमारी और जहमत
नौवां	जादू का भूत
दसवां	खुशामंदी
ग्यारहवां	दौलतमंद उल्लू का पट्ठा
बारहवां	किस्मत का चक्रवात

मंगल

घर	घर के अनुसार नाम
पहला	बत्तीस दांत वाला
दूसरा	धर्म मूरत
तीसरा	चिड़ियाघर का शेर
चौथा	बंदी का सरदार
पांचवां	रईसों का बाप-दादा
छठा	औलाद को तरसा
सातवां	मीठा हलवा
आठवां	मौत का फंदा
नौवां	बुजुर्गों से ही चलता हुआ शाही तख्त
दसवां	चींटी के घर भगवान राजा
ग्यारहवां	दूध से पला हुआ पालतू शेर
बारहवां	आगबबूला

लाल किताब के सिद्धान्त में तीन बातें प्रमुख हैं—

1. अनन्त ब्राह्माण्ड में सर्वशक्तिमान ईश्वर की सत्ता व्याप्त है। हमारे सौरमण्डल में नौ ग्रह उसी की शक्ति से भ्रमणशील हैं, जो अनेक तत्वों के प्रतीक हैं।

ग्रहों का सन्दिग्ध प्रभाव नहीं होता। उसे उपायों द्वारा टाला जा सकता है, लाल किताब के उपायों का प्रयोग करने से ही निश्चित सफलता मिलती है। कुण्डली में युति, दृष्टि आदि के आधार पर ग्रह अपना शुभाशुभ फल देते हैं। ग्रहों की अशुभता से अनिष्ट होते हैं।

जन्म के समय शिशु अपना भाग्य मुट्ठी में बन्द करके लाता है। उसे कोई बदल नहीं सकता। ग्रह भ्रमण के दौरान जातक के जीवन पर अपना प्रभाव डालते हैं।

लाल किताब की चर्चा करने और सुनने वाले इसे केवल टोटके की पुस्तक समझते आये हैं। निःसन्देह लाल किताब उपायों की पुस्तक हैं, किन्तु यह केवल टोटकों की पुस्तक नहीं, वरन् कुछ और भी है। वह 'और' ही इसका वास्तविक कथ्य है। वह क्या है? लाल किताब ने बड़ी चतुराई से इन मानवीय गुणों को टोटकों के साथ गूंथ दिया है। विभिन्न प्रकार के अनिष्ट निवारणार्थ जो उपचार दिये वही लाल किताब की उपयोगिता में वृद्धि करता है।

लाल किताब के उपायों का सम्यक् प्रयोग करने से निश्चित ही लाभ होता है। कुण्डली स्थित युति, दृष्टि आदि के आधार पर ग्रह अपना फल देते हैं। ग्रहों की अशुभता से अनिष्ट होते हैं। ग्रहों की इस अशुभता से होने वाले अनिष्टों का निवारण ही "लाल किताब" का मूल आधार माना गया है। इसको जानने के लिए कुण्डली का जानना अनिवार्य है।



3 लाल किताब की अनूठी शब्दावली

लाल किताव में अनेक ऐसे शब्द हैं, जो प्राचीन ज्योतिष विज्ञान में कहीं नहीं मिलते। लाल किताब को समझने के लिए उन विचित्र शब्दों को समझना परम आवश्यक है। ऐसे ही कुछ अनूठे शब्द हैं, नाबालिक टेवा, धर्मी टेवा, अंधे ग्रह, कायम ग्रह, बुनियादी ग्रह, घर का ग्रह, सोया ग्रह, जन्म-समय का ग्रह, ग्रहों की कुर्बानी आदि। ऐसे शब्द जगह-जगह लाल किताव में पढ़ने में आते हैं। इन शब्दों की परिभाषाओं को समझे बिना लाल किताब को समझना मुश्किल ही नहीं असम्भव भी है। इन अटपटे शब्दों की व्याख्या आगे प्रस्तुत कर रहा हूं।

साथी ग्रह

जन्मपत्रिका में जब कोई दो ग्रह परस्पर एक-दूसरे के भावों में अदल-बदल कर बैठ जाएं, तो वे ग्रह साथी ग्रह कहलाते हैं। इसमें ग्रहों के उच्च की राशि, नीच राशि एवं अपने पक्के भावों में स्थिति को अवश्य देखना चाहिए। उदाहरणस्वरूप यदि मंगल चौथे घर में; अर्थात् चन्द्रमा के पक्के घर में तथा चन्द्रमा आठवें घर में अर्थात् मंगल के पक्के घर में स्थित हो, तो चन्द्र एवं मंगल साथी ग्रह कलाएंगे। जब परस्पर शत्रु ग्रह जैसे सूर्य एवं शनि, शनि एवं चन्द्रमा परस्पर एक-दूसरे के पक्के घरों में या उच्च अथवा नीच राशि में स्थित हों, तो ऐसे ग्रह परस्पर साथी ग्रह बन जाएंगे तथा उनकी परस्पर दुश्मनी भी नियंत्रित रहेगी।

धर्मी टेवा

लाल किताव में कहीं-कहीं धर्मी टेवे का वर्णन भी आता है। धर्मी टेवे से उद्देश्य है कि अगर जन्मपत्रिका में अशुभ ग्रहों का प्रभाव कम हो तथा वृहस्पति के साथ शनि 6, 9, 11 एवं 12वें भाव में बैठा हो। धर्मी टेवे वाला जातक जब बहुत परेशानी एवं कष्ट में हो तथा उसे कोई सहायता एवं परेशानियों से मुक्ति का मार्ग दिखलाई न दे, तो एक दैवीय सहायता के द्वारा वह सभी समस्याओं से मुक्त हो जाता है।

नाबालिग टेवा

जन्मपत्रिका में केन्द्र भावों 1, 4, 7 और 10 जिन्हें लाल किताब में बन्द मुट्ठी खाने का नाम भी दिया गया है, अगर दुर्भाग्य से उनमें कोई शुभ ग्रह नहीं हो, केवल पाप ग्रह शनि, राहु, केतु आदि हों अथवा सभी स्थान ग्रह खाली हों, तो ऐसा जन्मकुण्डली नाबालिग टेवा कहलाता है। ऐसी स्थिति में जातक के भाग्य का हाल बारह वर्ष की आयु तक अनिश्चित ही रहेगा। नाबालिग टेवे में 12 वर्ष की आयु तक प्रत्येक ग्रह का अपना प्रभाव देने का नियम है। आयु के प्रथम वर्ष में सातवें घर के ग्रह का प्रभाव

जातक पर पड़ेगा। आयु के द्वितीय वर्ष में चौथे घर के ग्रह का आयु के तृतीय वर्ष में नौवें घर के ग्रह का, आयु के चतुर्थ वर्ष में 10वें घर के ग्रह का आयु के पांचवे वर्ष में 11वें घर के ग्रह का, आयु के छठे वर्ष में तीसरे घर के ग्रह का, आयु के सातवें वर्ष में दूसरे घर के ग्रह का, आयु के आंठवें वर्ष में पांचवें घर के ग्रह का, आयु के नौवें वर्ष में छठे घर के ग्रह का, आयु के दसवें वर्ष में 12वें घर का, आयु के ग्यारहवें वर्ष में पहले घर के ग्रह का, आयु के बारहवें वर्ष में आठवें घर के ग्रह का प्रभाव होगा। इस प्रकार नाबालिग टेवे वाले जातक को 12 वर्ष तक की आयु में बच्चे के लिए उपाय का विचार करते समय आयु का वर्ष और सम्बंधित भाव के ग्रह को ध्यान में रखकर करना चाहिए। नाबालिग टेवे में जो घर खाली हो, उसकी राशि के स्वामी का उपाय ही बतलाना चाहिए।

अन्धे ग्रह का टेवा

जन्मपत्रिका में दसवें भाव में दो या दो से अधिक ग्रह बैठे हों तथा वे ग्रह परस्पर शत्रु हों, तो ऐसी ग्रह स्थिति के कारण ऐसी कुण्डली को अन्धे ग्रह की जन्मपत्रिका कहा जाता है। दसवां भाव जातक का कर्म स्थान है। इसका उसकी आयु से गहरा सम्बंध है। इसलिए अन्धे ग्रह वाला टेवा जातक के कार्यक्षेत्र में असंतुलन उत्पन्न करता है। अन्धे ग्रह के टेवे को जगाने के लिए कम-से-कम बारह अन्धों को भाजन कराना चाहिए।

रतान्ध ग्रह

ऐसे ग्रह जिन्हें दिन में तो दिखलाई दे, पर रात्रि में वे अन्धे हो जाएं, रतान्ध ग्रह कहलाते हैं। इस स्थिति में केवल दो ग्रहों को विशेष महत्वपूर्ण माना गया है, जो कि सूर्य एवं शनि है।

मुकाबले का ग्रह

जन्मपत्रिका में आपस में मित्र ग्रह के भावों में अगर शत्रु ग्रह बैठ जाएं, तो उन ग्रहों की आपसी मित्रता बहुत सीमा तक कम हो जाएगी तथा परस्पर मित्र होते हुए भी ऐसे ग्रहों में कुछ ना कुछ शत्रु भाव उत्पन्न हो जाएगा।

बुनियादी ग्रह

जब दो ग्रह आपस में नवम तथा पंचम भावों में पड़ते हों, तो ऐसे ग्रह एक-दूसरे से सहयोग करते हैं तथा एक-दूसरे की नींव बन जाते हैं। ऐसे ग्रह परस्पर शत्रु भी हों, तो भी आपस में कभी दुश्मनी नहीं करते।

कायम ग्रह

लाल किताब के अनुसार कायम ग्रह को बलशाली माना गया है। जब कोई ग्रह अपने शत्रु ग्रह के प्रभाव से पूरी तरह बचा हो, तो वह कायम ग्रह कहलाता है। ऐसा ग्रह शुभ फल देता है।

सोया हुआ घर/ग्रह

जिस भाव में कोई ग्रह न हो तथा जिस भाव पर किसी ग्रह की दृष्टि ही न पड़ती हो, तो उस भाव को सोया हुआ समझा जाता है। सोए हुए से अर्थ है कि उस भाव से सम्बंधित फल पूर्ण रूप से तव तक नहीं मिलेंगे, जब तक कि उस भाव को जगाया नहीं जाएगा। दूसरी ओर जिस ग्रह पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो वह सोया हुआ होता है। अगर सोया हुआ ग्रह अशुभ है, तो उसे उसी प्रकार रहने देना चाहिए। अन्यथा वह उस भाव को खराब कर देगा सोए हुए ग्रह के शुभ होने पर उसे जगाना चाहिए, ताकि वह अपना शुभ प्रभाव डाल सके। अगर कोई ग्रह अपने पक्के घर में बैठा हो, तो उस पर किसी अन्य ग्रह की दृष्टि नहीं होने पर भी वह जागा ही रहता है।

ग्रह का भाव

ग्रह के भाव से मतलब है, ग्रह की अपनी राशि मेष राशि का स्वामी मंगल होता है। अत: मेष राशि मंगल का घर होती है। उसी तरह वृश्चिक राशि का स्वामी भी मंगल है। अत: वृश्चिक राशि भी मंगल का भाव है। इस प्रकार मंगल के अपने दो भाव होते हैं।

टकराव के ग्रह

जन्मपत्रिका में जब दो ग्रह परस्पर एक-दूसरे से छठे, आठवें भावों में विराजमान हों, तो ऐसे ग्रह एक-दूसरे के शत्रु बन जाते हैं। इसमें आवश्यक वात यह है कि जो ग्रह किसी ग्रह से छठे भाव में पड़ता हो, वह उस ग्रह के शुभ प्रभाव को कम करता है; अर्थात् ऐसे ग्रह परस्पर टकराव के ग्रह बन जाते हैं।

मसनुई ग्रह

लाल किताब में हर ग्रह में दूसरे दो ग्रहों का अंश मिला-जुला माना गया है। एक पक्के ग्रह के जो दो अंश होंगे, उनको पक्के ग्रह का मसनुई अंश माना जाएगा। यह अंश दो ग्रहों से ही बनेंगे। हर पक्के ग्रह के मसनुई ग्रह इस प्रकार हैं–

पक्का ग्रह	मसनुई ग्रह
शनि (राहु)	मंगल, बुध
राहु (उच्च)	मंगल, शनि
राहु (नीच)	सूर्य, शनि
केतु (उच्च)	शुक्र, शनि
केतु (नीच)	चन्द्र, शनि
मंगल (शुभ)	सूर्य, बुध
मंगल (बद)	सूर्य, शनि
बुध	गुरु, राहु

पक्का ग्रह	मसनुई ग्रह
शनि (केतु)	शुक्र, गुरु
बृहस्पति (गुरु)	सूर्य, शुक्र
सूर्य	बुध, शुक्र
चन्द्रमा	सूर्य, गुरु
शुक्र	राहु, केतु

मनसुई बनावट के ग्रहों का प्रभाव जातक के जीवन में अनके बातों पर दिखाई देता है। गुरु बृहस्पति संतान का कारक है। संतान के सुख में बाधा आने पर गुरु बृहस्पति के मसनुई ग्रहों को विचार करके उपाय करना चाहिए। अगर शुक्र बारहवें भाव में बैठकर अपना दुष्प्रभाव उत्पन्न कर रहा हो, तो शुक्र के उपाय के लिए शुक्र के मसनुई बनावट के ग्रह राहु और केतु पर विचार करना चाहिए। बारहवें भाव में शुक्र और केतु को शुभ माना गया है, जबकि बारहवां राहु खुशियों में रुकावट डालता है, इसलिए राहु का उपाय करने से शुक्र शुभ फल देगा। राहु के ऐसे उपाय करने चाहिए जिससे उसका प्रभाव बारहवें भाव से दूर हो जाए। शुक्र के शत्रु राहु को नष्ट करने के लिए राहु की वस्तु जौ को धरती में दबा दें, तो राहु का प्रभाव छठे भाव में पहुंच जाएगा। इस प्रकार शुक्र का प्रभाव शुभ हो जाएगा।

बलिदानी ग्रह

प्राय: ग्रहों की शुभ स्थिति के पश्चात् भी उससे सम्बंधित फल नहीं मिलता है। इस तथ्य को समझने के लिए लाल किताब में बताए गए ग्रहों की कुर्बानी के नियम को समझना बेहद अनिवार्य है। ग्रहों की कुर्बानी का अर्थ है कि वास्तविक ग्रह अपने स्थान पर किसी अन्य ग्रह पर अपने ऊपर आया दुष्प्रभाव दूर कर देता है। इस कारण वह अपना फल अशुभ करने के स्थान पर दूसरे ग्रह के फल को भी अशुभ कर देता है। अब विभिन्न ग्रहों की कुर्बानियां आगे प्रस्तुत की जा रही हैं–

बुध–बुध वफादार नहीं होता। जब भी उस पर विपत्ति पड़ती है वह अपना दुष्प्रभाव अपने मित्र शुक्र पर डाल देता है। इस कारण बुध के गले में आया कष्ट उसके मित्र शुक्र के गले में आ पड़ती है।

गुरु–कष्ट के समय गुरु बृहस्पति अपने साथी केतु का बलिदान दे देता है।

शुक्र–शुक्र अपनी विपत्ति से बचने के लिए कोमल चन्द्रमा को फंसा देता है। अगर स्त्री पक्ष से परेशानी हो, जीवन में सुख-ऐश्वर्य का अभाव हो, तो चन्द्रमा द्वारा दिये गये शुभ फल प्राय: बाधित होते हैं।

सूर्य–सूर्य विपत्ति के समय केतु की बलि चढ़ा देता है। अगर सूर्य के फल अशुभ होने लगें, तो जन्मपत्रिका में केतु के शुभ फल प्राप्त होने रुक जाएंगे।

मंगल–मंगल अपनी सुरक्षा के लिए केतु की बलि का बकरा बना देता है। जब भूमि-सम्पत्ति का विवाद हो, तो जन्मपत्रिका के केतु द्वारा प्रदर्शित शुभ फलों में कमी

आ जाती है, क्योंकि मंगल विपत्ति के समय अपने ऊपर आया अशुभ प्रभाव केतु पर डाल देता है।

शनि–अगर शनि पर विपत्ति पड़े तो वह अपना दुष्प्रभाव शुक्र पर पहुंचा देता है, जिस कारण शुक्र अपना शुभ प्रभाव नहीं दे पाता। शनि को जव सूर्य पीड़ित करता है, तो वह शुक्र को पीड़ित करता है। कर्म क्षेत्र में वाधा आने पर जातक को शुक्र से मिलने वाले शुभ प्रभाव नहीं मिलते।

चन्द्र–कष्ट के समय चन्द्रमा अपने मित्रों सूर्य, मंगल एवं गुरु पर कुछ बुरा प्रभाव दूसरों पर डाल देता है तथा स्वयं बचता है। अगर मानसिक परेशानियां हों तो कुण्डली में सूर्य, मंगल और गुरु के द्वारा मिलने वाले शुभ प्रभाव कम हो जाएंगे।

राहु-केतु–राहु-केतु अपनी विपत्ति स्वयं ही भोगते हैं। राहु के अशुभ होने पर सगे रिश्तेदारों पर प्रभाव पड़ता है।

लाल किताब में बारह घरों का विवरण

आइए लाल किताब के अनुसार बारह भावों पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका अध्ययन करें!

एक से लेकर छह भाव शरीर में दाएं भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। सात से लेकर बारह तक के सभी भाव शरीर के बाएं भाग का प्रतिनिधित्व करते हैं। कुण्डली के केन्द्र, 1, 4, 7 एवं 10 हथेली में मुट्ठी के भीतर के भाग को प्रदर्शित करते हैं। जन्मपत्रिका के 2, 5, 8 एवं 11 घर क्रमशः अनामिका, कनिष्ठिका, मध्यमा तथा अंगूठे के निचले हिस्से के सूचक होते हैं। पंचम भाव वर्तमान काल नवम भाव भविष्य काल का सूचक होता है।

प्रथम घर	हैसियत का भाव
दूसरा घर	दौलत का घर, जन्म-मरण का दरवाजा
तीसरा घर	मैदान-ए-जंग और लेन-देन का भाव
चौथा घर	माता का भाव
पांचवां घर	औलाद का भाव
छठा घर	पाताल का भाव
सातवां घर	मैदानी दुनिया
आठवां घर	किस्मत का धोखा
नौवां घर	भाग्य की नींव
दसवां घर	रोजगार का भाव
ग्यारहवां घर	लालच का भाव
बारहवां घर	समाधि का भाव

आइए अब जन्मपत्रिका के सोए भावों को जगाने (चैतन्य) के लिए क्या उपाय करने चाहिएं यह जानें!

यदि पहला भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए मंगल के उपाय करने चाहिए। अगर दूसरा भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए चन्द्र के उपाय करने चाहिए। अगर

तीसरा भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए बुध के उपाय करने चाहिएं।

अगर चौथा भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए चन्द्र के उपाय करने चाहिए। अगर पांचवां भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए सूर्य के उपाय करने चाहिएं।

अगर छठा घर सोया हो, तो उसे जगाने के लिए राहु के उपाय करने चाहिएं।

अगर सातवां भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए शुक्र के उपाय करने चाहिए। अगर आठवां भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए चन्द्र के उपाय करने चाहिएं। अगर नौवां भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए गुरु के उपाय करने चाहिएं। अगर दसवां भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए शनि के उपाय करने चाहिएं। अगर ग्यारहवां भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए गुरु के उपाय करने चाहिएं। अगर बारहवां भाव सोया हो, तो उसे जगाने के लिए केतु के उपाय करने चाहिएं।

प्रिय मित्रों! आप यह स्मरण रखें जन्मपत्रिका में सभी बारह घरों (भावों) में गुरु के फल उसकी शुभ (नेक) और अशुभ (बद) स्थिति पर आधारित होंगे।



4 लाल किताब की दशाएं

प्राचीन वैदिक ज्योतिष में फलकथन पद्धति से लाल किताब की फलकथन पद्धति में बहुत बड़ा अन्तर है। लाल किताब में फलों का विचार करने के लिए वर्षफल पर विशेष बल दिया गया है; जैसे किसी जातक को अपने जीवन के 27वें वर्ष का हाल ज्ञात करना हो, तो लाल किताब के वर्षफल चार्ट के अनुसार उस वर्ष में ग्रहों के विभिन्न भावों में होने के अनुसार फल बताया जाएगा। अत: लाल किताव द्वारा फलकथन करने के लिए वर्षफल तालिका की प्रयोग विधि को जानना परम आवश्यक है।

लाल किताब में जन्मकुण्डली के विभिन्न भावों में बैठे ग्रहों के शुभाशुभ फल का अध्ययन और वर्षफल में आए ग्रहों के शुभाशुभ फलों का अध्ययन समान रूप से किया जाता है; जैसे लाल किताब में पहले घर में बैठे सूर्य को शुभ माना गया है तथा उसे हुक्मरानराजा कहा गया है तथा 25वें वर्ष में भी सूर्य पहले घर में होता है। अत: 25वें वर्ष में जातक को राज्यपक्ष से अनुकूलता प्राप्त होती है। चन्द्रमा अगर जन्मपत्रिका में दूसरे घर में हो, तो 25वें वर्ष में चन्द्रमा छठे घर में आ जाएगा। दूसरे घर में चन्द्रमा का फल शुभ होता है तथा छठे घर में चन्द्रका का फल अशुभ कहा गया है। इस प्रकार विभिन्न ग्रहों की वर्षफल के अनुसार स्थिति का फल अशुभ कहा गया है। इस प्रकार विभिन्न ग्रहों की वर्षफल के अनुसार स्थिति को जानकर उस वर्ष में उस ग्रह के फलों का विचार करना चाहिए। विभिन्न ग्रह कुण्डली के विभिन्न घरों में स्थित होकर किस प्रकार का शुभाशुभ फल देते हैं, इसकी जानकारी भी आवश्यक है।

लाल किताब में महत्वपूर्ण बात यह भी है कि अगर किसी जातक की जन्मकुण्डली ज्ञात न हो तो भी उसके विषय में बातें बताई जा सकती हैं। लाल किताब में हर ग्रह हर घर में जाकर अपने कारक के रूप में बदलता है। कारकत्व के आधार पर लाल किताब में विभिन्न ग्रहों की दशाओं के समय उनसे सम्बंधित फलों की भविष्यवाणी की जाती है। लाल किताब में दशाओं की अपनी विशिष्ट प्रणाली है जो कि इस बात पर निर्भर है कि आयु के किस वर्ष में कौन-सा ग्रह जातक को प्रभावित करेगा।

प्राचीन वैदिक ज्योतिष में विंशोतरी दशा का चक्र 120 वर्ष का होता है, किन्तु लाल किताब के अनुसार दशाओं के चक्र की पुनरावृत्ति 35 वर्ष के पश्चात् पुनः होने लगती है। दशाओं के 35 वर्षीय चक्र में विभिन्न आयु में किन ग्रहों की दशा रहेगी, इसकी जानकारी नीचे प्रस्तुत कर रहा हूं!

प्रथम दशा

आयु के छः वर्ष तक का समय शनि के प्रभाव में रहता है। अगर उन वर्षों में शनि वर्षफल में छठे अथवा आठवें भाव में आए तो स्वास्थ्य के लिए शुभ नहीं होता है।

द्वितीय दशा

सात वर्ष से बारह वर्ष तक की आयु में राहु जातक को प्रभावित करता है।

तृतीय दशा

तेरह वर्ष से पन्द्रह वर्ष तक की आयु में केतु अपना प्रभाव दिखलाता है।

चतुर्थ दशा

सोलह वर्ष से इक्कीस वर्क्ष तक की आयु में जातक गुरु के प्रभाव में रहता है।

पंचम दशा

बाईसवें और तेईसवें वर्ष में सूर्य की दशा रहती है।

षष्ठ दशा

चौबीसवें वर्ष में चन्द्रमा का प्रभाव पड़ता है।

सप्तम दशा

पच्चीस वर्ष में सत्ताईस वर्ष तक की आयु में शुक्र की दशा प्रभावी होती है।

अष्टम दशा

आयु के अट्ठाईसवें वर्ष से तैंतीसवें वर्ष तक की आयु में मंगल की दशा जातक को प्रभावित करती हैं।

नवम दशा

34 वर्ष से 35 वर्ष की आयु में बुध की दशा का प्रभाव अधिक होता है।

छत्तीसवें वर्ष से पुनः शनि की दशा से प्रारम्भ होकर 35 वर्षीय दशा चक्र पुनः प्रारम्भ हो जाता है।

ग्रहों का शुभ-अशुभ प्रभाव कुण्डली में इसी आधार पर देखा जाता है। जन्मपत्रिका निर्माण के लिए हम आगे दी गयी सारिणी की सहायता से किसी भी दिन, माह, वर्ष आदि की कुण्डली तैयार कर सकते हैं।

वर्षकुण्डली निर्माण सारिणी इस प्रकार है-

जब किसी की कुण्डली देखें और उसके फलित के विषय में विचार करें। सही फलादेश जानने के लिए कई जगह पर एक विधि नहीं अनेक विधियां प्रयोग में लानी पड़ती हैं। कुछ में तो प्राचीन ज्योतिष अच्छा फल बताती है और कुछ में लाल किताब अच्छा फल बताती है। लाल किताब और प्राचीन ज्योतिष दोनों को मिलाने से फलित के विषय में सटीक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। जिस प्रकार से किसी आदमी को आयुर्वेदिक दवाई खाने से लाभ होता है और कुछ आदमी को एलोपेथिक दवा खाने से लाभ होता है लेकिन अगर अपने खाने-पीने में सावधानी रखें और अंग्रेजी दवाई भी खायें तो फिर लाभ अधिक पा सकते हैं। उसी प्रकार से जब जातक की कुण्डली देखी जाती है तब कुछ बातें लाल किताब से पता चलती हैं, कुछ प्राचीन ज्योतिष से पता चलता है, कुछ नक्षत्रों से पता चलता है। कुछ दिन, तिथि, योग, करण से पता चलता है और इन सबको अच्छी तरह से मिलाने से सटीक भविष्य जाना जा सकता है।

जैसे लाल किताब से अनुभव में आया है कि जब बुध दूसरे भाव में बैठता है तब भी पत्नी-सुख में बाधा पड़ती है इसके लिए जातक को चावल दान करने से बुध का प्रभाव कम होगा और पत्नी-सुख में वृद्धि होगी। लाल किताब के हिसाब से 2, 5, 9, 11 और 12 घर गुरु का है। अगर इसमें गुरु का कोई शत्रु बैठ जाता है तब गुरु पितृ ऋण का ग्रह बन जाता है। इस कुण्डली में दूसरे घर में बुध बैठा है और पंचम में राहु बैठा है इसलिए गुरु पितृ ऋण का ग्रह बन गया है इसलिए पैतृक ऋण को उतारने के लिए परिवार के सदस्यों से गुरु से सम्बंधित चीजें गुरुवार को धर्मस्थान में दान करें या एक तांबे के पात्र में छोले की दाल भरकर गुरुवार के दिन धर्मस्थान में दान कर दें जिससे गुरु का ऋण दूर हो जायेगा। लाल किताब कहती है कि जन्म के समय में गुरु की दशा का इसलिए अच्छा फल नहीं दिया गया था, क्योंकि गुरु पैतृक ऋण का ग्रह बन गया था।

वर्षकुण्डली चक्र

आयु वर्ष	जन्मकुण्डली के भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	1	9	10	3	5	2	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	5	12	3	8	4	11	2	9	1	10	6	7
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3

आयु वर्ष	जन्मकुण्डली के भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8
33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4
37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7

आयु वर्ष	जन्मकुण्डली के भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6
44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	4
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	1	12
56	2	3	5	11	9	4	10	1	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	3	1	9	6
59	8	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	6	12	11	7	3	10	5

आयु वर्ष	जन्मकुण्डली के भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	11	1	9
73	1	4	10	12	11	7	8	2	5	9	3	[illegible]
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10

आयु वर्ष	जन्मकुण्डली के भाव											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	9	11	4
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	10
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8
106	10	12	2	7	8	5	3	9	4	11	6	1
107	8	6	12	10	7	11	4	3	1	2	5	9
108	6	8	7	12	2	10	5	4	11	1	9	3
109	1	9	10	6	12	2	7	11	5	3	4	8
110	4	1	6	8	10	12	3	5	7	2	11	9

राहु को तांत्रिक ग्रह माना गया है। लाल किताब में तंत्र समाया है, जिस तरह लाल किताब कहती है कि अगर किसी के छठे घर में शनि आ गया है, वह 6 मिट्टी की कुंजी में सरसों का तेल भरकर थोड़े से पानी में दबाये। यह मिट्टी की कुंजी में तेल दबाने से कोई जीव-जन्तु नहीं खायेगा लेकिन अनुभव में इससे बहुत लाभ देखा गया है। राहु पंचम में कुछ-न-कुछ तंत्र-मंत्र अवश्य कर देता है।

राहु, मंगल पंचम में बैठे हैं उसके लिए लाल किताब ने उपाय लिखा है कि जातक रात को सोते समय अपने सिर के नीचे जल रखे। प्रतिदिन प्रातः उठकर किसी फल, फूल वाले या अपने दोनों दरवाजे की तरफ डाल दें जहां पर उस जल का अपमान न हो। सुबह उस पानी को ऐसी जगह डाला जाये जहां पर इसका अपमान न हो। सुबह उस पानी को ऐसी जगह डाला जाये जहां पर इसका अपमान न हो। ऐसे जातक को खाना खाते समय सौंफ अपनी थाली में रखना चाहिए और रोटी खाने के पश्चात् सौंफ खा लेनी चाहिए। सौंफ मंगल है जो खाना पचाने में सहयोग करती है।

विश्व के अनेक विद्वानों ने लाल किताब को हालांकि ज्योतिष की पुस्तक ही माना है, परन्तु भारतीय ज्योतिर्विदों का मानना है कि इसमें भारतीय ज्योतिष से हटकर भी कुछ भिन्नताएं हैं; जैसे—भारतीय ज्योतिष में कुण्डली में लग्न के अंक को कोई महत्व नहीं दिया गया है और लाल किताब के रचयिता ने लग्न में आने वाली राशियों के स्थान पर उन ग्रहों की राशियों की उपस्थिति को महत्ता दी है, जो उन भावों के कारकों की है। लाल किताब के रचयिता ने पहले भाव को सूर्य का पक्का भाव माना है, दूसरे भाव को गुरु का, तीसरे भाव को मंगल का, चौथे को चन्द्रमा का, पांचवें को गुरु (बृहस्पति) का, छठे को केतु का, सातवें को शुक्र और बुध का, आठवें को मंगल और शनि का, नौवें को गुरु का, दसवें को शनि का, ग्यारहवें को गुरु का और बारहवें को राहु का पक्का भाव माना है।

इसी प्रकार फलादेश करने के लिए यह मान लिया जाता है कि प्रत्येक कुण्डली में, चाहे उसकी लग्न कुछ भी हो, पहले भाव में मेष, दूसरे में वृष, तीसरे में मिथुन, चौथे में कर्क, पांचवें में सिंह, छठे में कन्या, सातवें में तुला, आठवें में वृश्चिक, नौवें में धनु, दसवें में मकर, ग्यारहवें में कुम्भ तथा बारहवें में मीन राशि माना है। यदि हम इनकी सारिणी बनाना चाहें तो इस प्रकार बन सकती है—

क्र०सं०	भाव (लग्न)	ग्रह	राशियां
1.	पहला भाव	सूर्य	मेष
2.	दूसरा भाव	बृहस्पति (गुरु)	बुध
3.	तीसरा भाव	मंगल	मिथुन
4.	चौथा भाव	चन्द्रमा	कर्क
5.	पांचवां भाव	बृहस्पति (गुरु)	सिंह
6.	छठा भाव	केतु	कन्या
7.	सातवां भाव	शुक्र/बुध	तुला
8.	आठवां भाव	मंगल/शनि	वृश्चिक

क्र०सं०	भाव (लग्न)	ग्रह	राशियां
9.	नौवां भाव	वृहस्पति (गुरु)	धनु
10.	दसवां भाव	शनि	मकर
11.	ग्यारहवां भाव	वृहस्पति (गुरु)	कुम्भ
12.	बारहवां भाव	राहु	मीन

लाल किताब के अनुसार हमारे सौरमण्डल में नौ ग्रह भ्रमणशील हैं। इनके भ्रमण मात्र से ही शुभाशुभ फल की प्राप्ति सम्भव है, जिसको निम्न तत्वों के प्रतीकों से सम्बोधित किया गया है–

1.	सूर्य	प्रकाश
2.	चन्द्र	धरती
3.	मंगल	पुच्छल तारा (दुमदार तारा)
4.	बुध	विस्तार एवं व्यापकता
5.	बृहस्पति (गुरु)	हवा
6.	शुक्र	पाताल
7.	शनि	अन्धकार
8.	राहु	बुध का सहयोगी (आकाश)
9.	केतु	शुक्र का सहयोगी (पाताल)

मित्र अथवा शत्रु कौन हो सकता है? इसकी पहचान करना आज बहुत मुश्किल हो गया है। परिवार में कौन तुम्हारे काम आ सकता है और कौन तुम्हारा शत्रु हो सकता है, इसकी पहचान हम निम्न सारिणी तथा उसके तरीके को समझकर कर सकते हैं–

वर्गांक	नाम वर्ग	वर्गों के अक्षर					अक्षरों के गुणक अंक
1.	गरुड़	अ	इ	उ	ए	–	8
2.	बिलाव	क	ख	गं	घ	–	5
3.	सिंह	च	छ	ज	झ	–	6
4.	स्वान	ट	ठ	ड	ढ	ण	7
5.	सर्प	त	थ	द	ध	न	7
6.	मूसा	प	फ	ब	भ	म	1
7.	मृग	य	र	ल	व	–	3
8.	मेंढा	श	ष	स	ह	–	0

अब हम यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि कौन हमारा मित्र और कौन हमारा शत्रु है। इसके लिए हम अमुक व्यक्ति के नाम का पहला अक्षर तथा अपने नाम का पहला अक्षर लेकर सारिणी में उसके वर्गों को आगे इन वर्गों के मिलान दिये जा रहे हैं, इससे आप स्वयं पता लगा सकते हैं कि कौन व्यक्ति आपके काम आ सकता है और कौन नहीं?

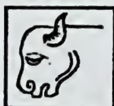
वर्ग 1	वर्ग 2	प्रबल	निर्बल	वर्ग 1	वर्ग 2	प्रबल	निर्बल
गरुड़	गरुड़	सम	सम	गरुड़	सिंह	गरुड़	सिंह
गरुड़	बिलाव	गरुड़	बिलाव	गरुड़	स्वान	गरुड़	स्वान
गरुड़	सर्प	गरुड़	सर्प	सिंह	सिंह	सम	सम
गरुड़	मूसा	गरुड़	मूसा	स्वान	स्वान	सम	सम
गरुड़	मृग	गरुड़	मृग	स्वान	सर्प	स्वान	सर्प
गरुड़	मेंढा	गरुड़	मेंढा	स्वान	मूसा	स्वान	मूसा
बिलाव	सिंह	सिंह	बिलाव	स्वान	मृग	स्वान	मूसा
बिलाव	स्वान	स्वान	बिलाव	स्वान	मेंढा	स्वान	मेंढा
बिलाव	सर्प	बिलाव	सर्प	सर्प	मृग	सर्प	मृग
बिलाव	मूसा	बिलाव	मूसा	सर्प	मेंढा	सर्प	मेंढा
बिलाव	मृग	बिलाव	मृग	सर्प	मूसा	सर्प	मूसा
बिलाव	मेंढा	बिलाव	मेंढा	सर्प	सर्प	सर्प	सम
बिलाव	बिलाव	सम	सम	मूसा	मूसा	सम	सम
सिंह	बिलाव	सिंह	बिलाव	मूसा	मृग	सम	सम
सिंह	स्वान	सिंह	स्वान	मूसा	मेंढा	सम	सम
सिंह	मूसा	सिंह	मूसा	मृग	मृग	सम	सम
सिंह	मृग	सिंह	मृग	मृग	मेंढा	मेंढा	मृग
सिंह	मेंढा	सिंह	मेंढा	मेंढा	मेंढा	सम	सम

प्रत्येक राशि पर चन्द्रमा दो नक्षत्र तक रहता है और प्रत्येक नक्षत्र के चार चरण होते हैं, निम्नांकित सारिणी में जो अक्षर चरणों में लिखे हैं, उनसे राशि जानी जाती है। हम निम्नांकित सारिणी की सहायता से किसी भी व्यक्ति के नाम की राशि व उसके जन्म के समय के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

राशि-चक्र

नाम राशि	नक्षत्रों के नाम व चरण		प्रत्येक राशि
मेष	अश्वनी चू, चे, चो, लाल	भरणी ली, लू, ले, लो	कृत्तिका अ, 0, 0, 0
वृष	कृत्तिका 0, इ, उ, ए	रोहिणी ओ, ब, बा, बु	मृगशिरा बे, वो, 0, 0
मिथुन	मृगशिरा 0, 0, का, की	आर्द्रा कु, घ, ड, छ	पुनर्वसु के, को, ह

नाम राशि	नक्षत्रों के नाम व चरण		प्रत्येक राशि
कर्क	पुनर्वसु 0, 0, 0, हि	पुष्य हे, हे, हो, डा	आश्लेषा डी, डु, डे, डी
सिंह	मघा मा, मी, मू, मे	पूर्वाफाल्गुनी मो, टा, टी, टू	उत्तराफाल्गुनी टे, 0, 0, 0
कन्या	उत्तराफाल्गुनी 0, टो, पा, पी	हस्त पू, ष, ण, ठ	चित्रा पे, पो, 0, 0
तुला	चित्रा 0, 0, रा, री	स्वाति रू, रे, रो, ता	विशाखा ती, तू, ते, 0
वृश्चिक	विशाखा 0, 0, 0, तो	अनुराधा न, नि, नु, ने	ज्येष्ठा नो, या, यि, यु
धनु	मूल ये, यी, भि, भी	पूर्वाषाढ़ा भू, ध, फ, ढ़	उत्तराषाढ़ा मे, 0, 0, 0
मकर	उत्तराषाढ़ा 0, भो, जा, जी	अभिजित श्रवण जू, जे, खी, खू	धनिष्ठा गा, गी, 0, 0
कुम्भ	धनिष्ठा 0, 0, गू, गे	शतभिषा गो, स, सि, सु	पूर्वाभाद्रपद से, सो, द, 0
मीन	पूर्वाभाद्रपद 0, 0, 0, दी	उत्तराभाद्रपद दु, थ, झ, त्र	रेवती दे, दो, च, ची



मेष
(21 मार्च से 19 अप्रैल)
(च, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, आ)

मेष राशि को भारतीय ज्योतिष में प्रथम स्थान प्राप्त है। इसको भेड़ की आकृति का माना गया है और इसका निवास गुर्दे में ऊपर के भाग में माना गया है। सौर पद्धति में इसका समय 20 अप्रैल से 19 मई, चन्द्र पद्धति में अप्रैल, मई, पाश्चात्य मत के अनुसार मार्च 21 से अप्रैल 21 तक और भारत सरकार के द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांग में अप्रैल 15 से मई 14 तक इसका समय माना गया है।

इस राशि का अधिपति स्वामी क्रूर एवं तेजस्वी ग्रह मंगल माना गया है। यह चर राशि है और अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र इसमें आते हैं। इसका तत्व अग्नि है और इसकी गणना पृष्ठोदय (पिछले भाग से उदय होने वाली) राशि में है। इसकी दिशा पूर्व है, रंग लाला माना गया है। कद छोटा। रहने का स्थान वन माना गया है। जाति

इसकी क्षत्रिय है। इसकी गणना पुरुष श्रेणी में है। यह चतुष्पदा राशि है। इसका अधिपति स्वामी ग्रहों के देवता विघ्न विनायक श्री गणपति हैं। इसकी धातु मज्जा। इसके देवता मंगल को सौरमण्डल के मंत्रिमण्डल में सेनापति का स्थान प्राप्त है। इसका इन्द्रिय ज्ञान नेत्र है। कुण्डली में इसकी राशि उच्च मानी गयी है। इसका आकार डोल के समान माना गया है। इसका वेद सामवेद है। बुध शाखा का स्वामी माना गया है। इसका क्रम अयन (दिन) है। इसका फल दिन भर में मिल जाता है, क्योंकि इसका और पृथ्वी का दिन करीब-करीब बराबर है। यह एक राशि पर डेढ़ दिन रहता है।

मैं इन सबका वर्णन और विवरण इसलिए दे रहा हूं, ताकि पाठकों को अपना भविष्य फल पढ़ते समय इन बातों का ध्यान रहने पर वह भविष्य-कथन की प्रमाणिकता पर विश्वास भी करेंगे, क्योंकि यदि सब तथ्य इतने वैज्ञानिक हैं कि इनकी व्याख्या के अनुसार ही भविष्यफल मिलता है। इस सब विवरण का अर्थ भी आपको आगे मिल जाएगा। इस प्रकार के नाम, गणना और वर्गीकरण का क्या अर्थ है? आप पढ़कर हैरत में रह जाएंगें कि भविष्यफल का भविष्य-कथन अन्य भविष्यफलों से भिन्न है, क्योंकि मैं इस विद्या को "विज्ञान" के रूप में मानता हूं, और विज्ञान हमेशा प्रमाणित होता है। अतएव यह सब वर्णन स्वयं आपको भी मेरी बात को विज्ञान की कसौटी पर परखने में सहायक बनेगा। इस राशि के देवता की आयु 50 वर्ष मानी गयी है। यह सत्वगुणी है। प्रकृति कफ है। रत्न इसका मूंगा है और स्वाद तिक्त है। ॠतु ग्रीष्म है। सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति (गुरु) इसके मित्र हैं। बुध इसका परम शत्रु है। शुक्र और शनि से इसकी साधारण मैत्री मात्र है।

आकार के अनुसार कमर पतली है। बाल चमकते घुंघराले हैं। आखें रक्तवर्ण है। स्वभाव क्रूर और अस्थिर है। हृदय उदार है। वार करने में यह बड़ा अचूक निशानेबाज है। शरीर में आघात या जलने का चिन्ह है। वीर है पर अनुशासित है। अत्यन्त कामुक और शीघ्र गुस्से में आने वाला है। इसका शुभांक 9 है। इसकी अंक गणना 3 से 11 है।

पुराणों में मंगल को "महिसुत" अर्थात् पृथ्वी पुत्र कहा गया है। वेदकालीन पंचग्रहों में इसकी गणना है। महाभारत के कर्ण पर्व में इसकी विशेष चर्चा है। यह ग्रह पृथ्वी के मानव के लिए विशेष महत्व रखता है। इस ताम्रवर्णी ग्रह और पृथ्वी में अनेक समानताएं हैं। इसका व्यास मात्र 4215 मील है। पृथ्वी से इसकी निकटमत दूरी लगभग 34,600,650 मील है। इसका तापमान 85 डिग्री फ़ारेनहाइट से 190 फारेनहाइट है। 5 फरवरी, 1965 को जिस प्रकार सभी ग्रह एक साथ इकट्ठे हो गए थे, उसी तरह 5 मई, 2000 में फिर एक साथ इकट्ठे होंगे।

इसका एक नाम भौम भी है। सूर्य से इसकी दूरी लगभग 14,730,000 मील है। पृथ्वी के 657 दिनों में यह सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। मंगल का एक वर्ष पृथ्वी के 2 वर्ष से थोड़ा छोटा होता है, पर दिन लगभग बराबर है। साधारणतः इसका दिन 24 घंटे 37 मिनट का होता है। सूर्य की परिक्रमा करते समय वह हर 15वें वर्ष में पृथ्वी के एकदम निकट आ जाता है। यूनान में इसे युद्ध का देवता माना है। सन् 1877 में पहली बार मिलान की वेधशाला में इसका सम्पूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन किया गया।

सन् 1907 में इटली के एक खगोल शास्त्री गियोपान्नी शिया पारती ने इसमें 700 जल नहरों का होना प्रमाणित किया और सबसे पहले मंगल पर आबादी होने की सम्भावना प्रकट की।

अमेरिका ने अपना "वाईकिंग" रॉकेट मंगल ग्रह तक भेजा। मंगल ग्रह का वायुदबाव पृथ्वी के वायुदबाव का केवल सौवां अंश है। इस पर उल्कापात के गहरे गड्ढे हैं। ज्वालामुखी पर्वत है। मौसम की दृष्टि से ग्रह सजीव है। बादल, तेज हवायें, धूल की आंधियां चलती हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र "पराशर संहिता" में मंगल ग्रह को रुधिर का देवता और जीव का उत्पत्ति का केन्द्र माना है। हस्तरेखा में यह मनुष्य की हथेली पर दो स्थानों पर अपना अधिकार रखता है।

अब हम पौराणिक और आज के वैज्ञानिक तथ्यों को मिलाकर देखेंगे। हमारी पौराणिक मान्यता/गणना किस प्रकार वैज्ञानिक तथ्यों से मेल खाती है। वेदों में भी मंगल का श्लोक आया है। वेदों का रचनाकाल अनादि है। आज तक यह प्रमाणित नहीं हो सका कि वेदों की रचना किसने की और कब की? हमारे यहां वेद स्वयं ब्रह्मा-रचित मानते हैं। जो हो, लाखों वर्षों पूर्व वर्णित विवरण आज भी विज्ञान की खोज में सटीक उतर रहा है।

पौराणिक तथ्यों पर आधारित और विज्ञान द्वारा प्राप्त निष्कर्षों के अनुसार इस वर्ष का भविष्य मेष राशि का कैसा बनता है, यह तो आगे वर्णित है, पर इस राशि वाले जातकों का स्थायी भविष्य इस प्रकार बनता है—

इस राशि के अधिकतर जातक का रंग गोरा होता है। उनके रक्त में लाल कणों की अधिकता के कारण प्रायः रंग गोरा, ताम्रवर्ण (तांबे के समान दमकता), गेहुंआ होता है। अश्विनी य भरणी नक्षत्र में जन्मे बालक का यही रंग होता है। इनका गोरा, श्यामल भी होता है, काला रंग बहुत कम होता है। कद समान्यतः छोटा होता है। लम्बे-चौड़े इस राशि के व्यक्ति अपवाद हो सकते हैं। बदन गठीला तथा बाल घुंघराले होते हैं। इस राशि की महिलाओं के बाल अधिकतर लम्बे और घने होते हैं। आंखें बहुत सुन्दर होती हैं। उनकी आंखों में चमक, चंचलता बेहद होती है। पुरुष की आंखों के कोरों में ललाई अवश्य होती है। अगर ऐसा नहीं होगा तो उनका शरीर ढाल के समान होगा; अर्थात् तोंद वाला, मोटा थुल-थुल होगा।

इस राशि का जातक अस्थिर स्वाभव का होता है। इसे बहुत शीघ्र गुस्सा आता है, पर ठंडा भी शीघ्र होता है और हृदय का बड़ा कोमल होता है। इसे तिक्त पदार्थ विशेष पसन्द होते हैं। यह डरपोक, कायर नहीं होता। मौका पड़ने पर मरने-मारने के लिये तैयार रहता है। उस समय यह अत्यन्त क्रूर होता है। अपने दुश्मन के टुकड़े-टुकड़े करने के बाद भी शांत नहीं होता है।

सत्वगुणी होने के कारण सच्चरित्र, दृढ़निश्चयी और संकल्प पूरा करने वाला व्यक्ति होता है। केवल अस्थिर स्वभाव के कारण इसे कम सफलता मिलती है। इसका तत्व अग्नि होने के कारण उग्र स्वभाव का होता है। नेतृत्व गुण अधिक होता है। चतुष्पदी राशि होने के कारण यह बार-बार गिरने पर भी उठकर शीघ्र खड़ा हो जाता है। अपना

लक्ष्य नहीं भूलता, प्राप्त करके ही दम लेता है। पृष्ठोदय राशि के कारण यह दुश्मन की ओर पीठ कर देने पर ही मात खा सकता है, वरना सामने से इसको कोई भी पराजित नहीं कर सकता। यह अत्यन्त कामुक होता है। हरियाली (पेड़,पौधे, बगीचे) इसको बड़े पसन्द हाते हैं। लाल, सफेद और हरा रंग इसे प्रिय होता है। अपनी आकृति भेड़ होने के कारण इसके गुण, अवगुण, स्वभाव भेड़ से बहुत कुछ मिलते हैं।

इस राशि के व्यक्ति की आयु अगर देवयोग पक्ष में रहता है, तो कम-से-कम 55 वर्ष अवश्य ही होती है। इस राशि का जातक प्रायः दीर्घायु माना गया है। दुर्घटना या चोट के कारण इसकी मृत्यु सम्भव रहती है।

अपने प्रकृति रूप के कारण इसका स्वास्थ्य नरम-गरम बना रहता है। गर्मी, विषप्रभाव, चोट घाव, कोढ़, नेत्र पीड़ा, खुजली, ब्लडप्रेशर, कमजोरी, हड्डियों पर चोट, ट्यूमर, कैंसर, बवासीर, गर्दन पीड़ा जैसी बीमारियां होती हैं। शरीर में आघात और जले का चिन्ह बतलाया गया है। अतएव इस राशि की महिलाएं भाग-भगाकर आत्महत्या करती है। पुरुष का शरीर एक-न-एक बार जरूर जलता है या आघात खाता है।

इसका विवाह-प्रेम मेष, वृषभ, तुला राशि की स्त्री से होने पर सुखमय एवं सफल रहता है। वृश्चिक, मकर राशि से सामान्य सुखी। मिथुन, कन्या राशि से होने पर प्रायः क्लेशपूर्ण रहता है। कामुकता के कारण अपनी स्त्री से इसकी पटती नहीं। कामवासना की तृप्ति के लिए यह भटकता रहता है। परिवार के प्रति इसका व्यवहार अस्थिर रहता है।

जीवन-निर्वाह इसका जनरल (सेना में) या अन्य पदों पर संगठनकर्ता, डॉक्टर, व्यापारी, वकील, दवा विक्रेता, नेता के रूप में होता है।

इस व्यक्ति के लिए पूर्व, उत्तर-पूर्व, दक्षिण दिशाएं विशेष शुभ होती हैं।

इण्डोनेशिया, कलकत्ता (कोलकाता), शिमला, पैरिस, कनाडा, बैलग्रेड स्थानों में बड़ा भाग्योदय होता है।



वृष
(20 अप्रैल से 21 मई)
(इ, उ, ए, ओ, ब, बी, बू, ब, बा)

वृषभ या वृष राशि का स्थान दूसरा है। इसका शब्दिक अर्थ होता है "बैल"। आकाश खण्ड में विभाजन और इसका नक्शा बैल की आकृति बनाता है। इस कारण इसका नामकरण वृष किय गया है। ज्योतिष शास्त्र में इसके नक्षत्रों में "कृत्तिका" 2-3-4 चरण "रोहिणी" के चारों चरण व मृगशिरा के 1-2 चरण सम्मिलित हैं। इसका उदगम् "पृष्ठोदय" है। इसकी दिशा "पूर्व" है। रंग सफेद, कद विकृत, रहने का स्थान "श्वेत" माना गया है। इसका समय 20 अप्रैल से 21 मई है। राशि स्वामी ग्रह शुक्र है। जिसे शास्त्रों में असुरों का गुरु माना गया है। "शुक्र" स्वामी होने के कारण, नेत्र जल, वीर्य और कफ पर इसका अधिकार है। यह बसन्त ऋतु का स्वामी है। इसके अधिपति देवता "लक्ष्मी" हैं। सौरमण्डल की मन्त्रिपरिषद् में इसे मन्त्रीपद का दर्जा प्राप्त है। इस ग्रह का सम्बन्ध "जिह्वा" से है। इसके मित्र ग्रह बुध और शनि हैं, सूर्य, चन्द्र इसके शत्रु ग्रह हैं। मंगल और बृहस्पति "गुरु" से इसका सम्बंध सामान्य है। इसका आकार अष्टकोण।

कद सामान्य। विशिष्ट अंग "गुप्तांग" है। इसका वेद यजुर्वेद है। यह बुध शाखा का स्वामी है। वृषभ की राशि शूद्र है। यह एक राशि पर एक माह रहता है।

राशि की दृष्टि से यह राशि चेहरा और गले का प्रतिनिधित्व करती है। स्वामी ग्रह का लिंग स्त्री है। स्वामी ग्रह शुक्र की जाति ब्राह्मण है। गुण इसका रजोगुणी है।

इस राशि का यह विवरण तो ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से है। अब इसका वैज्ञानिक रूप भी देखना आवश्यक है। विज्ञान की दृष्टि से शुक्र को पृथ्वी का निकटतम पड़ौसी माना गया है। यह ग्रह सौरमण्डल की अपेक्षा सूर्य के अधिक निकट है। यह हमारी पृथ्वी से 6,70,20, 510 मील दूर है तथा पृथ्वी से इसकी निकटमत दूरी 25,700,500 मील है। इसकी सतह का तापमान 899 फारेनहाइट डिग्री है। पृथ्वी से इस ग्रह को नंगी आंखों से देखा जा सकता है। इसका एक वर्ष 255 दिन का है। यह 255 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। अतएव पृथ्वी का 18 वर्ष का युवक शुक्र पर 27 वर्ष का तरूण बन जाएगा। यह लगभग 22 मील प्रति सैकण्ड की गति से सूर्य की परिक्रमा कर रहा है, जबकि पृथ्वी की गति प्रति सैकण्ड 18 मील है। यह ग्रह सुवह-शाम अवश्य दिखेगा, पर मध्य रात्रि में कभी नहीं दिखाई देगा। इसका धरातल सफेद बादलों से ढका हुआ है। इसके बादल तेल के कणों से बने हैं। शुक्र के चारों ओर एक सफेद धुंध-सी छायी रहती है। देखिए पूर्वजों ने किस प्रकार लाखों वर्ष पूर्व इसके वर्ण का रंग सफेद (श्वेत) बतलाया है। शुक्र से बराबर रेडियो तरंगें उठती हैं। इसके धरातल पर पानी की सम्भावना है। इस ग्रह पर जीवन की कोई सम्भावना नहीं है।

ज्योतिष शास्त्र में यह वृषभ (वृष) व तुला का स्वामी माना गया है। हस्त रेखा में इसकी गणना पर्वत शुक्र के रूप में है। यह प्रेम (सैक्स), विवाह, पारिवारिक जीवन, कला, शारीरिक सुख का निर्णय करने वाला है। हस्तरेखा में इस ग्रह के स्थान को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है और लगभग जातक के सम्पूर्ण करतल को प्रभावित करता है। जन्मकुण्डली में जिस घर में (भाव में) यह बैठता है, वहीं से अन्य 11 भावों (घरों) को प्रभावित करता है। वृषभ (वृष) राशि ऐसे ही तेजस्वी, महत्वपूर्ण, प्रभावशाली ग्रह के अनुचर के रूप में आती है।

जातक के जन्म लेने के समय इस राशि का उपस्थित होना ही उस जातक की राशि को निर्धारित करता है। इस राशि का स्वामी का रंग-रूप बतलाते हुए कहा गया है कि उसका शरीर स्थूल है, घुंघराले काले बाल है, वर्ण गेहूंआ है। व्यक्तित्व आकर्षक और मिलनसार है। आंखें बड़ी-बड़ी और वीर्यवान हैं। इस प्रकार के वर्णन के कारण वृष राशि के जातक प्राय: हृष्ट-पुष्ट, अच्छे डीलडौल वाले कर्मठ, आकर्षक, गोरे चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी होते हैं। अधिकांश का वर्ण गौर होता है।

बड़ी-बड़ी सुन्दर आंखों वाली स्त्रियों की राशि अधिकतर वृष ही होती है। इस राशि में जन्मी बालिकाएं अनुपम सुन्दरी होती हैं। इस राशि की महिलाएं रूप-रंग। वनावट की नजर से मनमोदिनी होती हैं। अपने आकर्षक व्यक्तित्व के कारण इनके मित्रों और शत्रुओं की संख्या सबसे अधिक होती है।

इस राशि के जातकों का स्वाभव घमण्डी और क्रोधी होता है। यह सबको प्रभावित

करने की क्षमता रखते हैं। अपने कार्य के लिए पूर्णतः समर्पित होते हैं। मेहनत और लगन में कोई नहीं आने देते हैं। पूर्णतः व्यावहारिक होते हैं। यह योजना के अनुसार ही काम करते हैं, एक बार योजना बनाने के बाद उसी के अनुसार कार्य करना इन्हें पसन्द होता है। विपरीत परिस्थितियों में भी नहीं घबराते।

यह कला-प्रेमी, नाच-गाने के अभिनय के शौकीन होते हैं। मनोरंजन इनको प्रिय होता है, पर मनोरंजन को यह प्राथमिकता नहीं देते हैं। इनका दाम्पत्य जीवन सुख-दुःख मिश्रित होता है। इनका यौवनकाल एवं वृद्धावस्था सुखमय होती है, यौवन में यह काफी परिश्रम करते हैं। खर्च के मामले में संकोची होते हैं।

इस राशि के व्यक्ति की आयु 60 वर्ष तक मानी जाती है। 60 वर्ष की अवस्था पार करने की पश्चात् भी इसका जीवन रहता है, तो नर्क तुल्य होता है। इस आयु के बाद इस राशि का जातक मात्र चलती-फिरती मूर्ति बनकर रह जाता है। जीवन में प्रायः बीमार कम होता है। पर अगर बीमार होता है तो देर से ठीक होता है।

इसका स्वास्थ्य सामान्यतः यौवन काल तक श्रेष्ठ रहता है। यौवन काल के उपरान्त इसका स्वयं की लापरवाही से स्वास्थ्य बिगड़ता है। प्रायः पथरी, सांस में कष्ट आदि होता है। नेत्र व चेहरे की पीड़ा घेरे रहती है। उदर सम्बन्धी रोग शीघ्र घेरते हैं।

इस राशि की महिलाओं को श्वेत प्रदर अनिवार्य रूप से होता है। पेट-पेढू में हमेशा शिकायत रहती है। सिरदर्द, नेत्र पीड़ा, अपच लगी रहती है।

इस राशि के जातक का विवाह सुख-दुःख मिश्रित रहता है। अपने अहम्, घमण्डी एवं कंजूस स्वभाव के कारण पत्नी से खटपट रहती है। मिथुन, मकर, कुम्भ राशि वाली स्त्रियों से या पुरुषों से विवाह सम्बन्ध उत्तम रहता है। सिंह, कर्क, वृश्चिक राशि वालों से विवाह सम्बन्ध अशुभ वह कलहकारी सिद्ध होता है। मेष, वृश्चिक तथा धनु वाले इनके लिए सामान्य रहते हैं।

इनका आमतौर पर दाम्पत्य जीवन नरम-गरम रहता है। इनका सैक्स व्यावहारिक होता है। यह कोरी भावुकता पर आधारित नहीं होता है। इस राशि वाले की सन्तानें कम होती हैं, जो भी होती हैं उनको बड़े अनुशासन में रखना चाहते हैं।

इस राशि की महिलाओं को पुत्र-प्राप्ति का योग 26 वर्ष की आयु के बाद बनता है।

इस राशि के व्यक्तियों को पश्चिम, उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम दिशा या पश्चिमी दिशाएं शुभ रहती हैं। इनका मुख्य जीवन निर्वाह मूल्यांकनकर्ता, नाप-तौल विभाग, बैंकर, निर्माता, जौहरी, उपन्यास लेखन, व्यापारी, प्रेस लाइन से होता है। वैसे सब कार्य कर लेना इनकी मुख्य विशेषता है।

इस राशि के शुभ रंग नीला और सफेद हैं। मोती, हीरा एवं सफेद हकीक शुभ रत्न हैं। अनामिका या कनिष्ठिका में इनको धारण करना विशेष लाभप्रद है।

इस राशि वालों को परामर्श दिया जाता है कि वह अपने खानपीन का ध्यान रखें। अधिक परिश्रम न करें। मितव्ययिता एक अच्छी आदत है, पर आवश्यकता से अधिक कंजूसी भी उचित नहीं है।



मिथुन
(22 मई से 20 जून)
(का, की, कू, ध, ड, छ, के, की, ह)

सौरमण्डल में जिन 30 रेखाओं के लेकर विभाजन "मिथुन" के नाम से किया गया है, उसका आकार जुड़वां बच्चों के समान दिखलाई पड़ता है। आधुनिक शक्तिशाली दूरबीन लगे कैमरों से लिए गए चित्रों से भी ऐसा ही आकार सामने आया है। कुछ लोग "मैथुन" शब्द से इसका अर्थ लगाते हैं। यह अर्थ एकदम गलत है। ध्यान से देखा जाए तो दोनों आकृतियां सितार-वीणा वादन-सा करती लगती है। कैमरे से लिए गये बोस्टन वेधशाला (अमेरिका) से प्राप्त चित्रों को देखने से यह बात और अधिक स्पष्ट हो जाती है।

ज्योतिप शास्त्र के अनुसार मिथुन राशि का स्वामी ग्रह बुध माना गया है, जो बुद्धि और विद्या का देने वाला है। इसका अंक 5 है। इसके नक्षत्रों में आर्द्रा के चारों चरण, मृगशिरा के 3-4, पुनर्वसु के 1-2-3 चरण होते हैं। इस राशि का स्वाभाव द्विस्वभाव है। इसका तत्व आकाश है। यह राशि पृष्ठोदय, शीर्षोदय दोनों प्रकार से उदय होने के कारण "उभयोदय" मानी गयी है। इसका लिंग पुरुप है। इसकी दिशा दक्षिण-पूर्व है। रंग हरा है। इसका निवास गांव या शयन-कक्ष माना गया है। कद लम्बा बतलाया गया है। शरीर में इसे गला और बांहों का स्थान प्राप्त है। यह शरद ऋतु का स्वामी है। इसका रत्न पन्ना है। प्रकृति पित्त है। इस कारण इसके स्वामी ग्रह का अधिकतर पेट, जीभ, फेफड़ों, स्नायु-केन्द्रों पित्त और मांसपेशियों पर है। इस ग्रह का अधिपति देवता विष्णु है। इसका स्वाद अम्ल और मिश्रित है। रक्त और चर्म इसकी धातु है। सौर मंत्रिमण्डल में इसको राजकुमार का पद प्राप्त है। इसका आकार त्रिकोण के समान है। इसका आयन दो मास का है। इसके वेद अथर्ववेद हैं। सिंह, वृष, तुला इसकी मित्र राशियां हैं और कर्क, मेष, वृश्चिक राशियों से इसकी शत्रुता है। बाकी राशियों से इसका भाव समान है।

इस राशि में दो रंग की झलक बतलाई गई है। इसकी नसें स्पष्ट दिखलाई पड़ती हैं। इसे मिष्ठभाषी ओर विनोदप्रिय माना गया है। इसकी लाल और बड़ी आंखें हैं। यह बुद्धिमान और राजनीति में दक्ष है। इसे विद्वान् माना गया है। इसकी शरीर रचना संतुलित मानी गयी है।

प्राचीन काल से ही हमारे विद्वान् पूर्वजों को इस ज्योतिपिंड का ज्ञान था। इसकी स्थापना पंचदेवों में की गई है। महाभारत के भीष्म पर्व में बुध-ग्रह का उल्लेख मिलता है।

आधुनिक विज्ञान ने इसकी दूरी सूर्य से 3,52,983 मील दूर मानी है। यह सूर्य के सबसे पास है। इसका तापमान 770 डिग्री फारेनहाइट है। इस तापमान में शीशा और टिन भी पिघल जाते हैं। इसकी गति 36 मील प्रति सेकण्ड है। बुध पर हरे रंग की परत पड़ी है। यह लगभग 87 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है।

ज्योतिष और विज्ञान से प्राप्त इन निष्कर्षों के आधार पर मिथुन राशि के जातकों का रूप-रंग और भविष्य प्रायः एकदम स्पष्ट हो जाता है। इस राशि के जातकों का

व्यक्तित्व आकर्षक होता है। यह स्वस्थ एवं हृष्ट-पुष्ट होते है। इनमें बातचीत करने का बड़ा सफल गुण होता है। अपनी वाणी और तर्कों के प्रभाव से दूसरे को वश में कर लेते हैं। इनका बचपन बड़ा ही अस्त-व्यस्त होता है। बचपन से ही लिखने-पढ़ने के शौकीन होते हैं। दिन-रात परिश्रम करते हैं। यह शारीरिक परिश्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम अधिक पसंद करते हैं। द्वि-स्वाभाव राशि होने के कारण यह किसी एक काम पर, किसी एक बात पर नहीं जमते। उत्साह से कार्य शुरू कर शीघ्र ही ठंडे हो जाते हैं। एक काम पूरा हो या न हो, दूसरे काम में हाथ डाल देते हैं। इसी दुहरे स्वभाव के कारण योग्यता और क्षमता के बावजूद यह कियी कार्य को सफलता के साथ नहीं कर पाते हैं। इनका स्वभाव बड़ा ही भावुक होता है। बचपन में माता-पिता का सुख इन्हें नहीं के बराबर ही मिलता है। इस राशि के जातक अपने जीवन का निर्माण प्रायः स्वयं ही करते हैं।

आकाश तत्व रहने के कारण यह कल्पनाओं में बहते रहते हैं तथा प्रायः हवाई महल बनाया करते हैं। राशि उभयोदय होने के कारण यह अपनी किसी बात पर अटल नहीं रहते हैं। सुवह कुछ तो शाम को कुछ इनकी बात होती है। वैसे यह बहुत ईमानदार होते हैं। इस राशि का रंग हरा होता है। शुभ रत्न इसका पन्ना है। अंग-स्थान गले और बांह में होने के काण इनको इसी प्रकार के रोग होते हैं, जिनका सम्बंध इन अंगों से है। स्नायविक विकार, मस्तिष्क रोग, त्वचा रोग, मिरगी, रक्त की कमी आदि प्रमुख हैं।

व्यवसाय से इस राशि के जातक लेखक, इंजीनियर, व्यापारी, एकाउटेंट, प्रोफेसर, डॉक्टर, सम्पत्ति-दलाल, समाचार-पत्र का मालिक, सम्पादक, तम्बाकू-विक्रेता, शिक्षाशास्त्री, इतिहासवेत्ता, राजनेता, प्रकाशक, पुस्तक-विक्रेता होते हैं। सदैव बाजार में यह सफल रहते हैं एवं इनकी धाक रहती है। विदेशी व्यापार में प्रायः सफल रहते हैं।

इस राशि के जातक बहुत अच्छा झूठ बोलने और जनता को विश्वास में लेने में सफल होते हैं। इस राशि के नेता प्रायः सफल रहते हैं। स्वभाव से कंजूस होते हैं। 29-30 साल की आयु के बाद इनके जीवन में स्थायित्व आता है। 40 वर्ष की आयु के बाद पूर्ण रूप से सफल होते हैं। 20-22 वर्ष की आयु में मरण-तुल्य कष्ट पाता है। साधारणतया इस राशि के जातक की आयु 70 वर्ष की होती है। जीवन का अन्तिम, समय सुख-ऐश्वर्य से वीतता है।

इनका दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण और मानसिक तनाव देने वाला होता है, पर अन्त तक निभ जाता है। संतान-सुख उत्तम होता है। इस राशि के जातक नौकरी से संतोष नहीं पाते हैं, उन्नति के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। स्वतंत्र व्यवसाय करना इस राशि के जातक की विशेष इच्छा होती है।

सामान्यतः स्वास्थ्य उत्तम रहता है। जीवन में कफ, नाक, कान, गला एवं वायु से सम्बंधित रोग घेरे रहते हैं। कई बार शल्य चिकित्सा की भी आवश्यकता पड़ती है।

प्रेम के मामले में प्रायः असफल रहते हैं। जीवन में कई प्रेम-प्रसंग होते हैं, पर पूर्णता प्राप्त नहीं करते। स्त्रियों के प्रति आकर्षण रखते हैं, पर कलंकित होने से डरते भी हैं। इसलिए असफल हो जाते हैं।

कुल मिलाकर मिथुन राशि का सम्पूर्ण जीवन साधारणतया उतार-चढ़ावभरा पर

अन्ततः सुखमय होता है। चित्रकला, संगीत, लेखन के क्षेत्र में प्रायः वह अमर हो जाया करते हैं। पैतृक सम्पत्ति-प्राप्ति का योग जीवन में एक बार अवश्य बनता है।



कर्क
(21जून से 23 जुलाई)
(ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो)

कर्क स्त्री राशि है। आकाश में इसकी आकृति केकड़े के समान है। स्वाभाव बड़ा शुभ है। चर राशि है और उदय पृष्ठोदय है। दिशा दक्षिण है। अंक 2 है। ग्रहस्वामी चन्द्रमा है। रंग गुलाबी है और कीट (पतंगों) में गणना है। जाति ब्राह्मण है। शरीर में हृदय पर इसका स्थान है। ऋतु वर्षा है। रत्न मोती है। स्वाद लवण (नमकीन) है। धातु इसकी अस्थि और चर्म है। आकार गोल है। सौरमण्डल में राजा का स्थान प्राप्त है। ग्रहं के अधिपति देवता पार्वती हैं। इसकी गणना श्रावण मास में है। अंग्रेजी मास जुलाई-अगस्त हैं। 20 जुलाई से 19 अगस्त, 22 जून से 23 जुलाई, 15 जुलाई से 14 अगस्त इसकी अवधि मानी गई है। चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन रहता है। पुनर्वसु का केवल चौथा चरण (चतुर्थ), पुष्य भी पूर्ण इसमें आता है, आश्लेषा के सम्पूर्ण-चरण इस राशि में हैं। इसका निवास बाल अवस्था माना गया है। इन्द्रिय ज्ञान जिह्वा है।

चन्द्रमा के बारे में आज विज्ञान से कुछ भी अनजान नहीं है। मनुष्य के चरण उस पर पड़ चुके हैं। चन्द्रमा पृथ्वी के निकट सबसे पास का ग्रह है। इस कारण इस ग्रह का सबसे अधिक प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। पृथ्वी की रात के कृष्ण और शुक्ल पक्ष चन्द्रमा के उदय और अस्त की गति के कारण होते हैं।

वैज्ञानिक निष्कर्षों और ज्योतिष के तथ्यों के अनुसार इस राशि के जातक के गुण, स्वभाव, विवाह, दाम्पत्य जीवन, सैक्स, संतान सबका ज्ञान हो जाता है और भविष्य के जीवन-साथी का भी एक अस्पष्ट चित्र सामने आ जाता है। बशर्ते ध्यानपूर्वक गणना की जाए।

चन्द्रमा का सीधा सम्वंध मन और मस्तिष्क से है। अतएव चन्द्र ग्रह के कारण इस राशि के जातक भावुक, चंचल एवं काव्यात्मक प्रवृत्ति के होते हैं।

इस राशि के जातक भावुक, चंचल एवं रसिक होते हैं। हथेलियों में इसका स्थान कनिष्ठिका के नीचे माना गया है। विवाह रेखा इसके मध्य से ही गुजरती है। चन्द्र का तत्व भी जल है। इस राशि के जातक स्त्री-पुरुष दोनों ही सुन्दर होते हैं। रंग प्रायः गौरवर्ण होता है। चेहरा चन्द्रमा के समान गोल और बदन सामान्य होता है, कृशकाय या स्थूल नहीं। इनको बनाव-सिंगार और सौंदर्य से बड़ा लगाव होता है। भावकुता के कारण छोटी-सी बात भी इनको चुभ जाती है। उसका बुरा मान लेते हैं। इनका सैक्सी-जीवन काफी तेज होता है। गुप्त प्रेम बहुत करते हैं। शुक्ल पक्ष में इनमें काम-वासना काफी होती है। जल-क्रीड़ा में आनन्द का अनुभव करते हैं। इस राशि के जातक कुशल तैराक होते हैं। केकड़ा इनकी राशि का चिन्ह है, अस्तु इनकी खाल मोटी होती है। सहनशील अत्यधिक होते हैं। घोर कष्ट या पीड़ा के समय भी उफ नहीं करते। शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम में अधिक विश्वास रखते हैं। यह समय के पाबंद होते हैं। आज का काम कल पर नहीं टालते हैं। इनका शरीर कोमल होता है, पर पंजा मजबूत होता

है। यह तुनुकमिजाज व गर्वीले होते हैं। स्मरण-शक्ति बहुत तेज होती है और गृहस्थ जीवन इनको प्रिय होता है। अपने अनुभव सुनाने में बड़ा मजा लेते हैं।

इनका प्रारम्भिक जीवन-काल अच्छा होता है। विरासत में प्रायः धन-सम्पत्ति मिलती है, पर मध्य अवस्था में ही इनका जीवन सुदृढ़ हो जाता है। इसके पहले बचपन के बाद इनका जीवन प्रायः संघर्षमय होता है। घूमने-फिरने का इनको बड़ा शौक होता है। प्रायः लम्बी-लम्बी यात्राएं करते हैं। वृद्धावस्था में प्रायः तीर्थयात्रा या देशाटन पर जाते हैं।

इनका दाम्पत्य जीवन साधाराणतया सफल ही रहता है। स्वाभव नरम-गरम रहता है। अपनी संतान व पत्नी पर इनका अनुशासन कम ही होता है। लाड-प्यार से बिगाड़ दिया करते हैं।

प्रायः इनको हृदय से सम्बंधित बीमारियां हुआ करती हैं। उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व दिशा में यह सफलता प्राप्त करते हैं। तेल या द्रव पदार्थों का व्यवसाय, यात्रा संयोजक, सेल्समैन, नाविक, बावर्ची, पत्रकार, गायक, नर्तक, बर्फ से सम्बंधित कार्य, चीनी, खेती-बाड़ी, रत्न व्यवसायी, घी विक्रेता, जल-कल आदि इनके उत्तम पेशे हो सकते हैं। इनसे ही इनका जीवन सुखमय रहता है।

इनकी शुभ तारीखें हैं 2-4-6-9-11-13-29-31। शुभ दिन हैं सोमवार, मंगलवार एवं शुक्रवार। शुभ माह हैं फरवरी, अप्रैल, जून, सितम्बर और नवम्बर। शुभ वर्ष हैं–28-35-40-46-55-64।

इस राशि वाले का परिवारिक जीवन प्रायः तनाव से भर जाता है और पति-पत्नी हफ्तों एक-दूसरे से बात नहीं करते हैं। इसके बावजूद दोनों में गहरा प्रेम होता है। इस राशि की स्त्रियां प्रायः सुन्दर होती हैं, पर चंचलता अत्यधिक होती है। इनके मन बड़े भावुक होते हैं। रुचि जल्दी-जल्दी बदलती है। इस राशि की स्त्रियां प्रेम में अपने चंचल स्वाभाव के कारण ठगी जाती हैं।

इस राशि के जातक कुशल सेल्समैन और राजनीतिज्ञ होते हैं। बातें बनाने में कुशल होते हैं। यौवनकाल तक इनका जीवन काफी संघर्षमय होता है, उसके बाद तीव्रता से उन्नति करते हैं। व्यापारी के रूप में चल और अचल सम्पत्ति काफी बनाते हैं।

वृद्धावस्था इनकी नरम-गरम दोनों प्रकार की हो सकती है। प्रारम्भिक जीवन संघर्षमय बिताने के बाद, यौवनकाल में सर्वसुख पा लेते हैं। वृद्धावस्था में नीरसता आने के कारण कभी-कभी दूसरों का मोहताज होना पड़ता है। भावुकता के कारण अपना समय स्वयं नष्ट किया करते हैं। उदार हृदय के कारण शत्रु-संख्या कम होती है। मित्रजन, परिजनों का विशाल समुदाय होता है। जीवन उतार-चढ़ाव, संघर्ष की कहानी होता है। कल्पना के लोक में विचरना, आलस्य करना, इनका स्वाभाविक दुर्गुण होता है।

कुल मिलाकर इस राशि के जातकों का जीवन सुखमय होता है। केवल थोड़ी समझदारी के बल पर अपने को भाग्यशाली बना सकते हैं। समाज में इनकी प्रतिष्ठा होती है। सफलतापूर्वक जीवन व्यतीत करते हैं। गुप्त शत्रु बने रहते हैं। अधिक समय और धन स्त्रियों के चक्कर में बरबाद करके पछताते हैं।



सिंह
(24 जुलाई से 22 अगस्त)
(मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे)

भारतीय ज्योतिष के अनुसार सिंह पांचवी राशि है। इस राशि में मघा के चारों चरण, पूर्वाफाल्गुनी के भी चारों चरण तथा उत्तराफाल्गुनी का केवल एक चरण सिंह राशि के अन्तर्गत आता है। यह राशि सबसे तेजस्वी है। चन्द्र मास में इसका माह भाद्रपद है। सौर मास में यही सिंह मास; अर्थात् 20 अगस्त से 15 सितम्बर तक माना गया है तथा पूरब-पश्चिम ज्योतिष में इसका दिनांक है 23 जुलाई से 23 अगस्त, 15 अगस्त से 15 सितम्बर माना गया है। इस राशि का ग्रहस्वामी तेजस्वी ग्रह सूर्य है। सूर्य के अधिपति देवता स्वयं रूद्र या शिव हैं। सूर्य ग्रह के चारों ओर सारे ग्रह नाच रहे हैं। सूर्य ही ब्रह्माण्ड का नियन्त्रण करता है। इस कारण यह राशि समस्त राशियों में सर्वोपरि है। हर राशि के जातक इस राशि के जातक से सम्बन्ध रखना चाहते हैं।

आकृति शेर के समान, बनराज निवास खुफा या पहाड़ है। इस राशि का लिंग पुरुष है। जाति क्षत्रिय है। अंक 1 है। स्थिर राशि है। शीर्षोदय में गणना है। तत्व इसका अग्नि है। रंग भूरा है। पद चतुष्पदी है।

अंग स्थान इसका पैर है। प्रकृति मित्र है। दिशा पूरब है। ऋतु इसकी ग्रीष्म है। रत्न मानक है। स्वाद कटु है। इन्द्रिय ज्ञान नेत्र हैं। सौरमण्डल में यह राजा (पुरुष लिंग चन्द्रमा भी राजा है पर लिंग स्त्री है) है।

विज्ञान की दृष्टि से सूर्य का महत्व छिपता नहीं है। सूर्य के विषय में कुछ लिखना सूय को दीपक दिखलाना है। सभी पाठकों को इसके गुण और स्वभाव का ज्ञान है। अतएव विज्ञान और भारतीय ज्योतिष की दृष्टि से इस राशि का जो चित्र सामने आता है, वह एकदम समूचा भविष्य एवं वर्तमान स्पष्ट रूप में प्रकट करता है।

इस राशि के जातकों का कन्धा चौड़ा तथा सिर चौकोर होता है। उसके पंजे मजबूत होते हैं। इसका आकार चतुष्कोण है। इस कारण राशि में शेर के समान स्फूर्ति तथा छल-वल होता है। स्त्रियों की कमर शेर की कमर के समान पतली तथा वल दीखने वाली होती है। नजर बड़ी तेज होती है तथा आंखों में बहुत कुछ कह जाती है। इस राशि के जातक आंखों और प्रभाव से अधिक काम लेते हैं। प्रेमी-प्रेमिका और पति-पत्नी आंखों ही आंखों में बात कर जाते हैं। तत्व अग्नि होने के कारण अति क्रोधित हो जाते हैं। स्वाभाव क्रूर होता है और बड़ी शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं। सब पर अपना अधिकार (रूआव) जमाना चाहते हैं। शीर्षोदय राशि के कारण मुंह पर ही सब कुछ कह डालते हैं। जो भी कहते हैं सारपूर्ण एवं सटीक कहते हैं। एक नम्बर के लड़ाकू तथा बहादुर होते हैं।

मारपीट में अपने नाखूनों और दांतों का सबसे पहले और अधिक प्रयोग करते हैं। इस राशि की स्त्रियों का स्वभाव भी उग्र होता है। वह पति और बच्चों पर अपना शासन रखना चाहती हैं। इस राशि का जातक दबकर नहीं रहता है। क्रोध, अंहकार तथा शूरता इनका विशेष गुण होता है। स्वाद कटु है, इस कारण कड़वा बोलते हैं। फलतः मित्रों की संख्या कम होती है। इनकी चाल बड़ी अकड़भारी (शेर के समान) होती है। अपने उत्तेजक स्वभाव और दबंग होने के कारण वह परिस्थिति अपने अनुकूल बना लेते हैं।

अपने आत्मविश्वास के कारण आज काम कल पर टाल देते हैं। शेर की ही तरह आलसी होते हैं। एक शिकार मार लिया-फुरसत। जब तक कसकर भूख न लगे तब तक दूसरा शिकार नहीं करता है। इसी तरह इनके सिर पर जब बात आ जाती है तब यह जी-जान से काम करते हैं, वरना आज का काम कल पर टालते रहेंगे और आराम करते रहेंगे।

इस राशि के व्यक्ति प्रबल भोगी होते हैं। इनकी वासना हिंसात्मक होती है, मैथुन के समय नोच-खसोट, उठापाटक इनको विशेष प्रिय होती है। स्वभाव से निर्भीक और निष्पक्ष होते हैं। शरीर में इनको उदर सम्बंधी रोग प्रायः होते हैं।

जीवन के प्रारम्भ और यौवनकाल में इनका जीवन सुखमय और सफल होता है, पर वृद्धावस्था में प्रायः इनकी दशा बड़ी हीन रहती है। जीवन में सन्तान पक्ष में लड़कियां अधिक होती हैं। हस्तरेखा में सूर्य का स्थान अनामिका का तल माना गया है। सूर्य रेखा यश की रेखा मानी गयी है (पढ़ें पुस्तक विज्ञान ज्योतिष)। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सब ओर चमकता है, उसी प्रकार प्रबल सूर्यरेखा वाले जातक का नाम चहुं ओर चमकता है।

इस राशि वाले जातक का मुख्य व्यवसाय मुनीम, सेना में, पुलिस में, सर्जन, राजदूत, शिकारी, अग्नि तत्व का निर्माता (जैसे आतिशबाजी, विस्फोटक) आविष्कारक, तानाशाह नेता, अधिकारी होता है। यह सब पर अपना प्रभुत्व जमाकर रखते हैं।

इनका दाम्पत्य जीवन प्रायः कलहपूर्ण होता है। परिवार में अपना अधिकार जमाना चाहते हैं। जरा-जरा-सी बात पर क्रोधित हो जाते हैं। इस राशि के पुरुष का परिवार में बड़ा आतंक होता है। सन्तान पर अंकुश-अनुशासन रखना, पत्नी पर पाबन्दी इनका ध्येय होता है। सन्तान कम होती हैं।

इस राशि की महिला अच्छी प्रशासनिक, महिला पुलिस होती है। इस राशि की महिला, निडर, निर्भीक एवं साहसी होती है। इस राशि वाले जीवन में कई से सम्पर्क रखते हैं।

सिंह राशि के जातक की वृद्धावस्था अपवाद स्वरूप ही सुखमय होती है। बाल्यकाल, यौवनकाल जीवन का उत्कर्षकाल होता है। अपने शेर जैसे साहसिक स्वभाव के कारण जीवन में हर क्षेत्र में उन्नति करते हैं। इनको उदर सम्बन्धी रोग अधिक होते हैं। इस राशि के व्यक्तियों के शरीर का आकार सिंह के समान होता है। वैसे इनको सब कुछ हजम हो जाता है, पर अपने पेटूपन या स्वाद के लोभ में अधिक खा लेते हैं। अस्तु नाना प्रकार के रोग सताते रहते हैं।

इस राशि के जातक का वृद्धावस्था को छोड़कर बाकी समय उत्तम रहता है। मस्त, शेर के समान निर्भीक, तेजस्वी होते हैं। इनको सन्तान का बड़ा ख्याल रहता है और उस पर कड़ी दृष्टि और अनुशासन रखते हैं। जंगल से सम्बन्धित कार्य करने वाले जातक प्रायः सुखी और समृद्ध देखे गए हैं। अंक 1 होने के कारण जुआ, सट्टा-लॉटरी में भी इनका भाग्य प्रबल रहता है। मित्र कम होते हैं, जो होते हैं अच्छे होते हैं। स्पष्टवादिता और सिंह स्वभाव के कारण शत्रुओं की भी कमी नहीं होती हैं। स्पष्टवादिता और सिंह स्वभाव के कारण शत्रुओं की भी कमी नहीं होती है। सामने से चेतावनी देकर इनसे जीत पाना कठिन होता है। भ्रमण करना पसन्द करते हैं। यदाकदा पिकनिक, यात्रा पर

जाते रहते हैं। इस राशि के जातक के लिए सूर्य की उपासना करना उत्तम रहता है।

कुल मिलाकर इस राशि का जातक शानदार होता है और प्रायः सफल भी होता है।



कन्या
(23 अगस्त से 22 सितम्बर)
(टी, पा, पो, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)

पिछली मिथुन राशि के समान ही इस राशि का स्वामीग्रह बुध ही है, पर मिथुन से अलग इसकी आकृति और नक्षत्र हैं। वास्तव में कुछ ग्रहों का प्रभाव क्षेत्र इतना विशाल है कि उन्होंने दो राशियों को घेर रखा है। सौरमण्डल में अपनी इस प्रभावशीलता के कारण उनके पल्ले एक से अधिक राशियां आई हैं। बुध भी एक ऐसा ही ग्रह है। इसने मिथुन और कन्या का राशि क्षेत्र प्रभावित कर रखा है। आकृति हाथ में दीप लिए कन्या के समान है और उत्तराफाल्गुनी के तीन चरण, हस्त के चारों चरण एवं चित्रा के 1-2 चरण शामिल है। इसका तत्व पृथ्वी है। शीर्षोदय राशि है, दिशा दक्षिण-पश्चिम हैं, निवास हरियाली या गीली भूमि है। जाति शूद्र है और शरीर में इसका स्थान कमर है। यह द्विपद राशि है। लिंग नपुंसक है। गुण में रजोगुणी है। ऋतु शरद है। स्वादमिश्रित रस, धातु रक्त और चर्म है। मन्त्रिमण्डल में राजकुमार का स्थान प्राप्त है। आकार त्रिकोण है।

वैज्ञानिक दृष्टि से बुध का विवेचन मिथुन राशि में आ चुका है। अतएव उसका वर्णन दुहराने की कोई आवश्यकता नहीं है।

विज्ञान और ज्योतिष की इस गणना के अनुसार इस राशि के जातकों का विवरण इस प्रकार बनता है–

मिथुन राशि के जातक किसी भी वर्ण (गोरे या काले) के क्यों न हों, उनका शरीर बड़ा कोमल होता है। लिंग नपुंसक होने का कारण पुरुष जातक में स्त्रीत्व के गुण अवश्य होंगे, उनमें थोड़ा जनानागण होगा। स्त्रियों में पुरुषत्व होगा। इस राशि के जातकों की कमर बड़ी लचीली होती है तथा उस पर काफी बल पड़ते हैं। स्त्रियां लम्बी छरहीरी और सामान्य रूप से सुन्दर होंगी। इनके चेहरे का आकार त्रिकोण के आकार अर्थात् त्रिकोणात्मक होगा। चेहरा लम्बोतरा, नाक सुडौ और सुन्दर होती है। कोमलता के कारण यह भारी शारीरिक कार्य नहीं कर सकते हैं। इस राशि की स्त्रियां अत्यधिक नाजुक बदन होती हैं। बोलती भी कम हैं। पुरुष जातक भी कम बोलने वाला होता है। आकृति हाथ में दीप लिए कन्या के समान होने के कारण इस राशि के जातकों की प्रायः नजर कमजोर होती है और अधिकांश को चश्मा लगता है। देखने में कम उम्र के लगते हैं।

इनका स्वास्थ्य सामान्यतः गड़बड़ ही चलता है। अधिक नाजुक मिजाज होने के कारण जरा-सा कष्ट भी उनको बेचैन कर देता है। इनके शरीर में प्रायः रक्त की कमी बनी रहती है। त्वचा से सम्बन्धित रोग अधिक होते हैं। मिरगी की बीमारी होती है। मस्तिष्क सम्बन्धी रोग और नाना प्रकार के स्नायुविक विकार इनको बराबर सताते रहते हैं। स्त्रियों की कमर में प्रायः दर्द रहता है तथा मासिक धर्म सम्बन्धी उलट-फेर जीवन भर चलता रहता है। इनमें सहनशक्ति बहुम कम होती है।

नपुंसक, लिंग, द्विस्वभाव, द्विपद तत्व पृथ्वी, निवास हरियाली या गीली भूमि तथा

ऋतु शरद होने के कारण इनका दाम्पत्य जीवन मैथुन के सम्बन्ध में सुखी नहीं होता है। नपुंसक लिंग के कारण स्त्रियां ठंडी (बन्ध्या काम के प्रति अरुचि) होती हैं। पुरुष में पूर्ण पौरुषता नहीं होती है। इस असन्तोष के कारण प्रायः कलह होता रहता है।

दुहरा स्वभाव राशि होने के कारण पल-पल में विचार बदलते रहते हैं। इस कारण पति-पत्नी में प्रायः नहीं के बराबर पटरी बैठती है। छोटी-छोटी मामूली बातों को लेकर कलह होती रहती है। उधर रजोगुणी होने से पत्नी का स्वभाव मेल नहीं खाता है। तामस स्वभाव के कारण पति बराबर पत्नी को परेशान रखता है।

संतान-सुख मध्यम नहीं होता है। संतान या तो बिल्कुल नहीं होगी या फिर एकदम अधिक होगी। जो भी संतान होती है वह क्षीण, दुर्बल और सदा किसी न किसी बीमारी का चक्कर लगा रहता है। संतान की किसी न किसी समस्या से पति-पत्नी परेशान रहते हैं।

परिवार का बजट प्रायः असन्तुलित रहता है। केवल व्यापारी वर्ग , उच्चपदाधिकारी एवं स्वतंत्रपेशा व्यक्ति, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, ठेकेदार, फेरी करने वाले जातक ही आपना बजट ठीक रख पाते हैं। बाकी इस राशि के पुरुष परेशान एवं समस्या से घिरे रहते हैं। पारिवारिक खर्च हमेशा कलह का कारण बनता है।

इस सबके बावजूद किसी न किसी प्रकार जीवन की गाड़ी खींच ले जाते हैं। इस राशि का गृहस्थ जीवन तनावपूर्ण बना रहता है।

इस राशि के जातकों का व्यवसाय, मिथुन राशि के समान ही होता है, पर कुछ जातक राजनेता, भविष्यवक्ता तथा विदेशी व्यापारी बड़ी कम्पनी के मालिक होते हैं। इनका जीवन प्रायः दो व्यवसायों से सम्बधित रहता है। रंग रसायन एवं ऋतु बदलने का असर इन पर शीघ्र होता है। जीवन के लगभग हर क्षेत्र में सफल रहते हैं।

इस राशि का शुभ रंग सलेटी है, हरा और काला भी शुभ रंग है। रत्न इसका पन्ना, ओनेक्स एवं हरा हकीक भी हैं। यह रत्न सबसे छोटी अंगुली में धारण करना उत्तम रहता है।

इस राशि के जातकों की आयु प्रायः 75 से 80 वर्ष तक जाती है, पर बीच में 20-30-38 वर्ष की आयु में भय बना रहता है। इस राशि वालों की वृद्धावस्था मिश्रित फल देने वाली होती है। सुखी भी हो सकती है और नहीं भी। दुःखी भी हो सकती है और नहीं भी।

बहुत-से संकट और दुःख इस राशि के जातक अपने कोमल स्वभाव, दुहरे स्वभाव और कल्पनाओं में डूबे रहने के कारण पाते हैं। इस राशि के जातक साधारण तौर पर हीनता के शिकार होते हैं।

इस जातक में अगर दृढ़ निश्चय हो तो वह राशिगत प्रभाव और हस्तरेखा को भी बदल सकता है।



तुला
(23 सितम्बर से 22 अक्तूबर)
(रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते)

यह राशि भी वृषभ से अपना सम्बन्ध रहती है। शुक्र अपने दीर्घाकार के कारण

रेखाओं के इस अंश पर भी अपना प्रभाव डालता है और इस राशि का स्वामी ग्रह बन गया है। केवल आकृति तथा अन्य गुणों में अंतर है। आकाश मंडल में इसके विभाजन की आकृति तराजू के समान है। ऐसा प्रतीत होता है मानो दो वरावर पलड़े वाली आकृति है। इस तराजू के कारण ही इस राशि का नाम तुला है। इसका भी अंक वृषभ राशि के समान 7 है।

चित्रा के 3-4 चरण, स्वाति के चारों चरण तथा विशाखा के 1-2-3 चरण इस राशि के अंश में हैं। इसका महा कार्तिक है। वृषभ स्थिर राशि है और यह चर है। इसका तत्व वृषभ से भिन्न आकाश है, यह पृष्ठोदय नहीं है, शीर्पोदय है। लिंग इसका पुरुष है। दिशा पश्चिम है। निवास स्थान बाजार-हाट है। रंग रंग-बिरंगा है, द्विपद राशि है, शरीर में इसका स्थान नाभि है। प्रकृति वात और कफ है, ऋतु बसन्त है, स्वाद अम्ल है, सौरमण्डल में मंत्री पद से सम्बन्ध है, इन्द्रिय ज्ञान स्वाद है। आकार अष्टकोण है, ज़ाति वैश्य है।

इसके स्वामी ग्रह शुक्र का वैज्ञानिक विवेचन वृषभ राशि में दिया जा चुका है। अतएव इसका वर्णन पुनरावृत्ति होगी। पाठकगण अपनी सुविधा के लिए देखें वृष राशि।

ज्योतिष और वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर इस राशि के जातक का जीवन इस प्रकार उभर आता है।

इस राशि के जातक न्याय और आदर्श को बड़ा महत्व देते हैं। धार्मिक परम्पराओं और समाज के रिवाजों का यह उल्लंघन नहीं करते हैं। इनका कद प्राय: मध्यम होता है। नाक व नक्शा भी मध्य स्तर का होता है। वाक्पटु (वर्णिक) होते हैं। ललाट सुन्दर आंखें बड़ी सौम्य होती हैं। इनका शरीर निर्माण बड़ा सन्तुलित होता है। इस राशि की स्त्रियां बड़ी आकर्षक और बात बनाने की कला में प्रवीण होती हैं।

वर्णिक वृत्ति के कारण यह अपना स्वार्थ हर काम में देखते हैं। बिना नाम-तौल किए न ही कोई काम करेंगे और न ही कोई कदम उठायेंगे। इनका हर क्रिया-कलाप नपा-तुला होता है। यह बड़ी ही सरलता से आदमी को तौल लेते हैं कि उसके भीतर क्या है? मनुष्य को पहचान लेने में यह बहुत पारखी होते हैं। बात शिष्ट स्वाभाव से करते हैं। इस राशि की स्त्रियों में धार्मिक प्रवृत्ति बहुत होती है। स्त्री-पुरुष दोनों शांत एवं मृदु स्वभाव के होते हैं। यह कल्पनाशील नहीं होते और न ही हवाई किले बनाते हैं, वरन् एकदम ठोस और सादा व्यवहार से कार्य करते हैं। अपना काम समय पर करते हैं और समय के पाबन्द होते हैं।

इस राशि वालों का दाम्पत्य जीवन अगर पुरुष तुला राशि है तो बड़ा सन्तुलित होता है। अगर पति की तुला राशि नहीं है, पत्नी की है, तो वह भरसक अपना दाम्पत्य जीवन सन्तुलित रखने की चेष्टा करेगी, जितना उससे हो सकेगा, वह करेगी और अगर पति उसकी सलाह मानेगा तो वह अवश्य ही दाम्पत्य सुख प्राप्त करके रहेगा अन्यथा नहीं।

नपा-तुला दाम्पत्य जीवन, न अधिक प्यार, न ज्यादा प्रगाढ़ता और न ही अति का मनमुटाव और नपा-तुला समुचित शोचनीय सैक्स और बीमारी तथा सन्तुलित परिवार इस व्यक्ति का होता है। एक प्रकार से इस राशि के लोग आदर्श दम्पत्ति होते हैं, सन्तान

में एकदम परिवार नियोजन का पालन करते हैं, बड़ा ही सन्तुलित परिवार होता है।

इस रूप में तुला राशि के पुरुष अत्यन्त भाग्यवान होते हैं।

इस राशि के व्यक्ति वृष राशि से ही सम्बन्धित जीविका के साधन अपनाते हैं, पर इनमें और वृष राशि में एक अन्तर होता है। इसका कारण है इस राशि का अपना तुला स्वभाव। तुला स्वभाव के कारण वह सब काम खास तौर से व्यापार जोर-शोर से करता है। वह अपने व्यापार के कार्य में सफल भी होता है। अपने कार्य को समय पर और निश्चित ढंग से करने में निपुण होता है। न्यायालय के कामों में निष्पक्षता और सही निर्णय देने में नाम कमाते हैं।

इसका रंग रंग-बिरंगा है। नाना प्रकार के सभी रंग, विशेष रूप से नीला और सफेद, रत्न इसका हीरा है।

इस राशि के जातक का स्वास्थ्य सामान्यतः ठीक रहता है। मिरगी, नेत्र, गुप्त रोग, मूत्ररोग, कामुकता, मधुमेह, गर्दे से सम्बंधित रोग हो जाया करते हैं। इसके बावजूद यह रोग से शीघ्र मुक्ति पा जाते हैं।

इस राशि के जातक का जीवन तीनों काल में बचपन, यौवन, वृद्धावस्था में सामान्यतः ठीक रहते हैं। इतना अवश्य है कि इस राशि के व्यक्ति अपने जीवन का स्वयं निर्माण करते हैं और इन्हें सफलता मिलती है। जीवन में अधिकांश सफलतम पुरुषों की राशि तुला ही है।



वृश्चिक
(23 अक्तूबर से 21 नवम्बर)
(तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

ये मेष राशि के साथ की राशि है। इसका अंक भी 9 है और स्वामी ग्रह मंगल है। इस राशि में विशाखा नक्षत्र का चतुर्थ चरण, अनुराधा के चारों चरण तथा ज्येष्ठा के चारों चरण आते हैं। यह स्थिर राशि है। तत्व जल, शीर्षोदय, दिशा पश्चिम है, लिंग स्त्री है, जाति ब्राह्मण है, निवास स्थान पेड़ या दिन है, योनि कीट है। रंग काला है। शरीर पर इसका स्थान गुप्तांग है।

सौरमंडल में इसका आकार डंक उठाए बिच्छू के समान है। इस कारण इसका नामकरण (बिच्छू) वृश्चिक है।

इसके स्वामी ग्रह मंगल का वैज्ञानिक विश्लेषण मेष राशि में आ चुका है। पाठक वहां देख सकते हैं।

इस प्रकार ज्योतिष और विज्ञान के आधार पर इस राशि का विवरण इस प्रकार बनता है–

इस राशि के अधिकांश स्त्री-पुरुष श्यामल होते हैं। सामान्य काठी के होते हैं, उनके हाथ-पैर बिच्छू के समान शनैः-शनैः कार्य करते हैं। स्वभाव कुटिल होता है तथा बदला अवश्य लेता है। कुछ इस राशि के जातक, स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट तथा मोटे होते हैं, नाक सुतवां होती है। चेहरा तेजस्वी होता है पर बहुत साहसी, तेजस्वी और क्रोधी होते हैं। यह बहुत अवसरवादी होते हैं, समय पड़ने पर पैर छूना और काम निकल जाने पर जूते मारने के लिए तैयार हो जाना इनके लिए साधारण बात है। अपने रिश्तेदारों और मित्रों

को भी डंक मारने से नहीं चूकते हैं। व्यंग्य वाण छोड़ना, दूसरों की हँसी उड़ाना इनका विशेष स्वभाव होता है। जवाब के बहुत ही कटु होते हैं। गजब की चालाकी और फुर्ती इनमें होती है। अपना वार कर छुप जाते हैं। ऐसा दिखावा करते हैं कि जैसे कुछ किया ही नहीं है। इस राशि का जातक अपराधी हो जाने पर शीघ्र पकड़ में नहीं आता है।

इस राशि का जातक ज्यादा बीमार नहीं पड़ता है। फिर भी ब्लड प्रेशर, गरमी, बवासीर, नासूर, कैंसर आदि रोग इसे हो सकते हैं। इस राशि की स्त्रियों को मासिक धर्म की गड़बड़ बराबर बनी रहती है। साधारणतया इस राशि के जातक को कड़वी, नशीली चीजें शीघ्र हजम हो जाया करती हैं।

व्यंग्यबाण या डंक मारने की अपनी आदत के कारण इस जातक के दाम्पत्य जीवन में आए दिन कलह होती रहती है। इस राशि के पति प्राय: व्यंग्यात्मक व्यवहार पत्नी के साथ कर उसे दु:खी रखता है। इस राशि की पत्नी अपने पति को इस प्रकार के व्यंग्य बोलेगी कि उसका दिमाग खराब हो जाएगा। कटु व्यंग्य के कारण आए दिन उठा-पटक होती रहती है। केवल कर्क और इस राशि की पटरी बैठ जाती है। एक कछुआ (कड़ी खाल) उस पर बिच्छू (वृश्चिक) का क्या असर। फिर भी जीवन की गाड़ी लड़ते-झगड़ते खींच ले जाते हैं। इस राशि का जातक प्राय: परस्त्रीगामी होता है। दूसरों के दिल में घुस जाना इसका स्वभाव है। यह विशेष रूप से विवाहित स्त्रियों से अपना सम्पर्क बढ़ाता है। इस राशि की स्त्री जातक प्राय: कामुक होती है, पर अवैध सम्बन्ध प्राय: नहीं होते हैं। इसका व्यवहार कुछ ऐसा होता है कि इस राशि की महिला में व्यंग्यबाण होने के कारण पुरुष जातक कतराते हैं।

संतान यह अधिक पैदा करता है। यह व्यक्ति झूठ बोलने में बड़ा ही पटु होता है। राजनीति में इसी कारण यह पुरुष बहुधा सफल हो जाया करता है। कुल मिलाकर इसका दाम्पत्य जीवन अत्यन्त कहलपूर्ण होता है।

मेष राशि के समान इसके भी व्यवसाय वैसे ही होते हैं। इस राशि का जातक साहित्य के क्षेत्र में अच्छा व्यंग्यकार हो सकता है। सेना में, पुलिस में अधिक सफल होता है। युद्ध सामग्री तैयार करने वाला, औषधि निर्माता, रसायन का व्यापारी होना लाभदायक रहता है। इसके अलावा साधारण व्यापार में भी जम जाता है।

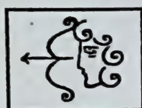
काला रंग इसका प्रिय रंग है। रत्नों में मूंगा, लालड़ी और लाल हकीक इसके विशेष रत्न हैं।

वृद्धावस्था में प्राय: शान्त जीवन व्यतीत करते हैं। इनके पास वृद्धावस्था तक काफी धन हो जाता है; इसलिए यह वृद्धावस्था में किसी के आगे हाथ नहीं फैलाते हैं।

इस राशि का जातक विदेश यात्रा से लाभ प्राप्त कर सकता है। इस राशि की जातक महिला शुक्रवार का व्रत रखे तो उसे पुत्र संतान अवश्य प्राप्त होती है। यह राशि अपने जीवन के 32वें वर्ष में विशेष रूप से उन्नति करती है। इस साल वह अपने जीवन का स्वतंत्र निर्णय करने में समर्थ हो जाता है। इस वर्ष तक जातक अगर स्वस्थ रहा तो 75 वर्ष की आयु अवश्य ही पाता है।

इस राशि के शत्रु इसकी डंक मारने की आदत के कारण बहुत होते हैं। अपने पर नियंत्रण कर यह बहुत-से अपने काम बिगड़ने से बचा सकता है। वैसे इस राशि

वाले का जीवन मध्यम सुख वाला तो निश्चित रूप से होता है। इस राशि के जातक का भाग्योदय निश्चित रूप से 35 वर्ष की आयु के पश्चात् होता है।



धनु
(22 नवम्बर से 21 दिसम्बर)
(ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे)

सौरमण्डल में इस राशि की आकृति को आकाश में देखने पर ऐसा लगता है, मानो अगला भाग किसी मनुष्य का है, जो अपने हाथ में तीर ताने है और पीछला भाग घोड़े के समान लगता है। इस कारण इस राशि का नाम धनु किया गया है। यह राशि वर्ग की नौवीं राशि है और इसका सभी राशियों में नौ के कारण महत्व है। इस राशि का अधिपति देवता ग्रह गुरु या बृहस्पति है। बृहस्पति देवताओं के गुरु है, बृहस्पति को काल पुरुष में ज्ञान के स्थान पर माना गया है। इस ग्रह के बारे में कहा गया है कि यह शरीर से सामंत है। नेत्र शहद के समान हैं, गौर वर्ण और श्याम केश तथा लम्बे कद का है।

मधुनिभनयनो मतिमानुपचित मांसः कफात्मको गौरः।
ईषत्पिंगल केशो भेद सारो गुरुदीर्घः।।

इसका महा पौष (दिसम्बर-जनवरी) माना गया है। 20 दिसम्बर से 19 जनवरी तक माना गया है। द्वि-स्वाभाव की राशि है। पृष्ठोदय है, तत्व अग्नि है। दिशा उत्तर-पश्चिम है। लिंग पुरुष है। इसका निवास युद्ध-स्थल माना गया है। इसका प्रथम भाग द्विपद और पिछला भाग चतुष्पद माना गया है। एक यही राशि है जो आधी द्विपद है और आधी चतुष्पद है। शरीर में इसका स्थान जांघ और नितम्ब में माना गया है। इसका ऋतु हेमंत है। रंग सुनहरा है। सत्वगुणी है। अधिपति ग्रह का रत्न "पुखराज" है। ग्रह के देवता स्वयं ब्रह्मा या शिव है। मंत्रिमण्डल में शुक्र के समान मंत्रिपद प्राप्त है। आकार क्रांति व्रत के समान है। अंक 3 है। वैदिक कालीन आर्यों को भी इसका ज्ञान था। तन्त्र दीप में बृहस्पति (गुरु) के जन्म का उल्लेख है। महाभारत में वेदव्यास ने भी इसका वर्णन किया है।

विज्ञान के अनुसार इस ग्रह का आकर इतना विशाल है कि सौरमण्डल के सभी ग्रहों के आकार के दुगने से भी अधिक हैं। पृथ्वी के कई गुना बड़ा है। सूर्य से इसकी दूरी लगभग पचास करोड़ मील की है। यह प्रति घण्टे 25000 मील की गति से घूम रहा है। वैज्ञानिकों का मत है कि बृहस्पति के बादलों के नीचे विशाल क्षेत्र और सामान्य तापमान वाला वातावरण है। वहां के वायुमण्डल में अमोनिया और हाइड्रोजन के साथ पानी भी है। इस कारण वहां जीवन की सम्भावना अधिक है। इसी कारण भारतीय ज्योतिष में इसे 'जीव" माना गया है। वहां तेज गति और कम आयु वाले जीवों की सम्भावना है। इस कारण इसका रंग सुनहरा बतलाया गया है।

इस ज्योतिष-विज्ञान विवेचन के अनुसार इस राशि के जातकों का विवरण इस प्रकार बनता है-

इस राशि के जातक अच्छे-खासे डीलडौल वाले और आकर्षक होते हैं। इनकी आकृति प्राचीन आर्यों के समान तथा यूनानी-सी लगती है, खास तौर से इस राशि के जातक की जांघें बड़ी सुडौल होती हैं। इसकी जंघाओं में मछलियां पड़ती हैं। नेत्र सुन्दर

और सीना प्रायः चौड़ा होता है। यह शानदार ढंग से चलते हैं मानो युद्ध-स्थल की ओर जा रहे हों। इस राशि की स्त्रियों की चाल बड़ी ही गर्वीली होती है। सामान्य रूप से इस राशि के जातक सुदर्शन होते हैं। भिन्नता के बावजूद इनमें चुम्बकीय आकर्षण होता है।

इस राशि के जातक फुर्तीले, चुस्त, कार्यकुशल, वाक्पटु और हमेशा मन लगाकर अपना कार्य करने वाले होते हैं। इनका निश्छल हृदय होता है और तीर के समान गति से यह अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सर्वदा क्रियारत रहते हैं। दूसरों को जल्दी पहचान लेते हैं।

इनका स्वभाव क्रोधी होता है। थोड़ा-सा भी हास्य इनको पसन्द नहीं है। अपने मान-अपमान का ध्यान रखते हैं। थोड़ी-सी बात पर इतने क्रोधित हो जाते हैं कि इनको होश नहीं रहता है कि क्या कर रहे हैं या क्या नहीं कर रहे हैं? बहुत शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं। समय के पाबन्द होते हैं। कठोर परिश्रम करते हैं। दिखावा, ढोंग, तड़क-भड़क, साज-सज्जा इनको अच्छी नहीं लगती। यह साधारण जैसे हैं वैसे ठीक रहते हैं। इस राशि की स्त्रियां विशेष शृंगारीय नहीं होती हैं। अपने से विपरीत लिंग वाले के प्रति प्रबल आकर्षण रखते हैं और निभाते हैं। विश्वासघात, छलावा नहीं करते हैं। इसमें काम वासना होती है, पर संयमित एवं शिष्ट ढंग से। इस राशि की महिलायें प्रायः पतिव्रता होती हैं। व्यापारी किस्म की भावना इस राशि के जातक में अवश्य होती है। अपनी इच्छाएं, भावनाएं गुप्त रखते हैं। चुपचाप रहकर उन पर अमल करते हैं। बहुत सोच-समझकर यह अपनी योजना बनाते हैं। अधिकतर चुप रहकर दूसरों की बात सुनते हैं, अपनी नहीं कहते।

प्रायः हृदय रोग, बायीं आंख, सीना, किडनी (गुर्दे), कान की बीमारी इनको होती है। विशेष रूप से जांघों में इनको नाना प्रकार की पीड़ा हो सकती है।

इनका स्वयं का व्यवसाय या जीविका का साधन स्वयं के कारण चला होता है। भवन निर्माता, वैज्ञानिक, बैंकर, डिजाइनर क्लर्क, लेखक, अध्यापक, उच्च पदाधिकारी, ज्योतिष, वायुयान चालक आदि के रूप में कार्य करते हैं। इनका प्रत्येक व्यवसाय किसी न किसी प्रकार की शिक्षा अथवा ज्ञान से ही सम्बंधित होता है। इनका कार्य-क्षेत्र विशाल होता है, जन-सम्पर्क का दायरा काफी बड़ा होता है।

सामान्यतः इनका दाम्पत्य जीवन सुखी होता है, यह इसके क्रोध या काम-वासना की अधिकता के कारण कलहपूर्ण होता है। अपने द्विस्वभाव और द्विपद या चतुष्पद के कारण टकराव होता रहता है। फिर भी गाड़ी चल जाती है। सन्तान को नियन्त्रण में रखते हैं और संतान भी अधिक होती हैं।

इनका प्रारम्भिक जीवन साधारण-सा होता है। पर 40-45 वर्ष की आयु के बाद इनके जीवन में स्थायित्व आ जाता है। वृद्धावस्था प्रायः सुखद होती है। आयु लगभग 75-80 तक मानी गयी है।

इस राशि के जातक पैसे को बड़ा महत्व देते हैं, कंजूस होते हैं तथा राजनीति के क्षेत्र में अपने उग्र स्वभाव के कारण आलोचना का केन्द्र बने रहते हैं। इस राशि की स्त्रियां स्वयं नौकरी करती हैं। उत्तम होती हैं।



मकर
(22 दिसम्बर से 19 जनवरी)
(भो, जा, जी, खी, खे, खू, खो, गा, गो)

ज्योतिष में इस राशि का आकार मगरमच्छ बतलाया गया है। इसका ग्रहस्वामी सौरमण्डल का सबसे अधिक रहस्यमय ग्रह शनि है। इसका अंक 8 है। शनि के बारे में पुरातन धारणा है कि यह क्रूर एवं पापग्रह है। इसका समय सायं माना गया है। 20 जनवरी से 19 फरवरी, 22 दिसम्बर से 21 जनवरी, 15 जनवरी से 14 फरवरी माना गया है। इसमें उत्तराषाढ़ा के तीन चरण, श्रावण के चारों चरण व धनिष्ठा के 2 चरण सम्मिलित हैं। राशि चर है, तत्व पृथ्वी है, पृष्ठोदय है, जाति शूद्र है, दिशा उत्तर है, केवल इसका प्रथम भाग चतुष्पद है, निवास वन जहां पर पर्याप्त जल है, माना गया है। शरीर में इसका स्थान पैर माना गया है। इसके ग्रह शनि का अधिपति देवता यम/रूद्र माना गया है। इसका इन्द्रिय ज्ञान स्पर्श है। लिंग स्त्री है। इसका ग्रह सौरमण्डल में दूत माना गया है। यह धातु में स्नायु माना गया है।

ज्योतिष में संकेतों और प्रतीकों के रूप में दिए गए विवरण का वास्तविक अर्थ आज की वैज्ञानिक खोज में भी मिलता है। हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूज्य पूर्वजों ने जो कहा था वह सारी बातें आज की इस खोज में निहित हैं।

"शनि" सौरमण्डल का सबसे सुन्दर मनोरम पिंड माना गया है। इसके चारों ओर नीले किंकण बराबर घूम रहे हैं। वैज्ञानिकों ने भी उनका रंग नीला बतलाया है। दूर से नीला रंग काला भी दिखलाई पड़ता है। यह मन्द गति से सूर्य की परिक्रमा करता है। पृथ्वी के 25000 दिन के बराबर इसका एक वर्ष है। यह इतना विशाल है कि इसमें 700 पृथ्वी समा सकती है तथा 75 पृथ्वी के समान वजनदार है। पृथ्वी के साढ़े उन्तीस वर्ष में सूर्य की एक परिक्रमा करता है और 88,60,00,000 मील दूर है। इसके वातावरण में हाइड्रोजन है। तापमान 240 डिग्री फारेनहाइट शून्य से नीचे है। यही एक ऐसा ग्रह है, जहां पर पृथ्वी का मानव सरलता से चल-फिर सकता है, इसी कारण हमारे विद्वान् ज्योतिषियों ने इसका तत्व पृथ्वी माना है। भीष्म पर्व में भी इसका उल्लेख आया है। शनि का पर्वत मध्यमा के नीचे माना गया है और मणिबंध से निकली रेखा भाग्य रेखा, शनि रेखा, कर्म रेखा कहलाती हैं। शनि का प्रभाव जीवन पर पड़ता है। हमारे पूर्वजों ने इन तमाम वैज्ञनिक तथ्यों का पहले ही अन्वेषण कर लिया था। यह मकर-कुम्भ दो राशि का स्वामी हैं–इस रूप में शनि की वैज्ञानिक तथा ज्योतिष गणना के साथ इस राशि के निम्नलिखित गुण बनते हैं–

इस (मकर) राशि के जातक प्रायः दुबले-पतले तथा सामान्य स्वास्थ्य वाले होते हैं, इसके बावजूद इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। वैसे इनका व्यवहार व जीवन बड़ा रहस्यमय होता है। अपने बारे में यह किसी को जल्द बतलाते नहीं, या इनके विषय में प्रायः रहस्य फैला रहता है। इनके जीवन की वास्तविकता को कोई जान नहीं पाता है। वैसे इनमें आत्मविश्वास गजब का होता है। वाणी मधुर और प्रभावशाली होती है। साधारण शरीर के बावजूद यह लोगों पर अपना प्रभाव बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

इस राशि के जातक धर्म को मानते हैं। देवी-देवताओं में पूर्ण विश्वास रखते हैं।

परलोक-इहलोक मानते हैं और भूत-प्रेत भी। गुप्त विद्या में इनकी रुचि होती है और इसमें प्रायः सफल भी हो जाते हैं। यह बड़े उर्वरक मस्तिष्क के होते हैं। नई-नई योजनाएं बनाकर लोगों को चकित कर देते हैं, दृढ़ता और आत्मबल इनमें बेहद होता है। जिस काम में लग जाते हैं, उसकी अति कर देते हैं। इनकी यह विशेषता होती है। यह एक साथ कई योजनाएं बना सकते हैं, कई काम कर सकते हैं। इनमें "अहंकार" खूब होता है और अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने की आदत होती है। यह दिखावा अधिक करते हैं तथा डींगें बड़ी-बड़ी मारते हैं। चित्त इनका अस्थिर होता है। दिन की अपेक्षा रात में काम करना ज्यादा पसन्द करते हैं। दिन में काम करने से इनको बड़ा आलस्य लगता है। यह अपना जीवन स्वयं रहस्यमय बनाए रखते हैं। अपने सम्बन्ध में लोगों को नाना प्रकार की सूचना देकर भ्रम में डाले रहते हैं। इनकी वास्तविकता को समझ पाना बड़ा कठिन है।

इनका पारिवारिक जीवन प्रायः मिश्रित सुख देने वाला होता है। अपने पति-पत्नी पर अपने विचार लादते हैं। इस कारण पटरी कम बैठती है। इनकी चंचलता, अस्थिरता बाधक होती है। व्यर्थ का व्यय अधिक करते हैं। अपना बड़प्पन शान दिखलाने के चक्कर में प्रायः धनाभाव से घिरे रहते हैं। विपरीत लिंगीं के प्रति इनके मन में प्रबल आकर्षण होता है। कामुकता भी इनमें अधिक होती है। अपने बड़प्पन का प्रदर्शन करने और अपने अहंकारी स्वभाव के कारण जुबान पर इनकी लगाम नहीं होती है। इस कारण इनके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है। कभी-कभी मित्र भी शत्रु बन जाते हैं। पत्नी-पति की प्रायः पटरी न बैठने से मनमुटाव बना रहता है।

इनका कार्य-क्षेत्र पहलवानी, खिलाड़ी, इंजीनियर, पुलिस सेवा, सेना, ठेकेदारी, इमारती लकड़ी का व्यापारी, वकील, ज्योतिषी, तांत्रिक, वैज्ञानिक, गायक, कफन विक्रेता, जेलर होता है।

कोयला विक्रेता, लोहा विक्रेता तथा खदान के कार्य में यह बहुत सफल होते हैं।

रंग भी नीला, काला तथा रत्न नीलम, नीली है। नीलम सावधानी के साथ जानकार व्यक्ति से समझकर धारण करना चाहिए, वरना अनर्थ भी हो सकता है।

इस राशि के जातक का स्वास्थ्य साधारण तौर पर अच्छा रहता है, पर जोड़ों में दर्द, उदर विकार, दिमागी परेशानी, लकवा, बवासीर, बहरापन आदि रोग, प्रायः हो ही जाया करते हैं। इस राशि की महिलाओं का मासिक धर्म प्रायः अनियमित ही रहता है। उनको गर्भाशय से सम्बंधित बीमारियां लगी ही रहती हैं।



कुम्भ
(20 जनवरी से 19 फरवरी)
(गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा)

सौरमण्डल में जो घड़े के समान दिखलाई पड़ता है, वह "कुम्भ" राशि का भाग है। भारतीय ज्योतिषियों ने इसे कुंभ की संज्ञा दो और तीन नक्षत्रों को इसकी सीमा में रखा। धनिष्ठा के दो चरण, शतभिषा के चारों चरण और पूर्वाभाद्रपद के तीन चरण—इनको मिलाकर राशि कुम्भ बनाई और उसका स्वामी देवता शनि-राहु को माना। मुख्यतः शनि को ही माना जाता है, पर कुछ विद्वान् ऋषियों ने जैसे समुद्र ऋषि, पराशर आदि ने राहु

को भी इसका स्वामी माना है। ज्योतिष अंक में इसका अंक 4 माना गया है।

इस राशि का अधिपति देवता शनि सौरमण्डल का सबसे खूबसूरत ग्रह माना गया है। इसका उल्लेख महाभारत के भीष्म पर्व में आया है। शनि को क्रूर एवं पापग्रह कहा गया है। इसका तत्व पृथ्वी माना गया है। राशि स्थिर, शीर्षोदय मानी गई है। दिशा उत्तर है। जाति वैश्य और मानव शरीर में इसका स्थान घुटना माना गया है। इसका निवास कुम्भ का चाक या मटका माना गया है।

ज्योतिष का यह प्रतीकात्मक वैज्ञानिक विवरण आज के वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ कितना मेल खाता है, यह आश्चर्य की बात है, सौरमण्डल में शनि की दूरी पृथ्वी से बहुत ही अधिक है। सूर्य से ही यह 80,60,000 लाख मील दूर है। तीन किंकड इसके लगातार चक्कर लगा रहे हैं जैसा कि मकर राशि मे बतलाया है। इसका दूसरा ग्रह राहु गैसीय पिंड मात्र है। इसमें गैस के अलावा कुछ भी नहीं है, पर इसके बावजूद यह राहु एक ग्रह इसलिए गिना जाता है कि अपनी इस गैस नियंत्रण व्यवस्था के कारण यह सौरमण्डल में बड़ी अव्यवस्था फैलाता है। इसका पर्यावरण अन्य ग्रहों को प्रभावित करता है। इसकी चाल हमेशा ग्रहों से विपरीत दिशा में रहती है। इसके इस उपद्रव के कारण इसकी गणना भी ग्रहों में हो गई है।

शनि के बाद राहु और केतु को भी दो पिंडीय ग्रह न मानकर गैसीय ग्रहों में तुलना की गई है। एक प्रकार से यह धूमकेतु के समान है। धूमकेतु भी हमारा सारा जीवन अपनी ऊष्मा के कारण प्रभावित करते हैं।

इस कारण ज्योतिषीय और वैज्ञानिक दृष्टि से इस राशि के जातकों का फल इस प्रकार बनता है–

इस राशि के जातक कृशकाय पर आकर्षक व्यक्तित्व के होते हैं। उनका शरीर विशेष मोटा नहीं होता है। दुबलापन इनमें होता है, पर शारीरिक क्षमता तथा आत्मविश्वास इनमें बहुत होता है। इस राशि की महिलाएं प्रायः छरहरे बदन की आकर्षक होती हैं। इनका यौवन छलकते घड़े के समान होता है। इनकी वाणी में बड़ी मिठास तथा यह दूसरे पर प्रभाव डाल सकने में समर्थ होती है। इस राशि के जातकों की पुतलियों का रंग गहरा काला होता है।

राशि स्थिर होने के कारण यह बहुत आत्मविश्वासी होते हैं और बड़ी लगन के साथ अपना काम पूरा करते हैं। समय के पाबन्द वाक्पटु और ईमानदार होते हैं। इनमें दार्शनिक प्रवृत्ति अधिक होती है तथा यह नए–नए ख्यालों में हमेशा डूबे रहते हैं। इनके स्वभाव में शक की मात्रा बहुत अधिक होती है तथा हरएक पर शक करते हैं। इन्हें वहम भी बहुत होता है। धर्म–कर्म और भूत–प्रेत तथा गुप्त विद्याओं में इनके मन में बड़ी रुचि रहती है, अपने इस स्वभाव के कारण यह मित्र को भी बना लेते हैं।

इनको रंग नीला और काला प्रिय होता है तथा इनको शुभ रत्न नीलम, नीली और नीला हकीक है। नीलम को धारण करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी से इसकी विधि और क्रियाओं को समझ लेना अति आवश्यक है।

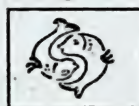
इस राशि के जातकों में उतार–चढ़ाव बने रहते हैं, जीवन का प्रारम्भिक काल प्रायः बहुत अच्छा होता है। यौवन काल में यह अपनी उन्नति की चरम सीमा को छू लेते

हैं, पर इनकी वृद्धावस्था का समय बहुत ही क्षीण होता है। वैसे अध्यापक, लेखक, दार्शनिक, वैज्ञानिक, ज्योतिषी होने पर इनको वृद्धावस्था में सम्मान तथा पदक मिलते हैं। वैसे इनकी वृद्धावस्था का काल दुर्वल होता है।

रेलवे, हवाई हड्डे, खदानें, टेक्नीकल कार्यों, मैकेनिक, वैज्ञानिक, स्टेनो, लेखक, दार्शनिक, अध्यापक, क्लर्क आदि इनका व्यवसाय होता है। यह लेखन व पत्रकारिता आदि के क्षेत्र में बहुत सफल होते हैं। इस राशि के लोग बड़े सटीक सही भविष्यवाणियां भी करते हैं। इस राशि के लोगों का अति इन्द्रिय ज्ञान कुछ अधिक होता है।

स्वास्थ्य साधारणतः इनका कमजोर रहता है। सीने की बीमारियां, टखने की बीमारियां, बवासीर, चर्म आदि रोगों से ग्रसित रहते हैं, पर अपने आत्मविश्वास के बल पर यह शीघ्र स्वास्थ्य लाभ कर लेते हैं।

इस राशि वालों का दाम्पत्य जीवन साधारण तौर पर सामान्य सुखदायक रहता है। यह बदनामी और अपमान से डरते हैं। स्वभाव से समझौता होने के कारण प्रेम के मामले में असफल रहते हैं। संतान मध्यम होती हैं। जो भी संतान हों उनसे इस राशि के जातक को सुख मिलता है। इस राशि की महिलाएं घर को घर समझने वाली, पतिपरायण और धार्मिक स्वभाव की होती हैं। परिजनों व मित्रों में इनका मान-सम्मान बना रहता है। कुल मिलाकर एक अच्छा जीवन व्यतीत करते हैं और हर क्षेत्र में सफल होते हैं।



मीन
(20 फरवरी से 20 मार्च)
(दी, दू, थ, क्ष, त्र, दे, दो, चा, ची)

ज्योतिष की इस बारहवीं और अन्तिम राशि का आकार सौरमण्डल में तैरती हुई दो मछलियों के समान हैं। यह मछलियां एक-दूसरे की विपरीत दिशा में तैरती हैं अतएव इनका आकार अंगुली के 69 के समान बनता है। पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद तथा रेवती के क्रमशः 1, 4, 4 चरण इसमें हैं। इस राशि के महाधिपति बृहस्पति और केतु को माना गया है। बृहस्पति का उल्लेख धनु राशि में आ चुका है। केतु भी राहु के समान गैसीय पिंड है। यह केतु राहु का सहोदर माना गया है।

इस राशि का माह चैत्र (मार्च-अप्रैल) माना गया है। 20 मार्च से 29 अप्रैल, 19 फरवरी से 20 मार्च, 15 मार्च से 14 अप्रैल माना गया है। अंक ज्योतिष में इसका अंक 7 है। द्विस्वभाव है। तत्व जल है, पृष्ठोदय है। दिशा उत्तर है। लिंग स्त्री है। जाति ब्राह्मण, निवास जल और योनि कीट है। शरीर में पैरों का तलुवा इसका स्थान है।

केतु, बृहस्पति के वैज्ञानिक निष्कर्ष और ज्योतिष की सूक्ष्म गणना के अनुसार इस राशि का विवरण इस प्रकार बनता है–

इस राशि के बालक साधारण रूप-रंग और साधारण स्वास्थ्य वाले होते हैं। इनका स्वभाव चंचल होता है। हमेशा कुछ-न-कुछ उधेड़-बुन में पड़े रहते हैं। इनमें शारीरिक क्षमता बहुत कम होती है पर आत्मविश्वास कुछ अधिक होता है। वहमी और शक्की होते हैं। कुल मिलाकर इनका व्यक्तित्व बड़ा प्रभावशाली होता है तथा चाल में बड़ी फुर्ती होती है। खास तौर से आंखें मछलियों के समान जलज और नासिका मत्स्याकार होती है।

अस्थिरता, चंचलता, चपलता, इनका विशेष स्वभाव होता है। छिछोरापन पसन्द नहीं करते। एकांत पसन्द करते हैं, अधिक हँसी-मजाक इनको पसन्द नहीं होता है। अपना काम ठीक समय पर और सटीक करते हैं, पर द्विविधा में डूबे रहते हैं।

इस राशि के जातक फेफड़े, बुखार, आंख, पेट में गैस आदि बीमारियों से ग्रसित रहते हैं, पर शीघ्र स्वास्थ्य लाभ कर लेते हैं। इनको प्रायः रहस्यमय बीमारियां हो जाया करती हैं। इस राशि की महिलाएं प्रायः ऊपरी बाधा से पीड़ित रहती हैं।

मीन राशि वाले का आर्थिक पक्ष हमेशा कमजोर रहता है। इस कारण इसकी गृहस्थी की गाड़ी बड़ी कठिनता से चल पाती है। इसके पल्ले पैसा आता है, पर वह टिकता नहीं है। इनका पारिवारिक जीवन बड़ा कलहमय रहता है तथा अपनी कामुकता के कारण इनका मैथुन अपनी राशि के आकार के समान विकृत होता है। इनसे प्रेम सम्बन्ध स्थायी और पक्के होते हैं। संतान की तरफ से इनका सामान्य सुख ही मिलता है।

फिल्म व्यवसाय, यात्रा, नियोजन, हवाई सेना, डेयरी कार्य, स्टेनोग्राफर, मछली पालन का व्यापार, कृषि, द्रव्य व्यवसाय, गुप्तचर विभाग, तांत्रिक, भूमिगत कार्यकर्त्ता, गुप्तचर सेवा, राजनीति, सर्जन आदि इनके प्रमुख व्यवसाय होते हैं। द्रव्य से सम्बन्धित कार्य बैंकर, व्यापार में इन्हें अधिक सफलता मिलती है।

इस राशि का रत्न पुखराज, सुनहला, पीला हकीक और लहसुनिया हैं। इस राशि का रंग गहरा भूरा है।

इस राशि के जातक का जीवन एक बड़ी विशेषता रखता है। यह राशि अपने जीवन का स्वयं निर्माण करती है। अपने पैरों पर खड़े होकर ही यह अपना काम करते हैं और इसके लिए किसी और की सहायता नहीं लेते हैं। अपना स्वनिर्मित जीवन इनको प्रिय होता है।

मीन राशि के जातक को सलाह दी जाती है कि वह केवल भावनाओं में बहकर या द्रवित होकर जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय न लें। गलत तरीके से या जोश में आकर पैसे का दुरूपयोग न करें अन्यथा पछताना पड़ सकता है।



5 लाल किताब द्वारा राशियों के उपाय

मानव जीवन के कष्टों को दो प्रमुख भागों में विभाजित किया जा सकता है। एक वह कष्ट जिनकी उपायों द्वारा शांति की जा सकती है और दूसरे जिनको भोग कर ही निवारण होता है। यह जन्मपत्रिका के अध्ययन से ज्ञान होता है। लाल किताब के अनुसार बहुत कष्टकारी ग्रह की वस्तु को धरती में गाड़कर उस ग्रह को शांत करना, जैसे अगर अशुभ शनि षष्ठ भाव में बैठा हो और अत्यंत कष्टकारी हो, तो सरसों के तेल (शनि) को मिट्टी के पात्र में भरकर और उसका ढक्कन अच्छी तरह बंद कर किसी तालाब के किनारे दबा देने से क्रुद्ध शनि शांत होता है।

कुछ बुरे प्रभावों को दूर करने के लिए उस ग्रह से सम्बंधित वस्तु को बहते जल में बहाकर कष्टों को दूर करना चाहिए।

कम अशुभ और शुभकारी ग्रह को पूर्ण शुभकारी बनाने के लिए उसके मित्र ग्रह को प्रसंन्न कर उससे सहयोग लेना, जैसा अगर छठे भाव में केतु अशुभ फल दे रहा हो, तो जातक को बायें हाथ की छोटी अंगुली में सोने की अंगूठी पहनने से छठी राशि का बुध और वृहस्पति प्रसन्न होकर केतु पर अंकुश रखते हैं।

थोड़े अशुभ ग्रह के बुरे प्रभाव को समाप्त करने के लिए उसके शत्रु की वस्तु अपने पास रखना, जैसे अष्टम मंगल के बुरे प्रभाव को रोकने के लिए हाथीदांत की कोई वस्तु अपने पास रखना लाभ देने वाला है।

किसी शुभ ग्रह की अशुभता दूर करने के लिए उस ग्रह की वस्तु को उसके दूसरे कारक को अर्पण करना, जैसे बृहस्पति की अशुभता दूर करने के लिए चने की दाल को मंदिर में चढ़ाना, परन्तु मंदिर में कोई वस्तु चढ़ाने से पहले यह देखना आवश्यक है कि दूसरे भाव में उस ग्रह के शत्रु न बैठे हों, अन्यथा हानि होगी।

ग्रह के देव की उपासना करना। जैसे अगर छठे भाव स्थित राहु ऐसा रोग दे रहा हो, जिसका पता न चले, तो नीले फूल को सरस्वती को अर्पण करने से निदान में सफलता मिलती है।

दो अशुभ ग्रहों को समाप्त करने के लिए उनके मित्र ग्रह को उनके मध्य स्थापति करना, जैसे शनि और सूर्य के छठे भाव में अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए उनके साथ में बुध को स्थापित करने के लिए घर में फूलों वाले पौधे अधिक लगाने चाहिएं।

सूर्य कुण्डली में बलवान होने पर जातक को सोना, गेहूं, तांबे की वस्तु का कभी दान नहीं देना चाहिए। मंदिर में चढ़ाना चाहिए। पीपल के पेड़ पर जल चढ़ाने और हल्दी लगाकर सूती धागा नौ गुरुवार (बृहस्पतिवार) तने के चारों ओर लपेटना चाहिए।

आइए अब राशियों के विषय में क्रमवार विस्तार से जानें!

मेष राशि

मेष राशि के जातकों को जीवन में सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्नलिखित उपाय करने चाहिएं–

लाल किताब : मांगलिक दोष

ज्योतिष में मंगली दोष के भय से सभी परिचित हैं। सामान्यत: अगर किसी की जन्मपत्रिका में मंगल दोष बता दिया जाए, तो उसके माता-पिता उसके दाम्पत्य सुख को लेकर चिंतित रहते हैं। मंगल जन्मकुण्डली में किसी भी भाव में स्थित होकर सप्तम भाव पर अपना अशुभ प्रभाव डालता है, तो मंगली दोष उत्पन्न करता है। अष्टम भाव जीवनसाथी की आयु का भाव है। इस भाव में स्थित होकर मंगल जीवन की हानि करके वैधव्य-विधुर योग बनाता है। मंगल जन्मकुण्डली में प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों में स्थित होकर मंगल दोष उत्पन्न करता है।

लाल किताब में मंगल को शेर और केतु को कुत्ता बताया गया है। इसलिए मंगल के साथ केतु की युति मंगल के प्रभाव में अशुभता उत्पन्न करती है। अगर जन्मकुण्डली में सूर्य, शनि एकत्रित हों, तो भी मंगल बद हो जाता है। मंगल के साथ बुध की युति भी मंगल के प्रभाव में अशुभता उत्पन्न करती है। अगर मंगल पर राहु की दृष्टि हो, तो भी मंगल अशुभ हो जाता है। मंगल को लाल किताब में अत्यन्त महत्वपूर्ण ग्रह माना गया है। लाल किताब की दृष्टि में मंगली दोष के क्या अशुभ परिणाम बताए गए हैं, इसका विवरण दे रहा हूं!

पहले भाव में मंगल

पहले भाव में बैठे मंगल को किस्मत को जगाने वाला, मैदान-ए-जंग का शूरवीर और इंसाफ की तलवार बताया गया है। अगर मंगल शुभ हो, तो विवाह के पश्चात् जातक को समाज में उच्च दर्ज़ा दिलाता है। वह अपनी नेकी और सच्चाई के नियम पर चलता है। अगर मंगल पहले भाव में हो तथा सातवें घर में सूर्य, चन्द्र या गुरु के साथ बुध या अन्य पापी ग्रह हों, तो ऐसा जातक 'आ बैल मुझे मार' के उसूल का होता है। अगर पहले भाव में मंगल शनि के साथ हो, तो विवाह के बाद जातक की ससुराल का घर मालामाल हो जाएगा। अगर पहले घर में शनि मंगल का योग हो और ऐसा व्यक्ति पराई औरत से प्रेम-प्रसंग करे, तो वह निश्चित ही बर्बाद होता है।

पहले घर में मंगल के दुष्प्रभावों से बचने के लिए मिट्टी की सुराही में सौंफ अथवा शुद्ध मधु डालकर सुनसान स्थान में दबा देना चाहिए।

चौथे घर में मंगल

लाल किताब में चौथे भाव के मंगल को जलती आग या बदी का सरदार बताया गया है। चौथे घर में अशुभ मंगल मंद भाग्य करता है। ऐसे जातक में बदला लेने की भावना होती है। अपनी इस आदत के कारण ऐसा आदमी जीवन में बहुत नुक़सान उठाता

है। घर के पास यदि वेरी का वृक्ष हो, तो चौथा मंगल और भी अशुभ फल देता है। चौथे घर में मंगल हो तथा घर का दरवाजा दक्षिण दिशा की ओर हो, तो भी मंगल बहुत अशुभ हो जाता है। सुख नहीं मिलने देता, यदि घर के सामने कोई ऐसा पीपल वृक्ष हो जिसकी टहनियां काटी हुई हों, तो मंगल अपना वद प्रभाव विशेष रूप से देता है। यदि मंगल चार में एवं केतु आठवें घर में हो, तो विधवा औरतों के कारण उसका जीवन नरक हो जाता है। अपने ही खानदान के लोग उसे बर्बाद कर देते हैं। चौथे घर में मंगल के कारण अगर घर में आग लगने की घटनाएं हो रही हों, तो मिट्टी के पात्र में मधु भरकर छत पर रख दें तथा मंगलवार के दिन उसे श्मशान में जाकर दबा दें। चिड़ियों को मीठा डालना तथा हाथीदांत अपने पास रखना भी चौथे घर में स्थित मंगल के अशुभ प्रभावों को दूर करता है। चौथे घर में मंगल-शनि का योग होने पर जमीन खरीदने पर जातक की उन्नति होती है। चौथे घर में मंगल के साथ यदि केतु हो, तो भाई एवं बेटे दोनों को बर्बाद कर सकता है। ऐसी स्थिति में घर में दो कुत्तों (नर-मादा) को पालना मंगल-केतु के विष को कम करेगा।

सातवें घर में मंगल

सातवें घर में बैठे मंगल को मीठा हलवा बताया गया है। अगर उस कुण्डली में सूर्य-शनि इकट्ठे हों तथा मंगल का बुध से सम्बंध हो, तो ऐसे जातक का भाग्य मंदा है। उसे जीवन में धोखा मिलता है। यदि मंगल सातवें घर में हो तथा गुरु या शुक्र मे से कोई एक ग्रह पहले घर में हो, तो ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में जिस चीज की भी अभिलाषा रखेगा, उसकी वह अभिलाषा कम-से-कम एक बार अवश्य पूरी होगी। यदि सातवें भाव में मंगल बद हो, तो ऐसा व्यक्ति दूसरों की मुसीबतें अपने गले डाल लेता है जिसके कारण उसकी दिनचर्या अस्त-व्यस्त एवं दाम्पत्य जीवन दुःखद हो जाता है। यदि शनि का प्रभाव युति अथवा दृष्टि के द्वारा सातवें घर में मंगल पर हो, तो छोटी दीवार बनाकर उसे गिराते रहना चाहिए।

आठवें भाव में मंगल

आठवें घर में बैठे मंगल को मौत का फंदा कहा गया है। ऐसा जातक इंसाफ पसन्द होता है। स्त्री पक्ष से ऐसे व्यक्ति को शाप मिलता है। आठवें घर में मंगल हो तथा दूसरा घर ग्रहों से खाली हो, तो 28 वर्ष की उम्र तक मंगल अपना जहर जातक पर उड़ेलेगा। मंगल के जहर को दूर करने के लिए कुत्ते को रोटी खिलाना होगा। आठवें घर में मंगल के साथ शनि हो, तो घर में अनेक मुसीबतें एवं अकाल मृत्यु की सम्भावना भी बनती है। आठवें घर में मंगल के साथ केतु का दुष्प्रभाव भाई और लड़के पर अपना जहरीला प्रभाव डालता है।

बारहवें भाव में मंगल

मंगल बारहवें घर में व्यर्थ के झगड़ों में धन व्यय कराता है। बड़े भाइयों को कष्ट देता है तथा स्त्री-सुख में व्यवधान करता है। बारहवें मंगल के दुष्प्रभावों को दूर करने

के लिए कुत्ते को मीठी रोटी खिलानी चाहिए। यदि पीली अथवा खाकी रंग की पगड़ी सिर पर बांधी जाए, तो भी मंगल की अशुभता समाप्त होती है।

मीठी रोटियां कुत्ते को खिलाने से जातक को अचानक सफलता प्राप्त होती है तथा परेशानी समाप्त होकर अनुकूलता मिलनी प्रारंम्भ हो जाती है। बरसात का पानी कांच के बर्तन में भरकर शयनकक्ष में 43 दिन तक रखने से जातक की समस्या हल हो जाती है।

अगर दिया हुआ धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो दो पकी हुई लाल ईंटें सफेद वस्त्र में बांधकर अपनी मनोकामना कहते हुए मिट्टी में दबा देनी चाहिएं। यह प्रयोग मंगल को उपयुक्त रहेगा।

लॉटरी, सट्टे, शेयर आदि में अचानक लाभ के लिए शुद्ध मधु को मिट्टी के पात्र में भरकर घर में रखना चाहिए तथा उसका नियमित रूप से सेवन भी करना चाहिए।

अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा शुभ फल नहीं मिलता हो, अनुकूलता के लिए रेवड़ियां बहते हुए जल में प्रवाहित करें।

अगर स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो इनसे बचने के लिए गुड़ लेकर उसे अपने ऊपर से वार कर किसी भिखारी को मंगलवार के दिन देना चाहिए।

दाम्पत्य सुख के लिए दो सूखे नारियल बहते हुए जल में प्रवाहित करने चाहिएं। यह प्रयोग शुक्रवार के दिन करना चाहिए। किसी बन्द कुएं में सात मंगलवार तक तांबे के पात्र से जल चढ़ाने से कामना अवश्य पूर्ण होती है।

अगर जीवन में अचानक बाधाएं आती हों, तो भवन में मुख्य द्वार के दोनों ओर तांबे की कीलें रविवार के दिन दोपहर के समय ठोकनी चाहिएं।

संतान-सुख के लिए तांबे की वस्तुएं किसी मन्दिर में भेंट करनी चाहिएं। मंगल बलवान होने पर मिठाई, शहद दूसरों को नहीं देने, खिलाने चाहिएं।

मेष राशि के जातकों के भाव का स्वामी मंगल होता है। इस राशि के जातकों की आयु प्रायः नब्बे वर्ष होती है और मृत्यु प्रायः बुधवार के दिन होती है।

वृषभ राशि

वृष राशि के जातकों को अपने जीवन में सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

अगर धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो अपनी इच्छा पीपल के वृक्ष के पत्ते पर गोरोचन से अनार की कलम से लिखकर उसे स्थिर जल में संध्या के समय छोड़ देना चाहिए। लॉटरी, शेयर आदि में अचानक लाभ के लिए घर में वर्षा का जल एकत्रित करके उसमें मनी प्लांट का पौधा लगाना चाहिए।

सफेद फूल का पौधा अपने घर में लगाना चाहिए। इससे जातक को अपने जीवन में स्थायित्व प्राप्त होगा तथा सफेद फूल को अपने पास रखने से कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। मीठे चावल कौओं को डालने से जीवन में अचानक आने वाली रुकावटें दूर होती हैं।

अगर स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो इनसे बचने के लिए गाय को

चरी एवं ज्वार खिलाना चाहिए। अगर जीवन में बाधाएं आती हों, तो गुरुवार के दिन पीले रंग का ध्वज लेकर उसे किसी मंदिर की चोटी पर लगाना चाहिए तथा मंदिर में पीले वस्त्र का दान करना चाहिए।

संतान-सुख के लिए पौधों की देखभाल में समय लगाना चाहिए तथा नए पौधे रोपकर उनकी देखभाल करनी चाहिए। कुछ समय के लिए मौन रखना लाभदायक रहता है। दाम्पत्य सुख के लिए मिट्टी के पात्र में सौंफ डालकर उसे सुनसान स्थान पर चुपचाप दबा देना चाहिए। अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा फल नहीं मिलता हो, तो जीवन में अनुकूलता के लिए चाँदी की दो ठोस गोलियां बनवाकर 43 दिन तक अपने पास रखनी चाहिएं। शुक्र बलवान हो, तो सिले हुए सुन्दर वस्त्र, इत्र और आभूषण उपहार में नहीं देने चाहिएं।

राशियों में वृषभ राशि दूसरी राशि है। इसका स्वामी शुक्र है। वृष राशि के जातक की आयु लगभग छियानवें वर्ष होती है। मृत्यु का दिन प्रायः शुक्रवार ही होता है।

मिथुन राशि

मिथुन राशि के जातकों को अपने जीवन में सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

संतान-सुख के लिए कुछ समय पौधों की देखभाल में अवश्य लगाना चाहिए तथा नए पौधे रोपकर उनकी देखभाल करनी चाहिए। दाम्पत्य सुख के लिए मिट्टी के पात्र में सौंफ डालकर उसे जंगल में दवा देना चाहिए।

यदि आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा प्रतिफल नहीं मिलता हो, जीवन में संघर्ष की स्थिति हो, तो जीवन में अनुकूलता के लिए हरे रंग का रूमाल अपने पास रखना चाहिए तथा चाँदी का छेदयुक्त सिक्का बनवाकर अपने पास रखना चाहिए।

यदि स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो इनसे बचने के लिए गाय को हरा चारा डालना चाहिए।

मनोकामना पूर्ण करने के लिए बरसात का जल घर में किसी पात्र में भरकर रख लें तथा 21 दिन तक उसे निरन्तर किसी हरे-भरे पौधे पर चढ़ाते रहें।

निरन्तर परेशानियां मिल रही हों, तो सिरहाने फिटकरी रखकर सोना चाहिए तथा स्नान के जल में कुछ फिटकरी डालनी चाहिए।

जब भी आप किसी अस्थायी समस्या से विशेष रूप से पीड़ित हों, तो शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष की पांच परिक्रमा करते हुए अपनी मनोकमना कहनी चाहिए।

यदि जीवन में आकस्मिक बाधाएं आती हों, तो ऐसे व्यक्ति को धार्मिक पुस्तकें दान स्वरूप देनी चाहिएं। शिक्षा का दान करने से ऐसे व्यक्तियों को अनुकूलता प्राप्त होती है।

यदि दिया हुआ धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो काले वस्त्र पर सिन्दूर से उस व्यक्ति का नाम लिखना चाहिए, जिससे आपको धन की प्राप्ति होनी हो तथा उस वस्त्र को किसी वस्तु में बन्द करके रख देना चाहिए। 43 दिन के अन्दर मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

लॉटरी, सट्टे, शेयर आदि में अकस्मात् धन-लाभ के लिए पीपल के पांच सूखे हुए पत्ते लेकर उन्हें शनिवार के दिन किसी बन्द जगह में अपनी मनोकामना को कहते हुए डालना चाहिए।

मिथुन राशि का स्वामी ग्रह बुध है। मिथुन राशि के जातक की आयु लगभग अस्सी वर्ष होती है। इस राशि के जातक की मृत्यु बुधवार के दिन ही होती है।

कर्क राशि

कर्क राशि के जातकों को जीवन में सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

अगर दिया हुआ धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो 43 दिन तक पीपल के पांच पत्ते बहते जल में प्रवाहित करने चाहिएं। लॉटरी, सट्टे, शेयर आदि में धनलाभ के लिए कड़वे तेल में बनी कचौरियां शनिवार के दिन वृद्ध भिखारी को दान करनी चाहिएं।

अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का फल नहीं मिलता हो, जीवन में संघर्ष की स्थिति हो, तो जीवन में अनुकूलता के लिए प्रातःकाल उठकर माता के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लें तथा विचार नेक रखें। चाँदी का कड़ा दाहिने हाथ में धारण करने से अनुकूलता मिलेगी।

मनोकामना-पूर्ति के लिए लाल रंग का रूमाल सदैव अपने पास रखना चाहिए तथा प्यासे व्यक्तियों के लिए पीने योग्य जल की व्यवस्था करनी चाहिए। बाधाएं दूर करने के लिए मीठी रोटियां बनाकर कुत्ते को खिलानी चाहिए। चंद्रमा बलवान होने पर चाँदी, मोती, चावल इत्यादि दान में नहीं देनी चाहिएं।

अगर स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं निरन्तर बनी रहती हों, तो इनसे बचने के लिए चन्द्रमा गले में धारण करने से स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा बहते जल में दूध बहाने से भी शारीरिक सुख बना रहेगा। जीवन में बाधाएं आती हों, तो शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के नीचे कच्ची धानी के तेल का दीपक जलाना बाधाओं को दूर करेगा।

संतान-सुख के लिए सवा किलो मूंग मंगलवार के दिन बहते जल में प्रवाहित करनी चाहिए तथा घर में मिट्टी के पात्र में शुद्ध मधु भरकर उसका सेवन करना चाहिएं। दाम्पत्य सुख के लिए मोगरे का पुष्प जल में डालकर सिरहाने रखना चाहिए अथवा शयनकक्ष में मोगरे के पुष्प रखने चाहिए। महत्वपूर्ण कार्यों के समय चटकीले रंग के वस्त्र धारण करने से आपका जीवन सुखमय होगा।

कर्क राशि के जातकों को जीवन में सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार उपरोक्त उपाय अवश्य करने चाहिएं।

कर्क राशि का स्वामी सौम्य चन्द्रमा है। कर्क राशि के जातकों की आयु लगभग छयासी से लेकर पिचानवें के मध्य होती है। इनकी मृत्यु प्रायः शुक्रवार के दिन होती है।

सिंह राशि

सिंह राशि के जातकों को जीवन में सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब

के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

जिस कार्य के पूर्ण होने की कामना हो, उस कार्य को करने से पूर्व अथवा उस कार्य हेतु घर से निकलते समय मुंह में कोई मीठी वस्तु अवश्य डालकर पानी पीकर जाना चाहिए। सफलता प्राप्त करने के लिए छः रविवार तक अपने हाथों से भिखारियों को लाल गेहूं का दान करना चाहिए।

अगर धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो मुख्य द्वार के समीप बरगद की जटा लाकर बुधवार के दिन लटका देनी चाहिए तथा संध्या के समय मुख्य द्वार पर शुद्ध घृत का दीपक जलाना चाहिए। धनलाभ के लिए नंगे पांव मंदिर जाकर अपने द्वारा की गई किसी भी गलती को मानकर क्षमा याचना करनी चाहिए। कौए को मीठे चावल डालने से भी लाभ की सम्भावना प्रबल होती है।

अगर जीवन में बाधाएं आती हों, तो पीपल वृक्ष के नीचे नारियल चढ़ाना चाहिए तथा लौटते समय मुड़कर नहीं देखना चाहिए।

संतान–सुख के लिए किसी धार्मिक स्थल पर पीपल का वृक्ष रोपकर उसकी देखभाल करनी चाहिए। घर के मुख्य द्वार को खुला रखना चाहिए। दाम्पत्य सुख के लिए कच्ची धानी के सरसों के तेल से भरा हुआ मिट्टी का पात्र धरती में दबा देना चाहिए।

अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा फल नहीं मिलता हो, तो जीवन में अनुकूलता के लिए दिन में शयन नहीं करना चाहिए तथा नेक विचार रखने चाहिएं। तांबे का कड़ा दाहिने हाथ में धारण करने से भी अनुकूलता प्राप्त होती है।

अगर स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं निरन्तर बनी रहती हों, तो इनसे बचने के लिए पानी में गुड़ बहाना चाहिएं। धरती में तांबे का चौकोर टुकड़ा दबाने से भी स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं दूर होती हैं।

सिंह राशि का स्वामी तेजस्वी सूर्य है। सिंह राशि के जातकों की आयु लगभग सौ वर्ष के लगभग होती है। इनकी मृत्यु प्रायः मंगलवार के दिन ही होती है।

कन्या राशि

कन्या राशि के जातकों को सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

जीवन में स्थायित्व के लिए हरा चारा डालना चाहिए तथा प्रतिदिन भोजन से पूर्व गौ ग्रास निकालने से जीवन निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होता रहेगा। मीठी रोटियां कुत्ते को खिलाने से आपकी इच्छा शीघ्र पूर्ण होगी। अपनी चारपाई के चारों पायों में तांबे की कीलें ठोंकने से हर प्रकार की परेशानियों से बचाव होकर समृद्धि प्राप्त होती है।

अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा फल नहीं मिलता हो, जीवन में संघर्ष की स्थिति हो, तो अनुकूलता के लिए स्नान के जल में फिटकरी डालनी चाहिए तथा घर के मुख्य द्वार पर चाँदी की कीलें ठोंकनी चाहिएं। अगर स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो तुलसी के पत्ते का सेवन करना चाहिए तथा नए पौधे लगाने चाहिएं।

संतान–सुख के लिए भूमि पर शयन करना चाहिए तथा बहते जल में देसी शराब

डालनी चाहिए। रात्रि के समय दूध नहीं पीना चाहिए। दाम्पत्य सुख के लिए मंदिर में पीपल का वृक्ष लगाकर उसकी देखभाल करनी चाहिए। धर्मस्थल में विभिन्न वस्तुएं दान करने से भी दाम्पत्य जीवन में सफलता प्राप्त होती है।

अगर जीवन में बाधाएं आती हों, तो बहते जल में कच्चा दूध प्रवाहित करने से जीवन में परेशानियां आना रुक जाती हैं। अगर धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो सात शनिवार तक तेल में अपनी छाया देखकर उसका दान करें तथा घर के जिस कमरे अथवा स्थान पर रोशनी नहीं आती हो, वहां पर रोशनदान बनवाएं। लॉटरी, शेयर आदि में धनलाभ के लिए कच्चे कोयले दरिया में बहाना उत्तम रहेगा। बुध बलवान होने पर लेखनी (कलम) का उपहार नहीं देना चाहिए।

कन्या राशि का स्वामी ग्रह सौम्य बुध है। कन्या राशि के जातकों की आयु लगभग अस्सी-इक्यासी वर्ष होती है। इनकी मृत्यु का दिन प्रायः रविवार होता है।

तुला राशि

तुला राशि के जातकों को जीवन में सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं-

जब भी किसी नदी आदि के ऊपर से गुजरें तो तुला राशि के जातकों को पैसा पानी में डाल देना चाहिए। इससे जीवन में आने वाली मुसीबतें टल जाती हैं तथा जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होता है।

अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा फल नहीं मिलता हो, जीवन में संघर्ष की स्थिति हो, तो सूखा नारियल जल में छः शुक्रवार को प्रवाहित करना चाहिए। अगर स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो इनसे बचने के लिए प्रतिदिन दीपक जलाना चाहिए तथा सात अनाज मिलाकर पक्षियों को डालना चाहिए।

घर में पड़ी निरूपयोगी वस्तुएं या तो बेच देनी चाहिएं अथवा उन्हें सही कराकर रखना चाहिए। इससे कार्यों में विलम्ब नहीं होगा एवं बाधाएं भी शीघ्र समाप्त होंगी।

अगर जीवन में बाधाएं आती हों, तो सांप को दूध पिलाना चाहिए। धन वापिस नहीं मिल रहा हो, तो कुएं में दूध डालना-गिराना चाहिए। परस्त्री सम्पर्क से बचना चाहिए।

दाम्पत्य सुख के लिए दो सूखे नारियल बहते हुए जल में प्रवाहित करने चाहिएं। यह प्रयोग सात शुक्रवार तक करना चाहिए। किसी बन्द कुएं में सात मंगलवार तक तांबे के पात्र से जल चढ़ाने से कामना अवश्य पूर्ण होती है। जल चढ़ाने के पश्चात् मुड़कर नहीं देखना चाहिए।

धन-लाभ के लिए जौ को दूध में भिगोकर भूमि में दबाना चाहिए।

संतान-सुख के लिए तांबे की वस्तुएं धार्मिक स्थल में दान करनी चाहिएं।

तुला राशि का स्वामी ग्रह शुक्र है। तुला राशि के जातक की आयु लगभग छियासी वर्ष होती है। इस राशि के जातक की मृत्यु प्रायः सोमवार के दिन होती है।

वृश्चिक राशि

वृश्चिक राशि के जातकों को सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के

अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

दाम्पत्य सुख के लिए कौओं को मीठे चावल डालने चाहिएं। इससे दाम्पत्य जीवन में चल रही परेशानियां दूर होती हैं। अगर किसी अभिलाषा की पूर्ति करनी हो, तो वर्षा का जल एकत्रित करके उसे किसी हरे-भरे पौधे में 21 दिन तक चढ़ाना चाहिए।

अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा फल नहीं मिलता हो, तो जीवन में अनुकूलता के लिए मिट्टी के पात्र में सौंफ अथवा शुद्ध मधु डालकर सुनसान स्थान पर दबाना चाहिए। यह प्रयोग मंगलवार के दिन करने से जीवन में अनुकूलता मिलती है तथा इस प्रयोग से शत्रु पक्ष पर समुचित प्रभाव स्थापित होता है।

अगर स्वास्थ्य में समस्याएं बनी रहती हों, तो लाल मूंग जल में प्रवाहित करनी चाहिए तथा घर में मिट्टी के पात्र में शुद्ध मधु भरकर उसका सेवन करना चाहिए। अगर जीवन में बाधाएं आती हों, तो सोमवार के दिन कुएं में गाय का दूध चढ़ाना चाहिए तथा यह प्रयोग सोलह सोमवार करना चाहिए। धन-लाभ के लिए बुधवार के दिन गाय को हरा चारा डालना चाहिए। भोजन से पूर्व गौ ग्रास निकालने से भी जातक को उन्नति के अवसर मिलते रहेंगे।

संतान-सुख के लिए किसी मंदिर के लिए पीले रंग की पताका बनवाकर भेंट करनी चाहिए तथा उसे किसी ऊंचे स्थान पर लगाना चाहिए।

अगर धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो फिटकरी से मंजन करना चाहिए तथा किसी मध्यस्थ व्यक्ति की सहायता से धन-प्राप्ति की सम्भावना खोजनी चाहिए। इसके साथ ही वाणी के दूषित होने से यथासम्भव बचना चाहिए।

वृश्चिक राशि का स्वामी ग्रह सेनापति मंगल है। वृश्चिक राशि के जातक की आयु लगभग नब्बे वर्ष होती है। इस राशि के जातक की मृत्यु बुधवार को होती है।

धनु राशि

धनु राशि के जातकों को सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

धनलाभ के लिए चने की दाल को निर्जन स्थान में दबाना चाहिए। ध्यान रखें कि ऐसा करते समय कोई व्यक्ति आपको टोके नहीं। संतान-सुख के लिए मिट्टी के पात्र में शुद्ध मधु भरकर घर पर रखना चाहिए तथा नित्यप्रति उसका सेवन करना चाहिए। मिट्टी के पात्र में सौंफ भरकर धरती में दबाना चाहिए।

अगर जीवन में बाधाएं आती हों, तो कुएं में दूध चढ़ाना चाहिए तथा रात्रि के समय दूध नहीं पीना चाहिए। धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो चाँदी की दो गोलियां 43 दिन तक अपने पास रखनी चाहिएं तथा उसके पश्चात् गोलियों को पूजाघर में रख देना चाहिए।

मनोकामना-पूर्ति के लिए चार शुक्रवार को जटा वाला नारियल दरिया में बहाना चाहिए। जीवन की बाधाओं से बचने के लिए अनैतिक विचारों से बचना चाहिए। परस्त्री सम्पर्क के कारण आपको अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ेगा अत: ऐसी स्थिति से दूर रहने का प्रयत्न करें।

दाम्पत्य सुख के लिए हरे रंग का रूमाल अपने पास रखना चाहिए। जीवन में

उन्नति के लिए देसी शराब जल में प्रवाहित करनी चाहिए तथा यह प्रयोग सात शनिवार करना चाहिए।

अगर आपके कार्यों का पूरा फल नहीं मिलता हो, जीवन में संघर्ष की स्थिति हो, तो जीवन में अनुकूलता के लिए पीले रंग का ध्वज मंदिर की शिखा पर लगाना चाहिए। स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो धर्मस्थल पर गुप्त दान करना चाहिए तथा बुजुर्गों से आशीर्वाद लेते रहना चाहिए।

धनु राशि वाले जातकों का स्वामी गुरु बृहस्पति है। इस राशि के जातकों की आयु लगभग अस्सी वर्ष होती है। इस राशि के जातकों की मृत्यु प्रायः गुरुवार को होती है।

मकर राशि

मकर राशि के जातकों को जीवन में सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

शनि जन्मपत्रिका में किस भाव में स्थित होकर शुभ फल देगा अथवा अशुभ, यह जानने के लिए शनि की स्थिति का आंकलन करना आवश्यक है। अगर किसी भाव में शनि बद स्थिति में हो, तो शनि के अशुभ फल ही मिलेंगे। इसके विपरीत अगर किसी भाव में शनि की स्थिति को बुरा माना गया हो तथा वहां शनि शुभ स्थिति में हो, तो शनि का प्रभाव उस भाव के फलों की हानि नहीं करेगा, अपितु शुभ फलदायक सिद्ध होगा।

सूर्य और शनि दोनों ही जन्मपत्रिका में एक साथ हों, तो शनि का फल शुभ नहीं रहता। टेवे में पहले भाव में बैठे केतु बाद के भाव में बैठे शनि पर दृष्टि डालें, तो शनि एक इच्छाधारी सांप की तरह शुभ फल देना प्रारम्भ करता है।

जन्मपत्रिका में चन्द्र-राहु की युति बारहवें भाव में हो, तो शनि किसी भी भाव में बैठने पर विषमय हो जाता है। राहु शनि को देखता हो, तो शनि का फल नेक हो जाता है।

दसवें भाव में स्थित अकेला शनि शुभ प्रभाव ही देता है और आयु भर हर तीसरा वर्ष उत्तम होता है। ऐसे जातक की जायदाद होती है और दौलत के लिए भी कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ता, लेकिन दसवें घर में शनि के होते अगर जातक दूसरों का भला करे तो यहां बैठा शनि बहुत ही अशुभ फल देगा और जातक को बर्बाद कर देगा।

संतान-सुख के लिए गंगाजल लाकर उसमें चाँदी का चौकोर टुकड़ा डालकर तथा पत्र को ढककर घर में रखना चाहिए। दाम्पत्य सुख के लिए दूध को दरिया में प्रवाहित करना चाहिए तथा विवाह के पश्चात् पति या पत्नी को यह कार्य अवश्य करना चाहिए।

अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा फल नहीं मिलता हो, तो जीवन में अनुकूलता के लिए गेहूं का दान करना चाहिए। घर में कुछ भागं में गेहूं बोकर उन्हें सींचना चाहिए। स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो शनिवार के दिन पीपल के वृक्ष के सामने तेल का दीपक जलाना चाहिए तथा छायादान करना चाहिए।

मनोकामना की पूर्ति के लिए मिट्टी के पात्र में शुद्ध मधु भरकर सुनसान स्थान

में दवाना चाहिए। यह कार्य अकेले ही करना चाहिए एवं इस मध्य कोई आपको टोके नहीं। जीवन में उन्नति के लिए आपको खाली घड़ा दरिया में प्रवाहित करना चाहिए। जीवन में निरन्तर प्रगति के लिए जातक को मिट्टी के पात्र में तेल डालकर प्रवाहित करना चाहिए।

जीवन में बाधाएं आती हों, तो सांप को दूध पिलाना चाहिए तथा घर में काले रंग का कुत्ता पालने से अनुकूलता प्राप्त होती है। दिया हुआ धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो आग को दूध से बुझाना चाहिए तथा तांबे का सिक्का दरिया में डालना चाहिए। धन-लाभ के लिए संध्या के समय कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। प्रात:काल पीपल वृक्ष पर तेल चढ़ाना चाहिए।

मकर राशि का स्वामी ग्रह क्रूर शनि है। इस राशि के जातक की आयु लगभग नब्बे वर्ष होती है। इस राशि के जातक की मृत्यु प्रायः मंगलवार को होती है।

कुंभ राशि

कुंभ राशि के जातकों को अपने जीवन में सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

जीवन में उन्नति के लिए वर्षा के जल को घर में रखना चाहिए। कुंभ राशि के जातक जीवन में सुख-समृद्धि के लिए पीपल के वृक्ष के ग्यारह पत्ते लेकर शनिवार के दिन उन्हें जल में डाल दें। यह प्रयोग हर वर्ष करना चाहिए।

आपके द्वारा किए गए कार्यों का पूरा फल नहीं मिलता हो, तो जीवन में अनुकूलता के लिए पीपल वृक्ष के नीचे तेल का दीपक शनिवार के दिन जलाना चाहिए। स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो जमीन में सुरमा दवाना चाहिए। स्मरण रखें सुरमा ही होना चाहिए। सुरमी ना हो अन्यथा हानि सम्भव है। यह प्रयोग लगातार पांच शनिवार को सायंकाल करना चाहिए।

दाम्पत्य सुख के लिए प्रात:काल कड़वा तेल पीपल की जड़ में चढ़ाना चाहिए। वट वृक्ष की जड़ को शयनकक्ष में रखने से भी दाम्पत्य जीवन में मधुरता आती है। मनोकामना-पूर्ति के लिए शुद्ध केसर का तिलक नाभि पर लगाना चाहिए तथा धर्मस्थल के सम्मुख शीश झुकाकर निकलना चाहिए।

धनलाभ के लिए मिट्टी का नया घड़ा भूमि में दवाना चाहिए। यह प्रयोग बुधवार के दिन करना चाहिए। संतान-सुख के लिए घर की बहिन-बेटियों को हरी चूड़ियां देनी चाहिएं।

जीवन में बाधाएं आती हों, तो अपने सोने वाले पलंग के चारों पायों में तांबे की कील ठोकनी चाहिए तथा भूमि पर नहीं सोना चाहिए। दिया हुआ धन वापस नहीं मिल रहा हो तो जिस व्यक्ति से धन प्राप्त होना चाहिए उसका नाम पीपल के पत्ते पर गोरोचन से लिखकर प्रवाहित करना चाहिए।

शनि बलवान हो, तो शराब दूसरों को नहीं पिलानी चाहिए।

कुंभ राशि का स्वामी ग्रहं पापग्रह शनि है। इस राशि के जातक की आयु लगभग नब्बे वर्ष होती है। इस राशि के जातक की मृत्यु प्रायः शनिवार को होती है।

मीन राशि

मीन राशि के जातकों को सभी प्रकार की सफलता के लिए लाल किताब के अनुसार निम्न उपाय अवश्य करने चाहिएं–

गुरु बलवान होने पर किताबों का उपहार नहीं देना चाहिए।

मनोकामना-पूर्ति के लिए पीपल के वृक्ष के समीप शनिवार के दिन तेल का दीपक जलाना चाहिए। जीवन में उन्नति के लिए मिट्टी के पात्र में गुड़ भरकर जमीन में दबाना चाहिए। इसके साथ-साथ साबुत लाल मूंग बहते जल में प्रवाहित करने से भी जातक को उन्नति का अवसर मिलता है।

अगर आपके द्वारा किए गए कार्यों का फल नहीं मिलता हो, जीवन में संघर्ष की स्थिति हो, तो अनुकूलता के लिए घर में मुख्य द्वार के समीप पीले पुष्प वाले पौधे लगाने चाहिएं तथा धर्मस्थल में वस्तुएं भेंट करनी चाहिएं। अगर स्वास्थ्य सम्बंधी समस्याएं बनी रहती हों, तो घर में फलदार पौधे लगाने चाहिएं तथा नाभि पर शुद्ध केसर का तिलक लगाना चाहिए।

संतान-सुख के लिए चाँदी का चौकोर टुकड़ा गंगाजल में डुबोकर घर में रखना चाहिए, अगर संतान पक्ष से अनुकूलता प्राप्त हो जाए, तो उस टुकड़े को स्वच्छ जल में प्रवाहित कर देना चाहिए। दाम्पत्य सुख के लिए नया घड़ा लेकर दरिया में प्रवाहित करना चाहिए।

धन-लाभ के लिए माता के चरण छूकर आशीर्वाद लेना चाहिए तथा कुएं में दूध डालना चाहिए।

अगर जीवन में बाधाएं आती हों, तो संध्या के समय तिराहे पर गौघृत का दीपक जलाकर रखना चाहिए और दीपक रखने के पश्चात् मुड़कर नहीं देखना चाहिए। धन वापस नहीं मिल रहा हो, तो जिस व्यक्ति से धन प्राप्त होना हो, उसका नाम ढाक के पत्ते पर सिन्दूर से लिखकर मिट्टी के पात्र में ढककर रख देना चाहिए। इस प्रयोग से 43 दिन के भीतर ही वह धन वापस कर देगा।

अगर गुरु बृहस्पति छठे भाव में हो, तो दान लेने से धन-हानि होती है। पुजारी को वस्त्र देना लाभदायक होता है। गुरु बृहस्पति के कारण रोग और धन-हानि को रोकने के लिए हल्दी, चने की दाल छह दिन मंदिर में देने से लाभ होता है। अष्टम बृहस्पति के दुष्प्रभाव को शांत करने के लिए 8 हल्दी की गांठें, 8 बृहस्पतिवार प्रवाहित करें।

मीन राशि का स्वामी गुरु बृहस्पति है। इस राशि के जातक की आयु लगभग नब्बे वर्ष होती है। इस राशि के जातक की मृत्यु प्रायः गुरुवार (वीरवार) को होती है।

अपवाद–आयु और मृत्यु की भविष्यवाणी तब ही सही होती है जब बारहवें और आठवें घर के ग्रहों में शक्ति (ताकत) के मुकाबले से गिनती की जाए। जब बारहवें घर में कोई ग्रह (शुभ-अशुभ) ना हो तो सौम्य चन्द्रमा जिस राशि में होगा, उसके अनुसार ही मृत्यु का दिन निश्चित होगा।

लाल किताब : संतान लाभ

लाल किताव के अनुसार संतान लाभ देने वाला ग्रह केतु माना जाता है।

सप्तम भाव में केतु जीवनसाथी की ओर से अचानक कष्ट का सूचक होता है। इसके कारण जीवनसाथी को शारीरिक कष्ट, सम्वंधों में सन्देह उत्पन्न होता है। शुभ होने पर जीवनसाथी के सहयोग से निरन्तर उन्नति होती है।

रात को सोते समय सिरहाने जल से भरा बर्तन रखें तथा प्रात:काल उसे बागीचे में डाल देवें। संतान की रक्षा के लिए सौ दिन तक घर से बाहर जाना हो, तो नदी पार करते समय जल में तांवे का पैसा अवश्य डालना चाहिए। मीठी रोटियां बनाकर कुत्तों को खिलानी चाहिएं।

कुतिया का एक नर कुत्ता बच्चा घर में रखने से कुल की वृद्धि होती है। संतान न होने पर अपने भोजन का आधा भाग गाय को खिलावें। संतान के उत्तम स्वास्थ्य के लिए गाय को भोजन खिलावें।

श्री गणेश की उपासना करनी चाहिए। गर्भवती स्त्री की दायीं भुजा में चमकीला लाल धागा बांध देवें। यह धागा लगभग दो वर्ष बंधा रहने देवें। साथ ही गाय को रोटी भी खिलावें।

संतान के जन्म से पहले किसी पात्र में दूध तथा शक्कर भरकर, गर्भवती स्त्री का हाथ लगवाकर रख लें। संतान के जन्म के पश्चात् इनको मन्दिर में दे दें।

प्रत्येक माह परिवार के सभी सदस्यों की संख्या और घर में आने वाले मेहमानों की संख्या से अधिक रोटियां बनाकर पशुओं को खिला दें। प्रतिदिन अपने भोजन में तीन निवाले कुत्ते के लिए अवश्य निकाल देवें और जहां भोजन बने वहीं बैठकर भोजन करें।



6 लाल किताब और फलादेश

ज्योतिष में सुव्यवस्थित तर्क नहीं होते। लेकिन ज्योतिष की भविष्यवाणी सही न होने के अनेक कारण हैं। उनमें मुख्य हैं—सही समय की जानकारी न होना, अनुमानित जन्मपत्री से विचार करना तथा ज्योतिष के सीमित ज्ञान के कारण समग्र विचार न करना। इन कारणों से फलित ठीक नहीं निकलता। ज्योतिष में भविष्यवाणी का आधार शास्त्र के नियम और सिद्धांत हैं। इनको जितनी गंभीरता और नियमों के आधार पर विचार किया जाता है, उतनी ही सटीक भविष्यवाणी होती है। ज्योतिष और विज्ञान दोनों में ही नियम और कार्यकारण सम्बंध माना जाता है। कई विषयों में दोनों ही घटनाओं का कारण कुछ प्राकृतिक नियम मानते हैं।

आधुनिक ज्योतिष के सिद्धांतों को नये रूप में शोध करके प्रस्तुत कर रहे हैं। विज्ञान के अनुसार किसी स्थान पर तीन प्रकार के प्रभाव माने जाते हैं—विकिरण प्रभाव, गुरुत्वाकर्षण प्रभाव और चुम्बकीय प्रभाव। अनेक ज्योतिषियों ने मानव-जीवन पर इन प्रभावों का गहन अध्ययन किया है। पूर्णिमा के दौरान पागलपन के दौरे बढ़ जाते हैं। आचार्य वाराह मिहिर ने पहले ही बता दिया था कि तारों और ग्रहों से आने वाली किरणें मानव जीवन को प्रभावित करती हैं। इसी बात को वैज्ञानिकों ने अपनी खोज द्वारा सिद्ध किया कि तारों और ग्रहों से आने वाली रश्मियां मानव जीवन को गर्भाधान, जन्मसमय से लेकर मृत्युपर्यन्त प्रभावित करती हैं। उनके अनुसार जन्म के समय से लेकर बच्चे के शरीर के कोषाणु ग्रहों की तरंगों को अपने में ग्रहण कर लेते हैं।

जब कोई जन्मपत्रिका देखें और उसके फलित के विषय में विचार करें तो सही फलादेश जानने के लिए एक विधि नहीं अनेक विधियां लागू करनी पड़ती हैं। कुछ में प्राचीन ज्योतिष द्वारा सही फल जाना जा सकता है जबकि कुछ में लाल किताब अच्छा फल बताती है। लाल किताब और प्राचीन ज्योतिष दोनों को मिलाने से फलित के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त की जा सकती है, जिस प्रकार से किसी आदमी को आयुर्वेदिक दवाई खाने से लाभ होता है जबकि अन्य को अंग्रेजी दवाई खाने से लाभ होता है। लेकिन अगर अपने खाने-पीने में संयम रखें और कोई भी दवाई खायें तो लाभ अधिक पा सकते हैं। उसी प्रकार से जब जातक की जन्मपत्रिका देखी जाती है तब कुछ बातें लाल किताब से पता चलती हैं, कुछ वैदिक ज्योतिष से पता चलती हैं, कुछ नक्षत्रों से पता चलती हैं। कुछ दिन, तिथि, योग, कारण से पता चलती हैं और इन सबको अच्छी प्रकार से मिलाने से सटीक फलित जाना जा सकता है।

एक योग्य ज्योतिष अच्छे मनोचिकित्सक का कार्य भी करता है। ज्योतिष भी तंत्र, मंत्र तथा अन्य उपायों द्वारा कारण से ध्यान हटाने का प्रयत्न करता है। अनेक मानसिक चिकित्सक मनोरोगों की चिकित्सा के लिए पूजा का परामर्श भी देते हैं जिससे सुधा के परिणाम सामने आते हैं। जब आप भविष्य की सोचते हैं तो यह तनाव से मुक्ति दिलाता

है। ज्योतिष की लोकप्रियता के बढ़ते हुए आंकड़े वेतरह चकित कर देने वाले हैं। अनेक ज्ञानी-अज्ञानी ज्योतिषी उपलब्ध है। ज्योतिष शिक्षा से जुड़े हुए अनगिनत संस्थान हैं। यहां भी नीम-हकीमों पर अंकुश लगाने के लिये ज्योतिष पर विधिवत् शिक्षा तथा इसकी प्रैक्टिस के नियम बनाने की आवश्यकता है।

नीचे ग्रहों से इच्छित फल प्राप्त करने के लिए कुछ उपाय दियें जा रहे हैं। इन्हें व्यवहार में लाकर इच्छित फल प्राप्त किया जा सकता है।

पहले भाव में—अगर कोई ग्रह हमें इच्छित फल नहीं दे रहा है, तो इसके लिए उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करना होगा। इससे लाभ प्राप्त होगा।

दूसरे भाव में—इसके लिए उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं का दान करें।

तीसरे भाव में—इसके लिए राशि रत्न को उस ग्रह से सम्बन्धित धातु की अंगूठी में जड़वाकर धारण करें।

चौथे भाव में—इसके लिए उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को एकत्रित कर पानी में बहा दें।

पांचवें भाव में—इसके लिए ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को किसी शिक्षण संस्था को दान कर दें।

छठे भाव में—इसके लिए ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को उस ग्रह वाले दिन प्रातःकाल के समय किसी कुएं में डाल दें।

सातवें भाव में—किसी ग्रह को सातवें भाव में पहुंचाने के लिए उस ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को जंगल में जाकर वृक्ष के नीचे दवा दें।

आठवें भाव में—किसी ग्रह को आठवें भाव में पहुंचाने के लिए ग्रह से सम्बन्धित वस्तुओं को एकत्रित करके अमावस्या की रात को श्मशान के पास गाड़ दें।

नौवें भाव में—इसके लिए ग्रह से सम्बन्धित सभी वस्तुओं को किसी मन्दिर में रख दें।

दसवें भाव में—इसके लिए ग्रह सम्बन्धित सभी वस्तुओं को चूर्ण के रूप में पीस लें और उस चूर्ण को पिता अथवा दादा के भोजन में मिलाकर देना चाहिए।

ग्यारहवें भाव में—इस भाव में स्थित कोई भी ग्रह नीच नहीं माना जाता, इसलिए इसके लिए किसी भी उपाय की आवश्यकता नहीं है।

बारहवें भाव में—इसके लिए उस ग्रह से सम्बन्धित सभी वस्तुओं को एकत्रित करके उन्हें घर की छत पर डाल दें।

लाल किताब में कुछ ऐसे भी टोटके हैं, जिनको वर्जित कहा गया है; जैसे—

शनि पहले और बृहस्पति (गुरु) पांचवें भाव में—अगर कुण्डली में शनि पहले और बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित हो, तो इस परिस्थिति में किसी भी व्यक्ति को तांबे के बर्तन कदापि दान नहीं करने चाहिएं। ऐसा करने पर व्यक्ति की सन्तान रोगी हो सकती है।

चन्द्र चौथे और बृहस्पति (गुरु) दसवें भाव में—अगर ग्रह इस स्थिति में है, तो ऐसे में किसी भी धार्मिक स्थान का निर्माण करना उचित नहीं है। व्यक्ति किसी भी

विवाद में फंस सकता है। और सजा भी पा सकता है।

गुरु सातवें भाव में—जन्मकुण्डली में बृहस्पति (गुरु) जब सातवें भाव में स्थित हो, तो उस समय किसी भी वस्त्र को दान न करें। यदि ऐसा किया गया तो व्यक्ति अत्यन्त दरिद्र हो सकता है।

शुक्र नौवें भाव में—ग्रह की इस स्थिति में किसी बच्चे को गोद लेना वर्जित है। ऐसा करने पर समस्त परिवार का नाश हो सकता है।

चन्द्रमा छठे भाव में—अगर चन्द्रमा छठे भाव में है, तो ऐसी स्थिति में दूध का दान नहीं करना चाहिए तथा कुआं आदि भी नहीं बनवाना चाहिए। ऐसा होने पर पूरे परिवार पर संकट आ सकता है।

चन्द्रमा बारहवें भाव में—जन्मकुण्डली में चन्द्रमा जिस समय बारहवें भाव में स्थित हो, उस समय किसी भी भिखारी को भोजन न करायें। यदि ऐसा किया गया तो व्यक्ति पर कई प्रकार की विपत्तियां आ सकती हैं।

शनि आठवें भाव में—अगर शनि आठवें भाव में स्थित है, तो ऐसे में व्यक्ति को किसी सार्वजनिक स्थान का निर्माण कदापि नहीं कराना चाहिए। ऐसा करने पर सम्पत्ति नष्ट हो जाती है।

अपने भावों के अनुसार ही ग्रह जातक को शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं; जैसे—

कुण्डली में चन्द्र-केतु की युति—अगर जन्मपत्रिका में चन्द्र और केतु ग्रहों की युति हो तो व्यक्ति की माता तथा पुत्र दोनों आजीवन कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे और उनकी आर्थिक स्थिति भी बिगड़ती रहेगी।

कुण्डली में गुरु छठे भाव में—गुरु के छठे भाव में होने पर जातक का पिता जीवन भर श्वास का रोगी रहेगी। अगर घर में आभूषण होंगे तो चोरी चले जायेंगे।

शनि-चन्द्र की युति—अगर कुण्डली में शनि-चन्द्र की युति हो तो जातक की आंखें खराब हो सकती हैं।

सूर्य-शुक्र की युति—जन्मकुण्डली में सूर्य-शुक्र की युति होने पर व्यक्ति का वैवाहिक जीवन कष्टपूर्ण रहेगा। पत्नी से अलगाव की स्थिति तक आ जायेगी। पत्नी भयानक रोग का शिकार होकर अकला मृत्यु को प्राप्त हो सकती है।

बुध दूसरे भाव में—इस स्थिति में व्यक्ति का अपने परिवार से झगड़ा रहेगा। विशेषकर अपने पिता से जीवन भर मतभेद रहेंगे और घर में बात-बात पर झगड़ा रहेगा।

शुक्र दूसरे भाव में—अगर शुक्र कुण्डली के दूसरे भाव में हो, तो जातक किसी विधवा स्त्री के प्रेम जाल में फंसकर बर्बाद हो जाता है।

शुक्र-केतु की युति—अगर जन्मकुण्डली में शुक्र और केतु की युति हो रही हो, तो व्यक्ति जीवन भर कुंआरा ही रहता है और यदि विवाह होता भी है, तो व्यक्ति विवाह के बाद सुखी नहीं रहता।

सूर्य छठे और बुध ग्यारहवें भाव में—ऐसा होने पर व्यक्ति को वैवाहिक सुख कुछ वर्षों तक ही मिलेगा और अचानक पत्नी की मृत्यु हो जायेगी।

शनि-केतु की युति पांचवें भाव में—ऐसा होने पर व्यक्ति को सन्तान उत्पत्ति

में कई प्रकार की बाधाएं आती हैं। व्यक्ति जीवन भर सन्तानहीन भी रह सकता है।

शुक्र तीसरे भाव में—ऐसा होने पर व्यक्ति अगर भवन-निर्माण करायें तो गिर जाये या फिर आर्थिक कारणों से बेचना पड़े और पुनः घर न बन सकेगा।

केतु नौवें भाव में—ऐसा होने पर व्यक्ति के ननिहाल के लोगों पर विपत्ति आये और माता आजीवन रोगी बनी रहेगी। उस व्यक्ति को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ेगा।

जब दो ग्रह एकसाथ एक भाव में हो जाते हैं, तो उनमें से एक ग्रह का बल घट जाता है या वह फल नहीं देता, इसलिए उस ग्रह को निष्क्रिय ग्रह कहते हैं।

सूर्य केतु के साथ एक भाव में होने पर सूर्य का बल घट जाता है।

चन्द्र राहु के साथ एक भाव में होने पर चन्द्रमा का बल घट जाता है।

बुध और सूर्य एक भाव में होने पर बुध निष्फल हो जाता है।

राहु और मंगल एक भाव में होने पर राहु निष्फल हो जाता है।

जब दो ग्रहों की शक्ति तीसरे ग्रह की शक्ति के बराबर हो जाती है, तो तीसरा ग्रह ही उन दोनों ग्रहों का स्थान ले सकता है, इसलिए उसे नकली ग्रह कहा जाता है।

एक यह भी कारण है कि उस नाम का असली ग्रह कुण्डली में पहले से ही उपस्थित होता है। ये अग्र प्रकार हैं—

युगल ग्रह	नकली ग्रह	वर्ण
सूर्य व बुध	गुरु	पीला
सूर्य व शनि	मंगल	अशुभ लाल
बुध व शुक्र	सूर्य	गुड़ के समान
शुक्र व गुरु	शनि, केतु, सदृश	काला
गुरु व राहु	बुध	हरा
सूर्य व बुध	गुरु	पीला
मंगल व शनि (उच्च का)	राहु	सफेद-काला
सूर्य व शनि (नीच का)	राहु	सफेद-काला
राहु व केतु	शुक्र	सफेद
मंगल व गुरु	शनि-राहु सदृश	काला
सूर्य व बुध	चन्द्र	सफेद

लाल किताब के अनुसार राहु, केतु को "पाप" ग्रह कहा गया है। और राहु, केतु तथा शनि सामूहिक रूप में "पापी" माने गये हैं। मंगल यदि अशुभ है, तो वह भी पाप ग्रह कहा जाता है।

कुछ अन्य ग्रहों के साथ ऐसे भावों में स्थित होते हैं, जिनके कारण व्यक्ति पर राहु, केतु एवं शनि जैसे पापी ग्रहों का कुप्रभाव नहीं होता। अतः ऐसे ग्रह जो व्यक्ति को पापी ग्रहों की अशुभता से बचाते हैं, प्रायः धर्मी ग्रह कहलाते हैं।

ज्योतिष शास्त्र की मान्यता के अनुसार प्रत्येक ग्रह की अपनी दृष्टि होती है। वह जिस किसी भी भाव में बैठा हुआ होता है, उसी से सातवें भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है।

मंगल, गुरु और शनि की विशेष दृष्टि भी होती है। लाल किताब के अनुसार ग्रहों की दृष्टि इस प्रकार है–

भाव–जिसमें ग्रह उपस्थित हैं	भाव–जिसको ग्रह देखता है
1	7
2	6
3	9, 11
4	10
5	9, 11
6	12
8	2

इससे स्पष्ट है कि ग्रह जिस भाव में बैठा होता है, वह उससे आगे के भावों को ही देखता है, पीछे के भावों को नहीं देख पाता। केवल आठवां भाव इसका अपवाद है।

किसी भी भाव में स्थित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर प्रभाव–

ग्रह	प्रभाव
सूर्य	किसी भी भाव में स्थित अकेला सूर्य ग्रह व्यक्ति को धनवान बनाना है, परन्तु धन की प्राप्ति अपने ही परिश्रम से होती है।
मंगल	किसी भी भाव में मंगल अकेला होने पर व्यक्ति निर्बल एवं भीरू बन जाता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन प्रायः दूसरों की दया पर निर्भर रहता है।
चन्द्र	किसी भी भाव में अकेला चन्द्र ग्रह अपने स्वामी को दया एवं विनम्रता प्रदान करता है। ऐसा व्यक्ति विनम्रता के द्वारा असम्भव कार्य को भी सम्भव बना देता है।
बुध	किसी भी भाव में स्थित अकेला बुध अपने स्वामी को लालची बना देता है।
गुरु	किसी भी भाव में अकेला गुरु अपने स्वामी की हर प्रकार से रक्षा करता है और उसे संकटों से बचाता है।
शुक्र	किसी भी भाव में यह ग्रह अकेला होने पर अपने स्वामी के लिए अशुभ सिद्ध होगा, परन्तु उसे सहयोग ही देगा।

ग्रह	प्रभाव
शनि	किसी भी भाव में स्थित शनि यदि अकेला है तो वह व्यक्ति को बुध के समान लालची तथा सूर्य के समान परिश्रमी बना देता है।
राहु	यह ग्रह अकेला होने पर भी व्यक्ति की रक्षा करता है।
केतु	यह ग्रह अकेला होने पर भी व्यक्ति को परिश्रमी बना देता है।

अंधे ग्रह—दसवें भाव में स्थित ग्रह यदि नीच के हों, दुष्ट, पाप या पापी हों या एक-दूसरे के शत्रु हों तो वे अन्धे ग्रह हो जाते हैं। तब उनका आचरण अनिश्चित होता है, उनके सम्बन्ध में कोई भविष्यवाणी नहीं की जा सकती। ऐसे ग्रह जो पूर्ण रूप से समर्थ होते हैं, वे अपना पूर्ण प्रभाव देते हैं। इन ग्रहों को स्पष्ट ग्रह कहा जाता है।

सोये हुए ग्रह तथा भाव—लाल किताब के अनुसार 7, 9, 10, 11 व 12 के भाव दृष्टिहीन होते हैं। शेष भावों में भी स्थित ग्रह जिस किसी भाव को देखता है, उसमें कोई ग्रह न हो; अर्थात् कमरा खाली हो तो दृष्टा ग्रह अन्धा हो जाता है।

जिस भाव पर किसी ग्रह की दृष्टि न हो तो वह भाव उदास हो जाता है। सोये हुए ग्रहों तथा भावों को कष्ट-निवारण हेतु पूजा, उपाय आदि के द्वारा जगाया जा सकता है। ग्रहों को जगाने के लिए तो उन्हीं की पूजा-उपाय किया जाता है, जो सोये हुए हों। सोये हुए भावों को जगाने के लिए निम्न प्रक्रिया अपनाते हैं—

भाव—जिसे जगाना है।	ग्रह—जिसका उपाय करना है।
भाव	ग्रह
1	मंगल
2	चन्द्रमा
3	बुध
4	चन्द्रमा
5	सूर्य
6	राहु
7	शुक्र
8	चन्द्रमा
9	गुरु
10	शनि
11	गुरु
12	केतु

जन्मपत्रिका में कभी ऐसी परिस्थितियां आ जाती हैं कि ग्रह कभी तो स्वयं के फल देते हैं और कभी जिस भाव में बैठे हों, उस भाव के फल देते हैं। ऐसे ग्रहों तथा भावों को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

भाव	ग्रहों का फल	भावों का फल
1	मंगल	राहु
2	राहु और केतु-राहु	–
3	शनि	शनि (धन के लिए)
4	चन्द्रमा	मंगल, शुक्र और केतु
5	गुरु और शनि	–
6	बुध और केतु	सूर्य, मंगल, गुरु, शनि
7	शुक्र	–
8	मंगल	–
9	गुरु	शनि
10	शनि	बुध और केतु
11	गुरु और शनि	–
12	राहु	बुध

ग्रह जव भाव का फल देते हैं, तो तभी उपाय प्रभावी होते हैं, वे अपना स्वयं का फल देते हैं, तब उपाय व्यर्थ हो जाते हैं।

लाल किताब में ऋण ग्रह उन ग्रहों को बतलाया गया है, जो कि पूर्वजों के ऋण को अपने जीवन में चुकाता है। अगर वह उसका उपाय न करेगा; अर्थात् इस ऋण को पूजा-पाठ, तप-जप एवं दान आदि से चुकता न करेगा, तो वह नर्क का भागी बनेगा।

लाल किताब के अनुसार, जिस ग्रह के अपने घर में या कारकत्व वाले घर में शत्रु बैठा हो वह ग्रह पीड़ित माना जाता है। पीड़ित ग्रह जिन रिश्तेदारों के कारक होते हैं, उन्हीं रिश्तेदारों के शाप से ऋण पितृ दोष होता है।



7 ग्रहों के अशुभ प्रभाव

किस जातक के जीवन में कौन-सा ग्रह अंशुभ प्रभाव डाल रहा है, इसका निर्धारण उसके जीवन में घटने वाली घटनाओं के आधार पर ज्ञात किया जा सकता है। विभिन्न ग्रहों की अशुभ स्थिति पर प्राय: निम्नलिखित लक्षण प्राप्त होते हैं–

बुध–अस्थि दुर्वलता, दन्तक्षय, हकलाहट, हिचकी, वात कहने में गड़बड़ा जाना, नाक से खून वहना, नपुंसकता, स्नायुओं का निर्वल पड़ना, बन्ध्यायन, कंधों और गर्दन की अकड़न, वैवाहिक सम्वन्ध में निराशा, भागीदारी से हानि, रोजगार में अड़चन, शत्रु उपद्रव, परस्त्री, परपुरुष सम्वन्ध, हानि, पड़ोसी से अनवन। दांत खराव हों, गंध सूंघने की क्षमता कम हो जाए, तो बुध के मंदे होने की निशानी होती है। बुध के मंदे प्रभाव को कम करने के लिए नाक छेदन तथा दांत साफ रखना अच्छा उपाय होगा।

चन्द्र–भावुकता, निराशा, व्यथा वताकर रोना, अनुभूति का ह्रास, पशुओं की मृत्यु, जल का अभाव, मानसिक विक्षिप्तता की स्थिति, मानसिक असन्तुलन के कारण गुमसुम रहना, घर में कुएं का सूखना। घर से दूध वाले जानवर मर जाएं। घोड़े की मौत हो जाए। कुआं या तालाव सूख जाए। स्पर्श करने की शक्ति कम हो जाए। दूसरों के चरण छूकर उनका आशीर्वाद लेना ठीक होगा। परिवार में महिलाओं का उचित सम्मान करें।

सूर्य–ओज की कमी, आलस्य, जड़ता, म्लान छवि, मुख में सदैव थूक का आना। लाल गाय या वस्तुओं का खो जाना, भूरी भैंस या इस रंग के सामान की क्षति। व्यवसाय में दुर्वलता का अनुभव। लाल गाय या भूरी भैंस का गुम हो जाना, शरीर के अंग शिथिल होने लगें तो सूर्य निर्वल होने की निशानी होती है। मुंह में मीठा डालकर पानी के कुछ घूंट पीकर प्रत्येक कार्य प्रारम्भ करना शुभ होगा।

मंगल–दृष्टि दुर्वलता, शरीर में पीड़ा और कमर एवं रीढ़ की हड्डी में दर्द, रक्त की कमी, पीलिया होना, शारीरिक रूप से सवल होने पर भी सन्तानोत्पत्ति की क्षमता का न होना, बन्ध्यापन, पति पक्ष की हानि, अगर संतान जन्म लेकर मर जाए, आंख में चोट लगे, किसी विवाद में खूनखरावा हो, तो मंगल को मन्दा समझना चाहिए। सफेद सुरमा का प्रयोग करना मंगल के मंदे प्रभाव को कम करेगा।

गुरु बृहस्पति–चोटी के वाल का उड़ना, सोने का खो जाना, शिक्षा में रुकावट, अपयश, कलंक, सांस का दोष, अर्थहानि, परतंत्रता, खिन्नता, असफलता, प्रियतम अथवा प्रियतम की हानि, जुए में हानि, सन्तानहानि, आत्मिक शक्ति का अभाव, वाल किसी रोग के कारण उड़ जाएं, गले में माला पहनने की आदत वन जाए। शिक्षा में व्यवधान हो, तो गुरु की स्थिति निर्बल होने का संकेत समझना चाहिए। माथे पर केसर का तिलक लगाना, नाक साफ करके कार्य प्रारम्भ करना लाभदायक होगा। जिस दिन से नाक का पानी स्वयं सूख जाए, गुरु सहयोगी हो जाएगा।

शनि–कार्य-व्यवसाय में हानि, अधिकार-हानि, अपयश, मान-सम्मान की हानि, भूमि की हानि, बुरे कार्यों में प्रवृत्ति, भवन-हानि, नास्तिकता, रिश्वत में अपयश, आकस्मिक

मृत्यु, ऊंचाई से गिरकर शरीर हानि, निराशा, अपमान, निंदक प्रवृत्ति, राजदण्ड।

शनि—मकान गिर जाए, भैंस मर जाए, आग लगे, शरीर पर से बाल बिना रोग झड़ जाएं, तो शनि को मंदा समझना चाहिए। घर की छत पर घोड़े की नाल ठोकना शुभ फल देगा।

शुक्र—स्वप्नदोष, परस्त्री, परपुरुष लोलुपता, शुक्राणुहीनता, त्वचा-रोग, अंगूठे की हानि, पड़ोसी से झगड़ा, ऋण की अधिकता, परिश्रम करने पर भी आर्थिक लाभ नहीं, भूमि-हानि। अंगूठा निष्क्रिय हो जाए तथा चर्म रोग हो, तो शुक्र को मंदा समझना चाहिए। पोशाक स्वच्छ एवं सुरुचिपूर्ण हो, तो शुक्र का मंदा प्रभाव कम हो जाता है।

राहु—सन्तानहानि, बुद्धिहीन, अरुचि, नपुंसकता, बन्ध्यापन, अन्याय की प्रवृत्ति, क्रूरता, भूमिहानि, राजदण्ड, शत्रुपीड़ा, कारावास का भय, चोरी हो जाना, चोर-डाकू से हानि, अनिद्रा, मानसिक असंयतता। भूरे-स्याह रंग के कुत्ते की मौत या गुम हो जाए। हाथ के नाखून झड़ जाएं, मस्तिष्क असंतुलित हो जाए तथा बिना कारण के अनेक शत्रु उत्पन्न होने लगें, तो राहु को मंदा समझना चाहिए।

संयुक्त परिवार में रहना चाहिए, ससुराल से ताल्लुक सामान्य होना, सिर पर चोटी रखना चाहिए, राहु के प्रभाव को शुभ करेगा।

केतु—रोग की बढ़ोत्तरी, लड़ाई-झगड़े से हानि, भाई से दुश्मनी, दुःख, सेवकों की कमी, शारीरिक क्षति, आग और शत्रु से हानि, पाप-प्रवृत्ति, मांस खाने की प्रवृत्ति, राजदण्ड।

पाँव के नाखून झड़ जाना, माता को जोड़ों का दर्द से पीड़ा हो, संतान पक्ष से कष्ट हो, तो केतु को मंदा जानना चाहिए। कान छिदवाने से केतु का मंदा प्रभाव कम होगा।

लाल किताब के अनुसार परिवार की सुख स्मृद्धि के लिए निम्नलिखित उपाय करने से पारिवारिक जीवन सुखी शांतिपूर्ण रहता है—

रात्रि में सोते समय अपनी चारपाई के नीचे थोड़ा-सा पानी रख लें। सुबह वही पानी किसी ऐसी जगह डाल दें जहां कि उसकी बेइज्जती न समझी जाए, तो नाहक झगड़े-फसाद, बेइज्जती, रोगों से सदैव बचाव होता रहेगा। सामान्यतः जातक का स्वभाव ग्रह दशाओं से प्रभावित होता है, लेकिन अगर कोई व्यक्ति उल्टा चलता हो तो वह लाभ की बजाय हानि ही पाएगा, उदाहरण स्वरूप शनि सातवें भाव में होने पर जन्मपत्री का स्वामी स्वभाव से चालाक, आंख के संकेत से सिर से पांव तक जांच लेने वाला तथा मक्कार भी हो सकता है, लेकिन अगर ऐसा व्यक्ति धर्मातमा और सत्यतापूर्ण हो तो वह हरदम दुःखिया, बेचैन होगा। अपने भोजन में से गाय, कौआ और कुत्ता तीनों ही के लिए कुछ भोग पहले भी अलग रख लेना चाहिए तथा भोजन के पश्चात् उसे जानवरों को खिला देना चाहिए। इससे सदैव सुख-शांति बनी रहती है।

प्रत्येक माह के अंत में घर के सदस्यों की संख्या तथा घर में आए अतिथियों की संख्या के बराबर संख्या में मीठी रोटियां जानवरों को खिलाने से घर में रोग, झगड़ों में व्यर्थ से बचाव होता है।

रसोईघर में भोजन करना राहु के अशुभ फलों से बचाता रहेगा और मंगल-राहु युति का फल शुभ होगा। जिस व्यक्ति के बच्चे जन्म लेते ही मर जाते हों, बच्चे के जन्म के समय मिठाई के स्थान पर नमकीन बांटना चाहिए। कुतिया का नर बच्चा जो अपने समय में अकेला ही उत्पन्न हुआ हो, उसको पालने से उसके स्वामी के परिवार की वृद्धि होती

है। कागज या अलग बर्तन में मीठा औरत का हाथ लगवाकर रख लें। संतान सरलतापूर्वक एवं बिना कष्ट के उत्पन्न हो जाए उसके पश्चात् दूध और मीठा बर्तन के साथ धर्मस्थान में पहुंचा दें तथा बर्तन वापस न लाएं।

रेलगाड़ी, बस अथवा नाव आदि के द्वारा नदी आदि के ऊपर से जाते समय जल में तांबे का पैसा डालना चाहिए। इससे परिवार की सुरक्षा होती है। विशेष रूप से जब आप लम्बे समय तक परिवार से दूर रहने के लिए अन्य स्थान पर जा रहे हों, तो यह उपाय अवश्य करना चाहिए।

अगर जन्मपत्रिका में राहु मंदा हो, तो उसके लिए यह अच्छा हो कि बच्चे के जन्म से पहले जौ (राहु) को बहते पानी की बोतल में बंद करके रख लें ताकि बच्चे का जन्म सकुशल और सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाए।

औरत के गर्भवती हो जाने के दिन से ही उसके बाजू पर सुई-धागा बांधें जो बच्चे के जन्म पर स्वयं बच्चे के बाजू पर बदल दिया जाए और उस समय बच्चे की माता के बाजू पर लाल धागा बांधा जाए, यह रक्षक बंधन कहलाता है और बच्चे की 18 माह की आयु तक बांधे रखना चाहिए। अगर किसी व्यक्ति के बच्चे जन्म लेते ही मर जाते हों, जन्म के समय नमकीन बांटें।

लाल किताब में बताया गया है कि "ग्रह जिस भाव का स्वामी होता है, उस भाव में स्थित होने पर सदैव शुभ फल देता है।" इस प्रक्रिया को निम्न प्रकार समझा जा सकता है–

ग्रहों की दृष्टि

लाल किताब में ग्रहों की दृष्टि का उल्लेख किया गया है, जिस भाव पर दुर्भाग्य की मार पड़ती है, वह अतिरिक्त बल प्राप्त करने के लिए दूसरे भावों की ओर देखता है। विभिन्न भावों में स्थित ग्रह दृष्टि अग्रांकित सूची के अनुसार अन्य भावों में बैठे हुए ग्रहों से विभिन्न प्रकार की सहायता प्राप्त करते हैं–

सूची

विवेच्य भाव	दृष्टि	पारस्परिक सहायता	सामान्य स्थिति	संघर्ष	मूल सहायता	अनिश्चित	अप्रत्या० क्षति
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1	X	5	7	8	9	10	3
1	Y	9	7	6	5	4	
2	X	6	8	9	10	11	4
2	Y	10	8	7	6	5	
3	X	7	9	10	11	12	1
3	Y	11	9	8	7	6	
4	X	8	10	11	12	1	10
4	Y	11	10	9	8	7	

5 5	X Y	9 1	11 11	12 10	1 9	2 8	7
6 6	X Y	10 2	12 12	1 11	2 10	3 9	4
7 7	X Y	11 3	1 1	2 12	3 11	4 10	1
8 8	X Y	12 4	2 2	3 1	4 12	5 11	10
9 9	X Y	1 5	3 3	4 2	5 1	6 12	7
10 10	X Y	2 6	4 4	5 5	6 2	7 1	4
11 11	X Y	3 7	5 5	6 4	7 3	8 2	1
12 12	X Y	4 8	6 6	7 5	8 4	9 3	10

लाल किताब के अनुसार सभी ग्रह अपने से आठवें भाव में बैठे हुए ग्रहों को पीड़ित करते हैं। पीड़ित ग्रह सहायता पाने के लिए अपने से पांचवें भाव में बैठे हुए ग्रह की ओर देखते हैं। इस देखने को दृष्टि कहा गया है। दृष्टि से देखने वाले ग्रह की दृश्य ग्रह सहायता अवश्य करते हैं। इस विषय को निम्नांकित सूची द्वारा भी समझा जा सकता है—

सूची

पीड़ित करने वाला ग्रह/भाव	पीड़ित होने वाला ग्रह/भाव	योग दृष्टि द्वारा दृश्य ग्रह/भाव
1	8	12
2	9	1
3	10	2
4	11	3
5	12	4
6	1	5
7	2	6
8	3	7
9	4	8
10	5	9
11	6	10
12	7	11

नवग्रहों से सम्बन्धित वस्तुएं

ग्रह	देवी-देवता	पेशा	प्रवृत्ति	विशेषता	शक्ति	सम्बन्धित शरीर पर					
						धातु	ग्रहों की स्थिति	शरीर के अंग	सम्बन्धित वस्त्र	सम्बन्धित जानवर	सम्बन्धित पेड़
बृहस्पति गुरु	ब्रह्माजी	ब्रह्मराज पूजा-पाठ और सुनार (सोने से सम्बन्धित)	पण्डित	हवा, रूह, सांस, पिता, गुरु, सुख	हाकिम व मुहकूम, सांस लेने व दिलाने की ताकत, मालिक	सोना पुखराज	गर्दन	नाक, माथा व नाक का सिरा	पगड़ी	शेर बबर या शेरनी	पीपल का पेड़
बुध	दुर्गा	ठठियार, दलाल व्यापारी	जी-हजूरी करनेवाला	बोलना, दिमाग, हुनरमन्द, उप-देशक, दोस्त	अक्ल व हुनर, दस्ती पेशा, दस्त-कारी, बोलना, बुलाने की ताकत लोगों में रसार पैदा	हीरा, पन्ना	दिमाग का ढांचा, जबान, दांत, नाड़ी	नाक का सिरा (अगला हिस्सा)	टोपी, नाड़ा तगड़ी, पेटी	बकरा, बकरी, भेड़, चमगादड़	कपला (पौधा, चौड़े पत्तों के पेड़ सिया जड़ के)
शनि	भैरव	लोहा, तिर्खान, मोची	मूर्ख, अक्खड़	देखना-भालना चालाकी, मौत, बीमारी	जादू-मंतर देखने, दिखाने, ताकत का मालिक	लोहा, फौलाद	बीनाई	बाल, भौंहें पड़पड़ी	जुराब, जूता	भैंस या भैंसा	कीकर या आक या जूट का पेड़

ग्रह	देवी-देवता	पेशा	प्रवृत्ति	विशेषता	शक्ति	सम्बन्धित शरीर पर					
						धातु	ग्रहों की स्थिति	शरीर के अंग	सम्बन्धित वस्त्र	सम्बन्धित जानवर	सम्बन्धित पेड़
राहु	सरस्वती	भंगी, शूद्र	चालबाज, मक्कार, नीच, जालिम	सौचना, ख्यालात, बिजली, खौफ, दुश्मनी, भूचाल	रहनुमाई कल्पना की ताकत का मालिक	नीलम, सिक्का, गोमेद	दिमागी लहरें, तमाम जिस्म के बगैर सिर्फ सिर का हिस्सा	ठोड़ी	पायजामा, पतलून	हाथी, हस्ती काटेदार, जंगली चूहा, कौवा,	नारियल का पेड़
केतु	श्री गणेश	धर्म और दुनियावी कार्यों से बेपरवाह	बोझ उठाने वाला कुली	नास्तिक, नकलची, मिलने-मिलाने की ताकत	चलना-फिरना या गैरों से जोर-जबरदस्ती	दोरंगा पत्थर वैदूर्य	सर के बगैर बाकी तमाम जिस्म	कान, पांव, रीढ़ की हड्डी पेशाबगाह, घुटने का दर्द, जोड़	दुपट्टा, कम्बल, ओढ़ना	कुत्ता, गाय, कुतिया, गधा, सूरनी, सूअर, छिपकली	इमली का पेड़, बिलों के पौधे, केले
सूर्य	विष्णु	क्षत्रीय राजपूत	बहादुर पालनकर्त्ता	आग, गुस्सा, जिस्म, तमाम अंग, इल्म	गर्मी का भण्डार	मानक तांबा, शिलाजीत	तमाम का तमाम जिस्म	दायां हाथ	सेहरा	बंदर-बंदरिया, पहाड़ी गाय, भूरी कपिला गाय	तेजफल का पेड़

ग्रह	देवी-देवता	पेशा	प्रवृत्ति	विशेषता	शक्ति	सम्वन्धित शरीर पर					
						धातु	ग्रहों की स्थिति	शरीर के अंग	सम्वन्धित वस्त्र	सम्वन्धित जानवर	सम्वन्धित पेड़
चन्द्र	शिव	कुम्हार, जौंवर-पुज जैन-धर्मा	रहीम, दयालु, हमदर्द	पानी, शान्ति, दिल, माता, जायदाद	सुख, शान्ति, दयालुता, पुत्रों या वुजुर्गों की सेवा की ताकत	चांदी, मोती,	दिल	वायां हिस्सा	धोती	घोड़ा, घोड़ी	पोस्त का हरा पौधा
शुक्र	लक्ष्मी	कुम्हार, वैश्य काश्तकार, जमींदार	आशिक मिजाज	मिट्टी, कामदेव, आजजी, स्त्री, गृहस्थ	मुहब्बत और लगन, मिट्टी की कुव्वत नफसानी और औरत की ऐशमन्दी की ताकत, इश्क, मुहब्वत	मिट्टी, मोती	गाल	चेहरे की त्वचा	कमीज	वैल, गाय	कपास का पौधा
मंगल नेक	हनुमान	लड़ाका	सहायता करने वाला	हौसला, भाई, खाना-पीना, लड़ाई	लड़ाई-झगड़ा, खून करना-कराना	लाल, कीमती पत्थर, खूनी लाल रंग जो चमकीला न हो	जिगर	ऊपर का होंठ,	वास्केट	आम शेर या शेरनी	नीम का पेड़
मंगल वद	जिन, भूत	कसाई	सताने वाला	स्वार्थ	खाने-पीने की ताकत	चमकीला लाल पत्थर	जिगर	नीचे का होंठ,	नंगा सिर	ऊंट, ऊंटनी, हिरन	ढाक का पेड़

भावों के अनुसार ग्रहों से सम्बन्धित वस्तुएं

नाम ग्रह	खाना 1	खाना 2	खाना 3	खाना 4	खाना 5	खाना 6	खाना 7	खाना 8	खाना 9	खाना 10	खाना 11	खाना 12
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

ग्रहों से सम्बन्धित कारोबार (भावों के अनुसार)

नाम ग्रह	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

खाना नं.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
[illegible]	अधिकारिक सियासी	मिट्टी के कारोबार,	केमिकल	सोना और	दूसरे की चीज़ों	बीमारी वालों के	किताबों की दुकान	पुराने इलाके के	धर्मस्थान के	ताँबे के कारोबार	[illegible]	[illegible]
मंगल	फौज के कारोबार मुबारक मगर दाँतों के कारोबार ना मुबारक	खेती के कारोबार	हलवाई के कारोबार	कपड़े रंगने और दवाखाने के कारोबार ना मुबारक मगर मुनाफा का कारोबार उत्तम	हिकमत	पेट के मुताल्लिक मकान और बंगलियों के कारोबार	दाल मसूर, फलादि खेती अनाज के	मकान के कारोबार जिन चीज़ों में मसाले का ताल्लुक न हो	मकान कारोबार चीजें (कुछ फल) मीठे मुफ्त रंग और कुल की वस्तुएं या रंग के	शहद, मीठे [illegible] के कारोबार	सिन्दूर लाल (रंग) के कारोबार	मिठाई और कड़वी दवाओं के कारोबार
बुध	अक्ल [illegible] के लिये [illegible] कारोबार	मूंग और [illegible] मगर कलम की लिख के कारोबार	दाँत का डाक्टर [illegible] मुबारक	तेल, कागज [illegible] के साथ मुबारक	कागज के कारोबार, [illegible] (लड़कियों)	फूल के कारोबार व [illegible]	हरे रंग के मुताल्लिक कारोबार पेड़ और [illegible] के कारोबार	हर तरह का व्यापार [illegible] मगर [illegible] के कारोबार	अंगूठी [illegible] के कारोबार मुबारक [illegible] मुताल्लिक कारोबार	दाँत के कारोबार [illegible] दुकान और हर किस्म [illegible] के कारोबार	[illegible] मुताल्लिक कारोबार	किताबों के कारोबार मगर [illegible] मुबारक
शनि	[illegible] के [illegible] के कारोबार [illegible] मुबारक	[illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार, मगर [illegible]	[illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार, [illegible]	[illegible] के मुताल्लिक कारोबार	[illegible] के कारोबार	[illegible] के मुताल्लिक	[illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार
राहु	[illegible] के साथ [illegible] मिलकर काम करना नामुबारक	[illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार [illegible] पर-मुबारक	[illegible] के कारोबार	[illegible] के काम नामुबारक [illegible] बड़े-बड़े काम जो [illegible] से मुताल्लिक हों [illegible] के कारोबार [illegible] के मुताल्लिक कारोबार	[illegible]	[illegible] के कारोबार	[illegible] के मुताल्लिक कारोबार	[illegible] के मुताल्लिक कारोबार	[illegible] के मुताल्लिक कारोबार; मकान [illegible] के कारोबार मुबारक	[illegible] (लाल [illegible]) [illegible] के कारोबार नामुबारक	[illegible] के कारोबार मगर [illegible] काम में मुबारक
केतु	[illegible] के [illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार उत्तम	[illegible] के कारोबार, [illegible] के कारोबार	[illegible] ([illegible]) का [illegible]		[illegible] के कारोबार	[illegible] के [illegible]	केतु के कारोबार पर मुबारक	[illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार	[illegible] के कारोबार	[illegible] और बच्चों के [illegible] के कारोबार

ग्रहों की युति से सम्बन्धित वस्तुयें

दो ग्रह	वस्तुयें
बृहस्पति + केतु	पीले नींबू।
बृहस्पति + चन्द्र	बड़ का पेड़।
सूर्य + चन्द्र	बड़ के पेड़ का दूध, लीची, घोड़ागाड़ी।
सूर्य + शुक्र	लाल मनव्वर, लाल मिट्टी (जलकर लाल शुद्ध), गाचनी, लाल का कटोरा (पानी पीने का बर्तन)।
सूर्य + बुध	हरे-भरे पहाड़, लाल फिटकरी, सफेद शीशा।
चन्द्र + बुध	मान घी, दरिया के पानी में रेत, तोता, हंस, परिन्दा, कुएं में सीढ़ियां।
चन्द + शनि	काली स्याही, पानी की बावली, उल्टा हथियार, कछुआ, बिगड़ा हुआ दूध, मोटर, लारी, लोहे की सफर की चीज, खूनी कुआं, दूध में विष।
शुक्र + मंगल	मिट्टी का तन्दूर, मीठा अनार, गेरू।
शुक्र + बुध	नकली सूर्य, तराजू, रेतीली मिट्टी, आटे की चक्की।
शुक्र + शनि	काली मिर्च और घी, स्याह काली मनव्वर मिट्टी का सूखा पहाड़।
मंगल बद + बुध	आतशी शीशा, लड़की के लाल चमकीले कपड़े, अनार का फूल।
मंगल नेक + बुध	लाल जोड़ा जो शादी के समय लड़की को पहनाते हैं, लाल खूनी रंग मगर जो चमकीला न हो, कण्ठी वाला तोता।
मंगल + शनि	नारियल, छुहारा साबुत
बुध + शनि	आम का पेड़।
बुध + राहु	बड़ का पेड़।
बुध + केतु	बर्री जिससे हाथी भी डरकर भागता है।
शनि + राहु	सांप की मणि या सांप का विष चस लेने वाला जहर मोहरा।

8 लाल किताब : ग्रह शांति के सरल उपाय

जब भी कोई व्यक्ति किसी ज्योतिषी के पास जाता है तब उसका सबसे पहला प्रश्न होता है कि उसके भाग्य में धन-जायदाद कितनी होगी? उसका पुत्र/पुत्री कौन-सा विषय पढ़ें? जिसमें सफल हो जायें? पढ़ने के पश्चात् उसका बच्चा अपने जीवन में क्या व्यवसाय अपनाये? क्या उसका बच्चा इंजीनियर, डॉक्टर, वकील बन सकता है?

दूसरा प्रश्न आने वाला प्रत्येक व्यक्ति पूछता है कि हम कौन-सा रत्न धारण करें? हर कुण्डली एवं हर इन्सान के लिए अलग रत्न कैसे ठीक होते हैं? तीसरा, आज हर ज्योतिष को जानने वाला लाल किताब के विषय में जानना चाहते हैं।

कुछ लोग ज्योतिष को मानते हैं और कुछ नहीं भी मानते। जन्मपत्रिका के अनुसार कुछ के ऊपर अशुभ ग्रह की दशा चलती है जिसमें कुछ दान पुण्य, पूजा-पाठ करा दिया जाए तो कुछ को राहत मिल जाती है और कईयों को राहत वहुत कम मिलती है और कुछ को बिल्कुल राहत नहीं भी मिलती है। इसी प्रकार से कुछ भविष्यवाणी सही हो जाती हैं और कुछ भविष्यवाणी गलत हो जाती हैं। कई लोग ज्योतिष के निष्कर्मों पर चलते हैं फिर भी परेशान रहते हैं और कई लोग ज्योतिष को नहीं मानते हैं—लेकिन फिर भी सुखी देखे गये हैं। ज्योतिष वैदिक काल से चलती आ रही है। कई जगह तो ज्योतिष से लाभ हुआ है लेकिन कई जगह लोग भ्रम में पड़कर परेशान भी हुए हैं। अब प्रश्न उठता है कि जिस विद्या से लाभ हुआ है कई जगह पर लाभ नहीं हुआ फिर इसे क्यों मान्यता दी जाए? यह विद्या प्राचीन काल से क्यों चली आ रही है? क्या ज्योतिष जातक को कार्य करने से रोकती है? क्या यह विद्या केवल भाग्य के भरोसे बैठे रहने का परामर्श देती है? इस विद्या के मानने से समाज का कुछ कल्याण होगा या समाज को नुकसान होगा? क्या जो जातक इसको मानेगा वह सुखी होगा या दुःखी होगा?

लाल किताब पशु-पक्षी, नभचर, जलचर को खिलाने का परामर्श देती है। रामायण में भी गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है—

ईश्वर अंश जीवन अविनाशी।
सहज अमल चेतन सुख राशि॥

अब जब आप भगवान को अथवा उसके अंश को कुछ श्रद्धापूर्वक अर्पण करते हैं तो कल्याण क्यों नहीं होगा? आप जीवों का हित सोचते हैं और यह सब सोचते हैं जब आपके हृदय में परहित के भाव जागते हैं। यहीं से कल्याण और सुख की यात्रा प्रारम्भ होती है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है—

परहित सरिस धर्म नहीं भाई।
परमाया नहीं अधि माई॥
परहित है जिनके मनमाहि।
उनको जग कुछ दुर्लभ नाहीं॥

यह अखिल विश्व कर्मक्षेत्र है, जो जैसा कर्म करता है वैसा फल पाता है। आज आप अच्छा कर्म कर रहे हैं तो आने वाले समय अच्छा फल प्राप्त होगा। गीता में स्पष्ट कहा गया है–

कर्मप्रधान विश्व रचा राखा।
जो जस करई सो तस फल चाखा॥
धर्मेण हान्ति व्यधि, धर्मेण हान्ति ग्रह।
धर्मेण हान्ति शत्रु यतो धर्मः ततो जया॥

धर्म के मार्ग पर चलने से रोग दूर होता है धर्म करने से समस्त ग्रहों का ताप (दोष) दूर होता है। धर्म करने से शत्रु से मुक्ति मिलती है। जहां पर धर्म है वहां पर विजय है। धर्म के मार्ग पर चलने से समस्त ताप दूर होते हैं।

हमारे ज्योतिष में उपायों के विषय में जो सुझाव दिये गये हैं उन पर गम्भीरता से विचार करने पर एक बात स्पष्ट हो जाती है कि ग्रन्थकारों ने प्रयेक उपाय द्वारा ईश्वर की ही आराधना की है। जहां हमारी भिन्न-भिन्न ग्रहों की वस्तुओं का दान एवं पूजा-पाठ जातक को सुख-शांति देते हैं, वहीं लाल किताव वस्तुओं का जल प्रवाह का परामर्श देती है। पूर्ण विश्वास और सच्चे हृदय से की हुई क्रिया निश्चित तौर पर फलवती होती है। अत: जो भी उपाय करें, जिसके भी उपाय करें उस प्रभु से प्रार्थना अवश्य करें।

लाल किताब में ग्रह अपनी शुभ एवं अशुभ स्थिति के अनुसार शुभाशुभ फल प्रदान करते हैं। अगर कोई ग्रह अशुभ फलदायक हो, तो उस ग्रह के दुष्प्रभावों से बचने के लिए उससे सम्बंधित उपाय करने से जातक को अनुकूलता प्राप्त होती है। विभिन्न ग्रहों के कुछ सरल उपाय अब आगे दिए जा रहे हैं–

शनि (Saturn)

शनिदेव की साढ़ेसाती का आज अखिल विश्व में हौवा वना हुआ है। अगर किसी जातक को यह कह दिया जाए कि तुम पर शनि की साढ़ेसाती चल रही है तो न जाने उसके मस्तिष्क में क्या-क्या भ्रांतियां उत्पन्न हो जाती हैं। शनि के अशुभ होने का अर्थ यह है कि जातक अन्याय का साथ दे रहा है। ऐसे जातकों को शनि दंडित कर उनका शुद्धिकरण करते हैं, साथ ही उन्हें सही मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित भी करते हैं। सुनार सोने को आग में तपाकर ही आभूषणों के लिए ढालता है, ठीक उसी प्रकार शनि न्याय अधिकारी बनकर जातक के पापों की सजा देकर उन्हें पवित्र कर सुख-सम्पत्ति एवं धन देते हैं।

शनि का एक विशेष गुण यह भी है कि वह दूध का दूध एवं पानी का पानी कर देते हैं; यानि वह सच्चे और झूठे का भेद भली-भांति समझते हैं। शनि शिक्षक भी कहे जाते हैं, जो जातक को विपत्ति और कष्टरूपी ताप से तपाकर मलहीन बनाते हुए अगर उसे उन्नति के सोपान पर लाकर खड़ा कर देते हैं; यानि इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि अगर शनि अशुभ परिस्थितियों में बैठा है तो हमारे प्रारब्ध का क्रियमाण कर्म में कहीं न कहीं त्रुटि अवश्य रही है और उसका फल हमें अवश्य भोगना होगा, परंतु हमें यह ज्ञात हो जाए कि कौन-सा समय अच्छा जाएगा या कौन-सा समय बुरा जाएगा तो सम्बंधित जातक तदनुसार कदम उठाकर हर स्थिति में स्वयं को खुशहाल रखने की युक्ति निकाल सकता

है। उसे यह पता हो जाए कि आज मेरा समय खराब है, अत: मैं अच्छा कार्य करूं, कल शुभ समय भी आने वाला है तो वह दु:ख एवं मुसीबतों को सहते हुए भी उनको भुलाकर सुख व सुनहरे पल की प्रतीक्षा करेगा।

अत: शनि-साढ़ेसाती को हौवा समझ उससे डरने के स्थान पर हम अपने कर्म को सुधारें तो अच्छा रहेगा। शनि का प्रभाव तीन चरणों में होता है और तीनों चरण एकसमान नहीं होते, तीनों चरणों में सम्बंधित जातक को सुख-दु:ख के अलग-अलग स्वाद चखने को मिलते हैं।

वैसे ज्योतिष के अनुसार शनि अगर जन्मराशि से द्वादश, लग्न व धन भाव में स्थित हो तो उसकी साढ़ेसाती आरोपित हो तो ढ़ाई वर्ष तक उसकी दृष्टि होती है। वैसे जन्मराशि में बैठे हों तो भी ढ़ाई वर्ष तक भोगकाल कहा जाता है। द्वितीयस्थ होने पर पद कहलाता है। यह प्राय: नेत्रों, उदर और पैर में निवास करता है। वैसे इसे अच्छा भी मानते हैं। ढैया और अल्प-कल्याणकारी में ढाई वर्ष तक रहने वाली अन्य शनि दशा भी है।

वैसे शनि मेषादि राशियों में भ्रमण 30 वर्ष में पूरा कर लेता है। ज्योतिष गणना के अनुसार यह एक राशि में लगभग ढाई वर्ष तक रहता है। साढ़ेसाती का आरंभ तब होता है जब शनि द्वादश भाव में संचार करता है। लग्न या द्वितीय भाव तक साढ़ेसाती का प्रभाव क्रमवार चलता है। इन्हीं साढ़े सात वर्षों को साढ़ेसाती के नाम से जानते हैं।

ज्योतिष के अनुसार शनि की साढ़ेसाती तब शुरू होती है जब शनि जातक की जन्मराशि अर्थात् वह राशि जिसमें चन्द्रमा बैठता है, उससे पहले वाली राशि में प्रवेश करता है तो यहां से ढाई वर्ष रहता है। उसके पश्चात् शनि चन्द्रमा से जन्मराशि में प्रवेश करता है, फिर ढाई वर्ष का समय लेता है, इसके पश्चात् वह अगली राशि में प्रवेश कर फिर वहां ढाई वर्ष का समय लेता है; अर्थात् शनि जन्मराशि की पहली राशि में प्रवेश करता है तो शनि की साढ़ेसाती प्रारम्भ होती है। पूरे साढ़े सात वर्ष के पश्चात् शनि जब जन्मराशि से अगली राशि को पार कर जाता है तो शनि की साढ़ेसाती समाप्त हो जाती है।

आइए अब लाल किताब में वर्णित उपाय बतलाते हैं।

सांप को दूध पिलाएं। कहा जाता है सांप दूध नहीं पीता। आप सपेरे को कुछ पैंसे दे दें।

तेल एवं शराब पेड़ों की जड़ में डालें।

नीलम, जामुनिया अथवा कटैला धारण करें।

जोड़ लगा हुआ लोहे का छल्ला धारण करें।

शनिवार को कच्ची धानी के सरसों के तेल में छाया देखकर दान करें।

कील-लोहा या काले उड़द का दान करें।

लोहे के दो या काले नमक के दो टुकड़े लेकर एक को बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा अपने पास रखें।

शनिवार का उपवास रखें।

कीकर की दातुन करें।

तैंतालीस दिन तक कौओं को रोटी डालें।

अपने भोजन से गाय, कुत्ता एवं कौए को एक-एक टुकड़ा दें।

सूर्य (Sun)

सूर्य कर्क एवं तुला लग्न की जन्मपत्रिकाओं में नैसर्गिक दृष्टि से अशुभ होता है। भावों की दृष्टि से सूर्य प्रथम भाव में धनु, मकर और मीन लग्न की कुण्डलियों में, द्वितीय भाव में वृष, मिथुन, कन्या और कुंभ लग्न की कुण्डलियों में, तृतीय भाव में मेष, कर्क और धनु लग्न की कुण्डलियों में, चतुर्थ भाव में वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक और मकर लग्न की कुण्डिलयों में, षष्ठ भाव में धनु, कुंभ और मीन के अलावा सभी लग्न की कुण्डिलयों में, अष्टम भाव में मेष के अतिरिक्त सभी लग्नों की कुण्डलियों में, दशम भाव में मेष, वृष और कर्क लग्न की कुण्डलियों में, एकादश भाव में मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक और मीन लग्न की कुण्डलियों में तथा द्वादश भाव में वृष, मकर, कुंभ और मीन लग्न की कुण्डलियों में अनिष्टता देने वाला होता है।

सूर्य-चन्द्र स्थित राशि से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम और द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है।

इस अनिष्टता के निवारण हेतु लाल किताब में अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय अगर श्रद्धापूर्वक किए जाएं, तो सूर्य की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यहां सूर्य की अनिष्टता के निवारणार्थ लाल किताब से कुछ उपाय प्रस्तुत हैं-

प्रत्येक कार्य मीठा खाकर एवं शीतल जल पीकर करें।

बहते पानी में गुड़, तांबा या तांबे का सिक्का बहाएं।

रविवार का उपवास रखें।

तांबा या लाल गेहूं का दान करें।

माणिक अथवा तांबा अंगुली में धारण करें।

चालचलन ठीक रखें, गलत कार्यों से बचें।

तांबे के दो टुकड़े करके एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा अपने पास संभाल कर रखें।

भवन का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में ही रखें।

चन्द्रमा (Moon)

ज्योतिष शास्त्र में सौम्य चन्द्र को रानी को पदवी प्राप्त है। अत: सरकार से चन्द्र का सम्बंध है। चन्द्र मन है। मन का संचालन चन्द्र के द्वारा होता है। मन स्वस्थ होगा तो चरित्र स्वस्थ होगा। मान-सम्मान, धन, सुख, सम्मान, पुरस्कार, ललित कला का विचार चन्द्र से होता है। स्त्री जाति के सम्पूर्ण शरीर का स्वामी चन्द्र है। चन्द्र भी स्नेह, दया, ममता, चरित्र आदि का सूचक है। चन्द्र में एक और गुण है, यह अगर दूसरे ग्रह के साथ होता है तो अपने भीतर उस ग्रह का भी प्रभाव लेकर कार्य करता है। अगर स्वतंत्र है तो जिस भाव में है, उसी के अनुसार प्रभाव देता है। सूर्य के तेज से यह प्रकाशित होता है। अत: नेत्र का प्रकाश भी चन्द्र के द्वारा देखा जाता है। अच्छे चन्द्र मानव को ज्ञानी, विवेक, दयालु, परोपकारी बनाता है। अपने परिवार-समाज के प्रति प्रेम होता है। सर्वदा अच्छे-अच्छे विचार आते रहते हैं। चन्द्र सेवा करना भली-भांति जानता है, शुभ चन्द्र से प्रभावित स्त्री-पुरुष समाज में प्रतिष्ठित

होते हैं। स्त्रियां सदैव अपने मान-सम्मान को संभालने में लगी रहती हैं। पुरुष हो तो स्त्रियों को सम्मान, स्नेह, इज्जत की दृष्टि से देखता है। अगर चन्द्र निर्बल हो तो जातक के भीतर ज्ञान की कमी होती है। अच्छे-बुरे की समझ नहीं होती हैं। स्त्रियों के प्रति गन्दे विचार रखते हैं, पथभ्रष्ट हो जाते हैं। मन सदैव बुरे कर्मों के विषय में ही सोचता रहता है। समाज में प्रतिष्ठा खो देते हैं। ठग होते हैं।

बड़े-बुजुर्गों, परिजनों का आशीर्वाद लें।

बासमती चावल, दूध एवं चाँदी का दान करें।

पलंग के पायों में चाँदी की कील ठोकें।

मोती अथवा चाँदी अंगुली में धारण करें।

दूध या पानी से भरा बर्तन सिरहाने रखकर सोएं और अगले दिन कीकर की जड़ में सारा जल डाल दें।

सोमवार का उपवास रखें।

चावल, दूध एवं पानी या दो मोती या चाँदी के दो टुकड़े लेकर एक मोती या चाँदी का टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दूसरा मोती या चाँदी का टुकड़ा अपने पास संभाल कर रखें।

मंगल (Mars)

मंगल को सेनापति का स्थान प्राप्त है। जीवन को शक्ति प्रदान करता है। ज्योतिष में मंगल के विषय में प्राय: अशुभ चर्चा की गयी है। वास्तव में मंगल एक अच्छा ग्रह है। यह विनोद भी करता है। जातक को महामानव और दान दोनों बनाता है। यह रक्षक और भक्षक दोनों ही हैं। दयावान और कठोर, क्षमा करना भी जानता है, तो सजा देना भी। अगर मंगल अशुभ ग्रह होता तो उसका नाम मंगल क्यों होता? यह तो जातक के जीवन में मंगल ही करता रहता है। साहस, हिम्मत, धैर्य, शक्ति सभी कुछ मंगल के अधीन होते हैं। यह भूमिपुत्र हैं। अत: जगह, जमीन आदि का कारक होता है। समाज में अत्याचार के विरुद्ध आवाज भी उठाता है। बिछड़े को मिलाता भी है, हर समय साथ देता है। वास्तव में मंगल पग-पग पर कार्य करता है। जीवन की जंग को जीतने के लिए, साहस, धैर्य दोनों की आवश्यकता होती है, यह सब कुछ मंगल ही तो देता है। मानसिक शक्ति मंगल प्रदान करता है। यह अपना अच्छा-बुरा प्रभाव स्थान अनुसार देता है अगर मंगल निर्बल है, तो जातक को क्रोधी, चुगलखोर, लड़ने-झगड़ने वाला बना डालता है। हत्यारा, बलात्कारी, दूसरे पुरुष या स्त्री से सम्पर्क होता रहता है। झूठ बोलना, गृहस्थ जीवन को नष्ट कर देता है। जीवन-साथी से अलग कर देता है। स्त्री को पतिता बना देता है। दुर्घटना करवाता रहता है।

भाई की सेवा करें एवं मृगछाला पर सोएं।

लाल पत्थर के दो टुकड़े लेकर एक टुकड़ा बहते पानी में बहा दें और दुसरा टुकड़ा अपने पास संभाल कर रखें।

सुरमा नेत्रों में लगाने से शांति मिलती है।

तांबा अथवा मूंगा अनामिका अंगुली में धारण करें।

तंदूर में लगी मीठी रोटी बांटें।

बहते पानी में रेवड़ियां, बताशे, शुद्ध शहद एवं सिंदूर वहाएं।

मसूर, मिठाई अथवा मीठा भोजन यथाशक्ति दान करें।

बुध (Mercury)

जातक के जीवन में अगर कोमल चन्द्र मन है, तो बुध विवेक, ज्ञान, वाणी है। बुध का प्रभाव पग-पग पर रहता है। बुद्धि-बल के द्वारा ही मानव समाज में अपना स्थान बना पाता है। वाणी के द्वारा जग को जीत सकता है। कोई भी व्यक्ति बुद्धिमान हो सकता है अपने-अपने क्षेत्र में परन्तु अपनी बुद्धि को उपयुक्त समय में प्रयोग करना एक महत्वपूर्ण कार्य है। बुध अगर अकेला है, तो भाव अनुसार अच्छे-बुरे प्रभाव को प्रकट करेगा, परन्तु यदि किसी और ग्रह के साथ है, तो वह उस ग्रह का प्रभाव अपने भीतर ग्रहण कर लेता है, क्योंकि यह युवराज है। निर्धन भी धनी बन सकता है, अगर उसकी बुद्धि सही ढंग से कार्य कर रही हो और वाणी में मिठास हो। धनी निर्धन हो सकता है, अगर बुद्धि ठीक ढंग से कार्य नहीं करती हो और वाणी कठोर हो। अतः बुध की भूमिका भी उतनी ही महत्वपूर्ण है, जितनी सूर्य और चन्द्र की। अच्छे ज्योतिष बुध को भी ध्यान में रखकर चलते हैं।

तांबे की पत्तर में छेद करके बहते पानी में प्रवाहित कर दें।

साबुत हरे मूंग का दान करें।

दो सीप लेकर एक को बहते पानी में वहा दें और एक को अपने पास संभाल कर रखें।

बुधवार का उपवास रखें।

बकरी अथवा तोता पालें अथवा उसकी सेवा करें।

हिजड़ों को हरे वस्त्र एवं हरी चूड़ियां दान करें।

बेटी, बहन, बुआ, मौसी और साली का आशीर्वाद लें।

पन्ना, हरा ऑनिक्स अथवा तुरमुली अंगुली में धारण करें।

दांत साफ रखें और नाक छिदवाएं।

अपनी खुराक या भोजन में से एक टुकड़ा गाय को, एक टुकड़ा कुत्ते को और एक टुकड़ा कौए को खाने के लिए दें।

गुरु (बृहस्पति) (Jupiter)

गुरु का महत्व सुविदित है। गुरु का महत्व जीवन में महान् है। यह ज्ञान, विवेक, बुद्धि, न्याय, चरित्र, धन आदि का सूचक है। जीवन के प्रत्येक मोड़ पर गुरु की आवश्यकता होती है। बिना गुरु ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान भी गुरु ही देता है। मान, सम्मान, सामाजिक प्रतिष्ठा, जितेन्द्रियता आदि का सूचक गुरु होता है। दया, ममता सभी कुछ गुरु ही प्रदान करता है। गुरु स्वच्छ हृदय का सूचक होता है। अगर गुरु निर्बल होता है, तो जातक अहंकारी हो जाता है, कठोर हृदय का हो जाता है, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा का कुछ भी विचार नहीं रखता, पग-पग पर झूठ बोलकर ठगता है। लोगों को गुमराह कर देता है। चरित्र खो देता है। अपराध तक कर बैठता है।

शुद्ध केसर नाभि और जीभ पर लगाना शुभ है।

पीपल की जड़ में जल डालें।

स्वर्ण के दो टुकड़े लेकर एक को बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा संभाल कर रखें। अगर स्वर्ण ना डाल सकें तो पीपल अथवा केसर से यह उपाय करें।

पीले फूलों वाले पौधे घर में लगाएं।

गुरुवार का उपवास रखें।

माथे या पगड़ी पर पीला हल्दी या केसर का तिलक भी लगा सकते हैं।

कोई भी कार्य शुरू करने से पूर्व नाक अवश्य साफ करें।

साधु अथवा ब्राह्मणों की सेवा करें एवं उनका आशीर्वाद लें।

पुखराज अथवा सुनहला तर्जनी उंगली में धारण करें।

चने की दाल एवं स्वर्ण का दान भी लाभकारी है।

शुक्र

शुक्र वाले के लिए लाल किताब ने लिखा है कि अगर किसी अनाथ बच्चे को गोद लें या उन्हें अपने पास रखें तो उसकी मिट्टी खराब, नौवें शुक्र वाले को मंगल बद माना गया है क्योंकि नौवां घर गुरु का है। शुक्र गुरु का शत्रु है इसलिए नवम घर में शुक्र गुरु को खराब करेगा। गुरु का अर्थ पैदाइश अर्थात् जन्म देने वाला ब्रह्माजी महाराज माना गया है। शुक्र नवम में बैठने से मंगल बद बन जाता है और बद मंगल खराब माना जाता है।

शुक्रवार का उपवास रखें।

अपने भोजन में से गाय को कुछ भाग दें। ऐसा करेंगे तो शुक्र की सहायता मिलेगी एवं धन और सुख बढ़ेगा।

प्रतिदिन अपने भोजन में से एक टुकड़ा कुत्ते के लिए, एक टुकड़ा गाय के लिए, और एक टुकड़ा कौएं के लिए निकालें। हीरा, स्फटिक अथवा सफेद जरकन अंगुली में धारण करें।

गोदान करें या ज्वार एवं चरी का दान करें।

दूजों का पालन-पोषण करें।

सफेद एवं स्वच्छ वस्त्र धारण करें।

सुगन्धित पुष्प पदार्थों का प्रयोग करें।

राहु

जेब में चाँदी की ठोस गोली रखें अथवा चाँदी किसी भी रूप में धारण करें।

चाँदी के दो टुकड़े या दो मोती या चावल की दो पोटली बनाकर उनमें से एक को बहते पानी में बहा दें और दूसरा चाँदी का टुकड़ा या मोती या चावल की पोटली अपने पास रखें।

संयुक्त परिवार में रहें।

ससुराल से सम्बंध न बिगाड़ें।

सिर पर चोटी रखें।

जौ या अनाज को बड़े स्थान पर बोझ के नीचे दवाएं या दूध से धोकर बहते पानी में वहाएं।

मूली दान करें या कोयला बहते पानी में प्रवाह करें। इनकी मात्रा आप इच्छानुसार रख सकते हैं।

कन्यादान करें।

सरसों व नीलम का दान करें।

मसूर की दाल एवं पैसा प्रात: भंगी को दान में दें।

नीले वस्त्र, स्टील के बर्तन, विद्युत उपकरण दान में न लें केवल मूल्य देकर लें।

गोमेद उंगली में धारण करें।

तम्बाकू का सेवन न करें।

केतु

कपिला गाय का दान करें।

तिल, नींबू और केले का दान करें।

चरित्र ठीक रखें और पापकर्मों से बचें।

दो रंगे पत्थर के दो टुकड़े लेकर एक को बहते पानी में बहा दें और दूसरा टुकड़ा आजीवन अपने पास रखें।

कान छिदवाएं और कुत्ता पालें।

कुत्ते को रोटी का टुकड़ा डालें। ऐसा करने पर संतान सुखी भी होगी।

नौ वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों को खट्टी वस्तुएं खाने को दें।

काले और सफेद तिल बहते पानी में बहाएं।

शनिवार का उपवास रखें।

केतु शुभ होने पर व्यक्ति को मूत्राशय सम्बन्धी अनेकों रोग हो जाते हैं और प्राय: उनके जोड़ों में भी दर्द रहता है। ऐसे व्यक्ति की सन्तान भी रोगी होती है। पुत्र का दुर्व्यवहार सहना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति विश्वासघात का शिकार होता है।

वर्तमान समय में रोटी, कपड़ा और मकान ये मनुष्य की मुख्य आवश्यकताएं हैं। रोटी का तात्पर्य व्यवसाय अथवा नौकरी से है, कपड़ा सुख-सुविधा का प्रतीक है एवं भवन का तात्पर्य है कि इन दोनों सुखों को समन्वयात्मक रूप से भोगते हुए समाज में न केवल प्रतिष्ठात्मक वरन् सुखमय जीवन व्यतीत करना। अत: विश्व का प्रत्येक प्राणी स्वयं को निरोगी, सुखी व समृद्ध बनाना चाहता है या इनकी खोज में निरन्तर लगा रहता है।

ऐश्वर्य व सुख-समृद्धि की कामना हर व्यक्ति को (केवल संन्यासी को छोड़कर) इसलिए भी होती है क्योंकि वह इस संसार में रहते हुए लौकिक सुखों को भोग सकें और उन सुखों को भोगते हुए ऐसा जीवन व्यतीत करें, जिसमें आरोग्यता, संतान, धन, समृद्ध व्यापार, सामाजिक मान-प्रतिष्ठा व लाभ और इन सबके साथ-साथ वह चाहता है शास्त्रों का या अनेक विद्याओं का ज्ञान और फिर यह सब होते हुए उसे चाहिए मानसिक शान्ति। यह दूसरी बात है कि इन सब के साथ उसे मानसिक शान्ति प्राप्त हो या न

हो परन्तु इसके लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। सांसारिक मनुष्य के इसी उद्देश्य को समझते हुए हमारे ऋषियों और विद्वानों ने आरोग्यता, धन, सुख व समृद्धि सामाजिक लाभ के लिए अनेक शोधपूर्ण ग्रन्थों की रचना की, इसके लिए वैदिक ज्योतिष शास्त्र की भी रचना की गयी। इन ऋषियों ने इस सब विषयों पर अत्यंत सूक्ष्म और दीर्घकाल तक अध्ययन किया था। जिसका फल आज हमारे सामने ज्योतिष शास्त्र के रूप में देखने को मिलता है, परन्तु इन सबमें एक बहुत बड़ी कठिनाई यह है कि वैदिक मंत्रोपचार हर कोई कर नहीं सकता। मांत्रिक-तांत्रिक और यांत्रिक उपचार में भी योग्य गुरु के मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है।

अधिकांश वैदिक उपायों में आज सबसे बड़ी समस्या यह सामने आती है कि सम्बन्धित विषय का ज्ञान हर किसी को नहीं है, दूसरा; अगर किसी विद्वान् से यह उपाय करवाये जायें तो उन्हें भेंट करने के लिए दक्षिणा, वस्त्र या अन्य सामग्री पर होने वाला भारी व्यय और इन सबके लिए समय का अभाव भी एक बड़ी समस्या है।

इस व्यय, समय, श्रम की समस्या को दूर करती पुस्तक है लाल किताब। आपकी इसी समस्या को ध्यान में रखकर मैंने लाल किताब तैयार की है। मैंने ध्यान रखा है नये अनुभवों में पुराने अनुभव गुम ना हो जाएं, लाल किताब वास्तव में ही लाल किताब हो कुछ और ना बन जाए। आप इसे ध्यानपूर्वक पढ़ते जाएं और लाभ उठाते जाएं।

ग्रह भेषज जल पवन पट पाई कुयोग्य सुयोग्य।
होहिं कुवस्तु सुवस्तु जग लखहैं सुलछन लोग॥

रामायण में तुलसीदास ने लिखा है कि ग्रह चलते हैं और मानव के ऊपर सुख-दुःख उसके पूर्वकर्मानुसार फल करते रहते हैं लेकिन अगर कुछ वस्तुओं में परिवर्तन करके अगर बुरे को अच्छे में बदला जा सके तभी ज्योतिष से लाभ उठाया जा सकता है।



9 सूर्य (SUN)

हमारे सौर परिवार में सूर्य, कुल 9 ग्रह और दर्जनों उपग्रह (चाँद) हैं। इनमें से ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते हैं और चाँद अपने-अपने ग्रहों की, लेकिन सौरमण्डल में लाखों की संख्या में और भी "ग्रह" हैं जो सूर्य का चक्कर लगाते हैं। हालांकि सौरमण्डल में जो ग्रह या उपग्रह हैं, उनके समान इन्हें दर्जा नहीं दिया जाता क्योंकि ये आकार में उनसे छोटे हैं। वास्तव में वह भिन्न-भिन्न आकार के चट्टानी टुकड़े हैं जो 200 किलोमीटर लम्बे-चौड़े हो सकते हैं। इन्हें क्षुद्रग्रह कहा जाता है। करोड़ों की संख्या में से क्षुद्रग्रह के मध्य की कक्षा में यात्रा करते हैं जिसे पट्टी कहा जाता है।

सौरमण्डल में मौजूद अधिकतर ग्रह सूर्य की परिक्रमा एक पट्टी में करते हैं जिसे "एस्ट्रॉयड बेल्ट" कहा जा सकता है जबकि कुछ छोटे-छोटे समूह में सूर्य का चक्कर लगाते हैं। ऐसा ही एक समूह "ट्रोजन" बृहस्पति के यात्रा मार्ग से सूर्य का चक्कर लगाता है। जबकि "अपोलो" नाम का एक समूह जब सूर्य की परिक्रमा करता है, तब यह पृथ्वी की कक्षा से गुजरता है। एक अकेला क्षुद्रग्रह जिसे "शिरान" कहा जाता है, शनि और यूरेनस के मध्य से यात्रा करता है। सूर्य से बहुत दूरी पर होने के कारण वह पूरी तरह से हिमपिंड के रूप में है।

वैज्ञानिक मानते हैं कि पांच अरब वर्ष पूर्व सूर्य के चारों ओर फैली पदार्थों की चकती से प्रमुख ग्रहों का निर्माण हुआ था, लेकिन मंगल और बृहस्पति ग्रह के बीच जो क्षुद्रग्रहों की पट्टी है, वहां किसी ग्रह का निर्माण नहीं हुआ क्योंकि तब तक सौरमण्डल के सबसे बड़े ग्रह बृहस्पति ग्रह का निर्माण हो चुका था और उसकी गुरुत्वाकर्षण शक्ति ने यहां उपस्थित पदार्थ को आपस में जुड़ने नहीं दिया।

विज्ञान की दृष्टि से सूर्य का महत्व छिपता नहीं है। सूर्य के विषय में कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखलाना है। सभी पाठकों को इसके गुण और स्वभाव का ज्ञान है। अतएव विज्ञान और भारतीय ज्योतिष की दृष्टि से इस राशि का जो चित्र सामने आता है, वह एकदम समूचा भविष्य एवं वर्तमान स्पष्ट रूप में प्रकट करता है।

जातक और आकाशीय ग्रह-नक्षत्रों का बहुत गहरा सम्बंध होता है। आधुनिक विज्ञान के सिद्धांत, उसकी ज्ञान प्रणाली आदि उसको समझने में सर्वथा असमर्थ हैं, और अपनी असमर्थता को छिपाने के लिए ही ज्योतिष शास्त्र को अवैज्ञानिक मनवाने की बात करते रहते हैं। ज्योतिष शास्त्र का आधार सनातन वैदिक विज्ञान है और वैदिक विज्ञान की श्रेष्ठता को स्वीकार करने वाले वैज्ञानिक सर जेम्स जीन्स का कथन है-प्राचीन ऋषियों के पास न तो आज की तरह उत्तम साधन सम्पन्न प्रयोगशालाएं हुआ करती थीं और न ही वे कोई इन्द्रिय ज्ञान साक्ष्य ही प्रस्तुत करते थे, परन्तु फिर भी उनका निष्कर्ष वही होता था जो आज हम अपने अध्ययन और परीक्षण से प्राप्त करते हैं।

सूर्य शब्द से ही तेज का एक पुंज हमारे सामने आ जाता है। यूनानी संस्कृति का

अपोलो इसी तेज का स्वामी है। सभी सूर्य-प्रधान जातक कलाकार नहीं होते। अज्ञान या ज्ञान में उनकी लोकप्रियता साये की तरह सदैव साथ रहती है। सूर्य के विकास वाला जातक समाज के वस्तुत: एक अभिन्न अंग की भांति होता है।

शनि-प्रधान जातकों से विपरीत इसे सब प्यार देते हैं और इसकी प्रतिभाओं से प्रभावित होते हैं। समारोहों तक में यह छाया रहता है। इसके ठहाके हवाओं में गूंजते रहते हैं। समारोहों तक में यह छाया रहता है। इसके ठहाके हवाओं में गूंजते रहते हैं। इसके परिहास दुहराये जाते हैं। इसकी बातों का संदर्भ दिया जाता है। इसकी रचनाएं लोकप्रिय होती हैं।

व्यापार में हाथ डालते ही उनके हृदय लोगों के अपनत्व से भर जाते हैं। उनकी कार्यप्रणाली उन्हें पुरस्कृत करती रहती है। उनके कार्य करने के ढंग अत्यधिक स्पष्ट होते हैं। उनकी सफलतायें ईर्ष्या की वस्तु बन जाती हैं। ये ताड़ने वाली आंखें रखते हैं। पहली दृष्टि में ही बात समझ लेते हैं। उनका किताबी ज्ञान भले ही कम हो, पर उनकी समझ अधिक होती है।

खेल के मैदान से लेकर घर तक समान रूप से नेतृत्व करते हैं। सफलता उनके चरण चूमती है। यही कारण है कि उनके दुश्मन अधिक हो जाते हैं। वे खर्चीले होते हैं।

उनकी आवश्यकता अपने आप पूरी होती रहती है। उनका जीवन वैभव से भरा होता है। कभी अपनी निन्दा नहीं सुनना चाहते और विरोध उन्हें सहन नहीं होता। स्वयं के विषय में बात करना पसंद होता है।

उनके यौन सम्बन्ध परिष्कृत होते हैं। वे विश्वस्त होते हैं। अपनी गलतियां स्वीकार कर लते हैं। सूर्य के चन्द्रमा, गुरु तथा मंगल मित्र हैं। शुक्र तथा शनि शत्रु हैं एवं बुध सम है। यह ग्रह एक राशि पर एक महीने ठहरता है। साथ ही यह ग्रह जाति, रक्त वर्ण, पित्त प्रकृति आदि पूर्व दिशा का स्वामी है। इसके द्वारा अनेक प्रकार के शारीरिक रोग, अपमान तथा कलह आदि का विचार किया जाता है। सूर्य ग्रह को पाप ग्रह माना जाता है। सूर्य लगन से सप्तम स्थान में बलि तथा मकर से छह राशियों तक चेष्टाबलि है।

भारत में प्राचीनकाल से ही सूर्य को देवता के साथ-साथ आरोग्यदाता के रूप में भी देखा गया है और उसकी किरणों को रोगों का हरण करने वाला बतलाया गया है। यही कारण है कि आरोग्य के लिए सूर्य चिकित्सा की शरण में जाने के लिए कहा गया है। प्राचीनकाल से ही मनुष्य सूर्य की लाभकारी शक्ति से परिचित है। पारसी एवं हिन्दू धर्म में सूर्य की देवता के रूप में साधना अराधना की जाती है। ऋग्वेद में सूर्य को सृष्टि की आत्मा कहा गया है।

आधुनिक प्रकाश सिद्धान्त से हजारों वर्ष पूर्व वेदों में सूर्य की सात रंग की किरणें बताई गयी हैं। सूर्य की ये किरणें विभिन्न रोगों का नाश करती है। सूर्योदय के समय की किरणें विभिन्न प्रकार के रोगों का नाश करती हैं। सूर्य की रश्मियों में रहने को अमृतलोक में रहने के समान माना है। सूर्य की रश्मियों के इन गुणों के कारण क्रोमोपैथी नामक चिकित्सा का विकास हुआ है। सूर्य से हृदय रोग, रक्ताल्पता, सिर के समस्त रोग, कर्णशूल, नेत्र रोग, पीलिया, फुसफुस रोग, उदर रोग, अस्थि रोग, अपचित रोग, गलने

और सड़ने वाले रोग इत्यादि दूर होते हैं। सूर्यताप को औषधि माना है।

सूर्य कर्क एवं तुला लग्न की कुण्डलियों के लिए अशुभ होता है। भावों की दृष्टि से सूर्य प्रथम भाव में धनु, मकर और मीन लग्न की कुण्डलियों में, द्वितीय भाव में वृष, मिथुन, कन्या और कुंभ लग्न की कुण्डलियों में, तृतीय भाव में मेष, कर्क और धनु लग्न की कुण्डलियों में, चतुर्थ भाव में वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक और मकर लग्न की कुण्डलियों में, षष्ठ भाव में धनु, कुंभ और मीन के अलावा सभी लग्न की कुण्डलियों में, सप्तम भाव में मिथुन, सिंह, वृश्चिक और कुंभ लग्न की कुण्डलियों में, अष्टम भाव में मेष के अतिरिक्त सभी लग्नों की कुण्डलियों में, दशम भाव में मेष, वृष और कर्क लग्न की कुण्डलियों में, एकादश भाव में मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक और मीन लग्न की कुण्डलियों में तथा द्वादश भाव में वृष, मकर, कुंभ और मीन लग्न की कुण्डलियों में अनिष्टता देने वाला कहा गया है। सूर्य चन्द्र स्थित राशि से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम और द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है।

इन अनिष्टता के निवारण हेतु मनीषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय अगर किए जाएं तो सूर्य की अनिष्टता का निवारण हो जाता है।

सूर्य सिंह राशि के जातकों का स्वामी ग्रह है। सूर्य से प्रभावित राशि के जातकों का जीवन के प्रारम्भ और यौवनकाल में इनका जीवन सुखमय और सफल होता है, पर वृद्धावस्था में प्रायः इनकी दशा बड़ी हीन रहती है। जीवन में सन्तान पक्ष में लड़कियां अधिक होती हैं। हस्तरेखा में सूर्य का स्थान अनामिका का तल माना गया है। सूर्य रेखा यश की रेखा मानी गयी है जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश सब ओर चमकता है, उसी प्रकार प्रबल सूर्य रेखा वाले जातक का नाम चहुं ओर चमकता है।

शुभ दिन, शुभ माह, शुभ वर्ष–

1-3-5-7-10-11-15-16-25-26-30 इस रिाश वालों के शुभ दिन हैं। शुभ वार–रविवार, बुधवार और बृहस्पतिवार (गुरुवार) हैं। शुभ माह जनवरी, मार्च, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर शुभ माह हैं। इनकी शुभ दिशा है–पश्चिम, उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम।

इस राशि वाले जातक का मुख्य व्यवसाय मुनीम, सेना में पुलिस में, सर्जन, राज़दूत, शिकारी, अग्नि तत्व का निर्माता (जैसे आतिशवाजी, विस्फोटक) आविष्कारक, तानाशाह नेता, अधिकारी होता है। यह सब पर अपना प्रभुत्व जमाकर रखते हैं।

इनका दाम्पत्य जीवन प्रायः कलहपूर्ण होता है। परिवार में अपना अधिकार जमाना चाहते हैं। तनिक-सी बात पर क्रोधित हो जाते हैं। इस राशि के जातक का परिवार में बड़ा आतंक होता है। सन्तान पर अंकुश–अनुशासन रखना, पत्नी पर पावन्दी लगाना इनका ध्येय होता है। सन्तान कम होती है।

इस राशि की महिला अच्छी प्रशासनिक महिला पुलिस होती है। इस राशि की महिला, निडर, निर्भीक एवं साहसी होती है। इस राशि वाले जीवन में कई सम्पर्क रखते हैं।

सिंह राशि के जातक की वृद्धावस्था अपवाद स्वरूप ही सुखमय होती है। बाल्यकाल, यौवनकाल जीवन का उत्कर्षकाल होता है। अपने शेर जैसे साहसिक स्वभाव

के कारण जीवन के हर क्षेत्र में उन्नति करते हैं। इनको उदर सम्बन्धी रोग अधिक होते हैं। इस राशि के जातकों के शरीर का आकार सिंह के समान होता है। वैसे इनको सब कुछ पच जाता है, पर अपने पेटूपन या स्वाद के लोभ में अधिक खा लेते हैं। अस्तु नाना प्रकार के रोग सताते रहते हैं।

इस राशि के जातक का वृद्धावस्था को छोड़कर शेष समय उत्तम रहता है। मस्त, शेर के समान निर्भीक, तेजस्वी होते हैं। इनको सन्तान का बड़ा ख्याल रहता है और उस पर कड़ी दृष्टि और अनुशासन रखते हैं। जंगल से सम्बन्धित कार्य करने वाले जातक प्राय: सुखी और समृद्ध देखे गए हैं। अंक 1 होने के कारण जुआ, सट्टा-लॉटरी में भी इनका भाग्य प्रबल रहता है। मित्र कम होते हैं, जो होते हैं अच्छे होते हैं। स्पष्टवादिता और सिंह स्वभाव के कारण शत्रुओं की भी कमी नहीं होती है। सामने से चेतावनी देकर इनसे जीत पाना कठिन होता है। भ्रमण करना पसन्द करते हैं। यदाकदा पिकनिक, यात्रा पर जाते रहते हैं। इस राशि के जातक के लिए सूर्य की उपासना करना उत्तम रहता है।

कुल मिलाकर सूर्य से प्रभावित राशि का जातक शानदार होता है और प्राय: सफल भी होता है। जिस प्रकार सौरमण्डल में नवग्रहों को महत्व प्राप्त है और नवग्रहों में सर्वोच्च मान-सम्मान सूर्य को दिया गया है, वैसे ही मनुष्य की हथेली में पायी जाने वाली रेखाओं में सूर्य रेखा को सर्वश्रेष्ठ होने का गौरव प्राप्त है। सामान्यत: मस्तिष्क और हृदय रेखा प्राय: सभी मनुष्यों की हथेली में पायी जाती है, परन्तु सूर्य रेखा अपेक्षाकृत कम ही दिखाई देती है।

जातक की योग्यता का फल मान-सम्मान एवं धन-समृद्धि प्राप्ति के रूप में हो, इसके लिए आवश्यक है कि हथेली में सूर्य पर्वत एवं सूर्य रेखा उन्नत और निर्दोष हो। जिस मनुष्य के हाथ में भाग्य रेखा के साथ-साथ सूर्य रेखा स्पष्ट होती है उनका जीवन सुखी होता है। मान-प्रतिष्ठा के साथ-साथ धन-वैभव भी प्राप्त होता है।

हथेली में सूर्य रेखा का उद्गम स्थान अलग-अलग होता है तथा भिन्न-भिन्न स्थितियों से सूर्य रेखा का उद्गम भिन्न-भिन्न फल प्रदान करता है।

अगर सूर्य पर्वत एवं सूर्य रेखा दोषयुक्त हों, तो ऐसा व्यक्ति अगर धनी हो, तो भी सुख प्राप्त नहीं कर पाता है। प्राय: ऐसे व्यक्ति कंजूस होते हैं।

धन वैभव मानप्रतिष्ठा



सूर्य रेखा

अगर सूर्य रेखा, शुक्र पर्वत से निकलकर सूर्य पर्वत पर पहुंचे तो आर्थिक दृष्टि से शुभ होती है। विवाह के पश्चात् धन-समृद्धि एवं प्रतिष्ठा में विशेष रूप से वृद्धि होती है। ससुराल पक्ष से लाभ प्राप्त होता है। अचानक लाभ के अवसर उपस्थित होते हैं। हथेली के मध्य से निकलने वाली सूर्य रेखा आकस्मिक धन लाभ की सूचक होती है। सूर्य रेखा अगर टूटी हो तो धन-वैभव के लिए जीवन भर भटकता रहता है तथा इनके लिए सुख-समृद्धि एवं शांति स्वप्न के समान होती है।

वैभवहीन



वैभवहीन

सूर्य ग्रह से उत्पन्न अनिष्टों के शमन हेतु जातक को सूर्य ग्रह से सम्बंधित मंत्र का जप करना शुभ फलदायक होता है। किसी भी शुक्ल पक्ष के रविवार से चन्द्रबल की अनुकूलता होने पर मंत्र का जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।

आइए अब सूर्य के विषय में एक दृष्टि में जाने!

सूर्य (SUN)

रत्न	:	मानक, लाल हकीक
राशि	:	सिंह
समय	:	मध्याह्न
स्वभाव	:	उग्र
समिधा	:	आक
पुष्प	:	कमल
गुण	:	सत्व
अंग्रेजी पर्याय	:	सन (Sun)
मूलत्रिकोण	:	मेष
उच्च राशि	:	तुला
नीच राशि	:	पुरुष
दृष्टि	:	सप्तम

मित्र ग्रह	:	चन्द्रमा, मंगल, गुरु
शत्रु ग्रह	:	शुक्र, शनि
सम ग्रह	:	बुध
काल पुरुष के शरीर में स्थिति	:	सिर
भाव कारकत्व	:	लग्न, नवम, दशम
वर्ण	:	रक्त या गोल
जाति	:	क्षत्रिय
आकृति	:	चतुरस्त्र
दिशा	:	पूर्व (East)
धातु	:	सोना, तांबा
लिंग	:	पुरुष
तत्व	:	अग्नि
ऋतु	:	ग्रीष्म
प्रतिनिधि पशु	:	रक्तवर्णा गाय
अवस्था	:	वृद्धावस्था

रविवार का उपवास एवं सूर्य का पूजन, सूर्य की प्रार्थना। एक बार अन्न का भोजन, नमक, तेल, दूध, खटाई, गरम जल आदि का उपयोग वर्जित करें। पौष के प्रथम रविवार से या आश्विन के अन्तिम रविवार से उपवास प्रारम्भ करें।

सूर्य का ध्यान

ॐ द्विभुजं पद्महस्तं च वरदं मुकुटान्वितम्।
ध्यायेद्दिवाकरं देवं सर्वाभीष्टफलप्रदम्॥

सूर्य का मंत्र

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यंच हिरण्ययेन
सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

मंत्र जप के अधिक प्रभाव के लिए सूर्य के 108 नामों का श्रद्धापूर्वक उच्चारण करें।

रविवार का उपवास रखने से सूर्य की अनिष्टता की शान्ति हो जाती है। शुक्ल पक्ष के रविवार के उपवास को प्रारम्भ करना चाहिए। इस दिन नमक का सेवन नहीं करें तथा दही और चावल का एक समय भोजन करें।

रविवार के दिन प्रातःकाल सूर्योदय के उपरान्त किसी ब्राह्मण को निम्न वस्तुओं का दान करना उत्तम है। गेहूं, तांबा, गुड़, खस, रक्त, पुष्प, रक्त वस्त्र, स्वर्ण, घृत, लाल चन्दन, माणिक्य, लाल रंग की गाय तथा सूर्य यंत्र।

सूर्य से पीड़ित जातक अगर माणिक्य रत्न का विधिपूर्वक दान करें तो अनुकूल प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। रत्न को गंगाजल से शुद्ध कर गंधाक्षत् से पूजित कर लें तथा **"ॐ घृणिः सूर्यायः नमः"** नामक मंत्र से अभिमंत्रित कर दान कर देना चाहिए। लाल तथा सिन्दूरी एवं गुलाबी वस्त्रों का दान भी कर देना चाहिए।

सूर्य से प्राप्त पीड़ा को यंत्र साधना द्वारा भी शान्त किया जा सकता है। किसी शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर निम्नांकित सूर्य यंत्र को अंकित करें तथा उसकी प्राणप्रतिष्ठा करके सूर्य गायत्री मंत्र से सिद्ध कर लें और उसको पूजागृह में स्थापित करके नित्य पूजन करें। इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से लिखकर कंठ में या दाहिनी भुजा में धारण करने से भी अनुकूलता प्राप्त होती है।

यंत्र

6	1	8
7	5	3
2	9	4
ॐ घृणिः सूर्यायः नमः		

सूर्य गायत्री मंत्र इस प्रकार है–

ॐ आदित्याय च विद्महे प्रभाकराय
धीमहि तन्नो सूर्यः प्रचोदयात्।

सूर्य से सम्बंधित वस्तुओं का दान कभी भी नहीं लेना चाहिए। जातक को अपनी जेब में सोने का पत्रा हर समय रखना चाहिए। रविवार के दिन बहते जल में तांबे का सिक्का बहा दें अथवा लाल रंग की गाय को रोटी और कैमिकलरहित गुड़ खिलाना चाहिए।

सूर्य ग्रह से पीड़ित जातक इलायची, मुलहठी, शुद्ध केसर, रोली, खस, देवदारू, मैनसिल तथा लाल पुष्प का रस–इन सबकी थोड़ी-सी मात्रा को जल में मिलाएं और उससे सूर्य का ध्यान करते हुए रविवार को इसी जल से स्नान करें, तो सूर्य की पीड़ा का शमन हो जाता है। गुड़हल पुष्प अथवा लाल गुलाब के पुष्पों की अंजलि नित्य सूर्य को भेंट करने से भी पीड़ा का शमन होता है। बेल की जड़ धारण करने से भी सूर्य के अनिष्ट प्रभाव से मुक्ति मिलती है।

लाल किताब द्वारा अनिष्टता निवारण

- तांबे के सिक्के बहते हुए पानी में प्रवाहित करें।
- गेहूं, गुड़ और तांबा का दान करें।
- शुक्ल पक्ष के रविवार को तांबे की अंगूठी धारण कर लें।
- चरित्रवान् बनें।
- रात का भोजन बन जाने के पश्चात् चूल्हे की अग्नि को दूध से बुझाएं। प्रतिदिन प्रातः सात देशी पान दान में दें।

यह तो थी सूर्य ग्रह की भावों में स्थिति, आइए अब थोड़ा वास्तुशास्त्र के अनुसार भी उपयों को देखें। सूर्य अशुभ होने पर आप किचन पूर्व की दीवार से लगा हुआ बनायें और सम्भव हो, तो उस ओर बड़ी खिड़की दें। काले-नीले-रक्तिम कपड़े न पहनें, न ही इन रंगों का प्रयोग दीवालों पर करें, न नीला बल्ब जलाकर सोयें। सुनहरे या नारंगी रंग की रोशनी में सोयें। पैतृक गृह में निर्धनों को भोजन एवं अन्धों को दान देने से लाभ होगा। दक्षिण की तरफ रूखवाले भवन में न रहें, न बनवायें। भवन का बरामदा पूर्व की ओर खुला रखें। घर के भीतर भट्ठी न बनवायें, न खुदवायें। पैत्रिक भवन में पूर्व–उत्तर कोने पर नलकूप गड़वायें या कुआं खोदें।

इसके 10 वर्ष पश्चात् शुभफल मिलेगा। पैतृक गृह में विष्णु यज्ञ करवायें। आटा पीसने की चक्की के पत्थर घर में रखें।

अंत में सूर्य का अपना महत्व तो है ही साथ ही यह भी समझना आवश्यक है कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अतः उसे समाज में रहते समय उपायों के साथ-साथ कुछ मूलभूत समाज के सिद्धांतों का पालन करना भी आवश्यक है। उपाय करने वाले का व्यवहार उसके परिवार, समाज और व्यापार स्थल को भी प्रभावित करता है, व्यवहार ही जगत का सुख है, व्यवहार ही सफलता की कुंजी है, अतः आपका मृदुल एवं स्नेहिल व्यवहार होना चाहिए। परिवार में सबको प्रिय लगे, ऐसा व्यवहार करना चाहिए। तब ही आप एक अच्छे गृहस्थ, एक अच्छे पड़ोसी और सफल व्यापारी बन सकते हैं।



10 कोमल चन्द्र (MOON)

हमारे पूर्वजों को ब्रह्मांड की उत्पत्ति की जानकारी वेद पुराणों से प्राप्त हुई थी जो एकदम सत्य थी। खगोल शास्त्र ने यह सिद्ध कर दिया है कि ब्रह्मांड की सृष्टि एक लंबी किंतु धीमी गति से होने वाली प्रक्रिया का परिणाम है।

इसी लम्बी प्रक्रिया का परिणाम नवग्रह हैं। इन नवग्रहों में चन्द्रमा सबसे कोमल और सुन्दर ग्रह है। यह कर्क राशि का स्वामी है। मन पर इसका अधिकार है। चन्द्रमा के विषय में आज विज्ञान से कुछ भी अनजान नहीं है। मनुष्य के चरण उस पर पड़ चुके हैं। चन्द्रमा पृथ्वी के निकट सबसे पास का ग्रह है। इस कारण इस ग्रह का सबसे अधिक प्रभाव पृथ्वी पर पड़ता है। पृथ्वी की रात के कृष्ण और शुक्ल पक्ष चन्द्रमा के उदय और अस्त की गति के कारण होते हैं। अब मैं थोड़ा विवरण कर्क राशि का प्रस्तुत करूंगा।

कर्क स्त्री राशि है। सौरमण्डल में इसकी आकृति केकड़े के समान है। स्वभाव शुभ है। चर राशि है और इसका उदय पृष्ठोदय है। दिशा दक्षिण है, अंक 2 है। गृहस्वामी चन्द्र है। रंग गुलाबी है और कीट (पतंगों) में गणना है। जाति ब्राह्मण है। शरीर में हृदय पर इसका स्थान है। ऋतु वर्षा है। रत्न मोती है। स्वाद लवण (नमकीन) है। धातु इसकी अस्थि और चर्म है। आकार गोल है। सौरमण्डल में राजा का स्थान प्राप्त है। ग्रह के अधिपति देवता पार्वती हैं। इसकी गणना श्रावण मास में है। अंग्रेजी मास जुलाई–अगस्त हैं। 20 जुलाई से 19 अगस्त, 22 जून से 23 जुलाई, 15 जुलाई से 14 अगस्त की अवधि मानी गयी है। चन्द्रमा एक राशि पर सवा दो दिन रहता है। पुनर्वसु का केवल चौथा चरण (चतुर्थ), पुष्य भी पूर्ण इसमें आता है, आश्लेषा के सम्पूर्ण चरण इस राशि में है। इसका निवास बाल अवस्था माना गया है। इन्द्रिय ज्ञान जिह्वा है।

इनका प्रारम्भिक जीवन–काल अच्छा होता है। विरासत में प्रायः धन–सम्पत्ति मिलती है। मध्य अवस्था में ही इनका जीवन सुदृढ़ हो जाता है। इस राशि वाले का पारिवारिक जीवन प्रायः तनाव से भर जाता है और पति–पत्नी हफ्तों एक–दूसरे से बात नहीं करते हैं। इसके बावजूद दोनों में गहरा प्रेम होता है। इस राशि की स्त्रियां प्रायः सुन्दर होती हैं पर चंचलता अत्यधिक होती है। इनके मन बड़े भावुक होते हैं। रुचि जल्दी–जल्दी बदलती है। इस राशि की स्त्रियां प्रेम में अपने चंचल स्वभाव के कारण धोखा खा जाती हैं।

इस राशि के जातक कुशल सेल्समैन और राजनीतिज्ञ होते हैं। बातें बनाने में कुशल होते हैं। यौवन काल तक इनका जीवन काफी संघर्षमय होता है, उसके बाद तीव्रता से उन्नति करते हैं। इनके जीवन में 35–45–55–65 वर्ष विशेष शुभ होते हैं। व्यापारी के रूप में चल और अचल सम्पत्ति काफी बनाते हैं।

वृद्धावस्था इनकी नरम–गरम दोनों प्रकार की हो सकती है। इनके बचपन के पश्चात्

इनका जीवन प्रायः संघर्षमय होता है। घूमने-फिरने का इनको शौक होता है। प्रायः लम्बी-लम्बी यात्राएं करते हैं। वृद्धावस्था में प्रायः तीर्थयात्रा या देशाटन पर जाते हैं।

इनका दाम्पत्य जीवन सफल होता है। स्वभाव नरम-गरम रहता है। अपनी संतान व पत्नी पर इनका अनुशासन कम ही होता है। लाड-प्यार से बिगाड़ दिया करते हैं।

प्रायः इनको हृदय से सम्बंधित बीमारियां हुआ करती हैं। उत्तर-पश्चिम, उत्तर-पूर्व दिशा में यह सफलता प्राप्त करते हैं। तेल या द्रव पदार्थों का व्यवसाय, यात्रा संयोजक, सेल्समैन, नाविक, बावर्ची, पत्रकार, गायक, नर्तक, बर्फ से सम्बंधित कार्य, चीनी, खेती-बाड़ी, रत्न व्यवसायी, घी विक्रेता, जल-कल आदि इनके उत्तम पेशे हो सकते हैं। इनसे ही इनका जीवन सुखमय रहता है।

शुभ दिन, शुभ माह, शुभ वर्ष—

इनकी शुभ तारीखें हैं 2-4-6-9-11-13-29-31, शुभ दिन हैं सोमवार, मंगलवार एवं शुक्रवार। शुभ मांह हैं फरवरी, अप्रैल, जून, सितम्बर और नवम्बर। शुभ वर्ष है-28-35-40-46-55-64।

हमारा केवल एक चंद्रमा है जो रात को सूर्य की रोशनी में चमकता हुआ दिखायी देता है। हम कल्पना करें कि अगर हम बृहस्पति पर हैं और वहां के आकाश में 16 चाँद चमक रहे हैं तो वह दृश्य सचमुच कितना अनूठा होगा! बृहस्पति के इन 16 चन्द्रमाओं को कभी-कभी लघु सौरमंडल के रूप में वर्णित किया जाता है। बृहस्पति के ये सारे चाँद एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। बृहस्पति के चार बड़े चंद्रमाओं को पहली बार गेलेलियो ने ढूंढा था। बृहस्पति और उनके चंद्रमाओं की जानकारी जुटाने के लिए जो यान भेजा गया, उसका नाम उन्हीं के नाम पर "गेलेलियो" रखा गया है।

गेलेलियो ने जिन चार चंद्रमाओं का अध्ययन किया था, इन चारों का आकार हमारे चंद्रमा की तुलना में 0.9 से 1.5 गुना के मध्य है। ये सब बृहस्पति की परिक्रमा करते हैं।

अभी तक बृहस्पति के इन्हीं चार चंदमाओं के विषय में अधिक जानकारी मिल पायी है। इन चार चंद्रमाओं में सबसे बड़ा गेनीमिडे है जो हमारे बुध ग्रह से भी बड़ा है। बृहस्पति की सतह पूरी तरह से बड़े-बड़े खड्डों से घिरी है जो तब से वैसे ही हैं जब बृहस्पति ग्रह का जन्म हुआ था। यह उपग्रह 60 प्रतिशत चट्टानों और लौह तथा 40 प्रतिशत हिम और पानी से बना है। बृहस्पति के इन चंद्रमाओं के अतिरिक्त जो 12 चाँद हैं, वे छोटे-छोटे ज्वालामुखीय तौर पर अभी भी हैं और उनमें से चार की कक्षाएं भचक्र सल्फर डाइ-ऑक्साइड का बना हुआ सीमा के भीतर से है।

चन्द्र ग्रह वृषभ, कन्या, मकर एवं कुंभ लग्न की कुण्डलियों में अशुभ माना गया है। इसके अतिरिक्त यह मेष लग्न में षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भावों में, वृष लग्न में द्वितीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भावों में, मिथुन लग्न में प्रथम, तृतीय, षष्ठ, अष्टम, नवम् एवं द्वादश भावों में, कर्क लग्न में द्वितीय, तृतीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, दशम, एकादश एवं द्वादश भावों में, सिंह, कन्या एवं कुंभ लग्न में सभी भावों में, तुला लग्न में तृतीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, एकादश और द्वादश भावों में, वृश्चिक लग्न में तृतीय, षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भावों में, धनु लग्न में तृतीय, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, एकादश एवं द्वादश भावों

में, मकर लग्न में प्रथम, तृतीय, पंचम, षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भावों में तथा मीन लग्न में तृतीय, षष्ठ, अष्टम एवं द्वादश भावों में अशुभ फल देने वाला होता है।

चन्द्र स्वस्थित राशि से द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, अष्टम, नवम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है। इसके निवारण हेतु ज्योतिषियों ने अनेक उपायों का विवरण प्रस्तुत किया है। ये उपाय अगर श्रद्धापूर्वक सम्पन्न किए जाएं तो चन्द्र की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यहां चन्द्र की अनिष्टता के निवारणार्थ उपाय प्रस्तुत हैं। चन्द्र द्वारा उत्पन्न पीड़ा को शान्त करने के लिए पीड़ित व्यक्ति को प्रतिदिन चन्द्र मंत्र का जाप करना चाहिए। ध्यान और मंत्र इस प्रकार है–

ध्यान

ॐ गदायुधधरं देवं श्वेतवर्णं निशाकरम्।
ध्यायेदमृतसंभूतं सर्वकामफलप्रदम्॥

चन्द्र का मंत्र इस प्रकार है–

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वस्सोम वृष्णियम्।
भवा वाजस्य संगथे॥

इसके उपरान्त फल की पूर्ण प्राप्ति के लिए चन्द्र के 108 नामों का उच्चारण भी करना चाहिए।

चन्द्र ग्रह के सूर्य एवं वुध मित्र हैं। शुक्र, शनि, मंगल एवं गुरु से इसका सम सम्वन्ध है। चन्द्र में केतु से ग्रहण लगता है। राहु से इसका सम्वन्ध मध्यम है।

चन्द्र सौन्दर्य कल्पनाशीलता और आकर्षण का केन्द्र है। सौंदर्य, शृंगार और कोमलता तीन शब्दों में चन्द्र के विषय में सब कुछ कहा जा सकता है। चन्द्र-प्रधान जातक कलाकार होते हैं जो स्वप्निल जगत निर्माण करते हैं। स्वप्नों में इनका जीवन व्यतीत है, लेकिन इनके जीवन का पर्दा उठने से पहले ही अंधकार से भर जाता है।

इनकी कल्पना के पैर नहीं होते, केवल पंख होते हैं। ये खोये-खोये, उदास, सदैव परेशान होते हैं और इसी से शांति के लिए नगर-नगर घूमा करते हैं। ये भौतिकवादी नहीं होते। यही कारण है कि ये प्रायः निराश कवि और लेखक होते हैं। प्रेम इनकी दुर्वलता होता है, किन्तु प्रेम एक दुःखांत कहानी होता है। ऐसे वातावरण में उन्हें पागल तक होते देखा गया है।

अब चन्द्र ग्रह का विवरण एक दृष्टि में प्रस्तुत है–

रत्न	:	मोती, मून स्टोन
राशि संचार समय	:	सवा दो दिन
समय	:	अपराह्न
स्वभाव	:	शुभ
समिधा	:	पलाश
पुष्प	:	श्वेत फूल

गुण	:	सत्व
वर्ण	:	श्वेत
जाति	:	वैश्य
आकृति	:	स्थूल
दिशा	:	वायव्य
धातु	:	चाँदी
लिंग	:	स्त्री
तत्व	:	जल
अंग्रेजी नाम	:	मून (MOON)
स्वामित्व	:	कर्क
मूल त्रिकोण	:	वृषभ
उच्च राशि	:	वृषभ
नीच राशि	:	वृश्चिक
काल पुरुष के	:	मुख
शरीर में स्थिति भाव का	:	चतुर्थ
कारकत्व अन्य कारकत्व	:	मन, मोती चाँदी, यात्रा, सुगंध
ऋतु	:	वर्षा
पशु	:	श्वेत बैल
दृष्टि	:	सप्तम
मित्र ग्रह	:	सूर्य, बुध
शत्रु ग्रह	:	राहु
सम ग्रह	:	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि

सोमवार को अगर रोहिणी नक्षत्र हो, या अन्य कोई भोग न हो, तो शुक्ल पक्ष में शुभ समय में चाँदी के पत्र पर चन्द्र यंत्र को उत्कीर्ण कराएं और उसके मध्य में एक मोती जड़वाकर चन्द्र गायत्री मंत्र से उसे प्रतिष्ठित कर लें। इसे पूजा कक्ष में रखें और नित्य पूजन करते रहें। इस मंत्र को भोजपत्र पर अष्ट गंध से लिखकर कंठ में अथवा भुजा में भी धारण कर सकते हैं।

यंत्र

7	2	9
8	6	4
3	10	5
ॐ ऐं क्लीं सोमाय नमः		

चन्द्र गायत्री मंत्र इस प्रकार है–

ॐ अमृताङ्गाय विद्महे कलारूपाय, धीमहि तन्नो सोमः प्रचोदयात्।

सोमवार का उपवास करने से भी जातक को चन्द्र के दोषों से मुक्ति मिलती है। शुक्ल पक्ष के सोमवार से यह उपवास प्रारम्भ करें और कम-से-कम सोलह उपवास करें। उपवास के दिन प्रातःकाल पूजा आराधना के उपरान्त दुग्धपान कर सकते हैं तथा सायंकाल एक समय फलाहार कर लेना चाहिए अथवा नमकरहित भोजन भी कर सकते हैं। चन्द्र की वस्तुओं का दान करने से भी चन्द्र दोष की शांति होती है। सोमवार को शुभ समय में निम्नलिखित वस्तुओं का दान करें–सफेद चीनी अथवा मिश्री, श्वेत-शंख, श्वेत वस्त्र, चावल, घी, दही, देशी कपूर का दान अरिष्टों की शांति होती है।

सौम्यता, सज्जनता, शील, संकोच, लज्जा, भावुकता, सुन्दरता, जलयात्रा, आदि का कारक है। लग्न और सप्तम स्थान में चन्द्र विशेष कारक ग्रह माना गया है।

चन्द्र-दोष से पीड़ित जातक को मोती तथा श्वेत पुखराज का दान श्वेत व्यक्ति को करना चाहिए। सफेद रंग के वस्त्र बांटने तथा धारण करने से चन्द्र-दोष पीड़ा का शमन होता है। मंदिरों में श्वेत शंख भेंट करना चाहिए।

चन्द्र-दोष से पीड़ित जातक को नित्य पंचगव्य से स्नान करना अत्यन्त लाभदायक है। पंचगव्य में गाय के दूध, दही, शुद्ध घी, गोबर तथा मूत्र का मिश्रण होता है। इसके अतिरिक्त स्नान के जल में फिटकरी, सफेद चन्दन, हाथी का मद आदि भी मिल जाए, तो भी उत्तम परिणाम मिलता है। उक्त सामग्रियों से अगर नित्य स्नान न कर सकें, तो सोमवार को अवश्य ही करना चाहिए।

लाल किताब द्वारा चन्द्र की अनिष्टता का निवारण करने के लिए निम्न उपाय करें–

पानी की टंकी की सफाई का ध्यान रखें। गंगा में स्नान करें। माता, दादी, नानी, स्त्रियों से आशीर्वाद प्राप्त करें। चाँदी की अंगूठी पहनें। रात्रि के समय दूध न पीएं।

चौथे भाव में केतु होने पर परिवार के सभी सदस्यों से बराबर मात्रा में चाँदी लेकर एक ही दिन बहते पानी में प्रवाहित करें। चन्द्रमा छठे घर में हो, तो खरगोश पालें। 12वें भाव में हो, तो गुरु का उपाय करें और अपने गुरु से आशीर्वाद लें।

अब मैं वास्तुशास्त्र के अनुसार चन्द्र-दोष की शान्ति हेतु कुछ उपाय लिख रहा हूं!

जलस्रोत न बनवायें। दूधारू पशु न पाले। मकान न बनवायें। बरगद के वृक्ष की जड़ में जल चढ़ायें। घर में चन्द्रमा की वस्तुयें रखें। कुआं, प्याऊ, तालाब, पम्प आदि लगवायें। मिट्टी के चौड़े मुंह वाले बर्तन में पानी रखकर चाँदनी रात में खुले आसमान के नीचे रात भर रखकर सुबह पीयें, नियमित शुक्ल पक्ष में। घर में चन्द्रमा की वस्तुयें स्थापित करें। चन्द्र की वस्तुयें या चाँदी दबायें। सोने वाले पलंग या चारपाई के चारों पायों में तांबे की कील जुड़वायें। पिता-पुत्र एवं पौत्र मिलकर विष्णु यज्ञ करें। घर के मध्य भाग में पानी का घड़ा (मिट्टी) रात में रखें और सुबह उस घर के मध्य में कुल क्षेत्र का 1/8 भाग कच्चा फर्श रखें। घर की नींव में या मध्य आंगन में और नैर्ऋत्य कोण में कोने को नीचे रखें और वर्षा का जल स्थापित करें।

अंत में स्मरण रखें, चन्द्र अकेला और शुभ होने पर सदैव अपनी दयालुता और नर्मी से फांसी तक की सजा क्षमा करवा लेगा और कभी भी कुल को नष्ट न होने देगा।

11 सेनापति मंगल (MARS)

हमारे नभ में प्रायः रात को दिखायी देने वाली "ध्रुवीय ज्योति" ऐसी प्राकृतिक रचना है जिसकी सुन्दरता की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। प्रकाश के तरह-तरह के रंगों की यह मनमोहक चित्रकारी इस क्षेत्र में विना दूरबीन के दिखायी देती है। जो ध्रुवीय ज्योति उत्तरी गोलार्द्ध में दिखायी देती है उसे उत्तरी ध्रुवीय ज्योति और जो दक्षिणी गोलार्द्ध में प्रकट होती है उसे दक्षिण ध्रुवीय ज्योति कहते हैं। इस ज्योति का सीधा सम्बंध सूर्य से है। सूर्य की प्रचंड गतिविधियों का पृथ्वी के वायुमंडल में पड़ने वाला प्रभाव हमें ध्रुवीय ज्योति के रूप में दिखायी देता है। ध्रुवीय ज्योति बादल अथवा प्रकाश रेखाओं के रूप में प्रकट होती है। यह ध्रुवीय प्रकाश कभी बादल की तरह चलता दिखायी देता तो कभी-कभी चमकदार प्रतीत होता है। कई बार ध्रुवीय ज्योति का प्रभाव इतना शक्तिशाली होता है कि यह पृथ्वी की कक्षा में घूमने वाले संचार उपग्रहों को भी ठप कर देता है। इस ज्योति की चकाचौंध से कई बार धरती पर बिजली की रोशनी एकदम फीकी पड़ जाती है।

ध्रुवीय ज्योति के रूप में दिखायी देने वाला प्रकाश यों तो कई प्रकार का होता है, लेकिन हरा प्रकाश अधिक दिखायी देता है। जो ध्रुवीय ज्योति आकाश में बहुत ऊंचाई पर प्रकट होती है, उसका रंग लाल और बैंजनी होता है। सूर्य से तीसरे नंबर का ग्रह हमारी पृथ्वी है और उसके पश्चात् जो ग्रह आता है, वह मंगल है। पृथ्वी से लाल तारे की तरह दिखने वाला मंगल हजारों वर्षों से लोगों की जिज्ञासा का केन्द्र बना रहा। लोगों का पक्का विश्वास था कि मंगल पर अवश्य कोई सभ्यता है। मंगल को सूर्य से इतना प्रकाश तो मिलता है कि यहां सामान्य जीवन पनप सकता है लेकिन जो अंतरिक्ष यान मंगल में भेजे गये हैं उनसे यह बात स्पष्ट हो गयी है कि मंगल एक ठंडा, सूखा और जीवन से शून्य ग्रह है। मंगल लाल दिखता है। इसके लाल रंग के कारण ही प्राचीन रोमवासियों ने इसे युद्ध के देवता का नाम दिया। यह सूर्य से 142,000.000 किमी० दूरी पर है। 6,790 किलोमीटर व्यास वाला मंगल ग्रह पृथ्वी के आधे जितना है लेकिन वहां धरती उतनी ही है जितनी पृथ्वी पर क्योंकि पृथ्वी का अधिकांश भाग महासागरों से घिरा है और मंगल पर न कोई सागर है, न नदियां, चूंकि मंगल पर कभी वर्षा नहीं होती, इसलिए यहां केवल रेगिस्तान है, पर्वत है। गर्मियों के मध्य यहां दक्षिणी गोलार्द्ध से उठने वाला तूफान अक्सर इस पूरे ग्रह को ढक लेता है।

हमारी पृथ्वी की तरह ही मंगल में भी अनेक ऋतुएं होती हैं, लेकिन वहां उनका समय दो गुना होता है। मंगल पर दिन भी पृथ्वी की तरह 24 घंटे का होता है। रात को भूमध्य रेखा पर मंगल का तापमान शून्य से 101 डिग्री सेल्सियस नीचे चला जाता है जो कि पृथ्वी पर किसी भी सबसे ठंडी जगह से अधिक है।

मंगल पर हम पृथ्वी की तरह सांस नहीं ले सकते क्योंकि वहां का वायुमण्डल

95 प्रतिशत कार्बन डाइ-ऑक्साइड है। पृथ्वी पर मौजूद हवा से वहां की हवा 100 गुना अधिक पतली है। इतनी पतली हवा में सूर्य की परावैंगनी किरणों के घातक प्रभाव से बच पाना असम्भव है। ऐसे में मंगल पर हमारा खून तो उबलने लगेगा। इसके बाद भी वहां सामान्य सजीव चीजें जिंदा रह सकती हैं क्योंकि वहां की हवा में वे सारे घटक उपस्थित हैं जो सजीवों के लिए अनिवार्य हैं। हमारे वायुमण्डल में जितनी जलवाष्प है, उसका 1000वां भाग यहां भी उपस्थित है। जलवाष्प की मात्रा कभी-कभी धुंध का रूप ले लेती है।

मंगल 687 दिनों में सूर्य का एक चक्कर लगाता है। पृथ्वी से मंगल की स्थिति बदलती रहती है, क्योंकि मंगल और पृथ्वी दोनों ही सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। करीब हर 780 दिनों में मंगल एकदम चमकीला लाल दिखायी देता है।

विधाता ने ब्रह्माण्ड की रचना के साथ ही व्यवस्था की दृष्टि से देवी-देवताओं की तरह ही ग्रहों और नक्षत्रों को भी जिम्मेदारी सौंपी है। समय किसी भी प्राणी की केवल आयु ही निर्धारित नहीं करता अपितु उसके पूरे जीवन का नियंत्रक यही समय होता है—और समय का संचालन विश्व में ग्रहों के माध्यम से होता है। इन नौ ग्रहों में मंगल ग्रह स्वयं में विशेष महत्त्व रखता है। इसीलिये जहां एक ओर भूमि से उत्पन्न होने के कारण यह "भूमि पुत्र" कहलाता है, वहीं सेनापति भी कहा जाता है। शरीर में रक्त पर इसका आधिपत्य माना गया है। राशिचक्र में भी बारह में से एकसाथ दो राशियों मेष, वृश्चिक का स्वामी यही मंगल है।

भूमि पुत्र होने से धरती, जायदाद, भवन, खेत, खलिहान, फैक्ट्री आदि बातों में मंगल को आधार मानकर ही वास्तविकता जानी जा सकती है। इसीलिए आज जिस वास्तुशास्त्र की इतनी चर्चा हो रही है, वास्तु की अपेक्षा मंगल ग्रह का विचार कर और मंगल को अनुकूल बनाकर उसे विशेष रूप से प्रसन्न कर लिया जाए, तो वास्तु देवता से भी अधिक अनुकूलता प्राप्त की जा सकती है।

मानव शरीर में रक्त पर मंगल का विशेष प्रभाव होने तथा भूमि तत्व का स्वामी मंगल होने से व्यक्ति के वैवाहिक जीवन का तो एक प्रकार से मंगल आधारभूत तत्व ही होता है। विशेषकर किसी महिला के वैवाहिक जीवन पर इसका और अधिक प्रभाव होता है।

युद्ध, नेतृत्व, सेनापतित्व, पुलिस, मिलिटरी की नौकरी, अस्त्र-शस्त्र संचालन, कृषि, भूमि सम्बंधी कार्य, भूगर्भ विशेषज्ञ, भवन बनवाना, भूखण्ड खरीदना, डॉक्टरी शिक्षा, पशुपालन आदि कार्यों का विशिष्ट कारक ग्रह है। दशम भाव में मंगल विशिष्ट कारक ग्रह माना गया है।

मंगल 3, 5, 10, 11वें भाव में शुभ तथा 1, 2, 4, 7, 8, 12वें भाव में अशुभ होता है। मंगल शुभकर होने पर हमें बलवान्, धैर्यवान् तथा सहिष्णु बनाता है। इंजीनियर, गणितज्ञ या खिलाड़ी के रूप में पहचान बनाने के लिए मंगल का बलवान् होना परम आवश्यक है। मंगल के सुप्रभाव से दृढ़ इच्छाशक्ति से युक्त होकर बड़ी-बड़ी चुनौतियों को स्वीकार करता है तथा जीवन सुव्यवस्थित एवं सुरुचिपूर्ण ढंग से जीता है। अशुभ मंगल के कारण व्यक्ति क्रोधी, अशिष्ट और उदण्ड हो जाता है, बात-बेबात झगड़े करता है और उसकी

प्रवृत्ति विध्वंसकारी हो जाती है। आज की आतंकवाद जैसी प्रवृत्तियां मंगल की अशुभता का ही परिणाम हैं।

मंगल का जन्म उज्जैन में क्षिप्रा के तट पर हुआ था। जो शिवलिंग वहां स्थापित है, उसे मंगलनाथ कहा जाता है। उस शिवलिंग की पूजा करने से यह पाया गया है, कि मंगल से अनुकूल फल शीघ्र मिलता है। मंगल ग्रह मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी है।

मेष राशि को भारतीय ज्योतिष में प्रथम स्थान प्राप्त है। इसे भेड़ की आकृति का माना गया है और इसका निवास गुर्दे में ऊपर के भाग में माना गया है। सौर पद्धति में इसका समय 20 अप्रैल से 19 मई, चन्द्र पद्धति में अप्रैल, मई, पाश्चात्य मत के अनुसार मार्च 21 से अप्रैल 21 तक और भारत सरकार के द्वारा प्रकाशित राष्ट्रीय पंचांग में अप्रैल 15 से मई 14 तक इसका समय माना गया है।

इस राशि का अधिपति स्वामी क्रूर एवं तेजस्वी ग्रह मंगल माना गया है। यह चर राशि है और अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र इसमें आते हैं। इसका तत्व अग्नि है और इसकी गणना पृष्ठोदय (पिछले भाग से उदय होने वाली) राशि में है। इसकी दिशा पूर्व है, रंग लाल माना गया है, कद छोटा और रहने का स्थान वन माना गया है। जाति इसकी क्षत्रिय है। इसकी गणना पुरुष श्रेणी में है। यह चतुष्पदा राशि है। इसका अधिपति स्वामी ग्रह के देवता विघ्न विनायक श्री गणपति हैं। इसकी धातु मज्जा है। इसके देवता मंगल को सौरमण्डल के मंत्रिमण्डल में सेनापति का स्थान प्राप्त है। इसका इन्द्रिय ज्ञान नेत्र है। कुण्डली में इसकी राशि उच्च मानी गयी है। इसका आकार ढोल के समान माना गया है। इसके वेद सामवेद हैं। बुध शाखा का स्वामी माना गया है। इसका क्रम अयन (दिन) है। इसका फल दिन भर में मिल जाता है क्योंकि इसका और पृथ्वी का दिन करीब-करीब बराबर है। यह एक राशि पर डेढ़ दिन रहता है।

मैं इन सबका वर्णन और विवरण इसलिए दे रहा हूं, ताकि पाठकों को अपना भविष्यफल पढ़ते समय इन बातों का ध्यान रहने पर वह भविष्य-कथन की प्रमाणिकता पर विश्वास भी करेंगे क्योंकि यदि सब तथ्य इतने वैज्ञानिक हैं कि इनकी व्याख्या के अनुसार ही भविष्यफल मिलता है। इस सब विवरण का अर्थ भी आपको आगे मिल जाएगा। इस प्रकार के नाम, गणना और वर्गीकरण का क्या अर्थ है? आप पढ़कर आश्चर्य में पड़ जाएंगे कि भविष्यफल को भविष्य-कथन अन्य भविष्यफलों से भिन्न है, क्योंकि मैं इस विद्या को "विज्ञान" के रूप में मानता हूं, और विज्ञान हमेशा प्रमाणित होता है। अतएव यह सब वर्णन स्वयं आपको भी मेरी बात को विज्ञान की कसौटी पर रखने में सहायक बनेगा। इस राशि के देवता की आयु 50 वर्ष मानी गयी है। यह सत्वगुणी है। प्रकृति कफ है। रत्न इसका मूंगा है और स्वाद तिक्त है। ऋतु ग्रीष्म है। सूर्य, चन्द्र, बृहस्पति (गुरु) इसके मित्र हैं। बुध इसका परम शत्रु है। शुक्र और शनि से इसकी साधारण मैत्री मात्र है।

आकार के अनुसार कमर पतली है। बाल चमकते घुंघराले हैं। आंखें रक्तवर्ण है। स्वभाव क्रूर और अस्थिर है। हृदय उदार है वार करने में यह बड़ा अचूक निशानेबाज है। शरीर में आघात या जलने का चिन्ह है। वीर है पर अनुशासित है। अत्यन्त कामुक

और शीघ्र गुस्से में आने वाला है। इसका शुभांक 9 है। इसकी अंक गणना 3 से 11 है।

पुराणों में मंगल को "महिसुत" अर्थात् पृथ्वी पुत्र कहा गया है। वेदकालीन पंचग्रहों में इसकी गणना है। महाभारत के कर्ण पर्व में इसकी विशेष चर्चा है। यह ग्रह पृथ्वी के मानव के लिए विशेष महत्व रखता है। इस ताम्रवर्णी ग्रह और पृथ्वी में अनेक समानताएं हैं। इनका व्यास मात्र 4215 मील है। पृथ्वी से इसकी निकटतम दूरी लगभग 34600650 मील है। इसका तापमान 85 डिग्री फारेनहाइट से 190 फारेनहाइट है। 5 फरवरी, 1965 को जिस प्रकार सभी ग्रह एक साथ इकट्ठे हो गए थे, उसी तरह 5 मई, 2000 में फिर एक साथ इकट्ठे होंगे।

इसका एक नाम भौम भी है। सूर्य से इसकी दूसरी लगभग 14,730,000 मील है। पृथ्वी के 657 दिनों में यह सूर्य की एक परिक्रमा पूरी करता है। मंगल का एक वर्ष पृथ्वी के 2 वर्ष से थोड़ा छोटा होता है, पर दिन लगभग बराबर है। साधारणतः इसका दिन 24 घंटे 37 मिनट का होता है। सूर्य की परिक्रमा करते समय वह हर 15वें वर्ष में पृथ्वी के एकदम निकट आ जाता है। यूनान में इसे युद्ध का देवता माना है। 1877 में पहली बार मिलान की वेधशाला में इसका सम्पूर्ण वैज्ञानिक अध्ययन किया गया। 1907 में इटली के एक खगोल शास्त्री गियोपान्नी शिया पारती ने इसमें 700 जल नहरों का होना प्रमाणित किया और सबसे पहले मंगल पर आबादी होने की सम्भावना प्रकट की।

अमेरिका ने अपना (वाईकिंग) रॉकेट मंगल ग्रह तक भेजा। मंगल ग्रह का वायु दबाव पृथ्वी के वायु दबाव का केवल सौवां अंश है। इस पर उल्कापात के गहरे गड्ढे हैं। ज्वालामुखी पर्वती हैं। मौसम की दृष्टि से ग्रह सजीव है। बादल, तेज हवायें, धूल की आंधियां चलती हैं।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र "पराशर संहिता" में मंगल ग्रह की रुधिर का देवता और जीव का उत्पत्ति का केन्द्र माना है। हस्तरेखा में यह मनुष्य की हथेली पर दो स्थानों पर अपना अधिकार रखता है।

अब हम पौराणिक और आज के वैज्ञानिक तथ्यों को मिलाकर देखेंगे कि हमारी पौराणिक मान्यता व गणना किस प्रकार वैज्ञानिक तथ्यों से मेल खाती है। वेदों में भी मंगल का श्लोक आया है। वेदों का रचनाकाल अनादि है। आज तक यह प्रमाणित नहीं हो सका कि वेदों की रचना किसने की और कब की? हमारे यहां वेद स्वयं ब्रह्मा-रचित मानते हैं। जो भी हो, लाखों वर्षों पूर्ववर्णित विवरण आज भी विज्ञान की खोज में सटीक उतर रहा है।

इस राशि के अधिकतर जातक का रंग गोरा होता है। उनके रक्त में लाल कणों की अधिकता के कारण प्रायः रंग गोरा, ताम्रवर्ण (तांबे के समान दमकता), गेहुंआ होता है। अश्विनी या भरणी नक्षत्र में जन्मे बालक का यही रंग होता है। इनका गोरा, श्यामल भी होता है, काला रंग बहुत कम होता है। कद सामान्यतः छोटा होता है। लम्बे-चौड़े इस राशि के व्यक्ति अपवाद हो सकते हैं। बदन गठीला तथा बाल घुंघराले होते हैं। इस राशि की महिलाओं के बाल अधिकतर लम्बे और घने होते हैं। आंखें बहुत सुन्दर

होती हैं। उनकी आंखों में चमक, चंचलता बेहद होती है। पुरुष की आंखों के कोरों में ललाई अवश्य होती है। अगर ऐसा नहीं होगा तो उनका शरीर ढाल के समान होगा; अर्थात् तोंद वाला मोटा थुल-थुल होगा।

इस राशि का जातक अस्थिर स्वभाव का होता है। इसे बहुत शीघ्र गुस्सा आता है, पर ठंडा भी शीघ्र होता है और हृदय का बड़ा कोमल होता है। इसे तिक्त पदार्थ विशेष पसन्द होते हैं। यह डरपोक, कायर नहीं होता। मौका पड़ने पर मरने-मारने के लिए तैयार रहता है। उस समय यह अत्यन्त क्रूर होता है। अपने दुश्मन के टुकड़े-टुकड़े करने के बाद भी शांत नहीं होता है।

सत्वगुणी होने के कारण सच्चरित्र, दृढ़निश्चयी और संकल्प पूरा करने वाला व्यक्ति होता है। केवल अस्थिर स्वभाव के कारण इसे कम सफलता मिलती है। इसका तत्व अग्नि होने के कारण उग्र स्वभाव का होता है। नेतृत्व गुण अधिक होता है। चतुष्पदी राशि होने के कारण यह बार-बार गिरने पर भी उठकर शीघ्र खड़ा हो जाता है। अपना लक्ष्य नहीं भूलता, प्राप्त करके ही दम लेता है। पृष्ठोदय राशि के कारण यह दुश्मन की ओर पीठ कर देने पर ही मात खा सकता है, वरना सामने से इसको कोई भी पराजित नहीं कर सकता। यह अत्यन्त कामुक होता है। हरियाली (पेड़-पौधे, बागीचे) इसको बड़े पसन्द होते हैं। लाल, सफेद और हरा रंग इसे प्रिय होता है। अपनी आकृति भेड़ होने के कारण इसके गुण अवगुण स्वभाव भेड़ से बहुत कुछ मिलते हैं।

इस राशि के व्यक्ति की आयु अगर देवयोग पक्ष में रहता है, तो कम- से-कम 55 वर्ष अवश्य ही होती है। इस राशि का जातक प्रायः दीर्घायु माना गया है। दुर्घटना या चोट के कारण इसकी मृत्यु सम्भव होती है।

अपनी प्रकृति रूप के कारण इसका स्वास्थ्य नरम-गरम बना रहता है। गर्मी, विषप्रभाव, चोट, घाव, कोढ़, नेत्र पीड़ा, खुजली, ब्लड प्रेशर, कमजोरी, हड्डियों पर चोट, ट्यूमर, कैंसर, बवासीर, गर्दन पीड़ा जैसी बीमारियां होती हैं। शरीर में आघात और जलने का चिन्ह बतलाया गया है। अतएव इस राशि की महिलाएं भाग-भगाकर आत्महत्या करती हैं। पुरुष का शरीर एक न एक बार जरूर जलता है या आघात खाता है।

इसका विवाह-प्रेम मेष, वृषभ, तुला राशि की स्त्री से होने पर सुखमय एवं सफल रहता है। वृश्चिक, मकर राशि से सामान्य सुखी। मिथुन, कन्या राशि से होने पर प्रायः क्लेशपूर्ण रहता है। कामुकता के कारण अपनी स्त्री से इसकी पटती नहीं। कामवासना की तृप्ति के लिए यह भटकता रहता है। परिवार के प्रति इसका व्यवहार अस्थिर रहता है।

जीवन-निर्वाह इसका जनरल (सेना में) या अन्य पदों पर, संगठनकर्ता, डॉक्टर, व्यापारी, वकील, दवा विक्रेता, नेता के रूप में होता है।

इस व्यक्ति के लिए पूर्व, उत्तर-पूर्व, दक्षिण दिशाएं विशेष शुभ होती हैं।

इण्डोनेशिया, कलकत्ता, शिमला, पैरिस, कनाडा, बैलग्रेड स्थानों में बड़ा भाग्योदय होता है।

शुभ तिथि, शुभ दिन, शुभ माह-

मेष राशि वालों को-1-2-3-6-11-13-16-21-23-28-30 तिथियां शुभ रहती हैं।

सोमवार, मंगलवार, गुरुवार आदि दिन अधिकतर शुभ रहते हैं।

जनवरी, मार्च, अक्टूबर एवं दिसम्बर माह प्रायः शुभ रहते हैं।

मंगल ग्रह वृष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर एवं कुंभ लग्न की कुण्डलियों में नैसर्गिक रूप से अशुभत्व प्रदान करता है। मंगल प्रथम भाव में मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं मकर लग्न की कुण्डलियों में, द्वितीय भाव में मेष, वृष, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुंभ एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में, तृतीय भाव में धनु लग्न की कुण्डली में, चतुर्थ भाव में कर्क, सिंह एवं धनु लग्न के अतिरिक्त सभी लग्नों की कुण्डलियों में, पंचम भाव में वृष एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में, षष्ठ भाव में वृष, तुला एवं धनु लग्न की कुण्डलियों के अतिरिक्त सभी लग्नों की कुण्डलियों में, सप्तम भाव में कर्क, वृश्चिक एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में, दशम भाव में वृष, कुंभ और मीन लग्न की कुण्डलियों में, एकादश भाव में कर्क, सिंह, तुला, वृश्चिक, धनु एवं मीन लग्न की कुण्ड़लियों में तथा द्वादश भाव में मेष, मिथुन, कन्या, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ और मीन लग्न की कुण्डलियों में अशुभत्व प्रदान करता है।



मंगल चन्द्र स्थित राशि से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, नवम, दशम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है।

इस अनिष्टता के निवारण हेतु ज्योतिषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय अगर सम्पन्न किए जाएं, तो निश्चिय ही मंगल की अनिष्टता का निवारण हो जाता है।

मंगल ग्रह के द्वारा उत्पन्न पीड़ा को शांत करने हेतु जातक को मंगल के मंत्र का जप करना लाभदायक होता है। इसे मंगलवार से ही प्रारम्भ करें।

मंगल का ध्यान इस प्रकार है–

ॐ श्री रक्तमाल्यांबरधरं हेमरूपं चतुर्भुजम्।
शक्तिशूलगदापद्म धरन्तं स्वकरांबुजैः॥
मेषारूढं त्रिकोणस्थं भावयेद्धरणीसुतम्॥

ध्यान के उपरांत ग्रह का मानसिक रूप से पूजन करें तथा भावपूर्वक जप करें–

मंगल का मंत्र इस प्रकार है–

ॐ अग्निर्मूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽअयम्।
अपाꣳरेताꣳसिजिन्वति॥

किसी भी शुभ योग में ताम्रपत्र में मंगल यंत्र को उत्कीर्ण कराएं। मध्य में मूंगा जड़वाकर मंगल गायत्री मंत्र से 108 बार जप करके प्रतिष्ठित कर लें और नित्य पूजा करनी चाहिए। अगर पीड़ा अधिक है, तो इस यंत्र को भोजपत्र पर लिखकर कंठ में भी धारण कर सकते हैं अथवा तांबे की अंगूठी पर मंगल यंत्र खुदवाएं और शुद्ध करके अनामिका अंगुली में धारण कर लें।

यंत्र इस प्रकार है–

यंत्र

8	**3**	**10**
9	**7**	**5**
4	**11**	**6**
ॐ हूं श्री मंगलाय नमः		

मंगल ग्रह

रत्न	:	मूंगा, लाल हकीक
संचार काल	:	डेढ़ माह
समय	:	मध्याह्न
स्वभाव	:	क्रूर
समिधा	:	खदिर
पुष्प	:	लाल कनेर
गुण	:	तमोगुण
अंग्रेजी पर्याय	:	मार्स (MARS)
स्वामित्व	:	मेष, वृश्चिक राशि पर
मूल त्रिकोण	:	मेष
उच्च राशि	:	मकर
नीच राशि	:	कर्क
वर्ण	:	लाल
जाति	:	क्षत्रिय
आकृति	:	त्रिकोण

दृष्टि	:	4, 7, 10
मित्र ग्रह	:	4, 7, 10
शत्रु ग्रह	:	वुध, राहु
सम ग्रह	:	शुक्र, शनि
काल पुरुष के शरीर में	:	कण्ठ, गला
स्थिति भाव का	:	तृतीय, षष्ठ
कारकत्व	:	भ्राता, स्वाभिमान, पराक्रम, भूमि आदि
दिशा	:	दक्षिण
धातु	:	तांवा, सोना
लिंग	:	पुरुष
तत्व	:	अग्नि
ऋतु	:	ग्रीष्म
प्रतिनिधि पशु	:	रक्तवर्ण का वैल
अवस्था	:	युवा

मंगल गायत्री मंत्र इस प्रकार है—

ॐ अंकारकाय विद्महे शक्तिहस्ताय धीमहि तन्नो भौमः प्रचोदयात्॥

मंगल ग्रह की प्रसन्नता के लिए मंगलवार का उपवास जातक को करना चाहिए। उपवास के दिन स्नानादि के उपरान्त हनुमान जी के दर्शन करें तथा सायंकाल उन्हें भोग लगाकर एक समय केवल मीठा भोजन करें। दान करने से भी ग्रह की अनिष्टता दूर होती है, अतः निम्नलिखित वस्तुओं को दान करना चाहिए—मूंगा, तांबा, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन, मसूर की दाल, गुड़, कस्तूरी तथा दक्षिणा आदि। अधिक पीड़ा के समय विधिवत् प्राण-प्रतिष्ठत मंगल यंत्र का दान भी कल्याणकारी होता है। मूंगा दान करना मंगल को शांत करना है। विद्यार्थियों को लाल वस्त्र बाटें तथा हनुमान जी के मंदिर में भी लाल चोला चढ़ाएं, इससे मंगल की शांति होती है।

मंगल ग्रह के दोष से पीड़ित जातक को लाल चन्दन, बेल की छाल, जटामासी, सिंहरफ, खिरेटी तथा गुड़ एवं हींग आदि पदार्थों से युक्त जल से स्नान करना चाहिए।

लाल किताब के सरल उपायों द्वारा भी आप अशुभ मंगल की शांति कर सकते हैं।

शुद्ध मधु, सिन्दूर तथा लाल मसूर की दाल को बहते पानी में प्रवाहित करें। बड़े भाई और भाभी का सम्मान करें। लाल रंग का तौलिया तथा रूमाल उपयोग में लाएं। दूध को उफन कर भूमि पर नहीं गिरने दें। लाल रंग के छोटे से रूमाल में सौंफ बांधकर शयनकक्ष में रख लें।

ससुराल से लेकर कुत्ता न पालें। साधु की संगति न करें। कुण्डली के 7वें खाने में सूर्य, चन्द्र या गुरु बुध के साथ हो, तो दूसरे के झगड़े में जाकर बर्बाद होता है। मंगल के दायें-बायें सूर्य एवं चन्द्रमा हों, तो मुफ्त का उपहार या दान न लो। दही लगाकर

स्नान करें। कपूर या सुगन्धित पदार्थ पत्नी के शरीर पर लगाने से तथा भूमि में दबाने से शुभफल प्राप्त होता है।

अब मैं मंगल वास्तुशास्त्र के आईने में प्रस्तुत कर रहा हूं। वास्तुशास्त्र के वह सरल उपाय हैं, जिन्हें अपनाने से आप वास्तुदोष निवारण के साथ-साथ मंगल ग्रह की शांति भी कर सकेंगे।

पैत्रिक सम्पत्ति की यथासम्भव रक्षा करें। घर के कोने को न बेचें। जब भी दूध उबालें, यह ध्यान में रखें कि वह धरती पर न गिरे। शुक्र की वस्तुयें अपने भवन की भूमि में दबायें। घर में बहिन, साली या बुआ आये, तो बगैर मीठा खिलाये और पानी पिलाये न जाने दें। अय्याशी न करें। विधवा या कुंवारी लड़की, साली या बहिन घर में हो, तो घर से निकलते समय उसे मीठा अवश्य खिलायें। दक्षिण की ओर द्वार हो, तो लोहे की कील से कील दें। छत पर चीनी की खाली बोरियां डालें। हाथीदांत घर में रखें। श्मशान से जल लाकर भवन में स्थापित करें। इससे पत्नी को स्नान करवायें।

प्रिय मित्रों! स्मरण रखें मंगल अगर अशुभ स्थिति में हो, तो जातक क्रोधी, झूठा, दुष्ट, कठोर, कामुक, लालची, कपटी, हिंसक, अन्यायी, अधर्मी होता है, परन्तु अगर शुभ स्थिति में हो या उपाय के द्वारा अनुकूल हो गया हो तो जातक शांत, धैर्यशाली, भला, साहसी, धार्मिक, दृढ़निश्चयी, अटल व नेतृत्व गुणों की क्षमता से युक्त होता है।



12 मंगल और मांगलिक योग

हम जिस पृथ्वी पर रहते हैं, वह एक ग्रह है जो सूर्य से अलग होकर अब सूर्य की परिक्रमा करती है और इस परिक्रमा को वह जितने समय में पूरा करती है उसे एक वर्ष की संज्ञा दी जाती है। वृत्ताकार पृथ्वी अपनी धुरी पर जितने समय में घूमती है, उसको दिन-रात की संज्ञा दी जाती है और उसके साथ ही अन्य ग्रहों की किरणें इस धरती पर आकर धरती और धरती के जीवों को प्रभावित करती हैं। ये प्रभाव उस चुम्बकीय शक्ति के प्रभाव होते हैं, जो हर जीव में अलग-अलग होती है। जैसे कुछ जातक पर मंगल की किरणें उसकी चुम्बकीय शक्ति के कारण तेजी से आती हैं अथवा कुछ की शक्ति क्षीण होती है। उन्हें प्रभावशाली बनाने के लिए मन्त्र शक्ति, रत्न धारण, उपाय व्यवस्था आदि का विधान है।

भूमि पर विद्यमान हर जातक की एक अलग किस्म है और यह किस्म उसके स्वामी से प्रभावित है। समस्त प्राणियों के नवग्रह में से एक स्वामी है। उस ग्रह के अनुसार उसकी राशि बनी है और उस राशि के अनुसार ही ग्रह का स्वामी मिलता है। उस ग्रह के अनुसार कुछ ग्रह मित्र बनते हैं और कुछ अशुभ या शुभ बनते हैं।

यहां मेरा विषय केवल मंगल है अतएव मैं केवल मंगल तक ही सीमित रहूंगा।

मंगल की महादशा में अगर कारक ग्रह मंगल हो तो आपको शुभ और फलदायी फल प्राप्त होंगे। जैसा कि आप सभी जानते हैं जन्मकुण्डली में जिनके चौथे, आठवें एवं बारहवें स्थान पर मंगल होते हैं, वे वास्तव में अधिक रूप से मंगल से प्रभावित होते हैं।

लेकिन मंगल ग्रह का सबसे अधिक फल मंगल की महादशा में ही मिलता है और उस समय लग्न की स्थिति के अनुसार लाभ होता है। मंगल अगर कारक नहीं है तो बहुत सावधान होकर चलना चाहिए-क्योंकि मंगल की स्थिति में प्राथमिकता अधिक आ जाती है। अत्यधिक आत्मविश्वास हो तो उसका भी विपरीत फल मिलता है।

मंगल दोष क्या है? इसके विषय में अधिकतर लोग परिचित हैं। जिस जातक के जन्मचक्र में मंगल ग्रह लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश भाव में स्थित होता है, उसे ज्योतिष शास्त्रों में मंगल दोष युक्त माना जाता है। ऐसे जातक को विवाह सम्बन्धी बाधाएं, दाम्पत्य सुख में न्यूनता आती है, और अगर उसके भावी जीवन साथी के जन्मचक्र में उसी के अनुरूप ग्रह नहीं हो, तो उसके जीवन साथी के जीवन के लिए यह अनुकूल नहीं है पर उसकी मृत्यु ही हो जाए यह कहना ठीक नहीं है। मंगल दोष के विषय में स्पष्ट लिखा गया है-

लग्ने व्यते च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे
कन्या भर्तुर्विनाशाय भुर्त कन्यां विनाशयेत्

इसी प्रकार, अगर इन भावों में पाप ग्रह जैसे शनि, राहु, केतु, सूर्य आदि स्थित

हों, तो ये मंगल ग्रह के परिहार हैं–

लग्नादि धोवां यदि जन्म काले
महिसुतो वाशंति राहु केतवः
व्यथाष्टतुर्ये प्रथमे कलत्रे कन्या वरं
हन्ति वरश्च् कन्याम्।

मंगल दोष वास्तव में दोष है और यह दाम्पत्य सुख को क्षीण कर देता है। इस दोष का विचार वर तथा वधु के विवाह से पूर्व कर लेना चाहिए। ज्योतिष शास्त्रों में मंगल दोषयुक्त वर अथवा कन्या का विवाह बिना मांगलिक कन्या अथवा वर से करने हेतु निषेध बताया गया है और मांगलिक वर का बिवाह मांगलिक कन्या के साथ किये जाने का शास्त्र सम्मत विचार है; किन्तु आज के युग में ऐसा सम्भव है? क्या मांगलिक को मांगलिक जीवन साथी न मिलने से अविवाहित रहना पड़ेगा?

प्राचीन काल में ज्योतिष के दृष्टिकोण से जन्मपत्रिका की गणना सूक्ष्मतापूर्वक की जाती थी और प्रायः सभी जातकों के जन्मचक्र बनवाए जाते थे, किन्तु आज की स्थिति बदल गयी है। क्योंकि इसमें सूक्ष्मता के साथ–साथ जन्मसमय आदि की शुद्धता भी परम आवश्यक है।

मांगलिक वर अथवा वधू को मांगलिक जीवन साथी न मिलने से उसके विवाह में अनावश्यक बाधाएं उत्पन्न हो जाती हैं और उसका विवाह सम्पन्न होना कठिन हो जाता है। कभी–कभी जन्म चक्र के सही मिलान न होने के कारण और एक की कुण्डली में मंगल का प्रभाव होने के कारण दाम्पत्य सुख क्षीण हो जाता है।

वास्तव में मांगलिक दोष क्या है? यह एक पूर्वजन्म कृत कर्मों का फल है, क्योंकि जो संचित और प्रारब्ध कर्म कहे जाते हैं, उनके शुभ और अशुभ दोनों ही सम्बन्ध, अज्ञात हैं, जो हमारे जीवन के मार्ग को भ्रष्ट कर देते हैं, जिससे हमारे जीवन में पूर्वज–भकृत दोष के रूप में इस तरह के घटनाक्रम जुड़ जाते हैं और हमारा जन्म भी उसी अनुरूप समय काल के अनुसार होता है।

ज्योतिष का विद्वान् तो इस दोष के निवारण के विषय में कई बार परिस्थिति वश मौन हो जाते हैं और बात ठीक भी है, कि विवाह जीवन का एक महत्वपूर्ण निर्णय है और इसे हल्केपन से नहीं लिया जाना चाहिए, क्योंकि इससे वर अथवा वधु के पूरे जीवन पर प्रभाव पड़ता है। मंगली दोष के कारण विवाह में बाधाएं आती हैं और कभी–कभी दोष इतना प्रबल होता है, कि विवाह योग ही नहीं बनता और अगर योग बनता भी है, तो विवाह–सुख न्यून हो जाता है। इस प्रकार दुर्भाग्य उसके साथ जुड़ा रहता है।

मांगलिक योग को लेकर समाज में अनेक भ्रांतियां फैली हुई हैं और लगभग प्रत्येक जातक इसके नाम से भी डरता है, परन्तु लोगों का भय जहां तक शास्त्र की बात है जो ठीक भी है, किन्तु उसके साथ ही साथ दृष्टि का भ्रमजाल भी है।

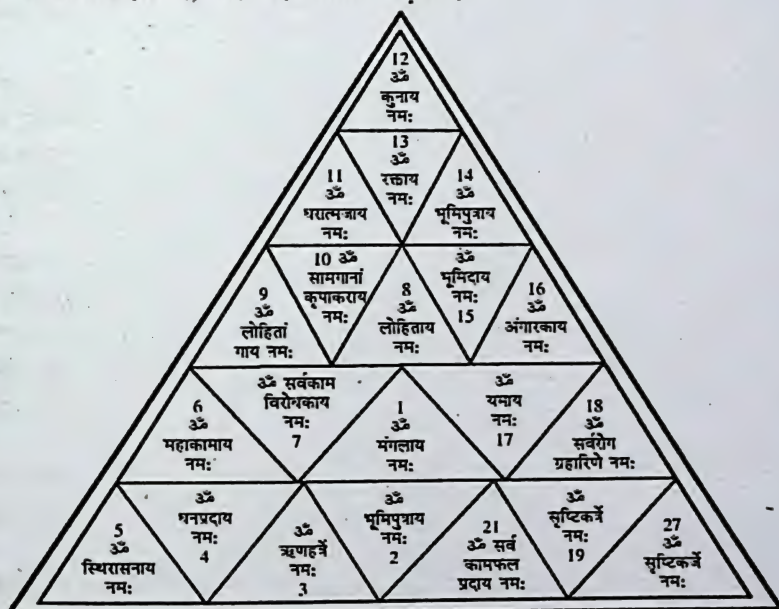
मांगलिक योग में मंगल को इसलिए इतना महत्व दिया गया है कि मंगल रक्त का कारक माना जाता है। इसी मंगल के कारण जातक में साहस, उत्साह, ऊर्जा का समावेश होता है और मंगल को हिंसा प्रिय है। इसके विपरीत शनि अड़चनें डालने में प्रसिद्ध है, सूर्य ग्रह एक–दूसरे से अलग करने में प्रसिद्ध है और राहु–केतु छाया ग्रह होने के बाद भी प्रबल होते हैं क्योंकि राहु शनि की भांति प्रभाव देता है तो केतु मंगल की तरह।

इन भावों से भी आगे सप्तम व अष्टम भाव का मांगलिक योग अधिक महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि सप्तम भाव पति या पत्नी का और अष्टम भाव आयु का माना जाता है और अष्टम भाव को दुर्भाग्य का भी माना जाता है, अब अगर सप्तम या अष्टम में क्रूर ग्रह होंगे तो वैवाहिक जीवन में कष्ट खड़े करेंगे। इसके पश्चात् भी अगर लग्न में क्रूर ग्रह हों या लग्नेश के ऊपर क्रूर ग्रहों का प्रभाव हो तो जातक में जिद्द व क्रोध का संचार अत्यधिक करेंगे, चतुर्थ भाव में यह योग हो जाएं तो सुख को ही समाप्त कर डालते हैं क्योंकि चतुर्थ स्थान सुख का माना जाता है। द्वादश स्थान व्यय का माना जाता है, अब अगर वहां पर इन ग्रहों का योग हो जाए तो जातक को व्ययशील बना डालते हैं।

ऐसी स्थिति में मंगली दोष निवारण करना आवश्यक है। मंगल के दोषों को समाप्त करने के लिए यह अति आवश्यक है, कि हम किसी विद्वान् से निवारण विधि प्राप्त कर इन दुर्धटनाओं, कष्टों का निवारण करें।

मंगली दोष निवारण करना आवश्यक है। मंगल के दोषों को समाप्त करने के लिए यह अति आवश्यक है, कि हम किसी विद्वान् से निवारण विधि प्राप्त कर इन दुर्घटनाओं, कष्टों का निवारण करें।

मंगली दोष निवारण मस्तिष्क पर पड़ी दुर्भाग्य की रेखा को मिटा देने का सर्वश्रेष्ठ साधन है, जिसे सम्पन्न कर आप अपना गृहस्थ जीवन संवार सकते हैं। इसको करने के पश्चात् समस्त पूर्व जन्मकृत पापों, दोषों का नाश सम्भव है और जो कष्ट उसे गृहस्थ जीवन में भोगने होते हैं, वह नहीं भोगने पड़ते हैं।



ॐ क्रां क्रीं सः भीमाय स्वाहा।

मंगल यंत्र

मंगल ग्रह के दोष शमन हेतु सर्वोत्तम तो यही है कि आप किसी विद्वान् से वैदिक तथा तंत्रोक्त दोनों ही प्रकार के अनुष्ठान कराएं। अगर आप किसी कारण से ऐसा कराने में असमर्थ हैं तो निम्न उपाय करें–

निम्न वस्तुओं का दान करते रहना चाहिए–लाल मूंगा, ताम्र (तांबा), धातु, मसूर लाल, गुड़, शुद्ध घी, रक्त चन्दन, लाल कनेर, लाल केशर, लाल वस्त्र, सोना या लाल गेहूं। मूंगा रत्न धारण करें। मंगलवार के दिन आप 10,000 बार यह मंत्र पाठ करें–

ॐ हिं क्लीं भोमाय नमः।

मूंगा सात रत्ती का हो और उसे चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर मंगल के दिन धारण करें। जब मंगल की महादशा में मंगल का अन्तर हो तो इष्टदेव का स्मरण करें। रामायण के सुन्दर काण्ड का अविरल पाठ करें। रामचरितमानस का पाठ भी मंगल ग्रह का शमन करता है।

लाल रंग को अधिकतर देखें और पहिनें।

क्रोध कम करें।

अधिक काम वासना से अलग रहें। विलासी न हों। संयमित जीवन जियें। मंगलवार को एक समय भोजन करें। हनुमान चालीसा का पाठ करें। क्रोध, आलस्य का त्याग करें। आलस्य और प्रमाद के कारण ही सारे काम बिगड़ते हैं। उदर के रोग आपको हो सकते हैं। इसलिए गंगाजल का सेवन और चंद्राकार रुद्राक्ष का धारण रोगों का शमन कर सकता है।

यहां विवेचन में केवल मंगल ग्रह को ही लिया गया। फिर कभी राशि या भाव के अनुसार युति का विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत करने का प्रयास करूंगा। सुधी पाठकों को स्मरण कराना चाहता हूं कि ज्योतिष एक शुद्ध विज्ञान है। जिसकी सहायता से भावी जीवन को संवारकर सुनियोजित किया जा सकता है। नियति को बदलने की न मेरी क्षमता है न नीयत।



13 कुमार ग्रह बुध (MERCURY)

सौरमण्डल की आश्चर्य से भरी दुनिया में बहुत कुछ ऐसा है जिसे हमारी आंखें नहीं देख पातीं। इस विषय में टेलिस्कोप हमारी सहायता करते हैं। जब तक टेलिस्कोप का आविष्कार नहीं हुआ था, तब तक ब्रह्मांड को देखने का हमारे पास केवल एक ही माध्यम था–सिर्फ हमारी आंखें। सन् 1609 के बाद, जब गेलेलियो ने पहली बार टेलिस्कोप के द्वारा सौर जगत का दृश्य देखा था, तब से खगोलशास्त्री तथा वैज्ञानिक ब्रह्मांड की अत्यंत दूर की गहराइयों में झांक रहे हैं। टेलिस्कोपों ने एक तरह से ब्रह्मांड की खिड़की हमारे लिए खोल दी है जहां से हम ग्रहों की सतह की छोटी से छोटी विशेषताओं को देख सकते हैं, समझ सकते हैं। टेलिस्कोप के द्वारा ही हम उन तारों, आकाशगंगाओं, नीहारिकाओं को सरलता से देख सकते हैं जिन्हें नंगी आंखों से देखना कभी भी सम्भव नहीं होता है।

आइए, हम बुध ग्रह को ज्योतिष के आईने में देखें और पढ़ें। हमारे प्राचीन ऋषि-मुनियों ने अपने वर्षों के अनुभवों से बुध ग्रह के विषय में क्या बतलाया है!

बुंध जातक को सृजन और पारखी दृष्टि से देखता है और अपनी चालों के कारण [illegible] करता है। अतिशय बुद्धिचातुर्य और बुद्धि वाले बुध ग्रह के सुविकसित स्वामी प्राय: सफल और प्रसिद्ध होते हैं।

यदि बुद्धिचातुर्य कभी-कभी ठीक नहीं होता। परिणामत: अपराधियों की हथेली बुध की प्रधानता रखता है। उनकी चंचलता और अस्थिरता उन्हें किसी योग्य या कार्य विशेष में अधिक नहीं टिकने देती। मनोवैज्ञानिकी का अच्छा अनुभव होता है और इस गुण के लिए उन्हें विशेष प्रयास नहीं करने पड़ते हैं।

यह विशेषता उन्हें चालाक बना देती है। उनकी प्रवृत्तियां उन्हें महालेखक भी बना सकती हैं। वे प्राय: अवसरवादी होते हैं। अवसर को बुध-प्रधान जातक कभी हाथ से निकलने नहीं देता। अपनी योजनाओं में वह एकसाथ कई गुणों से काम लेता है, फलत: अंत में वह विजेता होता है।

मस्तिष्क में पैनापन वस्तुत: अन्य लोगों के लिए स्पर्धा का विषय बन जाता है, वह अपनी मिनट-मिनट का प्रयोग कर लेना चाहता है। व्यक्तिगत रूप से हितकर किन्तु वह अच्छा मित्र सिद्ध नहीं हो पाता, फिर भी समाज उससे प्रभावित रहता है, क्योंकि वह स्वयं को ऐसे रूप में प्रस्तुत करता है जो सामाजिक दृष्टि से आदर्श होता है। उसकी प्रधान रुचि धन कमाने में होती है। अध्ययन की दृष्टि से वह वैज्ञानिक विषय चुनता है, उसमें सफलता प्राप्त करता है। जो कुछ वह है, उसे कई गुना बढ़ाकर कहना उसकी आदत होती है।

वह अच्छा वकील, अभिनेता, डॉक्टर, वैज्ञानिक और लेखक हो सकता है। उसे घूमना आवश्यक लगता है। प्रकृति की गोद में घण्टों गुजारने के पश्चात् फिर वह तरोताजा लौटता है।

व्यापार, लेन-देन, खरीदना-बेचना, वणिक वृत्ति, कंजूसी, ऐश्वर्य भोग, क्लर्की, स्टेनो टाइपिस्ट, वायुयान चालक आदि का कारक है। एकादश भाव में बुध कारक ग्रह है।

कुमार बुध ग्रह मेष, कर्क, सिंह, वृश्चिक, धनु एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में नैसर्गिक रूप से अशुभ होता है। इसके अतिरिक्त बुध वृश्चिक लग्न की कुण्डली में सभी भावों में; द्वितीय भवन में मेष, मिथुन एवं कर्क लग्न की कुण्डलियों में; तृतीय भाव में वृष एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में; चतुर्थ भाव में मेष, कर्क, सिंह एवं धनु लग्न की कुण्डलियों में; षष्ठ भाव में मेष, वृषभ, मिथुन, कर्क, सिंह, तुला, धनु, मकर, कुंभ एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में; सप्तम भाव में मिथुन, कन्या, धनु एवं कुंभ लग्न की कुण्डलियों में; अष्टम भाव में मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, धनु, मकर एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में; नवम भाव में सिंह लग्न की कुण्डली में; दशम भाव में कर्क लग्न की कुण्डली में; एकादश भाव में वृष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु एवं कुंभ लग्न की कुण्डलियों में तथा द्वादश भाव में मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, धनु, मकर, कुंभ एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में अनिष्टकारक होता है।

बुध चन्द्र स्थित राशि से प्रथम, तृतीय, पंचम, सप्तम, नवम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्ट करने वाला होता है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मिथुन राशि का स्वामी ग्रह बुध माना गया है, जो बुद्धि और विद्या का देने वाला है। इसका अंक 5 है। इनके नक्षत्रों में आर्द्रा के चारों चरण, मृगशिरा के 3-4, पुनर्वसु के 1-2-3 चरण होते हैं। इस राशि का स्वभाव द्विस्वभाव है। इसका तत्व आकाश है। यह राशि पृष्ठोदय, शीर्षोदय दोनों प्रकार से उदय होने के कारण "उभयोदय" मानी गयी है। इसका लिंग पुरुष है। इसकी दिशा दक्षिण-पूर्व है। रंग हरा है। इसका निवास गांव या शयन कक्ष माना गया है। कद लम्बा बतलाया गया है। शरीर में इसे गला और बांहों का स्थान प्राप्त है। यह शरद ऋतु का स्वामी है। इसका रत्न पन्ना है। प्रकृति पित्त है। इस कारण इसके स्वामी ग्रह का अधिकतर पेट, जीभ, फेफड़ों, स्नायु-केन्द्रों पित्त और मांसपेशियों पर है। इस ग्रह का अधिपति देवता विष्णु है। इसका स्वाद अम्ल और मिश्रित है। रक्त और चर्म इसकी धातु है। सौर मंत्रिमण्डल में इसको राजकुमार का पद प्राप्त है। इसका आकार त्रिकोण के समान है। इसका आयन दो मास का है। इसके वेद अथर्ववेद हैं। सिंह, वृष, तुला इसकी मित्र राशियां हैं और कर्क, मेष, वृश्चिक राशियों से इसकी शत्रुता है। शेष राशियों से इसका भाव समान है।

इस राशि में दो रंग की झलक बतलायी गयी है। इसकी नसें स्पष्ट दिखलायी देती हैं। इसे मिष्ठभाषी और विनोदप्रिय माना गया है। इसकी लाल और बड़ी आंखें हैं। यह बुद्धिमान और राजनीति में दक्ष है। इसे विद्वान् माना गया है। इसकी शरीर रचना संतुलित मानी गयी है।

प्राचीन काल से ही हमारे विद्वान् पूर्वजों को इस ज्योति पिंड का ज्ञान था। इसकी स्थापना पंच देवों में की गयी है। महाभारत के भीष्म पर्व में बुध ग्रह का उल्लेख मिलता है।

आधुनिक विज्ञान ने इसकी दूरी सूर्य से 351983 मील दूर मानी है। यह सूर्य के सबसे पास है। इसका तापमान 770 डिग्री फारेनहाईट है। इस तापमान में शीशा और

टिन भी पिघल जाते हैं। इसकी गति 36 मील प्रति सैकिण्ड है। बुध पर हरे रंग की परत पड़ी है। यह लगभग 87 दिनों में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है।

ज्योतिष और विज्ञान से प्राप्त इन निष्कर्षों के आधार पर मिथुन राशि के जातकों का रूप-रंग और भविष्य प्रायः एकदम स्पष्ट हो जाता है। इस राशि के जातकों का व्यक्तित्व आकर्षक होता है। यह स्वस्थ्य एवं हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इनमें बातचीत करने का बड़ा सफल गुण होता है। अपनी वाणी और तर्कों के प्रभाव से दूसरे को वश में कर लेते हैं। इनका बचपन बड़ा ही अस्त-व्यस्त होता है। बचपन से ही लिखने-पढ़ने के शौकीन होते हैं। दिन-रात परिश्रम करते हैं। यह शारीरिक परिश्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम अधिक पसंद करते हैं। द्वि-स्वभाव राशि होने के कारण यह किसी एक काम पर, किसी एक बात पर नहीं जमते। उत्साह से कार्य शुरू कर शीघ्र ही ठंडे हो जाते हैं। एक काम पूरा हो या न हो, दूसरे काम में हाथ डाल देते हैं। इसी दुहरे स्वभाव के कारण योग्यता और क्षमता के बावजूद यह किसी कार्य को सफलता के साथ नहीं कर पाते हैं। इनका स्वभाव बड़ा ही भावुक होता है। बचपन में माता-पिता का सुख इन्हें नहीं के बराबर ही मिलता है। इस राशि के जातक अपने जीवन का निर्माण प्रायः स्वयं ही करते हैं।

आकाश तत्व रहने के कारण यह कल्पनाओं में बहते रहते हैं तथा प्रायः हवाई महल बनाया करते हैं। राशि उभयोदय होने के कारण यह अपनी किसी बात पर अटल नहीं रहते हैं। सुबह कुछ तो शाम को कुछ इनकी बात होती है। वैसे यह बहुत ईमानदार होते हैं। इस राशि का रंग हरा होता है। शुभ रत्न इसका पन्ना है। अंग-स्थान गले और बांह में होने के कारण इनको इसी प्रकार के रोग होते हैं, जिनका सम्बंध इन अंगों से है। स्नायुविक विकार, मस्तिष्क रोग, त्वचा रोग, मिरगी, रक्त की कमी आदि प्रमुख हैं।

शुभ तिथि, शुभ दिन, शुभ माह, शुभ दिशा–

शुभ तिथियां 5-14-23 होती हैं। शुभ दिन बुधवार होता है। बुधवार का प्रथम प्रहर अधिक लाभप्रद है। मिथुन राशि के शुभ माह मई, जुलाई और अगस्त हैं। इस राशि की शुभ दिशायें उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम हैं।

व्यवसाय के इस राशि के जातक लेखक, इंजीनियर, व्यापारी, एकाउटेंट, प्रोफेसर, डॉक्टर, सम्पत्ति-दलाल, समाचार-पत्र का मालिक, सम्पादक, तम्बाकू-विक्रेता, शिक्षाशास्त्री, इतिहासवेत्ता, राजनेता, प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता होते हैं। सदैव बाजार में यह सफल रहते हैं एवं इनकी धाक रहती है। विदेश व्यापार में प्रायः सफल रहते हैं।

इस राशि के जातक बहुत अच्छा झूठ बोलने और जनता को विश्वास में लेने में सफल होते हैं। इस राशि के नेता प्रायः सफल रहते हैं। स्वभाव से कंजूस होते हैं। 29-30 साल की आयु के बाद इनके जीवन में स्थायित्व आता है। 40 वर्ष की आयु के बाद पूर्ण रूप से सफल होते हैं। 20-22 वर्ष की आयु में मरण-तुल्य कष्ट पाता है। साधारणतया इस राशि के जातक की आयु 70 वर्ष की होती है। जीवन का अन्तिम, समय सुख और ऐश्वर्य से बीतता है।

इनका दाम्पत्य जीवन कलहपूर्ण और मानसिक तनाव देने वाला होता है, पर अन्त तक निभ जाता है। संतान सुख उत्तम होता है। इस राशि के जातक नौकरी से संतोष

नहीं पाते हैं, उन्नति के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं। स्वतंत्र व्यवसाय करना इस राशि के जातक की विशेष इच्छा होती है।

सामान्यत: स्वास्थ्य उत्तम रहता है। जीवन में कफ, नाक, कान, गला एवं वायु से सम्बंधित रोग घेरे रहते हैं। कई बार शल्य चिकित्सा की भी आवश्यकता पड़ती है।

प्रेम के मामले में प्राय: असंफल रहते हैं। जीवन में कई प्रेम-प्रसंग होते हैं, पर पूर्णता प्राप्त नहीं करते। स्त्रियों के प्रति आकर्षण रखते हैं, पर कलंकित होने से डरते भी हैं। इसलिए असफल हो जाते हैं।

कुल मिलाकर बुध-प्रधान जातक का सम्पूर्ण जीवन साधारणतया उतार-चढ़ाव भरा पर अन्तत: सुखमय होता है। चित्रकला, संगीत, लेखन के क्षेत्र में प्राय: वह अमर हो जाया करते हैं। पैतृक सम्पत्ति-प्राप्ति का योग जीवन में एक बार अवश्य बनता है। बुध ा दो राशियों मिथुन और कन्या का स्वामी ग्रह है। यहां मैंने केवल मिथुन राशि की संक्षिप्त जानकारी दी है।

बुध ग्रह की हाथ की रेखाओं में क्या स्थिति बनती है, कुछ बात हाथ की रेखाओं के विषय में अवश्य करना चाहूंगा।

कहते हैं व्यक्ति का सफल होना, असफल होना, सब किस्मत का खेल है। यह भी किस्मत का ही खेल है कि अब बदले वातावरण में भी हाथों की लकीरें ही मनुष्य का भाग्य बताएंगी लेकिन उसके पीछे अब किसी पोंगा पंडित की मूर्खतापूर्ण बात नहीं बल्कि विज्ञान और तर्क का ठोस आधार होगा।

दुनिया के कुछ देशों में इस समय हाथ की रेखाओं के वैज्ञानिक आधारों की खोज का काम जोर-शोर से चल रहा है। हाथों की लकीरें किसी भी व्यक्ति के मानसिक स्तर का आईना हैं। शोध के अनुसार किसी भी व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता का अनुमान उसकी हथेलियों पर मौजूद लकीरों को देखकर लगाया जा सकता है। जिन लोगों का बौद्धिक स्तर औसत से भी कम यानि 70 से कम आंका गया, उनके हाथ की लकीरों में कुछ अलग तरह का समीकरण पाया गया। जिन लोगों की हथेली में बहुत अधिक समानांतर रेखाएं पायी जाती हैं या फिर जगह-जगह खड्डे पाए जाएं या उंगलियों की छाप कुछ अलग प्रकार की हो तो ऐसे लोगों की बौद्धिक क्षमता सदैव प्रश्नों के घेरे में रहती है।

वैज्ञानिकों का दावा है कि इन लकीरों के माध्यम से गर्भावस्था के मध्य में आए परिवर्तनों तक को समझा जा सकता है। उनका दावा है कि अगर गर्भावस्था के मध्य मां को कोई संक्रमण हुआ है और उसके कारण से बच्चे में कोई मानसिक विकृति आई है तो हथेली की रेखाओं के झुकाव के अध्ययन से यह पता चल सकता है।

यही नहीं तमाम अन्य रोगों की सूचना भी हाथ में उपस्थित रेखाएं दे सकती हैं। हथेली पर अगर दो ऊर्ध्वगामी लकीरें मौजूद हैं तो व्यक्ति को भविष्य में डायबिटीज का खतरा बना रहेगा। जिन लोगों पर यह भय अधिक होता है उनके हाथ की रेखाओं का मिलन हथेली के मध्य से अधिकतम दूरी पर होता पाया गया है।

वैज्ञानिकों ने बहुत ठोस तरीके से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि हस्तरेखाओं का बारीक विश्लेषण हृदय रोग, मानसिक रोग और यहां तक कि मौत की स्थितियों तक की पूर्व सूचना दे सकता है।

मानसिक रूप से कमजोर बच्चों के विषय में ऐसा पाया गया है कि जो बच्चे मानसिक रूप से कमजोर थे उनके हाथों की लकीरों में असामान्यता और उंगलियों में बहुतायत में वृत्ताकार कोष्ठ पाए गए। यही नहीं मानसिक रूप से कमजोर बच्चों की उंगलियों की छाप भी असामान्य पायी गयी। गर्भस्थ शिशु की उंगलियों की छाप गर्भ के 13वें सप्ताह के आसपास बनना शुरू होती है और 18वें सप्ताह तक बनकर तैयार हो जाती है। इसी मध्य में मस्तिष्क का विकास भी शुरू होता है। यही कारण है कि हस्तरेखाओं का मस्तिष्क की हालत से गहरा सम्बंध होता है। इस मध्य अगर मां कुपोषण की पकड़ में आती है तो तुरंत गर्भस्थ शिशु की हस्तरेखाओं पर उसका प्रभाव होता है, साथ ही अन्य अंग तो प्रभावित होते ही हैं। जिन लोगों के हाथ में पूरी हथेली के एक से दूसरे छोर तक जाती ढेरों रेखाएं पायी जाती हैं, उनकी मौत आम तौर पर दम घुटने जैसे रोग के कारण होती है।

आश्चर्यजनक बात यह है इन नयी खोजों का आधार भारतीय ज्योतिष में काफी वृहद् रूप में मिलता है। भारतीय हस्तरेखा विज्ञान में हृदय रोग से लेकर आधुनिक रोग एलर्जी तक का विवरण पाया जाता है।

प्रिय मित्रों! यहां पर मेरा विषय बुद्ध ग्रह है। अव मैं उसी विषय पर पुनः आ रहा हूं।

कुमार ग्रह बुद्ध अनिष्टता के निवारण हेतु ज्योतिषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय अगर सम्पन्न किए जाएं तो बुध की अनिष्टता का निवारण हो जाता है।

यहां बुध की अनिष्टता के निवारणार्थ उपाय प्रस्तुत हैं–

कुमार ग्रह बुध की अनिष्टता का निवारण करने के लिए जातक को बुध मंत्र का जप विशेष फलदायी होता है। बुध के वैदिक मंत्र और ध्यान इस प्रकार हैं–

ध्यान

ॐ सिंहारूढं चतुर्बाहुं खड्गचर्मगदाधाम्।
सोमपुत्रं महासौम्यं ध्यायेत्सर्वार्थसिद्धिदम्॥

इसके उपरान्त बुध ग्रह की पूजा के पश्चात् निम्नलिखित मंत्र का कम-से-कम पांच माला जप करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है–

॥ॐ बु बुधाय नमः॥

अब बुध ग्रह का सम्पूर्ण विवरण एक दृष्टि में प्रस्तुत है–

मित्र	:	शुक्र, सूर्य
शत्रु	:	चन्द्रमा
सम	:	मंगल, गुरु, शनि
काल पुरुष के शरीर में	:	नाभिस्थल
स्थिति भाव का कारकत्व	:	चतुर्थ, एकादश
अन्य कारकत्व	:	वाणी, लेखन, कला, व्यापार, मशीन
अंग्रेजी	:	मर्क्यूरी (MERCURY)
स्वामित्व	:	मिथुन, कन्या

मूल त्रिकोण	:	कन्या
उच्च राशि	:	कन्या
नीच राशि	:	मीन
रत्न	:	पन्ना, ओनेक्स
राशि संचार काल	:	30 दिन
समय	:	प्रातः
स्वभाव	:	सौम्य
समिधा	:	अपा मार्ग
पुष्प	:	विविध प्रकार के हरे पुष्प
गुण	:	रजोगुण
लिंग	:	स्त्री, नपुंसक
तत्व	:	पृथ्वी
ऋतु	:	शरद
प्रतिनिधि पशु	:	गौ
अवस्था	:	बाल्यकाल
दृष्टि	:	सप्तम
वर्ण	:	हरा
जाति	:	शूद्र और वैश्य
आकृति	:	गोल
दिशा	:	उत्तर
धातु	:	कांस्य

बुध द्वारा प्राप्त पीड़ा के उपचार के लिए जातक को बुध यंत्र धारण कर लेना चाहिए तथा चाँदी के चौकोर पत्र पर बुधवार के दिन बुध के नक्षत्र में यंत्र उत्कीर्ण कराएं एवं उसके मध्य में पन्ना या ओनेक्स जड़वाकर बुध गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित कर पूजा में रखना चाहिए।

बुध गायत्री मंत्र इस प्रकार है—

ॐ सौम्यरूपाय विझहे वाणेशाय च धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्॥

बुध यंत्र

9	**4**	**11**
10	**8**	**6**
5	**12**	**7**
ॐ ऐं श्री श्रीं बुधाय नमः		

बुध पुष्प योग में पन्ना दान करने से बुध से प्राप्त दोष की शांति होती है। पांच कन्याओं को हरे वस्त्र दान करने से भी लाभ होता है।

बुधवार को जातक को उपवास करना चाहिए। प्रातःकाल गणेश के दर्शन कर लड्डू का भोग लगाएं। उपवास के दिन गाय को घास डालें। नमकरहित भोजन करें। बुधवार के दिन याचकों को मूंग अथवा मूंग के लड्डुओं का दान करें। बुधवार के दिन मूंग, हरे वस्त्र, मूंगा, कांसा, देशी घी, शक्कर, शुद्ध मधु, गोरोचन तथा दक्षिणा आदि दान करें।

बुध ग्रह से पीड़ित जातक को शुक्ल पक्ष के बुधवार को स्नान करते समय जल में जायफल, गोरोचन, पीपरामूल तथा चावल आदि मिलाकर स्नान करना चाहिए। इससे भी दोष शांत होता है। स्मरण रखें, बुध ग्रह सुख भाव, शत्रु भाव, आयु भाव, भाग्य भाव तथा व्यय भाव में होने पर दोष-कारक स्थितियां पैदा करता है।

लाल किताब द्वारा बुध की अनिष्टता का निवारण इस प्रकार होता है-

- नाक छिदवायें।
- दांतों को खूब साफ रखें।
- गाय, कुत्ते, कौवे को नियमित भोजन करायें।
- तांबे के सिक्के में छेद करके पानी में बहायें।
- हरे रंग के वस्त्र एवं चूड़ियां हिजड़ों का दान दें।
- हरी मूंग के साबुत दानों का दान करें।
- दो हीरे या सीप लें। एक पानी में वहा दें, दूसरा अपने साथ रखें।
- दुर्गा का तांत्रिक अनुष्ठान करें।
- कमर बंध का प्रयोग करें।
- कुवारी कन्याओं का आशीर्वाद लें।
- घर में श्यामा तुलसी का पौधा आरोपित करें।

बुध ग्रह अशुभ होने पर आप वास्तुशास्त्र की दृष्टि से निम्न उपाय करें-

भवन के मध्य में चाँदी दबायें। सीढ़ी और पूजा का स्थान बार-बार परिवर्तित न करें। पूर्व-उत्तर कोण पर पानी का स्रोत स्थापित करें। प्रातःकाल ठण्डे साफ जल से सहन साफ करें। बुध अशुभ हो, तो उत्तर दिशा के मुख वाले भवन में न रहें। ढाक के पत्ते को दूध से धोकर भवन के पश्चिम-दक्षिण कोण में गड्ढा खोदकर रखें। ऊपर से एक पत्थर डालकर मिट्टी भर दें। बर्तन एवं गड्ढा खोदने वाले औजार मकान में न लायें।

इन उपायों, यंत्रों, मंत्रों एवं सावधानियों के द्वारा आप बुध अशुभ होने पर भी लाभ उठा सकते हैं।

14 देवताओं के गुरु बृहस्पति (JUPITER)

सौरमण्डल में बृहस्पति-शिक्षा, पाण्डित्य, वेद-पठन, वाद-विवाद, शास्त्रार्थ, धार्मिक कार्यों का ज्ञान, लेक्चरार, प्रोफेसर, गजेटेड ऑफिसर, नेतृत्व-प्रधान कार्य आदि का कारक बृहस्पति है। पंचम और नवम भाव में गुरु कारक है।

बृहस्पति स्वभाव से संचालन, नेतृत्व और अधिकार का देवता है। गुरु-प्रधानता वाले जातक स्वभाव से महत्वाकांक्षी होते हैं। उनकी यह प्रवृत्ति उन्हें राजनीतिज्ञ बनाती है। जनता को प्रभावित करने की उनमें इच्छा होती है। वे सामाजिक रूप से महत्व प्राप्त करते हैं। वे धर्मवादी और अध्ययनशील होते हैं।

साधारण दृष्टि से गुरु-प्रधान जातक साधारण कद के, सुडौल और प्रभावोत्पादक होते हैं। उनका हृदय मानवीय होता है। उनकी भावना शब्दों तक सीमित नहीं होती, उन्हें वे मूर्तरूप देने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। अर्थ से अधिक सम्मान उन्हें प्रिय होता है। वे सरलतापूर्वक प्रसन्न किये जा सकते हैं। अधिकतर उनमें भावनायें प्रधान होती हैं।

उनका स्वास्थ्य उन्हें अच्छी-बुरी स्थितियों में झुलाता रहता है। सुस्वाद चीजें उन्हें प्रिय होने से प्रायः उदर रोग की शिकायत रहती है। यौन सम्बन्धों में वे दूसरी योनि के प्रति जबरदस्त आकर्षण रखते हैं। सजी-संवरी, सुरुचिपूर्ण महिलायें उन्हें पसंद होती हैं। इसी प्रकार गुरु-प्रधान स्त्रियां सुंदर एवं शक्तिवान् पुरुष को चाहती हैं। समर्पण की भावना इनका गुण होता है। गुरु-प्रधान जातक कभी यकृत-अवस्था से पीड़ित नहीं होते। वे दृढ़ इच्छा वाले होते हैं, उनका चिंतन विवेकशील होता है। उनके स्वभाव में एक बड़ी निर्बलता यह होती है कि वे चरमतावादी होते हैं और सफलता के लिए अनेक दिशाओं में घूमते हैं।

बारह राशियों में गुरु बृहस्पति दो राशियों का स्वामी है। वह धनु और मीन राशि हैं।

सौरमण्डल में इस राशि की आकृति को आकाश में देखने पर ऐसा लगता है, मानो अगला भाग किसी मनुष्य का है, जो अपने हाथ में तीर ताने है और पिछला भाग घोड़े के समान लगता है। इस कारण इस राशि का नाम धनु किया गया है। यह राशि वर्ग की नौवीं राशि है और इसका सभी राशियों में नौ के कारण महत्व है। इस राशि का अधिपति देवता ग्रह गुरु बृहस्पति है। बृहस्पति देवताओं के गुरु हैं, बृहस्पति को काल पुरुष में ज्ञान के स्थान पर माना गया है। इस ग्रह के विषय में कहा गया है कि यह शरीर के सामंत हैं, नेत्र शुद्ध मधु के समान हैं, गौर वर्ण और श्याम केश तथा लम्बे कद का है।

बृहस्पति 2, 3, 4, 5, 7, 9, 11वें स्थानों में शुभ तथा 1, 4, 6, 8, 10, 12वें स्थान

में अशुभ फल देता है। किसी भी क्षेत्र में उच्चकोटि का विद्वान् होने के लिए बृहस्पति का बलवान् होना आवश्यक है। गुरु की शुभता ही आध्यात्मिक ज्ञान की गहराइयों में ले जाती है और हमें गुरु का स्थान दिलाती है। आचार्यत्व का पद गुरु की शुभता के बिना सम्भव नहीं। गुरु की अनुकूलता हमें ऐश्वर्यवान, यशस्वी, विद्वान् बनाती है तथा वीर्यवान् पुत्रों को जन्म देने में सहायक सिद्ध होती है। इसके विपरीत गुरु की अशुभता से हम उच्चकोटि के ज्ञान से वंचित हो जाते हैं, आध्यात्मिकता से हमारी दूरी बढ़ जाती है और हमें जीवन में पर्याप्त यश नहीं मिल पाता।

इसका माह पौष (दिसम्बर-जनवरी) माना गया है। द्वि-स्वभाव की राशि है। पृष्ठोदय है, तत्व अग्नि है दिशा उत्तर-पश्चिम है। लिंग पुरुष है। इसका निवास युद्ध स्थल माना गया है। इसका प्रथम भाग द्विपद और पिछला भाग चतुष्पद माना गया है। एक यही राशि है जो आधी द्विपद और आधी चतुष्पद है। शरीर में इसका स्थान जांघ और नितम्ब में माना गया है। इसकी ऋतु हेमंत है। रंग सुनहरा है। सत्वगुणी है। अधिपति ग्रह का रत्न "पुखराज" है। ग्रह के देवता स्वयं ब्रह्मा या शिव हैं। मंत्रिमंडल में शुक्र के समान मंत्रिपद प्राप्त है। आकार क्रांति वृत्त के समान है। अंक 3 है। वैदिक कालीन आर्यों को भी इसका ज्ञान था। तन्त्र दीप में बृहस्पति (गुरु) के जन्म का उल्लेख है। महाभारत में वेदव्यास ने भी इसका वर्णन किया है।

विज्ञान के अनुसार इस ग्रह का आकार इतना विशाल है कि सौरमण्डल के सभी ग्रहों के आकार के दुगने से भी अधिक है। पृथ्वी से कई गुना बड़ा है। सूर्य से इसकी दूरी लगभग पचास करोड़ मील की है। यह प्रति घण्टे 25000 मील की गति से घूम रहा है। वैज्ञानिकों का मत है कि बृहस्पति के बादलों के नीचे विशाल क्षेत्र और सामान्य तापमान वाला वातावरण है। वहां के वायुमण्डल में अमोनिया और हाइड्रोजन के साथ पानी भी है। इस कारण वहां जीवन की सम्भावना अधिक है। इसी कारण भारतीय ज्योतिष में इसे "जीव" माना गया है। वहां तेज गति और कम आयु वाले जीवों की सम्भावना है। इस कारण इसका रंग सुनहरा बतलाया गया है।

इस राशि के जातक अच्छे-खासे डीलडौल वाले और आकर्षक होते हैं। इनकी आकृति प्राचीन आर्यों के समान तथा यूनानी-सी लगती है, खासतौर से इस राशि के जातक की जांघें बड़ी सुडौल होती हैं। इसकी जंघाओं में मछलियां पड़ती हैं। नेत्र सुन्दर और सीना प्राय: चौड़ा होता है। यह शानदार ढंग से चलते हैं मानो युद्ध-स्थल की ओर जा रहे हों। इस राशि की स्त्रियों की चाल बड़ी ही गर्वीली होती है। सामान्य रूप से इस राशि के जातक सुदर्शन होते हैं। भिन्नता के बावजूद इनमें चुम्बकीय आकर्षण होता है।

इस राशि के जातक फुर्तीले, चुस्त, कार्यकुशल, वाक्पटु और हमेशा मन लगाकर अपना कार्य करने वाले होते हैं। इनका निश्छल हृदय होता है और तीर के समान गति से यह अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सर्वदा क्रियारत रहते हैं। दूसरों को जल्दी पहचान लेते हैं।

इनका स्वभाव क्रोधी होता है। थोड़ा-सा भी हास्य इनको पसन्द नहीं है। अपने

मान-अपमान का ध्यान रखते हैं। थोड़ी-सी बात पर इतने क्रोधित हो जाते हैं कि इनको होश नहीं रहता कि क्या कर रहे हैं या क्या कह रहे हैं। बहुत शीघ्र क्रोधित हो जाते हैं। समय के पाबन्द होते हैं। कठोर परिश्रम करते हैं। दिखावा, ढोंग, तड़क-भड़क, साज-सज्जा इनको अच्छी नहीं लगती। यह साधारण जैसे हैं वैसे ठीक रहते हैं। इस राशि की स्त्रियां विशेष शृंगारीय नहीं होती हैं। अपने से विपरीत लिंग वाले के प्रति प्रबल आकर्षण रखते हैं और निभाते हैं। विश्वासघात, छलावा नहीं करते हैं। इनमें काम वासना होती हैं, पर संयमित एवं शिष्ट ढंग से। इस राशि की महिलायें प्रायः पतिव्रता होती हैं। व्यापारी किस्म की भावना इस राशि के जातक में अवश्य होती है। अपनी इच्छाएं, भावनाएं गुप्त रखते हैं। चपुचाप रहकर उन पर अमल करते हैं। बहुत सोच-समझकर यह अपनी योजना बनाते हैं। अधिकतर चुप रहकर दूसरों की बात सुनते हैं अपनी नहीं कहते।

प्रायः हृदय रोग, बायीं आंख, सीना, किडनी (गुर्दे), कान की बीमारी इनको होती है। विशेष रूप से जांघों में इनको नाना प्रकार की पीड़ा हो सकती है।

इनका स्वयं का व्यवसाय या जीविका का साध्रन स्वयं के कारण चला होता है। भवन निर्माता, वैज्ञानिक, बैंकर, डिजाइनर क्लर्क, लेखक, अध्यापक, उच्च पदाधिकारी, ज्योतिषी, वायुयान चालक आदि के रूप में कार्य करते हैं। इनका प्रत्येक व्यवसाय किसी-न-किसी प्रकार की शिक्षा अथवा ज्ञान से ही सम्बंधित होता है। इनका कार्य-क्षेत्र विशाल होता है, जन-सम्पर्क का दायरा काफी बड़ा होता है।

सामान्यतः इनका दाम्पत्य जीवन सुखी होता है, यह इसके क्रोध या काम-वासना की अधिकता के कारण कलहपूर्ण होता है। अपने द्विस्वभाव और द्विफद या चतुष्पद के कारण टकराव होता रहता है। फिर भी गाड़ी चल जाती है। सन्तान को नियन्त्रण में रखते हैं और संतान भी अधिक होती है।

इनका प्रारम्भिक जीवन साधारण-सा होता है। पर 40-45 वर्ष की आयु के बाद इनके जीवन में स्थायित्व आ जाता है। वृद्धावस्था प्रायः सुखद होती है। आयु लगभग 75-80 वर्ष तक मानी गयी है।

इनका शुभ रत्न पुखराज, सुनहरा या पीला हकीक है। भाग्योदय एवं संकटों से बचने हेतु इन नगों का धारण करना ठीक रहता है।

शुभ दिशा, शुभ तिथि, शुभ दिन, शुभ वर्ष–

इनके शुभ दिशा दक्षिण-पश्चिम और दक्षिण-पूर्व हैं। 1, 3, 5, 7, 9, 10, 14, 21, 23, 27, 30 तारीखें शुभ हैं।

रविवार, मंगलवार, बृहस्पतिवार (गुरुवार) शुभ दिन हैं।

मई, मार्च, जुलाई, अक्तूबर, दिसम्बर इसके शुभ माह हैं।

3, 12, 21, 30 इसके लिए शुभ वर्ष हैं।

इस राशि के जातक पैसे को बड़ा महत्व देते हैं। कंजूस होते हैं तथा राजनीति के क्षेत्र में अपने उग्र स्वभाव के कारण सदैव आलोचना का केन्द्र बने रहते हैं। इस राशि की स्त्रियां स्वयं नौकरी करती हैं। उंत्तम होती हैं।

अगर आपका भाग्यशाली अंक 3 है और आपका जन्म 3री, 12वीं, 21वीं अथवा 30वीं तारीख को हुआ है तो आप वृहस्पति द्वारा नियंत्रित होते हैं। वृहस्पति ज्ञान-विज्ञान और सत्ता का ग्रह है।

तीस वर्ष की आयु तक आप दुबले-पतले रहते हैं। बाद में आपका वजन कुछ किलोग्राम बढ़ जाता है। जिनका भाग्यशाली अंक 3 होता है, वे सब सामान्यतया अतिथि सत्कार करने वाले, सीधे और आत्मसम्मानी होते हैं। आप अभिजात्य रहना चाहते हैं और बहुत बुद्धिमान होते हैं। आपमें से ज्यादातर वैज्ञानिक, सर्जन, मिनिस्टर या बैंक अधिकारी बनना चाहते हैं। आप धार्मिक संस्थाओं से भी जुड़े रहना चाहते हैं।

गुरु ग्रह वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर एवं कुंभ लग्न की कुण्डलियों में अशुभ फल प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त यह प्रथम भाव में कर्क, कन्या, तुला एवं वृश्चिक लग्न की कुण्डलियों में; तृतीय भाव में सभी लग्नों की कुण्डलियों में; चतुर्थ भाव में मेष, मिथुन, सिंह, कन्या एवं मकर लग्न की कुण्डलियों में; पंचम भाव में वृष, कन्या, तुला एवं कुंभ लग्न की कुण्डलियों में; षष्ठ भाव में सभी लग्न की कुण्डलियों में; सप्तम भाव में वृष, सिंह, कन्या, वृश्चिक एवं धनु लग्न की कुण्डलियों में; अष्टम भाव में मेष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में; नवम भाव में वृष, मिथुन, कन्या एवं तुला लग्न की कुण्डलियों में; एकादश भाव में कन्या, वृश्चिक, धनु एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में तथा द्वादश भाव में सभी लग्न की कुण्डलियों में अनिष्टता कारक होता है।

गुरु चन्द्र स्थित राशि से प्रथम, तृतीय, चतुर्थ, षष्ठ, अष्टम, द्वादश एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है।

इस अनिष्टता के निवारण हेतु ज्योतिषीयों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय अगर सम्पन्न किए जाएं, तो निश्चिय ही गुरु की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। यहां गुरु की अनिष्टता के निवारणार्थ कुछ उपाय प्रस्तुत हैं-

गुरु बृहस्पति ग्रह से उत्पन्न पीड़ा के निवारण हेतु जातक को गुरु के मंत्र का जाप करने से दोष की शांति होती है। गुरु पुष्य योग में इस मंत्र का जप प्रारम्भ करें, तो अधिक शुभ रहता है।

ध्यान मंत्र इस प्रकार है-

ॐ वराक्षमालिका दण्डकमण्डलुधरं विभुम्।
पुष्परागाङ्कितं पीतवरदं भावयेद्गुरुम्॥

जाप मंत्र इस प्रकार है-

ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।
यद्दीदयच्छवसऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

किसी भी शुक्ल पक्ष के गुरुवार को सोने अथवा पीतल के चौकोर पत्र पर गुरु यंत्र खुदवाएं और मध्य में पीला पुखराज जड़वाकर गुरु मंत्र से अभिमंत्रित कर पूजाग्रह में स्थापित करें। इसे भोजपत्र पर लिखकर कण्ठ या दाहिनी भुजा में भी धारण कर सकते हैं अथवा तर्जनी अंगुली में भी पहनने से लाभ होता है।

गुरु यंत्र

10	**5**	**12**
11	**9**	**7**
6	**13**	**8**
ॐ ऐं क्लीं बृहस्पताय नमः		

गुरु गायत्री मंत्र इस प्रकार है–

ॐ आङ्गिरसाय विद्महे दिव्यदेहाय,
धीमहि तन्नोः जीवः प्रचोदयात्।

गुरु बृहस्पति का सम्पूर्ण विवरण एक दृष्टि में इस प्रकार बनता है–

रत्न	:	पुखराज, पीला हकीक, सुनहला
राशि संचार काल	:	13 माह
समय	:	प्रभात
स्वभाव	:	शुभ
समिधा	:	पीपल लेकिन इसे हवन में प्रयोग नहीं करना चाहिए।
पुष्प	:	पीला पुष्प
गुण	:	सत्वगुण
लिंग	:	पुरुष
तत्व	:	आकाश
ऋतु	:	हेमन्त
प्रतिनिधि पशु	:	अश्व, घोड़ा
अवस्था	:	वृद्ध
दृष्टि	:	5, 7, 9
मित्र ग्रह	:	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल
अंग्रेजी पर्याय	:	जुपिटर (JUPITER)
स्वामित्व	:	धनु, मीन
मूल त्रिकोण	:	धनु
उच्च राशि	:	कर्क
नीच राशि	:	मकर
वर्ण	:	पीला
जाति	:	ब्राह्मण

आकृति	: वृत्ताकार
दिशा	: उत्तर-पूर्व
धातु	: स्वर्ण
शत्रु ग्रह	: बुध, शुक्र
सम ग्रह	: शनि
काल पुरुष के शरीर में स्थिति	: नासिका
भाव का कारकत्व	: द्वितीय, पंचम, नवम्, दशम, एकादश
अन्य कारकत्व	: विद्या, धर्म, संतति, मित्रता आदि।

गुरु की पीड़ा के शांति के लिए गुरुवार का उपवास करना अच्छा होता है। जातक उस दिन एक समय पीला भोजन करे। इस दिन किसी साधु का पीले पुष्पों से सम्मान करें।

दोष निवारण हेतु गुरुवार के दिन शुभ समय में विनम्रतापूर्वक किसी विद्वान् ब्राह्मण को निम्न वस्तुओं का दान करना चाहिए। पीले वस्त्र, चने की दाल, शुद्ध घी, फल, कांसा, पीली हल्दी, सुनहला या पुखराज, गुरु यंत्र आदि।

किसी विद्वान् को पुखराज दान करें। अपने गुरु को पीले वस्त्र दान करें। किसी सौभाग्यशाली स्त्री को भी पीले वस्त्र देने से भी शुभ फल प्राप्त होता है।

लाल किताब के अनुसार गुरु की अनिष्टता का निवारण इस प्रकार हो सकता है–

- ललाट पर शुद्ध केसर का तिलक लगायें।
- पति–पत्नी दोनों नाक साफ रखें।
- नाभि एवं नाभि के पीछे रीढ़ की हड्डी में केसर या नारंगी का लेप करें।
- विष्णु की पूजा कर जल से पीपल को सींचे।
- मस्तक पर केसर और हल्दी का तिलक लगाएं।
- हल्दी का टुकड़ा पीले धागे से भुजा पर बांधें।
- झूठी गवाही देने से बचें।
- कार्य प्रारम्भ करने से पहले अपनी नाक साफ कर लें।
- स्वर्ण की अंगूठी गुरु को दान करें।
- चने की दाल का प्रयोग करें।
- सातवें भाव में गुरु हो, तो किसी को भी पीले वस्त्र का दान न दें।

अशुभ गुरु के लक्षण

- चोटी के बाल उड़ जायें।
- माला पहनने की आदत हो।
- सोना खो जाये या चोरी हो जाये।
- शिक्षा अधूरी रह जाये।
- अपयश मिले।
- निस्तेज, प्रभावहीन हो जाये।

गुरु की पीड़ा को शांत करने के लिए जातक को जल में शक्कर, गूलर, सरसों, पीले पुष्प, हल्दी, शुद्ध मधु तथा नवीन कोंपलों आदि को डालकर स्नान करना चाहिए।

गुरु बृहस्पति भवन में अशुभ होने पर वास्तुशास्त्र के अनुसार निम्न कार्य करें–

भवन के नैर्ऋत्य कोण में नींव के पास चन्द्रमा की वस्तुएं दबायें।

सोने के साथ लाल रत्ती (करजनी गुंजा) तिजोरी में रखें। संयुक्त परिवार हो, तो उसके साथ रहें। दुर्गा लक्ष्मी का तांत्रिक अनुष्ठान करवायें। पत्नी का अपमान न करें, उसके साथ सभी स्त्रियों का सम्मान करें। मंगल की वस्तुयें भूमि में दबायें।

प्रिय पाठकों! पाश्चात्य ज्योतिष को हम बिल्कुल महत्वपूर्ण नहीं मानते। ज्योतिष के नाम पर वह मनोविज्ञान की बात करता है। पाश्चात्य ज्योतिष से फलित नहीं मिलता है, वह तो भारतीय ज्योतिष से ही आता है। हाल ही में एक फ्रांसीसी मनोवैज्ञानिक ने आंकड़ों के आधार पर यह [illegible] करने का प्रयास किया था कि ग्रह व्यक्ति के भविष्य का एक विशिष्ट रूप देते हैं। उसने हजारों जन्मपत्रियां एकत्रित कीं और उनके विषय में टिप्पणियां कीं। उदाहरण के लिए, द[illegible]र के मध्य में मंगल की स्थिति जातक को खिलाड़ी या इंजीनियर बनाती है, और अगर गुरु बृहस्पति बैठा हो तो जातक वकील बनेगा।



15 राक्षसों के गुरु शुक्र ग्रह (VENUS)

शुक्र प्राचीन यूनानी धर्मशास्त्रों में कला, प्रेम और भावना की देवी कही गयी है। विकसित शुक्र ग्रह वाले जातक प्रेम, सहानुभूति और दया के मूर्तरूप होते हैं। यह चरित्र में स्फूर्ति, उत्साह, स्वच्छन्दता लाता है। ऐसे जातक स्वस्थ, सशक्त होते हैं। कभी-कभी ये लोग बहुत वासनात्मक हो जाते हैं। वे व्यवहारों में स्पष्टता के पोषक होते हैं लेकिन तीव्र रक्त प्रवाह उनके मानसिक संतुलन को कभी भी विगाड़ सकता है, तनिक-सी वात पर वे क्रुध हो सकते हैं लेकिन दूसरे ही क्षण पांव पकड़कर क्षमा भी मांग सकते हैं।

स्वभाव से ये लोग अच्छे स्तर का रहन-सहन चाहते हैं। शुक्र ग्रह व्यक्तित्व को प्रभावशाली बना देता है और जातक आकर्षण योग्य हो जाता है। वह हर गम्भीरता को प्रसन्नता और स्फूर्ति से ग्रहण करता है। वह जीवन को अधिक से अधिक उपयोगी बना लेना चाहता है। हर सुंदर वस्तु के प्रति उसका आकर्षण होता है। वह विश्वस्त होता है। उसके स्वभाव में स्वार्थ नहीं होता। लेकिन वह इतनी अपेक्षा अवश्य रखता है कि उसकी कार्यप्रणाली को दूसरे प्रशंसा की दृष्टि से देखें। मित्रों के लिए वह तत्पर रहता है। कलाओं के प्रति रुचि रहने पर भी उसे संगीत में अधिक दिलचस्पी रहती है। शुक्र ग्रह का जातक मैत्री के योग्य होता है।

यह ग्रह एक राशि पर तीन सप्ताह ठहरता है। इसके बुध तथा शनि मित्र हैं। सूर्य, मंगल एवं चन्द्र शत्रु हैं तथा बृहस्पति सम है। ग्रह शुक्र स्त्री जाति, श्याम-गौर वर्ण, दक्षिण पूर्व दिशा का स्वामी, कार्यकुशल तथा जलीय तत्व वाला है। यह कफ, वीर्य आदि धातुओं का कारक माना जाता है। इसके प्रभाव से जातक का रंग गेहुंआ होता है। यह संगीत, वस्त्राभूषण, वाहन, पत्नि (स्त्री) एवं कामेच्छा आदि का कारक है। इसके द्वारा चातुरता एवं सांसारिक सुख सम्बन्धी विचार किया गया है। शुक्र यदि छठे स्थान में बैठा हो तो निष्फल रहता है और अगर सातवें भाव में यह ग्रह हो तो अनिष्टकर माना जाता है।

शुक्र को 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12वें स्थानों में शुभकर तथा 6, 8, 10वें स्थानों में अशुभकर माना गया है। शुक्र विभिन्न प्रकार के सांसारिक सुखों तथा कलाओं का कारक है। संतान-प्राप्ति के लिए शुक्र का बलवान् होना अत्यंत आवश्यक है। शुक्र की शुभता के बिना कोई संगीतज्ञ, गायक, नर्तक या कलाकार हो ही नहीं सकता। शुक्र की अशुभता से जीवन में सुख-भोग, विशेषकर स्त्री-पुरुष का अभाव बना रहता है तथा जीवन की सरसता समाप्त हो जाती है।

शुक्र की राशि वृषभ या वृष राशि का स्थान दूसरा है। इसका शाब्दिक अर्थ होता है "बैल"। आकाश खण्ड में विभाजन और इसका नक्शा बैल की आकृति बनाता है। इस कारण इसका नामकरण वृष किया गया है। ज्योतिष शास्त्र में इसके नक्षत्रों में

"कृत्तिका" के 2, 3, 4, चरण, "रोहिणी" के चारों चरण व मृगशिरा के 1, 2 चरण सम्मिलित हैं। इसका उदगम् "षृष्ठोदय" है। इसकी दिशा पूर्व है। रंग सफेद, कद विकृत, रहने का स्थान "श्वेत" माना गया है। इसका समय 20 अप्रैल से 21 मई है। राशि स्वामी ग्रह शुक्र है। जिसे शास्त्रों में असुरों का गुरु माना गया है। "शुक्र" स्वामी होने के कारण, नेत्र, जल, वीर्य और कफ पर इसका अधिकार है। यह वसन्त ऋतु का स्वामी है। इसके अधिपति देवता "लक्ष्मी" हैं। सौरमण्डल की मन्त्रिपरिषद् में इसे मन्त्रीपद का दर्जा प्राप्त है। इस ग्रह का सम्बन्ध "जिह्वा" से है। इसके मित्र ग्रह बुध और शनि हैं, सूर्य, चन्द्र इसके शत्रु ग्रह हैं। मंगल और बृहस्पति "गुरु" से इसका सम्बंध सामान्य है। इसका आकार अष्टकोण कद सामान्य विशिष्ट अंग "गुप्तांग" है। इसका वेद यजुर्वेद है। यह बुध शाखा का स्वामी है। वृषभ की राशि शूद्र है। यह एक राशि पर एक माह रहता है।

राशि की दृष्टि से यह राशि चेहरा और गले का प्रतिनिधित्व करती है। स्वामी ग्रह का लिंग स्त्री है। स्वामी ग्रह शुक्र की जाति ब्राह्मण है। गुण इसका रजोगुणी है।

इस राशि का यह विवरण तो ज्योतिष की दृष्टि से है। अब इसका वैज्ञानिक रूप भी देखना आवश्यक है। विज्ञान की दृष्टि से शुक्र को पृथ्वी का निकटतम पड़ोसी माना गया है। यह ग्रह सौरमण्डल की अपेक्षा सूर्य के अधिक निकट है। यह हमारी पृथ्वी से 6,70,20,510 मील दूर है तथा पृथ्वी से इसकी निकटतम दूरी 25,700,500 मील है। इसकी सतह का तापमान 899 फारेनहाइट डिग्री है। पृथ्वी से इस ग्रह को नंगी आंखों से देखा जा सकता है। इसका एक वर्ष 255 दिन का है। यह 255 दिन में सूर्य की एक परिक्रमा पूरी कर लेता है। अतएव पृथ्वी का 18 वर्ष का युवक शुक्र पर 27 वर्ष का तरुण बन जाएगा। यह लगभग 22 मील प्रति सैकेण्ड की गति से सूर्य की परिक्रमा कर रहा है, जबकि पृथ्वी की गति प्रति सेकेण्ड 18 मील है। यह ग्रह सुबह-शाम अवश्य दिखेगा, पर मध्य रात्रि में कभी नहीं दिखाई देगा। इसका धरातल सफेद बादलों से ढका हुआ है। इसके बादल तेल के कणों से बने हैं। शुक्र के चारों ओर एक सफेद धुंध-सा छाया रहता है। देखिए, पूर्वजों ने किस प्रकार लाखों वर्ष पूर्व इसका वर्ण का रंग सफेद (श्वेत) बतलाया है। शुक्र से बराबर रेडियो तरंगें उठती हैं। इसके धरातल पर पानी की सम्भावना है। इस ग्रह पर जीवन की कोई सम्भावना नहीं है।

ज्योतिष शास्त्र में यह वृषभ (वृष) व तुला का स्वामी माना गया है। हस्त रेखा में इसकी गणना पर्वत शुक्र के रूप में है। यह प्रेम (सैक्स), विवाह, पारिवारिक जीवन, कला शारीरिक सुख का निर्णय करने वाला है। हस्तरेखा में इस ग्रह के स्थान को बड़ा महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। और लगभग जातक के सम्पूर्ण करतल को प्रभावित करता है। जन्मकुण्डली में जिस घर में (भाव में) यह बैठता है, वहीं से यह अन्य 11 भावों (घरों) को प्रभावित करता है। वृषभ (वृष) राशि ऐसे ही तेजस्वी, महत्वपूर्ण, प्रभावशाली ग्रह के अनुचर के रूप में आती है।

जातक के जन्म लेने के समय इस राशि का उपस्थित होना ही उस जातक की राशि को निर्धारित करता है। इस राशि का स्वामी का रंग-रूप बतलाते हुए कहा गया

कि उसका शरीर स्थूल है, घुंघराले काले बाल हैं, वर्ण गेहूंआ है। व्यक्तित्व आकर्षक और मिलनसार है। आंखें बड़ी-बड़ी और वीर्यवान हैं। इस प्रकार के वर्णन के कारण वृष राशि के जातक प्रायः हृष्ट-पुष्ट, अच्छे डीलडौल वाले कर्मठ, आकर्पक, गोरे चुम्बकीय व्यक्तित्व के धनी होते हैं। अधिकांश का वर्ण गौर होता है।

बड़ी-बड़ी सुन्दर आंखों वाली स्त्रियों की राशि अधिकतर वृष ही होती है। इस राशि में जन्मी बालिकाएं अनुपम सुन्दरी होती हैं। इस राशि की महिलाएं रूप-रंग ,वनावट की नजर से मनमोदिनी होती हैं। अपने आकर्पक व्यक्तित्व के कारण इनके मित्रों और शत्रुओं की संख्या सवसे अधिक होती है।

इस राशि के जातकों का स्वभाव घमंडी और क्रोधी होता है। यह सबको प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं। अपने कार्य के लिए पूर्णतः समर्पित होते हैं। मेहनत और लगन से काम करते हैं, एक बार योजना बनाने के वाद उसी के अनुसार कार्य करना इन्हें पसन्द होता है। विपरीत परिस्थितियों में भी नहीं घबराते।

यह कला-प्रेमी, नाच-गाने के अभिनय के शौकीन होते हैं। मनोरंजन इनको प्रिय होता है, पर मनोरंजन को यह प्राथमिकता नहीं देते हैं। इनका दाम्पत्य जीवन सुख-दुःख मिश्रित होता है। इनका यौवनकाल एवं वृद्धावस्था सुखमय होती है, यौवन में यह काफी परिश्रम करते हैं। व्यय के विषय में संकोची होते हैं।

इस राशि के जातक की आयु 60 वर्ष तक मानी जाती है। 60 वर्ष की अवस्था पार करने के पश्चात् भी इसका जीवन रहता है, तो नर्कतुल्य होता है। इस आयु के वाद इस राशि का जातक मात्र चलती-फिरती मूर्ति बनकर रह जाता है। जीवन में प्रायः कम ही रोगी होता है। पर अगर बीमार होता है तो देर से ठीक होता है।

इसका स्वास्थ्य सामान्यतः यौवनकाल तक श्रेष्ठ रहता है। यौवन काल के उपरान्त इसका स्वयं की लापरवाही से स्वास्थ्य बिगड़ता है। प्रायः पथरी, सांस में कष्ट आदि होता है। नेत्र व चेहरे की पीड़ा घेरे रहती है। उदर सम्बन्धी रोगं शीघ्र घेरते हैं।

इस राशि की महिलाओं को श्वेत प्रदर अनिवार्य रूप से होता है। पेट में पेढू में हमेशा शिकायत रहती है। सिरदर्द, नेत्र पीड़ा, अपच लगी रहती है।

इस राशि के जातक का विवाह सुख-दुःख मिश्रित रहता है। अपने अहम्, घमण्डी एवं कंजूस स्वभाव के कारण पत्नी से खटपट रहती है। मिथुन, मकर, कुम्भ राशि वाली स्त्रियों से या पुरुषों से विवाह सम्बन्ध उत्तम रहता है। सिंह, कर्क, वृश्चिक राशि वालों से विवाह सम्बन्ध अशुभ व कलहकारी सिद्ध होता है। मेष, वृश्चिक तथा धनु राशि वाले इनके लिए सामान्य रहते हैं।

इनका आम तौर पर दाम्पत्य जीवन नरम-गरम रहता है। इनका सैक्स व्यावहारिक होता है। यह कोरी भावुकता पर आधारित नहीं होता है। इस राशि वाले की सन्तानें कम होती हैं, जो भी होती हैं उनको बड़े अनुशासन में रखना चाहते हैं।

इस राशि की महिलाओं को पुत्र-प्राप्ति का योग 26 वर्ष की आयु के वाद बनता है।

इस राशि के व्यक्तियों को पश्चिम, उत्तर-पूर्व, उत्तर-पश्चिम दिशा या पश्चिमी

दिशाएं शुभ रहती हैं। इनका मुख्य जीवन निर्वाह मूल्यांकन- कर्ता, नाप-तौल विभाग, बैंकर, निर्माता, जौहरी, उपन्यास लेखन, व्यापारी, प्रैस लाइन से होता है। वैसे सब कार्य कर लेना इनकी मुख्य विशेषता है।

इस राशि के शुभ रंग नीला और सफेद हैं। मोती, हीरा एवं सफेद हकीक शुभ रत्न हैं। अनामिका या कनिष्ठिका में इनको धारण करना विशेष लाभप्रद है।

इस राशि वालों को परामर्श दिया जाता है कि वह अपने खान-पीन का ध्यान रखें। अधिक परिश्रम न करें। मितव्ययिता एक अच्छी आदत है, पर आवश्यकता से अधिक कंजूसी भी उचित नहीं है।

शुक्र, मेष, सिंह, धनु एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में नैसर्गिक रूप से अशुभ होता है। इसके अतिरिक्त शुक्र ग्रह प्रथम भाव में केवल वृष लग्न की कुण्डली में; द्वितीय भाव में केवल मिथुन लग्न की कुण्डली में; तृतीय भाव में वृष के अतिरिक्त सभी लग्न की कुण्डलियों में; चतुर्थ भाव में वृष एवं कर्क लग्न की कुण्डली में, पंचम भाव में केवल धनु लग्न की कुण्डली में; षष्ठ भाव में मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में; सप्तम भाव में मेष, वृष, कर्क, सिंह एवं वृश्चिक लग्न की कुण्डलियों में; अष्टम भाव में वृष, मिथुन, सिंह, तुला, वृश्चिक, मकर, कुंभ एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में; नवम भाव में मेष, मिथुन एवं कर्क लग्न की कुण्डलियों में; दशम भाव में केवल मिथुन लग्न की कुण्डली में; एकादश भाव में सिंह, कन्या, मकर एवं कुंभ के अतिरिक्त सभी लग्नों की कुण्डलियों में; द्वादश भाव में केवल मिथुन लग्न की कुण्डली में; एकादश भाव में सिंह, कन्या, मकर एवं कुंभ के अतिरिक्त सभी लग्नों की कुण्डलियों में; द्वादश भाव में वृष, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में अशुभ फल प्रदान करता है। शुक्र, चन्द्र स्थित राशि से षष्ठ, सप्तम एवं दशम भाव में भ्रमणशील होने पर भी अशुभ होता है।

इस अनिष्टता के निवारण हेतु ज्योतिषियों ने अनेक उपायों का उल्लेख किया है। ये उपाय अगर सम्पन्न किए जाएं, तो निश्चित ही शुक्र की अशुभता का निवारण हो जाता है।

अब शुक्र ग्रह का एक दृष्टि में सम्पूर्ण विवरण प्रस्तुत कर रहा हूं-

मित्र ग्रह	:	बुध, शनि
शत्रु ग्रह	:	सूर्य, चन्द्र
सम ग्रह	:	मंगल, गुरु
शरीर में स्थिति	:	दोनों नेत्र
भाव का	:	सप्तम
कारकत्व	:	भौतिक सुख, वाहन, आभूषण, ऐश्वर्य कवित्व आदि।
अंग्रेजी नाम	:	वीनस (VENUS)
स्वामित्व	:	वृष, तुला
मूल त्रिकोण	:	तुला

उच्च राशि	:	मीन
नीच राशि	:	कन्या
रतन	:	हीरा, जिरकन
राशि संचार काल	:	एक माह
समय	:	अपराह्न
स्वभाव	:	शुभ
समिधा	:	गूलर
पुष्प	:	श्वेत पुष्प
गुण	:	रजोगुण
तत्व	:	जल तत्व
ऋतु	:	बसन्त
प्रतिनिधि पशु	:	सफेद घोड़ा
अवस्था	:	युवा
दृष्टि	:	सप्तम
वर्ण	:	चमकदार
जाति	:	ब्राह्मण
आकृति	:	लम्बा
दिशा	:	आग्नेय
धातु	:	चाँदी, गिलट
लिंग	:	स्त्री
भाग्यशाली दिन	:	मंगलवार और शुक्रवार।
भाग्यशाली रंग	:	नीला, हरा, गुलाबी और बैंगनी।

जिनका जन्म 6ठी, 15वीं या 24वीं तारीख को हुआ है, उनके लिए 6 भाग्यशाली अंक है। उनका नियंत्रक ग्रह शुक्र है। आपमें से कइयों के चेहरों की बनावट सुंदर होगी। नाक-नक्श अच्छे होंगे। व्यक्तित्व प्रभावशाली होगा। सामान्यतया आप सार्वजनिक संगठनों के लिए काम करना पसंद करते हैं। आपका झुकाव कला, औषधि और मीड़िया की तरफ भी होता है। आपमें हठधर्मी है और आप जुआ खेलने जैसी बुराइयों के शिकार हो सकते हैं।

20 अप्रैल से 20 मई तथा 21 सितम्बर से 20 अक्टूबर तक की अवधि आपके लिए अच्छी रहेगी, खासतौर से तब, जब आपकी आयु 21 या 32 वर्ष की होगी। जो लोग 3री, 12वीं, 21वीं अथवा 30वीं तारीख को जन्मे हैं, उनके साथ किसी तरह का कारोबार अथवा साझेदारी करने से बचिए। जिन लोगों का जन्म 5वीं, 6ठी, 8वीं 14वीं, 15वीं, 17वीं, 23वीं, 24वीं अथवा 26वीं तारीख को हुआ है, उनके साथ दोस्ती करना लाभदायक होगा।

अगर आपकी आयु 19, 28, 37, 40, 55 या 64 वर्ष है, तो आपको गले, त्वचा, गुर्दे अथवा गठिया की तकलीफ हो सकती है। वैसे सभी को अपनी सेहत के विषय में सावधान रहना होगा।

शुक्र ग्रह से उत्पन्न दोष के निवारण हेतु जातक को शुक्र के मंत्र का जप करना चाहिए। यहां ध्यान सहित शुक्र का मंत्र दिया जा रहा है।

शुक्र ग्रह का ध्यान इस प्रकार है–

ध्यान

ॐ जटिलं साक्षसूत्रं च वरदण्डकमण्डलून्।
श्वेतवस्त्रावृत्तं शुक्रं ध्यायेद्दानवपूजितम्॥

मंत्र इस प्रकार है–

ॐ अन्नात् परिस्त्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान, शुक्रमंधसऽइन्द्रस्योन्द्रियमिदं पयोऽमृतम्मधु॥

शुक्रवार को शुभ मुहूर्त में चाँदी के पत्र पर यंत्र को उत्त्कीर्ण कराएं। अगर सम्भव हो तो मध्य में सफेद जिरकन जड़वा लें। इसके उपरान्त शुक्र गायत्री मंत्र से उसे अभिमंत्रित प्रतिष्ठित कर पूजा में स्थापित करें और नित्य पूजन करते रहें।

इस यंत्र को भोजपत्र पर निर्मित करके भुजा पर भी धारण कर सकते हैं।

शुक्र का यंत्र

11	6	13
12	10	8
7	14	9
ॐ द्रां द्रीं द्रोंम सः शुक्राय नमः		

शुक्र गायत्री इस प्रकार है–

ॐ भृगुजाय विद्महे दिव्यदेहाय धीमहि तन्नो शुक्रः प्रचोदयात्॥

शुक्र ग्रह से उत्पन्न दोषों के निवारण के लिए सफेद जिरकन दान करना उत्तम है। कुंवारी कन्याओं को श्वेत वस्त्र दान करना भी ग्रह की अनिष्टता को दूर करता है।

शुक्र द्वारा उत्पन्न अशुभता का शमन करने के लिए जातक को स्नान के जल में इलायची, मैनसिल, गऊ का दूध, मूली के बीज, पीपरामूल, चावल, आदि मिलाकर शुक्रवार के दिन स्नान करने से पर्याप्त लाभ होता है।

मन की शांति भंग होने के हजारों कारण हैं। किसी का मन बच्चों की वजह से, किसी का मन स्वास्थ्य की वजह से, तो किसी का कारोबार, या किसी अन्य कारणों से परेशान रहता है।

पर इसके विपरीत कई बार यह भी देखने में आया है कि सब कुछ होते हुए भी मन अशांत-सा रहता है। ऐसा क्यों? मनोवैज्ञानिक या डॉक्टर इसके कई कारण बता सकते हैं। हाथों की रेखाओं में दोष होने के कारण भी मन की शांति चली जाती है।

अगर किसी व्यक्ति के शुक्र पर्वत के ऊपर त्रिभुज हो तो ऐसे व्यक्ति एक सफल अनुसंधानकर्त्ता होते हैं तथा नए-नए आविष्कार करते हैं।

अगर किसी व्यक्ति के शुक्र क्षेत्र विकसित हों तथा इसके साथ ही चन्द्र रेखा बुध क्षेत्र तक जाती हो तो ऐसे व्यक्ति साहित्यकार होते हैं।

अगर दोनों हाथों में शुक्र के क्षेत्र के ऊपर त्रिकोण चिन्ह हो तो ऐसे व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करते हैं तथा ख्याति पाते हैं।

अगर व्यक्ति के दोनों हाथों में शुक्र का क्षेत्र उन्नत हो तथा उन पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो ऐसे व्यक्ति एक कुशल डॉक्टर या वैद्य बनते हैं तथा अच्छी प्रतिष्ठता एवं सम्मान प्राप्त करते हैं।

शुक्र ग्रह से पीड़ित जातक को शुक्रवार का उपवास रखना चाहिए। उपवास के दिन नमकरहित भोजन करना अनिवार्य है। सायंकाल गऊ का पूजन करना लाभदायक होता है। शुक्रवार के दिन किसी को निम्नलिखित वस्तुओं का दान करना चाहिए–

चावल, चाँदी का टुकड़ा, सफेद चंदन, रेशमी वस्त्र, सुगंधित द्रव्य, मिश्री, शुद्ध केसर, इलायची, गऊ का दूध, दही, जिरकन यंत्र आदि।

लाल किताब के उपायों से भी अनिष्टता का निवारण कर सकते हैं–

- कामुकता से बचें।
- बहते हुए जल में तांबे के सिक्के डाल दें।
- शुद्ध घी, दही और देशी कर्पूर मंदिर में दान करें।
- चौपाए जानवरों पर कृपा रखें।
- अनाथ बच्चों का पालन-पोषण न करें।
- विवाह शीघ्र करें और अनुष्ठान करवायें।
- कोई चौपाया पालें।
- कुत्ता एवं कौवा को अपने भोजन से ग्रास दें। गोदान करें।
- स्वजनों का पालन-पोषण करें।

शुक्र अशुभ होने के लक्षण–

शुक्र अशुभ होने के लक्षण इस प्रकार हैं–

- स्त्री का रोगी रहना, मृत्यु हो जाना।
- गाय का अस्वस्थ होना।
- रात्रि में नींद न आना।
- धातु का उत्पन्न हो जाना।
- लिंग में यौन रोग या योनि रोग उत्पन्न होना।
- अंगूठा क्षतिग्रस्त होना।
- त्वचा रोग।
- नपुंसकता।

- स्वप्नदोष।
- भू-सम्पत्ति की हानि। इसमें सभी अचल सम्पत्तियां आती हैं, केवल मकान को छोड़कर।

शुक्र ग्रह अशुभ होने पर आप वास्तुशास्त्र की दृष्टि से निम्न उपाय करें–

छत बनवाना, कोयला लाना, शौचालय बनवाना आदि कार्य पुनः न करें। तांबे का सिक्का धरती में दबायें। भवन की पश्चिमी दीवार कच्ची रखें। गुरु की वस्तुएं कुएं में डालें। चन्द्रमा की वस्तुएं भूमि में दबायें। भवन के नैर्ऋत्य कोण में चाँदी स्थापित करें। मंगल की वस्तुएं प्रयोग करें। घर में नंगे पैर चलने से बचें। झाडू की कील (गुठली) में काला सुरमा भरकर भूमि में दबायें। कुआं न खुदवायें।

प्रिय मित्रों! लाल किताब के उपायों की सबसे बड़ी विशेषता यह सरल और सुगम है। इसकी तकनीक में कोई विशेष गणना भी नहीं करनी पड़ती है। इसलिए इसके उपायों का लाभ सामान्य जनों को मिल रहा है।



16 पापग्रह शनि (SATURN)

सूर्य से छठे नम्बर का ग्रह शनि सौरमण्डल के सभी ग्रहों से कुछ हटकर है। पृथ्वी से चमकीले तारे की तरह दिखने वाले शनि को "सौरमण्डल का रत्न" कहा जाता है। यह बृहस्पति की ही तरह विशाल गैसीय ग्रह है जिसके चारों ओर एक सुंदर-सा रंग-बिरंगा वलय है। शनि का यह वलय सदियों से लोगों के लिए खोज का विषय बना रहा। खगोलविद इसे टेलिस्कोप के द्वारा देखते रहे हैं; लेकिन यह वलय आखिर है क्या, इसे ठीक से व्यक्त कर पाना उनके लिए भी कठिन रहा है।

शनि सौरमंडल का दूसरा सबसे बड़ा ग्रह है। इसमें 758 पृथ्वियां सरलतापूर्वक समा जाएंगी। इसका भार पृथ्वी से 95 गुना अधिक है। इसके बावजूद सभी ग्रहों में इसका घनत्व सबसे कम है। अगर किसी सागर में शनि ग्रह को रखा जाए तो तब भी यह नहीं डूबेगा। शनि कई विषयों में बृहस्पति जैसा अनुभव होता है। बृहस्पति की तरह यह भी मुख्यतः हाइड्रोजन और हीलियम का बना है और अपनी धुरी पर तेजी से घूमता है, इसलिए इसके ध्रुव सपाट हैं।

शनि ग्रह के विषय में सर्वसाधारण में एक प्रकार का भय व्याप्त है, लेकिन ऐसे विचार पूरी तरह ठीक नहीं है। शनि ही नहीं वरन कोई भी शुभ या अशुभ ग्रह जन्म-स्थित राशि के अनुसार ही फल देते हैं। अधिकतर लोग यहां तक कि कुछ ज्योतिषी भी प्रचलित राशि के नाम से साढ़ेसाती आदि का विचार करते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि प्रचलित नाम से बनने वाली राशि वास्तविक राशि नहीं होती है। जन्मकाल में जिस राशि और नक्षत्र में चन्द्रमा हो, वही जातक की राशि होती है और ज्योतिष ने इसलिए राशियों से वर्णमाला के अक्षरों का तारतम्य स्थापित किया है। ज्ञातव्य है कि एक राशि में सवा दो नक्षत्र होते हैं, और एक नक्षत्र के चार चरण होते हैं। इस प्रकार एक राशि में नौ चरण हुए। अगर नक्षत्र चरण के अनुसार नाम रखा जाता है तो राशि का बोध तो होता ही है, स्थूलमान से जन्म-समय का बोध भी होता है।

अगर प्रचलित नाम से किसी पर साढ़ेसाती चल रही है और उसे विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है, तो इसके लिए शनि उत्तरदायी न होकर कोई अंतरदशा कारण हो सकती है। शनि सौरमंडल का सबसे मंदगति ग्रह है, और इसलिए इसे ज्योतिष में "मंद" की संज्ञा भी दी गयी है। शनि पूरी राशि का चक्र अनुमानतः 30 वर्षों में पूरा करता है। इस प्रकार एक राशि में वह लगभग ढाई वर्ष रहता है। यहां यह स्पष्ट करना उचित होगा कि ढाई वर्ष बड़ा लम्बा है और इन ढाई वर्षों में जातक के जीवन में अनके घटनाएं होती है। अब साढ़ेसाती के विषय में भी जो मान्यताएं हैं वे शास्त्र के अनुरूप नहीं हैं। चन्द्रमा सौरमंडल का सबसे कोमल एवं शीघ्रगामी ग्रह है। चन्द्रमा का सम्बंध जातक के मन से है, तब साढ़ेसाती का प्रारम्भ होता है व चन्द्रमा से 45 डिग्री आगे जाने पर साढ़ेसाती की समाप्ति हो जाती है।

एक राशि में शनि अनुमानतः ढाई वर्ष निवास करता है। इस प्रकार जन्मराशि से पिछली और अगली राशि; अर्थात् तीन राशियों का भोग वह साढ़े सात वर्षों में पूरा करता है इसलिए यह साढ़ेसाती कहलाती है। इसके अतिरिक्त जब शनि चन्द्र राशि में चौथी और आठवीं राशि पर चलता है, तब यह अढ़ैया कहलाता है। वैसे देखा जाय तो शनि के 30 वर्ष के भ्रमण काल में साढ़े 12 वर्ष शनि की साढ़ेसाती या अढ़ैया की परिधि में आ जाते हैं। यहां हमें विचार करना चाहिए कि क्या तीस वर्ष में साढ़े बारह वर्ष जातक के लिए पूर्ण रूप से अशुभ होते हैं? शनि एक न्याय प्रिय ग्रह है। इसे न्यायाधीश और दंडाधिकारी भी माना गया है। अतः जिस समय जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति अच्छी रहती है और उसे शुभ भावों का स्वामित्व प्राप्त रहता है, तो साढ़ेसाती, अढ़ैया और उसकी दशा अंतर दशा में यह ग्रह जातक को नीचे से ऊपर पहुंचा देता है और अगर जन्मकुण्डली में उसकी स्थिति अशुभ हो तो यह निश्चित ही एक जातक को कष्टदायी सिद्ध होता है, लेकिन ऐसा भी नहीं है कि साढ़ेसाती, अढ़ैया या दशाओं का सम्पूर्ण समय पीड़ादायक ही हो।

जिस प्रकार से एक कैमरा लेंस से अपने सामने की चीजों का चित्र खींच लेता है उसी प्रकार शिशु के जन्मसमय आकाश के ग्रह आकाश को उस समय की स्थिति के अनुसार बच्चे के मां के पेट से बाहर निकलते ही अपने-अपने अणुओं में जन्म के ग्रहों की स्थिति के अनुसार गोचर ग्रहों की स्थिति से प्रभावी होते हैं। उनसे मानव-जीवन पर प्रभाव पड़ता है। अब प्रश्न आता है कृष्ण और कंस पर एक ही राशि होने पर भी अलग-अलग प्रभाव क्यों होता है? इसका कारण जन्म के समय ग्रहों की जो स्थिति होती है उसके आधार पर ग्रहों का प्रभाव दशा अन्तर दशा के अनुसार पड़ता है, गोचर ग्रह भी उन्हीं ग्रहों से प्रभावित होकर फल देते हैं। नाम एक होते भी प्रत्येक जातक की जन्मकुण्ड्ली भिन्न होती और दशायें भी भिन्न होगी। उनकी आयु भी भिन्न होगी। ज्योतिष में जन्मकुण्डली का आधार ही प्रमाणिक है।

शनिश्चर की साढ़ेसाती एक ही राशि के दो अलग-अलग जातकों पर आती है तो उसका प्रभाव दोनों पर अलग-अलग पड़ता है। इसका कारण है एक ही राशि के एक जातक जिसको शनि अशुभ कर रहा है और उसका शनि निश्चय ही जन्मकुण्डली में अशुभ भाव में होगा। दूसरा जातक शनि की साढ़ेसाती आने पर मालोमाल हो रहा है उसका शनि शुभ भाव में होगा अथवा केन्द्र और त्रिकोण का स्वामी बनने के कारण योग कारक बना होगा जो शुभ है। इस प्रकार हमें बिना लग्नकुण्डली के बिना गोचर ग्रहों से उनका सामंजस्य किए भविष्यफल नहीं कहना चाहिए।

अब मैं अपने मूल विषय पकर आता हूं, जैसा कि उल्लेख किया गया है कि साढ़ेसाती का प्रारम्भ चन्द्रमा के राशि अंश से 45 अंश पूर्व से प्रारम्भ होता है और चन्द्रांश में 45 अंश के पश्चात् समाप्त होता है। जैसा मान लिया जाए कि किसी वृश्चिक राशि है व चन्द्रमा शून्य अंश पर है तो जिस समय शनि, कन्या राशि के 15 डिग्री पर जाएगा, वहीं से शनि की साढ़ेसाती प्रारम्भ होकर धनु राशि के 15 डिग्री आने पर साढ़ेसाती की समाप्ति हो जायेगी। ऐसी मान्यता भी बन गयी है कि शनि जाते-जाते शुभ फल दे जाता है। ऐसा इसलिए होता है कि उस समय चन्द्रमा अंशानुसार साढ़ेसाती समाप्त

हो चुकी होती है। जब चन्द्रमा से शनि 90 अंश आगे होता है, तब प्रथम अढ़ैया प्रारम्भ होता है और 210 डिग्री आगे जाने पर अष्टम शनि अर्थात् दूसरा अढ़ैया प्रवेश करता है। अब मैं बारह राशियों के अनुरूप मोटे तौर पर प्रत्येक राशि की साढ़ेसाती के काल का एक अनुमानित वर्णन कर रहा हूं। मेष राशि के लिए मध्य के ढाई वर्ष विपरीत रहते हैं, वृष के लिए पहले ढाई वर्ष विपरीत रहते हैं, कर्क के लिए पहला अढैया शुभ होता है और बाद में पांच वर्ष विपरीत रहते हैं। सिंह राशि वालों के पहले वर्ष कष्टप्रद, किन्तु अंतिम ढाई वर्ष शुभ होते हैं। कन्या के लिए प्रथम अढ़ैया त्रास दे सकता है। तुला के लिए अंतिम ढाई वर्ष कष्टप्रद होते हैं। वृश्चिक के बीच के ढाई वर्ष और धुन के लिए प्रथम वर्ष त्रासकदायक माने जाते हैं। मकर के लिए सम्पूर्ण साढ़ेसाती सामान्य रहती है। इसी प्रकार कुंभ राशि को भी यह नहीं सताती। मीन राशि वालों के लिए अंतिम अढ़ैया चिंतित करता है।

शनि को 3, 6, 11वें भवन में बिना किसी विवाद के शुभ माना गया है, किन्तु ग्रन्थकारों ने इसका दशम भाव में होना भी शुभ बताया है। 5, 7, 9वें स्थान में शनि मध्यम फल प्रदान करता है और 1, 2, 4, 8, 12वें स्थान में शनि अशुभ फल देता है। शनि की शुभता हमें दार्शनिक, तत्व-वेत्ता, विचारक बनाती है, परोपकार एवं समाज-सेवा की ओर प्रेरित करती हैं।

बड़े-बड़े कल-कारखाने लगाने और चलाने की क्षमता हमें शनि से ही मिलती है। कानून का पण्डित होने के लिए भी शनि का अनुकूल होना आवश्यक है। शनि जातकों को सांसारिकता को परखने की अद्भुत क्षमता प्रदान करता है। शनि से प्रेरित मनुष्य के जीवन का मूल मंत्र विश्वास है। जांच-परखकर लोगों पर विश्वास करना और लोगों का विश्वासपात्र बनकर रहना यह हमें शनि ही सिखलाता है, किन्तु अगर शनि प्रतिकूल हो जाए तो जीवन विभिन्न प्रकार की समस्याओं का पर्याय बन जाता है। शनि की प्रतिकूलता से जातक जीवनपर्यन्त आशंकाओं में जीता है। लगातार की असफलताओं का सामना करके घोर निराशावादी, कुण्ठाग्रस्त तथा आत्मघाती हो जाता है।

अगर आपका भाग्यशाली अंक 8 है तो आपका नियंत्रक ग्रह शनि है। यदि आपका जन्म 8वीं, 17वीं या 26वीं तारीख को हुआ है। आपका स्वभाव हठीला है। आप अच्छे वकील, राजनीतिज्ञ, व्यापारी और समाज सेवक बन सकते है। आप दृढ़ विचारों के है और आपको समझना मुश्किल होता है।

अगर आप पानी के आसपास हों या किसी पर्वतारोहण जैसे साहसपूर्ण कार्य में लगे हों तो सावधानी बरतें। 31 और 37 वर्ष के लोगों के लिए यह बहुत अच्छा वर्ष है।

अगर आपकी उम्र 17, 26, 31, 35, 41, 44, 51 या 53 वर्ष की है तो आपको धन और समृद्धि की एक नई जिंदगी मिलेगी। जिनकी उम्र 18, 27, 36, 45, 54, 63 या 72 वर्ष की है, उनको बदन दर्द, दमा, त्वचा रोग अथवा दिल का रोग हो सकता है।

भाग्यशाली दिन : शनिवार तथा सोमवार।

भाग्यशाली रंग : काला, नीला, बैंगनी और भूरा।

शनि एक राशि पर पूरे तीस माह ठहरता है। इसके शुक्र तथा बुध मित्र हैं। मंगल, चन्द्र, एवं सूर्य शत्रु हैं तथा बृहस्पतिं सम है। शनि ग्रह नपुंसक जाति, कृष्ण वर्ण, पश्चिम दिशा का स्वामी वायु तत्व तथा वात श्लेष्मिक प्रकृति का है। इसके द्वारा यश, ऐश्वर्य, मूर्च्छा, मोक्ष, विपत्ति, दृढ़ता, आयु तथा शारीरिक बल आदि का विचार किया गया है।

अगर जातक का जन्म रात्रि प्रहर में हुआ हो तो वह माता-पिता का कारक होता है। जानने और समझने वाली बात यह है कि शनि ग्रह सप्तम स्थान बलि होता है अथवा किसी वक्री ग्रह तथा चन्द्र के साथ रहने पर चेष्टाबली माना गया है। यह पाप ग्रह है लेकिन इसका अंत सुखद देखा गया है। यह जातक को संकटों में डालकर अंत में उसे सात्विक बना डालता है।

भारतीय धर्मानुसार शनि कुटिल देवता है। शनि ग्रह का प्रभाव जातक को एकांतप्रिय, चिड़चिड़ा गम्भीर, उदास बना देता है। ऐसे जातक भाग्य और परिस्थितियों के दास होते हैं वे अपने आपमें व्यस्त रहते हैं, अतः लोगों की भाषा में सनकी संदेहशील होते हैं। अपने आपको समाज से दूर रखते हैं।

एकांगिता उन्हें इतनी प्यारी होती है कि वे परिवार से भी अलग रहना पसंद करते हैं। रहस्य उन्हें अपनी ओर खींचता है। इसीलिए वे जादूगर, ज्योतिषी आदि होते हैं।

वे जड़-सम्पत्ति अर्थात् मकान, खेत, बगीचे आदि एकत्र करने के हामी होते हैं। वे कंजूस प्रकृति वाले होते हैं। उनकी रुचि संगीत में हो सकती है, ऐसी दशा में वे दुःख-दर्द के गीत गाने पसंद करते हैं। आम तौर पर उन्हें कला प्रिय नहीं होती, फिर भी सुन्दर वस्तुओं से आकृष्ट होते हैं।

शनि-धूर्तता, छल-कपट, धोखा, हिंसा, चौर्य कर्म, डाकू, हिंसक व्यक्तित्व आदि कार्यों का हेतु है। लोहे का व्यापार, तिल, तेल, ऊन आदि का व्यापार हेतु भी शनि है। तीसरे और छठे भाव में यह कारक ग्रह माना गया है।

शनि-प्रधान जातक जीवन के विषय में निराश होते हैं, इसीलिए उनका अंत आत्महत्या द्वारा होना स्वाभाविक नहीं है। शनि ग्रह प्रत्येक स्थिति में खतरनाक नहीं होता। कभी-कभी वे आदर्श महापुरुष बनकर मनुष्यता के पथ-प्रदर्शक भी बन जाते हैं।

मकर राशि का आकार मगरमच्छ बतलाया गया है। इसका ग्रह स्वामी सौरमण्डल का सबसे अधिक रहस्यमय ग्रह शनि है। इसका अंक 8 है। शनि के बारे में पुरातन धारण है कि यह क्रूर एवं पापग्रह है। इसका समय सायं माना गया है। 20 जनवरी से 19 फरवरी, 22 दिसम्बर से 21 जनवरी, 15 जनवरी से 14 फरवरी माना गया है। इसमें उत्तर आषाढ़ के तीन चरण श्रावण के चारों चरण व धनिष्ठा के 2 चरण सम्मिलित हैं। राशि चर है, तत्व पृथ्वी है, पृष्ठोदय है, जाति शूद्र है, दिशा उत्तर है, केवल इसका प्रथम भाग चतुष्पद है, निवास वन जहां पर पर्याप्त जल है, माना गया है। शरीर में इसका स्थान पर माना गया है। इसके ग्रह शनि का अधिपति देवता यम। रूद्र माना गया है। इसका इन्द्रिय ज्ञान स्पर्श है। लिंग स्त्री है। इसका ग्रह सौरमण्डल में दूत माना गया है। यह धातु में स्नायु माना गया है।

ज्योतिष में संकेतों और प्रतीकों के रूप में दिए गए विवरण का वास्तविक अर्थ आज की वैज्ञानिक खोज में भी मिलता है। हजारों वर्ष पूर्व हमारे पूज्य पूर्वजों ने जो

कहा था वह सारी बातें आज की इस खोज में निहित है।

यह गतिशील बादलों ने शनि को पूरी तरह ढका हुआ है। बादलों के शिखर पर तापमान शून्य से 300 डिग्री सेल्सियस नीचे होता है। शनि पर 1,800 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवायें बहती हैं। बृहस्पति की तरह शनि भी शक्तिशाली चुम्बक की तरह काम करता है। कभी-कभी इसकी चुम्बकीय शक्ति को 20 लाख किलोमीटर दूर तक भी अनुभव किया जा सकता है। शनि की भीतरी संरचना की तीन परतों का पता चला है। इसका केंद्रीय भाग बर्फ की चट्टानों से बना है जो चारों ओर से धात्विक हाइड्रोजन से घिरा है। इसकी बाहरी तरफ की परत हाइड्रोजन और हीलियम की बनी है जो भीतर की तरह द्रव अवस्था में लेकिन बाहर की तरफ गैस रूप में है।

शनि को अन्य ग्रहों में जो अलग दर्जा मिला है, वह इसके रंग-बिरंगे वलय के कारण है। सूर्य के प्रकाश को प्रत्यावर्तित करते हुए इसके चट्टानी टुकड़े अनेक रंगों में चमकते हैं। पहले यह समझा जाता था कि वलय की संख्या चार है और ये ठोस नहीं हैं, क्योंकि इनके आर-पार से तारों को देखा जा सकता है, लेकिन बाद में निरीक्षणों से पता चला कि ये कई वलयों से मिलकर बने हैं। ये वलय दसियों मीटर व्यास वाले बर्फ से ढके चट्टानी टुकड़ों से बने हैं। शनि के चक्र परिक्रमा करते हैं।

सौरमण्डल में किस ग्रह के सबसे अधिक उपग्रह हैं, इसका श्रेय इनाम भी शनि को ही है। बृहस्पति के जहां 16 उपग्रह हैं, वही शनि के 22 हैं।

"शनि" सौरमण्डल का सबसे सुन्दर मनोरम पिंड माना गया है। इसके चारों ओर नीले किंकण बराबर घूम रहे हैं। वैज्ञानिकों ने भी उनका रंग नीला बतलाया है। दूर से नीला रंग काला भी दिखलायी पड़ता है। यह मन्द गति से सूर्य की परिक्रमा करता है। पृथ्वी के 25,000 दिन के बराबर इसका एक वर्ष है। यह इतना विशाल है कि इसमें 700 पृथ्वी समा सकती है तथा 75 पृथ्वी के समान वजनदार है। यह पृथ्वी के साढ़े उन्तीस वर्ष में सूर्य की एक परिक्रमा करता है और 88,60,00,000 मील दूर है। इसके वातावरण में हाइड्रोजन है। तापमान 240 डिग्री फारेनहाइट शून्य से नीचे है। यही एक ऐसा ग्रह है, जहां पर पृथ्वी का मानव सरलता से चल फिर सकता है। इसी कारण हमारे विद्वान् ज्योतिषियों ने इसका तत्व पृथ्वी माना है। भीष्म पर्व में भी इसका उल्लेख आया है। शनि का पर्वत मध्यमा के नीचे माना गया है और मणिबंध से निकली रेखा भाग्य रेखा, शनि रेखा, कर्म रेखा कहलाती है। शनि का प्रभाव जीवन पर पड़ता है। हमारे पूर्वजों ने इन तमाम वैज्ञानिक तथ्यों का पहले ही अन्वेषण कर लिया था। यह मकर-कुम्भ दो राशि का स्वामी है। इस रूप में शनि की वैज्ञानिक तथा ज्योतिष गणना के साथ इस राशि के निम्नलिखित गुण बनते हैं-

इस मकर राशि के जातक प्रायः दुबले-पतले तथा सामान्य स्वास्थ्य वाले होते हैं। इसके बावजूद इनका व्यक्तित्व आकर्षक होता है। वैसे इनका व्यवहार व जीवन बड़ा रहस्यमय होता है। अपने बारे में यह किसी को जल्द बतलाते नहीं, या इनके विषय में प्रायः रहस्य फैला रहता है। इनके जीवन की वास्तविकता को कोई जान नहीं पाता है। वैसे इनमें आत्मविश्वास गजब का होता है। वाणी मधुर और प्रभावशाली होती है। साधारण शरीर के बावजूद यह लोगों पर अपना प्रभाव बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

इस राशि के जातक धर्म को मानते हैं। देवी-देवताओं में पूर्ण विश्वास रखते हैं। परलोक इहलोक मानते हैं। और भूत-प्रेत भी। गुप्त विद्या में इनकी रुचि होती है, और इसमें प्रायः सफल भी हो जाते हैं। यह बड़े उर्वरक मस्तिष्क होते हैं। नई-नई योजनाएं बनाकर लोगों को चकित कर देते हैं, दृढ़ता और आत्मबल इनमें बेहद होता है। जिस काम में लग जाते हैं, उसकी अति कर देते हैं। इनकी यह विशेषता होती है। यह एक साथ कई योजनाएं बना सकते हैं, कई काम कर सकते हैं। इनमें "अहंकार" खूब होता है और अपने मुंह मियां मिट्ठू बनने की आदत होती है। यह दिखावा अधिक करते हैं तथा डींगें बड़ी-बड़ी मारते हैं। चित इनका अस्थिर होता है। दिन की अपेक्षा रात में काम करना ज्यादा पसन्द करते हैं। दिन में काम करने से इनको बड़ा आलस्य लगता है। यह अपना जीवन स्वयं रहस्यमय बनाए रखते हैं। अपने सम्बन्ध में लोगों को नाना प्रकार की सूचना देकर भ्रम में डाले रहते हैं। इनकी वास्तविकता को समझ पाना बड़ा कठिन है।

इनका पारिवारिक जीवन प्रायः मिश्रित सुख देने वाला होता है। अपने पति-पत्नी पर अपने विचार लादते हैं। इस कारण पटरी कम बैठती है। इनकी चंचलता, अस्थिरता बाधक होती है। व्यर्थ का व्यय अधिक करते हैं। अपना बडप्पन शान दिखलाने के चक्कर में प्रायः धनाभाव से घिरे रहते हैं। विपरीत लिंग के प्रति इनके मन में प्रबल आकर्षण होता है। कामुकता भी इनमें अधिक होती है। अपने बड़प्पन का प्रदर्शन करने और अपने अहंकारी स्वभाव के कारण जुबान पर इनकी लगाम नहीं होती हैं। इस कारण इनके शत्रुओं की संख्या अधिक होती है। कभी-कभी मित्र भी शत्रु बना लेते हैं। पत्नी-पति की प्रायः पटरी न बैठने से मनमुटाव बना रहता है।

कार्यक्षेत्र—रंग रत्न—

इनका कार्यक्षेत्र पहलवानी, खिलाड़ी, इंजीनियर, पुलिस सेवा, सेना, ठेकेदारी, इमारती लकड़ी का व्यापारी, वकील, ज्योतिषी, तांत्रिक, वैज्ञानिक, गायक, कफन विक्रेता, जेलर होता है।

यंत्र

7	12	1	14
2	13	8	11
16	3	10	5
9	6	15	4
ॐ ऐ ह्री शनैश्चराय नमः			

कोयला विक्रेता, लोहा विक्रेता तथा खदान के कार्य में यह बहुत सफल होते हैं।

रंग भी नीला, काला तथा रत्न नीलम, नीली है। नीलम सावधानी के साथ जानकार व्यक्ति से समझकर धारण करना चाहिए, वरना अनर्थ भी हो सकता है।

स्वास्थ्य, शुभ दिशा, शुभ दिन, शुभ माह, शुभ वर्ष–

इस राशि के जातक का स्वास्थ्य साधारण तौर पर अच्छा रहता है, पर जोड़ों में दर्द, उदर विकार, दिमागी परेशानी, लकवा, बवासीर, बहरापन आदि रोग प्रायः हो ही जाया करते हैं। इस राशि की महिलाओं का मासिक धर्म प्रायः अनियमित ही रहता है। उनको गर्भाशय से सम्बंधित बीमारियां लगी ही रहती हैं।

इनकी शुभ दिशा दक्षिण, दक्षिण-पश्चिम, दक्षिण-पूर्व हैं। शुभ तारीखें 3, 4, 5, 7, 9, 16 21, 23, 25, 30, 31 हैं। शुभ दिन बुधवार, बृहस्पतिवार (गुरुवार), शनिवार है। जनवरी, मार्च, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, दिसम्बर शुभ माह हैं।

इनके शुभ वर्ष हैं–15, 35, 39, 45, 51, 55।

इस राशि के जातकों में यह विशेषता होती है कि इनका काम रुकता नहीं है। कुल मिलाकर दुःख-सुख मिश्रित जीवन सफल ही रहता है।

प्रिय पाठकों! यूं तो मैंने हर ग्रह का यंत्र दिया है, फिर भी एक सारिणी प्रस्तुत है, जिसके द्वारा आप हर ग्रह का यंत्र स्वयं बना सकते हैं।

एक नौ खानों का कोष्ठक बनाएं, इसमें 1 से 9 तक के अंक इस प्रकार लिखें कि किसी भी तरफ से, किनारों से जोड़े सब और पन्द्रह मिले। एक अंक का एक ही बार प्रयोग हो, बीच में कोई अंक छूटे नहीं यह सूर्य का यंत्र होगा।

शेष इस प्रकार–

चन्द्रमा में 2 से 10 तक जोड़	:	18
मंगल में 2 से 11 तक जोड़	:	21
बुध में 4 से 12 तक जोड़	:	24
गुरु में 5 से 13 तक जोड़	:	27
शुक्र में 6 से 14 तक जोड़	:	30
शनि में 7 से 15 तक जोड़	:	33
राहु में 8 से 16 तक जोड़	:	36
केतु में 9 से 17 तक जोड़	:	39

शनि ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं–

काले तिल, अंजन, लोध, बला, शतपुष्पी, खीलेंयुक्त जल।

शनि का नाम सुनते ही भय की एक लहर-सी दौड़ जाती है। शनि सदैव अशुभ फल ही देगा। यह आवश्यक नहीं है। शनि जीवन में स्थिरता भी देता है, यह मोक्ष का कारक भी है। अगर उपाय करने हैं तो शनि एवं मंगल के दोष शिव एवं हनुमान जी की साधना से दूर होते हैं। ग्रहों के मंत्र वैदिक तथा तांत्रिक दोनों प्रकार के उपलब्ध हैं। अच्छा तो यही है निर्धारित संख्या में स्वयं मंत्र जप करें।

शनि के लाल किताब के उपाय इस प्रकार हैं–

- कौवे को रोटी खिलाएं।

- गाय या कुत्ता पालें।
- काले उड़द का दान करें।
- लोहे के दो टुकड़े लेकर एक पानी में बहा दें, दूसरा अपने पास रखें।
- भैरव का अनुष्ठान करवायें।
- साधु को चिमटा दान करें।
- मन्दिर में सरसों का तेल दान करें।
- बादाम दान करें।
- श्रमिकों को भोजन करायें।

अशुभ शनि के लक्षण–

- आर्थिक हानियां और दरिद्रता।
- संतान का मरना।
- दाम्पत्य जीवन बिखरना।
- परेशानियों में परिवार का बिखरना और अकेले में भटकना।
- लगातार बोलते रहना।
- शस्त्र से मृत्यु।
- मकान का बनते समय मकान का अधूरा रह जाना।
- बाल झड़ना।
- आग लगना। भैंस का मरना। आकस्मिक विपत्तियां।
- दुर्घटना में मरना।

वास्तुशास्त्र के अनुसार शनि ग्रह शांति का उपाय इस प्रकार है–

12 बादाम काले कपड़े में बांधें। उसे लोहे के बन्द पात्र में रखकर किसी अंधेरे कोने में दबा दें। घर की छत पर कुछ भी न रखें। अपने मकान के अन्तिम कमरे को ऐसे बनायें कि उसमें रोशनी न जाने पाये। रात में भवन की नींव आदि या निर्माण आदि का काम न करें। अपने द्वार के दशांश (1/10) बादाम लेकर मन्दिर में विष्णु को अर्पित करें और आधी मात्रा घर में लाकर अंधेरे कमरे में रख दें। भवन के फर्श और दहलीज को साफ रखें। घर की दहलीज लोहे की कीलों से कील दें। मकान में एक अंधेरी कोठरी बनवायें और उसमें सूर्य, मंगल तथा चन्द्रमा की वस्तुयें रखें। नंगे पांव मंदिर जाकर ईष्टदेव के प्रति समर्पित भाव रखकर उपासना करें।

भारतीय ज्योतिष में वराहमिहिर के काल तक ऊपर के इन सात ग्रहों के ही प्रभावों की व्याख्या की जाती थी। इस क्रम में राहु और केतु का समावेश वराहमिहिर के पश्चात् हुआ। वस्तुतः राहु और केतु काल्पनिक ग्रह हैं।

17 क्या शनि पापग्रह है?

ज्योतिष का एक महत्वपूर्ण पक्ष भविष्य का मार्गदर्शन तथा फल कथन भी है। प्रश्न यह उठता है कि क्या ज्योतिष केवल भविष्य कथन करने वाला विज्ञान है या फिर यह भविष्य को बदल देने की भी क्षमता रखता है? इस विषय में दो मान्यताएं हैं—एक तो यह कि भाग्य को बदला नहीं जा सकता। अगर यह बात ठीक है तो ज्योतिष केवल भविष्य का संकेत देगा, उपायों के विषय में मौन रहेगा। इस बात में कमी यह है कि ज्योतिष समस्या के कारण तो बताएगा, लेकिन उसके समाधान की चर्चा न करना विद्या का कार्यक्षेत्र बहुत सीमित कर देगा। अब अगर यह कहा जाये कि भविष्य की घटनाएं ग्रहचाल से नियंत्रित होती हैं तथा ग्रहचाल को भांपकर निदान बताये जा सकते हैं। इस बात में बल है। ज्योतिष के क्षेत्र में अनेक उपायों का विवरण मिलता है। उपायों पर आज इतना बल दिया जाता है कि उपायों की दुकानें खुल गयी हैं। ग्रहों की शांति को लेकर यंत्र बेचे जा रहे हैं। अनुष्ठानों के जाल ने जातक को बुरी तरह उलझा दिया है। इस भविष्य कथन, उपाय, तंत्र-मंत्र-यंत्र, दान के जाल में उलझकर जातक स्वयं को असहाय अनुभव करता है।

ग्रहों की पीड़ा निवारण के लिए, जो भी उपाय किया जाता है, वह निदान की श्रेणी में आता है। उपाय का एक निश्चित विधान हैं, उसकी परम्पराएं हैं, पर आज उनको जानता कौन है? और समझता कौन है? जातक जो भी अच्छे बुरे कर्म करता है, उसका फल उसे निश्चय ही भोगना पड़ता है। अब प्रश्न उठता है कि फिर ग्रह क्या करते हैं? इसका उत्तर है ग्रह कर्मफल की पूर्व सूचना देते हैं। ग्रहों के माध्यम से जातक को पता चलता है कि उसके खाते में कितने शुभ तथा कितने अशुभ कर्म जमा है। उन जमा कर्मों के शुभाशुभ फल ही जातक को भिन्न-भिन्न दशाओं में प्राप्त होते हैं।

ग्रहों-नक्षत्रों का प्रभाव जीवन पर अवश्य ही पड़ता है, और ग्रहों की गति के अनुसार उनके योगा-योग से जीवन की गति संचालित होती है। भाग्योदय होना, जीवन में उतार-चढ़ाव आना इत्यादि जीवन की अनेकों घटनाएं जातक के जीवन में घटित होती हैं, उनका प्रभाव सौरमण्डल में स्थित ग्रहों के अनुसार ही होता है। जिस प्रकार आकाश मण्डल में नवग्रह सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु स्थित हैं उसी प्रकार जातक के शरीर में भी ये ग्रह स्थित हैं। जहां सूर्य का अधिकार पेट पर, चन्द्रमा का सीने पर, मंगल का सिर पर, बुध का कन्धे पर ग्रीवा पर, गुरु का यकृत और मूत्राशय पर, शुक्र का चेहरे पर, शनि का जंघाओं पर, राहु का पैरों पर तथा केतु का तलवों पर स्थान माना गया है।

इन सभी ग्रहों में शनि ही प्रधान ग्रह है। शनि ग्रह कांतिहीन अत्यन्त धीरे चलने वाला तथा वात प्रकृति-प्रधान ग्रह है। इस ग्रह के द्वारा शारीरिक बल, विपत्ति योग ऐश्वर्य के साथ-साथ मानसिक चिंतन, धोखा, छल-कपट, क्रूरता का विचार भी किया जाता है।

इसके अतिरिक्त सबसे प्रधान बात यह है कि जीवन में शनि का प्रभाव ही सर्वाधिक पड़ता है। जातक के चिंतन का योग शनि के द्वारा ही बनता है। इसके साथ ही शनि सूर्य पुत्र है और यम का भाई है, अतः दुर्घटना, मृत्यु, आकस्मिक घटना का ज्ञान भी शनि से किया जाता है।

जन्मपत्रिका में सबसे पहले शनि की स्थिति का विवेचन किया जाता है और शनि की महादशा जीवन में 19 वर्ष तक रहती है। विंशोत्तरी महादशा के अनुसार सारे ग्रहों की दशाएं कुल 120 वर्षों की मानी गयी हैं। इसमें शनि की महादशा 19 वर्ष रहती है। इसमें भी प्रत्येक महादशा में शनि की अन्तरदशा भी अवश्य आती है। लोग शनि को शुभ बनाने और अनुकूल बनाने के लिए शनि साधना अथवा अनुष्ठान करते हैं लेकिन इसके साथ ही यह नहीं भूलना चाहिए कि शनि सूर्य-पुत्र है और सूर्य अत्यन्त तेजस्वी ग्रह है। अगर शनि साधना के साथ सूर्य की साधना भी सम्पन्न की जाए तो निश्चय ही अनुकूलता प्राप्त होती है। सूर्य ही एक मात्र एक ऐसा ग्रह जो शनि के ताप को शांत कर सकता है।

शनि ग्रह की दशा आने पर प्रत्येक जातक पर इसका अशुभ प्रभाव पड़ता ही है, भले ही उसकी जन्मपत्रिका में शनि कारक ही क्यों न हो? यह अशुभ प्रभाव जीवन में विष घोल देता है।

इस अशुभ प्रभाव को दूर करने के अनेकों उपाय बताये गये हैं, जिनके द्वारा शनि के अशुभ प्रभाव को दूर किया जा सकता है, साथ ही साथ इस ग्रह को अनुकूल भी बनाया जा सकता है। ऐसा होने पर शनि ग्रह के कारण आने वाली दुःखदायी स्थितियों से जातक की सुरक्षा होती है, साथ ही शनि का शुभ प्रभाव उसे जीवन में ऊंचाई पर पहुंचाने में सक्षम होता है।

मकर और कुंभ लग्न के जातकों के लिए गुरु, मंगल और चन्द्र अशुभ फल प्रदान करते हैं। चन्द्र षष्ठेश होने से ऋण और रोग की उत्पत्ति करता है। मंगल तृतीय भाव का स्वामी होने से अपनी अंतर्दशा में कष्ट देता है। गुरु यह दो अशुभ भावों का स्वामी होने से मारक फल प्रदान करता है। शनि काल जातक का दुःख है। जब जब गोचर में इसकी साढ़ेसाती, ढैया आदि हो अथवा विंशोत्तरी में इसकी प्रतिकूल दशा चल रही हो अथवा काल चक्र दशा में मकर-कुंभ राशियों की दशा हो, तब अनेक प्रकार की भयावह परिस्थितियां बनती हैं।

मैंने अपने जीवन में अनुभव किया है शनि या तो जातक को महल से झोंपड़ी में पहुंचा देता है या फिर झोंपड़ी से महल का मार्ग सुगम कर देता है। अगर वह यह ना करें तो जातक को एक बार झकझोर कर अवश्य रख देता है। यहां पर मुझे शनि से सम्बंधित एक कथा स्मरण आ रही है। बात हँसी की है, पर है एकदम सत्य।

एक बार शनि और श्री महालक्ष्मी भगवान विष्णु के पास गये और पूछा—हम दोनों में सुन्दर कौन है? प्रश्न छोटा-सा था, पर परिणाम बड़े भयंकर थे। अगर लक्ष्मी को कहें तो शनि क्रुद्ध और शनि को कहें तो लक्ष्मी नाराज। भगवान विष्णु ने कहा, आप सामने से मेरा प्रिय बरगद का एक पत्ता तोड़कर ले आइए, तब तक मैं सोच लेता हूं। वह दोनों गये, बरगद का पत्ता लाकर पुनः प्रश्न किया। तब भगवान विष्णु ने कहा, लक्ष्मी जब

तुम आ रही थीं, तब मुझे सुन्दर लग रही थीं और शनि जब तुम जा रहे थे तब सुन्दर लग रहे थे। आप स्वयं देखें लक्ष्मी का आना सबको प्रिय लगता है और शनि का जाना सबको अच्छा लगता है।

शनि जातक के जीवन में अधिक से अधिक चार बार आता है। जीवन में चार बार शनि की महादशा को भोगने वाले जातक कम ही होते हैं। आइए इनका विवरण देखें!

प्रथम बार जब शनि आता है तो आय कराता है, अब यह बात अलग है कि वह आय गैरकानूनी ढंग से होती है। अनेक सम्पर्क बनाता है, उनमें कुछ अच्छे तो कुछ बुरे होते हैं।

द्वितीय समय में शनि जातक को व्ययशील बना देता है, शराब पीने लगता है, परिवार में कटुता बन जाती है, मित्रों के ऊपर भी धन व्यय होता है, प्रेमिका से विछोह होता है। व्यापार कम रहता है, काम नहीं बनता तथा खाने-पीने का कोई नियम नहीं रह जाता, तनाव भी बना रहता है, तबादले की समस्या आती है। इसमें जातक को आर्थिक कष्टों का सामना करना पड़ता है, परिवार में तनाव बढ़ जाता है, कोर्ट-कचहरी, डॉक्टर आदि का चक्कर पड़ जाता है, प्रेम सम्बन्ध हो, तो वह भी कष्टदायक होता है। संचित धन नष्ट हो ज़ाता है, और जेल जाने तक की नौबत आ जाती है, सामाजिक बदनामी होती है। नौकरी वाले के लिए यह संकट का समय होता है, दंडित होता है तथा निलम्बन -' भी सम्भावनाएं रहती हैं।

शनि के अंतिम समय में परिवार से सम्पर्क टूट जाता है, भागदौड़ की स्थिति बनी रहती है, आय का मार्ग बंद हो जाता है, व्यापार में घाटा होता है तथा जमा पूंजी भी खो बैठता है, नौकरी हाथ से निकल जाती है। वैवाहिक जीवन कष्टदायक होता है, धन रुकता नहीं तथा बदनामी का सामना करना पड़ता है। जातक को सफलता नहीं मिलती, मन अस्थिर रहता है। शनि की शांति के लिए नीलम, एमथिक्ट स्टील, लोहा, नीले वस्त्र, तेल, सीसा दान करना चाहिए। उड़द का सेवन तथा शिव व हनुमान जी की साधना शांति प्रदान करती है। उपर्युक्त दान ग्रहों के दिन के अनुसार करना चाहिए।

आजकल रत्न, अनुष्ठान, दान तथा यंत्र उपाय के रूप में बहुत प्रचलित हैं। व्यवसायी विद्वानों ने इसे एक व्यवसाय के रूप में अपनाया हुआ है। अभिमंत्रित एवं सिद्ध किए यंत्रों के नाम पर धन बटोरा जा रहा है। रत्न चिकित्सा में कमीशन लेना साधारण बात है। यंत्र रखना विद्वान् के द्वारा अनुमोदित है, तो बाजार से किसी भी शुभ समय में ले आएं। अभिमंत्रित कराने के चक्कर में न पड़ें, उपरत्नों से काम चलाएं, जो बहुत सस्ते होते हैं।

ज्योतिष जगत में उपायों की माया बड़ी विचित्र है, क्या उचित है और क्या अनुचित है? समझना कठिन है।

आप शनि की आराधना नियमित रूप से करें और शनिवार को इक्कीस काले उड़द, थोड़ा-सा सरसों का तेल और साबुत नमक शनि को चढ़ाएं। शनिवार का उपवास करें। तेल, शराब, काला उड़द, कच्चा लोहा, नारियल, बादाम का दान शनिवार को करें। हनुमान

जी की आराधना करने से भी शनि ग्रह के दुष्प्रभाव को कम किया जा सकता है। शनि मंत्र का नियमित जप करें।

शनि का नाम सुनते ही भय की एक लहर-सी दौड़ जाती है। शनि की साढ़ेसाती का भय जनसामान्य में बहुत फैला है। शनि सदैव अनिष्ट करेगा, यह विल्कुल आवश्यक वही है। शनि जीवन में स्थिरता देता है, यह मोक्ष का कारक भी है।

उपर्युक्त स्थितियों में जातक को उपायों के लिए प्रेरित किया जाता है। यहां मेरा निवेदन है कि अगर उपाय आवश्यक है तो मंत्र वैदिक, पौराणिक तथा तांत्रिक तीनों प्रकार के उपलब्ध है। अच्छा तो यही है निर्धारित संख्या में जातक स्वयं जप करें। इस विषय में यह सिद्धान्त कार्य करता है दवा उसी को दो जिसे पीड़ा हो दूसरा जप करे तो यह होगा कि पीड़ा किसी को है और दवा कोई और खा रहा है।

अंत में शनि के जड़ी-बूटी के उपाय भी लिख देना अपना कर्त्तव्य समझता हूं। शमी की जड़ के क्वाथ से शनिवार को स्नान करें। स्नान के पश्चात् सरसों का तेल सिर तथा शरीर में लगाएं। उस दिन काले उड़द के आटे की पूड़ी तेल में बनाएं तथा कुलथी के साथ के साथ दान करें। भैंस के दूध का सेवन करें। काली गाय को तेल की जलेबी खिलाएं। काले घोड़े के पैरों से निकले हुए नाल की अंगूठी या छल्ला को मध्यमा अंगुली में धारण करें। शनिवार को पीपल के वृक्ष की पूजा करें। बिच्छू बूटी की जड़ काले कपड़े में लपेटकर दाहिनी भुजा में बांधने से शनि का कोप शांत होता है।

प्रायः देखा गया है कि विद्वानों द्वारा सुझाए गए ग्रहदोष निवारण के उपाय महंगे तथा दुष्कर होते हैं। यहां मैंने जो उपाय दिए हैं वे सरल, सुगम तथा अनुभूत हैं।

अंत में आप प्रथम भाग्य पर, इसके पश्चात् स्वयं पर विश्वास करें; क्योंकि यह सत्य है कि सभी जीवधारी अपने कर्मों का ही फल भोगते हैं। ग्रहों के कुयोग तथा सुयोग क्रमशः दुःख तथा सुख को प्रकट करते हैं।

"ग्रह भेषज पट पवनजल, पाय कुजोग सुजोग।
होहिकुवस्तु, सुवस्तु जग, लखहिं सुलच्छन लोग॥"

18 छायाग्रह राहु (DRAIGONS HEAD)

चन्द्रमा का परिपथ पृथ्वी के परिपथ को जिन दो बिन्दुओं पर काटता है, उन काटने वाले बिन्दुओं को ही राहु और केतु की संज्ञा दी गयी है। इन छेदन-बिन्दुओं की गति के कारण इन्हें ग्रहों की श्रेणी में रखा गया और इन बिन्दुओं के हमारे व्यक्तित्व पर पड़ने वाले व्यापक प्रभाव क्रमशः प्रमाणित होते हैं। हुआ यह कि अनेक अशुभ फलों के लिए शनि को जिम्मेदार ठहराए जाने के पश्चात् भी जब कई अशुभ फलों का ठोस कारण हमें नहीं मिला तो ज्योतिष के अन्य विद्वान् कारणों की कल्पना करने लगे और अन्ततः उनका ध्यान चन्द्रमा के समीप बिन्दुओं राहु और केतु की ओर आकर्षित हुआ।

राहु ग्रह आलस्य, अस्थिरता, स्थावर, सम्पत्ति, योगाभ्यास, उदर रोग, वाहन, जन-नेता, विधान सभाई व लोक सभाई पद, कूटनीतिज्ञता, राजदूत आदि का कारक हैं! तीसरे, छठे और दशम भाव में यह कारक ग्रह है।

राहु प्रभावी जातक श्याम वर्ण या काला, काना भी हो सकता है, सदैत्र टेढ़ी सोचने वाला, चाल में टेढ़ापन, विध्वंसक शरारतीपन, अधिक खाने वाला, स्वाद की परवाह नहीं। मकान और मालिक के प्रति विश्वासी। लगभग यही लक्षण स्त्रियों के भी हैं।

राहु ग्रह का ध्यान इस प्रकार है-

ॐ करालवदनं खड्गचर्मशूलवरान्वितम्।
नीलसिंहासनस्थं च ध्यायेद्राहुं प्रशान्तये॥

राहु ग्रह का मंत्र इस प्रकार है-

ॐ कयानश्चित्रऽआभुवदूती सदा वृधः
सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

राहु ग्रह का सम्पूर्ण विवरण एक दृष्टि में इस प्रकार है-

शत्रु ग्रह	:	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल
सम ग्रह	:	गुरु बृहस्पति
कालपुरुष के	:	उदरस्थान, पेट
राहु की स्थिति	:	गुप्त धन, विषैले जंतु आदि
अंग्रेजी नाम	:	ड्रेगन्स हैड (DRAGONS HEAD)
स्वामित्व	:	कन्या
मूल त्रिकोण	:	कर्क
उच्च राशि	:	मिथुन
नीच राशि	:	धन
वर्ण	:	श्याम वर्ण
रत्न	:	गोमेद
राशि संचार समय	:	18 माह

समय	:	अपराह्न, दोपहर
स्वभाव	:	पाप
समिधा	:	दूर्वा
पुष्प	:	काले फूल
गुण	:	तमोगुणी
जाति	:	म्लेच्छ
आकृति	:	लम्बी
दिशा	:	नैर्ऋत्य
धातु	:	सीसा
लिंग	:	पुरुष
तत्व	:	वायु
प्रतिनिधि पशु	:	घोड़ा, ऊंट
अवस्था	:	वृद्ध
दृष्टि	:	सप्तम
मित्र ग्रह	:	बुध, शुक्र, शनि

राहु ग्रह की जड़ी-बूटियां इस प्रकार हैं–

भैसे का सींग, हरिताल, मैनसिल, गूगलयुक्त जल।

सब विद्वान् एक मत हैं कि राहु और केतु छाया ग्रह हैं और अन्य सात ग्रहों के समान सपिण्ड हैं कि नहीं। मेरा पाठकों से अनुरोध है कि वे यह समझें कि वे किसी भी राशि के स्वामी नहीं है और वृष राहु की उच्च राशि है और वृश्चिक उसकी नीच राशि है। इसी तरह यह मान लें कि वृश्चिक केतु की उच्च राशि है और वृष उसकी नीच राशि है।

राहु-केतु छायाग्रह माने जाने चाहिए। वे जिस राशि में बैठे होते हैं उसके स्वामी का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे उस ग्रह का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जिससे वे युक्त हों। अगर वह किसी ग्रह से युक्त न हों तो वे उस ग्रह का फल देते हैं जिसकी उन पर दृष्टि हो। जब वे युक्त या दृष्ट न हों तभी वे उस राशि के स्वामी का फल देते हैं जिसमें वे स्थित हों। लोगों को इस बात का भय बैठ गया है कि राहु और केतु सदा अशुभ फलदाता होते हैं, परन्तु वास्तव में ऐसा नहीं है। यदि राहु और केतु किसी कुण्डली में योगकारक ग्रहों का प्रतिनिधित्व करते हैं तो अत्यन्त शुभ फलदायक होते हैं।

अगर राहु या केतु प्रथम, तृतीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, नवम या दशम में स्थित हों और राजयोग देने वाले ग्रहों से युक्त या दृष्ट हों तो जातक को सुख, अच्छा स्वास्थ्य, धन, सन्तान प्रदान करते हैं। अगर राहु और केतु पंचम या नवम शुभ भावों में बैठे हों और मारक भाव, द्वितीय या सप्तम जैसे मारक स्थानों के स्वामी से युक्त या दृष्ट हों तो अपनी महादशा में मृत्यु देते हैं, परन्तु साथ ही साथ वे योगकारक ग्रहों का भी फल देते हैं।

अगर राहु केतु षष्ठ, अष्टम या द्वादश भवन में हों और उनका केन्द्र या त्रिकोण के स्वामी से युक्त या दृष्टि द्वारा सम्बन्ध हो तो जातक ऐसे ग्रह की अन्तर्दशा में शुभ

फल प्राप्त करेगा, परन्तु षष्ठ या द्वादश के स्वामी की अन्तर्दशा में उसे कष्ट प्राप्त होंगे।

अगर राहु और केतु द्वितीय या सप्तम जैसे मारक स्थानों में बैठे हों और पंचम या नवम के स्वामी से युक्त या दृष्ट हों तो वे मृत्यु नहीं देते। इसके विपरीत वे धन की वृद्धि करते हैं और स्वास्थ्य की उन्नति करते हैं, परन्तु राहु और केतु द्वितीय या सप्तम में हों और उन भावों के स्वामी से युक्त या दृष्ट हों तो ये मारक बन जाते हैं।

राहु ग्रह की अशुभ स्थितियों से पीड़ित जातक को शुभ मुहूर्त में सीसे पर राहु यंत्र उत्कीर्ण कराकर, उसके मध्य में गोमेद जड़वाकर, राहु गायत्री से प्रतिष्ठित करके पूजा में रखना चाहिए और नित्य पूजन करना चाहिए। राहु यंत्र को राहु के नक्षत्र में भोजपत्र पर लिखकर उसे प्रतिष्ठित करके, शरीर में भी धारण किया जा सकता है।

यंत्र

13	**8**	**15**
14	**12**	**10**
9	**16**	**11**

राहु ग्रह से सम्बंधित उपवास शनिवार को किया जा सकता है। उपवास के दिन एक समय फलाहार कर लेना चाहिए और उस दिन शिवलिंग पर धतूरे अर्पित करने चाहिएं। शिव से अशीर्वाद ग्रहण करें।

राहु की पीड़ा को दूर करने के लिए शनिवार को सायंकाल निम्नलिखित वस्तुओं को दान देना चाहिए–गोमेद, सरसों का तेल, नीले रंग का कपड़ा, अभ्रक, राहु यंत्र, तिल, लोहा एवं दक्षिणा आदि।

राहु गायत्री मंत्र इस प्रकार है–

ॐ शिरोरूपाय विद्महे अमृतेशाय धीमहि तन्नो राहुः प्रचोदयात्।

राहु ग्रह की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए जातक को शनिवार के दिन लोबान, तिल, तिल्ली का तेल, लौहचूर्ण आदि से मिश्रित जल से स्नान करना चाहिए। इस प्रयोग से राहु की अनुकूलता प्राप्त होती है।

किसी विद्वान् को गोमेद का दान करें तथा गरीबों को नीले वस्त्र दान करें। कम्बल बांटने से भी शुभफल की प्राप्ति होती है।

लाल किताब द्वारा राहु की अनिष्टता का निवारण इस प्रकार करें–

- म्लेच्छ को काली मसूर की दाल का दान दें।
- जौ सिरहाने रखकर सोयें और प्रातःकाल जल में बहा दें।
- जातक के भार के बराबर कच्चा कोयला नदी में बहायें।
- तम्बाकू का सेवन न करें।
- भवन के आस-पास पानी जमा न होने दें।
- सीसा और नारियल बहते जल में प्रवाहित करें।

- मां सरस्वती को नित्य प्रणाम करें।
- संयुक्त परिवार में रहें।

राहु की अशुभता के लक्षण इस प्रकार हैं—

- शत्रुओं में वृद्धि हो जाये।
- लड़ाई-झगड़े बढ़ जायें।
- घर में कलह हो और चैन न पड़े।
- काला कुत्ता घर में हो, तो मर जाये या खो जाये।
- नाखून झड़ने लगें या खराब हो जायें।
- विचार असंयत हो जायें, पागलपन या ऐसा लगे कि पागल हो जायेगा।

भवन में अगर राहु ग्रह का दोष हो तो इस प्रकार शान्ति करें—

- मंगल की वस्तुयें सिरहाने रखकर सोयें।
- खाना रसोईघर में भूमि पर बैठकर ही खायें।
- कोई भी निर्माण कार्य प्रारम्भ करायें, तो पूरा करें।
- एक कांसे के बर्तन में चाँदी का टुकड़ा बीच में टांका लगाकर रखें और इसे सदा पवित्र एवं शुद्ध जल से भरकर रखें।
- भवन के द्वार के नीचे पूरी चौड़ाई में चाँदी का पत्थर भूमि में दबायें।
- पत्नी के साथ पुनः फेरे लें।
- भवन की मिट्टी लेकर कुएं में डालें।
- माता का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- घर में हाथीदांत की वस्तुयें न रखें।

अगर राहु कुण्डली में बलवान् और शुभ स्थिति में हो तो वह अपनी महादशा या अन्तर्दशा में शुभ फल देता है; जैसे—धन एकत्र होना, व्यवसाय में लाभ, उच्च पद प्राप्त होना, सुख, तीर्थ-यात्रा आदि।

राहु अगर कुण्डली में निर्वल और अशुभ स्थिति में हो तो वह अपनी महादशा या अन्तर्दशा में अशुभ फल देता है; जैसे—धन हानि, वृथा घूमना, कलह, निर्धनता, स्वास्थ्य में खराबी ऐसे रोगों से पीड़ित जिनका निदान न हो सके, परिवार में मृत्यु, छूत के रोग।

राहु के लिए 3, 6 और 11 भाव शुभ हैं। चतुर्थ, षष्ठ, नवम और दशम भाव में वह बलवान् होता है, परन्तु पंचम भाव में वह सन्तान का नाश करता है। अष्टम और द्वादश भाव में अत्यन्त दुःखदायी होता है। सप्तम भाव में वह पत्नी की मृत्यु करता है या पत्नी से विछोह करता है।

जन-समूह में फैलने वाले रोग हिस्टीरिया, विषैली वस्तुओं के खाने से उत्पन्न रोग, मिर्गी, विषैला फोड़ा, कैंसर, ड्रांसी, एग्जीमा और अन्य त्वचा के रोग; जैसे—सफेद दाग और कोढ़ी—ये ग्रह ऐसे रोग भी देते हैं जिनका निदान कठिन होता है। केतु दिल का दौरा भी देता है।

आइए अब हम केतु ग्रह की ओर बढ़ें।

19 छायाग्रह केतु (DRAIGONS TALE)

राहु और केतु को 3, 6, 10, 11वें भाव में शुभ तथा 1, 2, 4, 5, 7, 8, 9, 12वें भवन में अशुभ माना गया है। राहु के अनुकूल होने से जातक कूटनीतिक क्षमता से सम्पन्न होता है और राजनीतिक क्षेत्र में अपनी पहचान बनाता है। जीवन में कई प्रकार के जोड़-तोड़ करके प्रगति करता चला जाता है और सांसारिकता की दृष्टि से सफल रहता है। इसके विपरीत राहु का अशुभ प्रभाव हमें चिड़चिड़ा, आलसी बना देता है। तिकड़मबाजी से नुकसान और अपमान की स्थिति उत्पन्न होती रहती है। केतु की अनुकूलता गुप्त कार्य तथा गोपनीय विद्या की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होती है। केतु के शुभ प्रभाव से जातक का जीवन मोक्ष की ओर अग्रसर होता रहता है। अगर केतु प्रतिकूल हो जाए तो वह विभिन्न प्रकार के शारीरिक कष्ट और राजदण्ड की स्थितियों का निर्माण करता है। इससे मानसिक विकृति तथा विक्षिप्तता इस सीमा तक बढ़ जाती है कि जातक आत्महत्या की ओर प्रेरित होने लगता है।

केतु प्रभावी जातक नीचे से मोटा, ऊपर की तरफ पलता, कान बड़े, उभरा हुआ बदन, क्रोधित होने पर खतरनाक, मालिक या परोपकारी का भला करने वाला, साधु प्रवृत्ति भी हो सकती है, सदैव चलते-फिरते रहने वाला। स्त्रियों में भी लगभग यही लक्षण होते हैं।

केतु–धन-लाभ, सफल वक्ता, विविध व्यसन वाला होता है। अगर केतु कुण्डली में शुभ स्थिति में हो और बलवान हो तो वह अपनी महादशा या अन्तर्दशा में शुभ फल प्रदान करता है; जैसे–धन-लाभ, बुरे कर्मों द्वारा धन-लाभ, समृद्धि प्राप्त होना। केतु कुण्डली में अशुभ स्थिति में हो और निर्बल हो तो वह अपनी महादशा या अन्तर्दशा में अशुभ फल प्रदान करता है; जैसे धन का नाश, स्वास्थ्य में खराबी, अपमानित होना, जेल जाना, नीच लोगों की संगति, चोरों से भय, कोढ़ जैसे रोगों से पीड़ित होना।

केतु 3, 6 और 11वें भावों में शुभ स्थिति में होता है। अन्य भावों में वह अशुभ होता है। राहु-केतु के विषय में जो बताया गया है, उसका भी ध्यान में रहना आवश्यक है।

केतु के लिए लोध, कुशा, तिल, पत्रज, मुस्ता, हाथी का मद, कस्तूरी, दुग्धयुक्त जल का स्नान अच्छा रहता है।

सभी ग्रहों की शांति के लिए सामूहिक रूप से सरसों, लोध, हल्दी, दारू हल्दी, भद्र, मुस्ता, खील, कूट, बला, प्रियंगु, धन, देवदार उत्तम रहता है।

केतु ग्रह प्रथम भवन में तुला, वृश्चिक एवं धनु लग्न की जन्म कुण्डलियों में; द्वितीय भाव में मिथुन, कर्क, तुला, वृश्चिक, धनु एवं कुंभ लग्न के अतिरिक्त अन्य लग्नों की कुण्डलियों में; तृतीय भाव में केवल वृश्चिक लग्न की कुण्डली में; चतुर्थ भाव में वृश्चिक

एवं कुंभ के अतिरिक्त सभी लग्नों की कुण्डलियों में; पंचम भाव में केवल वृश्चिक लग्न की कुण्डली में; षष्ठ भाव में मेष, वृष, मिथुन, कर्क एवं मीन लग्न की कुण्डली में; सप्तम भाव में मिथुन, तुला, वृश्चिक, धनु एवं मकर लग्न की कुण्डली में; अष्टम भाव में सिंह, धनु एवं मकर लग्न के अतिरिक्त सभी लग्न की कुण्डलियों में; नवम भाव में मकर और मिथुन लग्न की कुण्डलियों में; एकादश भाव में कर्क और धनु लग्न की कुण्डलियों में; द्वादश भाव में मिथुन, मकर एवं मीन लग्न की कुण्डलियों में अनिष्ट फलदायक होता है।

केतु चन्द्र की राशि से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, पंचम, सप्तम, अष्टम, दशम एवं द्वादश भाव में भ्रमणशील होने पर अनिष्टकारी होता है।

इस अनिष्टता के निवारण हेतु ज्योतिषियों ने अनेक उपायों का वर्णन किया है। ये उपाय अगर किए जाएं, तो केतु की अनिष्टता का निवारण हो जाता है। केतु ग्रह से उत्पन्न पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए जातक का केतु के मंत्र का उपाय फलदायक होता है।

केतु ग्रह का ध्यान इस प्रकार है–

ॐ धूम्रवर्णं द्विबाहुं च केतुं च विकृताननम्।
ॐ गृंध्रासनगतं नित्यं ध्यायेत्सर्वफलाप्तये॥

केतु ग्रह का मंत्र इस प्रकार है–

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे समुषद्भिरजायथाः॥

केतु ग्रह का सम्पूर्ण विवरण एक दृष्टि में इस प्रकार बनता है–

रत्न	:	लहसुनिया
राशि संचार समय	:	18 माह
समय	:	अपराह्ण
स्वभाव	:	पाप
समिधा	:	कुशा
पुष्प	:	काला पुष्प
गुण	:	तमोगुणी
अंग्रेजी नाम	:	ड्रेगन्स टेल (DRAGONS TALE)
स्वामित्व	:	मीन राशि
मूल त्रिकोण	:	मकर राशि
उच्च राशि	:	धनु राशि
नीच राशि	:	मिथुन राशि
वर्ण	:	भूरा काला
जाति	:	म्लेच्छ
आकृति	:	पुच्छ
दिशा	:	नैर्ऋत्य
धातु	:	लोहा

लिंग	:	पुरुष
प्रतिनिधि पशु	:	बकरा
अवस्था	:	वृद्ध
दृष्टि	:	सप्तम
मित्र ग्रह	:	बुध
अन्य कारकत्व	:	दुःख, शोक, चर्मरोग

सामान्यतः केतु को मिथुन राशि में नीच माना जाता है, परन्तु कुछ विद्वान् केतु को वृष में भी नीच मानते हैं। इन राशियों में बैठे केतु की महादशा अशुभ आती है। केतु अगर मंगल के साथ हो, तो केतु की महादशा में अगर मंगल शुभ एवं योगकारक हो, तो जातक को शीघ्रता से सफलताएं प्राप्त होती हैं। नीच ग्रह के साथ स्थित केतु की महादशा में प्रायः अशुभ फलों का सामना करना पड़ता है। किसी भी भाव में केतु अगर शुभ स्थिति में हो, तो जातक को उस भाव से सम्बंधित शुभफल प्राप्त होते हैं। केतु किसी भाव में नीच राशि में हो, तो उस भाव से सम्बंधित विषयों से अनेक समस्यायों का सामना करना पड़ता है। केतु महादशा का विचार करते समय केतु अधिष्ठित राशि के स्वामी की शुभाशुभ स्थिति का विचार अवश्य करना चाहिए।

सामान्यतः केतु की महादशा अशुभ फल देने वाली होती है। केतु की महादशा में जातक अपने कार्यों के द्वारा अपनी ही हानि करता है। अनेक प्रकार के दुःखों का सामना करना पड़ता है। केतु अगर किसी शुभ ग्रह के साथ बैठा हो, तो केतु की महादशा शुभ फलदायक होती है। जातक की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है तथा जातक उन्नति करता है। केतु अगर स्वअधिष्ठित राशि के स्वामी से दृष्ट हो, तो केतु की महादशा अपनी अधिष्ठित राशि के स्वामी के अनुसार फलदायक होती है।

राहु के समान केतु भी छाया ग्रह है तथा केतु की स्थिति राहु से सदैव 180 अंश की दूरी पर होती है। केतु अगर युति एवं दृष्टि द्वारा अन्य ग्रहों के प्रभाव से मुक्त हो, तो केतु का फल मंगल के समान होता है। अन्यथा केतु अपने साथ युति करने वाले एवं दृष्ट ग्रह के समान ही फलदायक होता है।

केतु ग्रह का मंत्र इस प्रकार है–

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशोमर्या अपेशसे।
समुषद्भिरजायथाः॥

केतु ग्रह का ध्यान इस प्रकार है–

ॐ धूम्रवर्णं द्विबाहुं च केतुं च विकृताननम्।
ॐ गृध्रासनगतं नित्यं ध्यायेत्सर्वफलाप्तये॥

केतु अशुभ होने पर–

- मूत्ररोग हो जाये।
- अपना स्वास्थ्य खराब रहे।
- पैरों के नाखून खराब हो जायें।
- जोड़ों का रोग हो।
- सन्तान रोगी हो जाये।

लाल किताब के उपाय अग्र प्रकार हैं–

- काला-सफेद पत्थर के दो टुकड़े लेकर एक पानी में बहा दें, दूसरा घर में रखें।
- अगर छठे भाव में चन्द्रमा या मंगल हो तो काले कुत्तों को भोजन करायें।
- गृह-प्रवेश के समय दायीं ओर के भवन में कोई विधवा हो, तो उससे आशीर्वाद लें।
- लड़के या सन्तान के स्वास्थ्य के लिए कम्बल दान दें।
- लड़के के स्वास्थ्य के लिए कुत्ता पालें।
- मूत्ररोग के लिए चाँदी की छल्ला पहनें।
- पुरानी चारपाई का प्रयोग करें।
- राहु का उपाय करें।
- काले तिल का उपाय करें।

अब अशुभ केतु ग्रह के लिए वास्तुशास्त्र के अनुसार निम्न उपाय करें–

- चाँदी के बर्तन में शुद्ध शहद भरकर रखें।
- भवन के केन्द्र में फर्श में लोहे का पत्थर स्थापित करें।
- चितकबरा कुत्ता पालें।
- घर का वातावरण सुधारें।
- श्याम शिवलिंग का तांत्रिक अनुष्ठान करवायें।
- निस्सन्तान से कभी भी भूमि न खरीदें।
- भवन की नींव में गऊ का दूध एवं शुद्ध शहद डालें।

प्रिय पाठकों! अब तक मैंने प्राचीन आचार्यों द्वारा समर्थित नवग्रहों का उनके ग्रहों और भावों के नैसर्गिक कारकत्वों के अनुसार उनकी विभिन्न भावों में स्थिति का फल दिया है। ये फल जन्मकुण्डली की लग्न और ग्रहों की स्थिति के अनुसार बदल सकते हैं, क्योंकि ग्रहों के स्वामित्व का फल पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, अगर लग्न मेष हो तो बृहस्पति चौथे भाव में अपनी उच्च राशि में होगा और नवम का स्वामी होने के कारण वह बहुत शुभ फल देगा, परन्तु अगर लग्न तुला हो तो यही बृहस्पति अपनी नीच राशि में होगा और तृतीय और षष्ठ दो अशुभ भावों का स्वामी होकर अशुभ फलदायक बन जाएगा। अयन, दिन, पक्ष, ऋतु, वर्ष, मास और क्षण इनके स्वामी क्रम से सूर्य, मंगल, शुक्र, बुध, शनि, बृहस्पति और चन्द्रमा हैं। सूर्य का छः मास में, मंगल का एक दिन में, बुध का दो मास में, बृहस्पति का एक मास में और चन्द्रमा का क्षण भर में फल होता है।

गुरु बृहस्पति शुक्र, मंगल और बुध शाखाओं के स्वामी हैं; जैसे ऋग्वेद का बृहस्पति, यजुर्वेद का शुक्र, सामवेद का मंगल और अथर्ववेद का बुध है। मंगल और सूर्य धातु स्वरूप ग्रह हैं। मूल-प्रधान चन्द्र और शनि हैं। शुक्र और बृहस्पति जीव हैं। बुध मिश्र है। सूर्य गर्मी, प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता है। वह पौरुष देने वाला ग्रह है। चन्द्र मानसिक विकास का प्रतीक है। चन्द्र को हम मन का कारक मानते हैं। मंगल शारीरिक शक्ति देने वाला है। बुध गणित में प्रवीणता का प्रतीक है। गुरु बृहस्पति बौद्धिक विकास और

ज्ञान देता है। शुक्र का अधिकार विद्युत शक्ति और मानसिक आवेश पर है। शनि का अधिकार जीवन और मरण पर है। वह बाधा डालता है। शनि के प्रभाव से परिश्रम का फल विलम्ब से मिलता है और मनोरथ भी परिश्रम कराकर पूर्ण करता है। राहु विनाश, उपद्रव और तोड़-फोड़ी से सम्बन्ध रखता है। केतु अशुभ ग्रह होने पर भी मोक्षकारक और ज्ञानकारक ग्रह माना जाता है। आशा है पाठक ग्रहों की स्थितियों को भली प्रकार समझ गये होंगे।

भारतीय ज्योतिष विज्ञान में अब तक केवल 12 ग्रहों का ही अध्ययन किया जाता है। नेपच्यून ग्रह को हम ग्यारहवें ग्रह के रूप में पहिचानते हैं। इसका मूलांक 7 माना जाता है। नेपच्यून को धैर्यशाली तथा कोमल स्वभाव का माना गया है। इसकी राशि मीन तथा उच्च राशि कर्क तथा नीच राशि मकर मानी जाती है। यह जलीय राशियों में शुभ फल प्रदान करता है। यह परा विद्या से विशेष रुचि रखता है। इसका रंग समुद्री जल जैसा होता है। इसके ठोस भाग का व्यास 19200 किलोमीटर तथा 800 किलोमीटर मोटे बर्फ के आवरण से आच्छादित है तथा इसके वायुमण्डल में हाइड्रोजन, हीलियम और मीथेन हैं। यह एक ठंडा ग्रह है। इसका तापमान लगभग 230 सेन्टीग्रेड है। यह पृथ्वी से कई गुणा भारी है। इसका कुल व्यास 50450 किलोमीटर है। एक राशि में यह 14 वर्ष विचरण करता है। सौरमण्डल में इसका घेरा हर्षल के पश्चात् दिखलाई देता है। अतीत तथा इतिहासकाल में जब देखते हैं, तो इसके द्वारा राशि योग का कार्यकाल 14 वर्षों का है।



20 लाल किताब : क्या करें, क्या ना करें?

प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कुछ न कुछ परोपकार का कार्य करते रहना चाहिए जितना परोपकार क्रिया जाये उतनी अधिक देश और समाज की सेवा होगी और समाज उन्नति करेगा। अगर देखा जाये तो ज्योतिष द्वारा उचित मार्ग पर लगाकर मानवता को ऊपर उठाया जा सकता है। ज्योतिष यह बताता है ईश्वर नाम की एक शक्ति है जो स्वयं में कुछ कर्मचारी रखे हैं जिन्हें हम ग्रह कह सकते हैं। वह हर व्यक्ति को कर्म के अनुसार फल देते हैं लेकिन जब इन्सान मानवता की सेवा करने लगता है और दूसरे के कष्ट को समझने लगता है, तब ग्रह प्रसन्न होकर अपना अशुभ प्रभाव कम कर देते हैं और शुभ फल देना प्रारम्भ कर देते हैं।

लाल किताब ही मूक प्राणियों की जैसे गाय, कौवा, कुत्ता, चींटियां मछलियों को खिलाने की शिक्षा देती है। लाल किताब बताती है कि बेईमानी से कमाया धन बर्बादी का कारण बनेगा। लाल किताब समाज में भाईचारा उत्पन्न करती है और कहती है इंसान खिलाने-पिलाने, सेवा सत्कार करने से ग्रह प्रसन्न होते हैं।

लाल किताब कहती है अगर आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी, दुःख, कोई विघ्न-बाधा या कोई रोग है तो समझो आप ग्रहों से पीड़ित हैं और जो कुछ परेशानी आ रही है वह आपके पिछले या इस जन्म के कर्मों के अनुसार आ रही है, वह आपको कष्ट दे रहा है। इसी प्रकार से जब जातक को उसकी पत्नी, भाई, दोस्त, कोई धोखा देता है या ठग लेता है तो यह अशुभ ग्रहों का प्रभाव होता है।

लाल किताब में विभिन्न वस्तुओं के दान करने एवं उनके ग्रहण करने से जुड़े हुए विशेष नियम बताए गए हैं। ऐसा नहीं है कोई भी जातक किसी भी वस्तु का दान करे, तो उसे शुभ फल ही प्राप्त हों या कोई भी वस्तु दानस्वरूप ग्रहण करें, तो उसे लाभ ही होगा। इस विषय में लाल किताब में बताए गए कुछ तर्कपूर्ण सिद्धान्तों का विवरण अग्र प्रकार है–

शुक्र अशुभ होने पर जातक को त्वचा सम्बन्धी रोग उत्पन्न हो जाते हैं। स्वप्नदोष की शिकायत रहती है। इसके अतिरिक्त उसके हाथ व पांवों का अंगूठा अचानक ही सुन्न हो जाता है। इस ग्रह के अशुभ होने पर व्यक्ति को घर में प्रसन्नता के समय दुःख का मुंह देखना पड़ सकता है।

ऐसे व्यक्ति को लक्ष्मी की पूजा करनी चाहिए। शुक्र के अशुभ होने पर व्यक्ति को चाहिए कि वह घी, दही, कपूर आदि का दान करे और स्त्रियों की सहायता तथा पालन-पोषण के लिए यथाशक्ति भोजन कराए। गाय का दान तथा चरी का दान भी करना चाहिए।

शुक्र नौवें भाव में हो, तो ऐसा जातक अगर गरीब एवं अनाथ बच्चों की पढ़ाई के लिए पुस्तकों एवं पढ़ाई के लिए धन देगा, उसके लिए गरीबी का कारण बनेगा। अगर

शनि पहले भाव में हो या उसी समय गुरु पांचवें घर में हो, तो ऐसे जातक द्वारा किसी व्यक्ति की आवश्यकता से अधिक सहायता करना उसके अपने परिवार में अचानक मृत्यु का कारण बनेगा।

राहु की अशुभता से व्यक्ति प[illegible] सकता है। यदि ऐसे व्यक्ति को कुत्ते पालने का शौक है तो राहु अशुभ होने पर उसके कुत्ते की मृत्यु हो जाती है। ऐसे व्यक्तियों के शत्रुओं की संख्या भी अधिक होती है। सिर पर चोट लगने का क्षय रोग होने से व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। राहु अशुभ होने पर सरस्वती की पूजा करनी चाहिए। कन्यादान, मूली का दान, सरसों और नीलम का दान किसी सफाई कर्मचारी को करना चाहिए।

गुरु सातवें भवन में हो, तो ऐसे जातक के लिए किसी साधु या धर्म-स्थान के पुजारी को नए कपड़े देना, स्वयं को निर्धन कर देगा और उसे संतान पक्ष से भी अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ेगा।

चन्द्रमा बारहवें भाव में हो, तो ऐसा जातक अगर साधु-संन्यासियों को भोजन कराए, तो ऐसे दुःख खड़े कर देगा कि उसे पानी तक न मिलेगा। उच्च ग्रह वाले को अपने उच्च ग्रह से सम्बंधित वस्तु का दान देना या नीच ग्रह से सम्बंधित किसी वस्तु का किसी से दान लेना हानि करेगा और परेशानियों का कारण होगा।

गुरु दसवें घर में हो और चन्द्र चौथे घर में हो, तो ऐसा जातक जब भी मंदिर बनवाएगा तो उसे झूठे आरोपों एवं विवादों के कारण मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। शनि आठवें भाव में हो, तो ऐसा जातक अगर धर्मशाला या ऐसे भवन बनाए जहां मुसाफिर मुफ्त आराम करें तो ऐसा जातक स्वयं बेघर हो जाएगा। चन्द्रमा छठे भवन में होने पर परोपकार के लिए कुआं खुदवाना, पानी का दान करना, प्याऊ लगवाना ऐसे चन्द्र वाले जातक को संतानहीन करके छोड़ेगा, उसका वंश अकाल मृत्यु से घटता जाएगा।

अगर गुरु बृहस्पति सातवें घर में हो, तो घर में मूर्तियां रखकर मंदिर बनाकर घंटियां बजाकर पूजा करना संतान सुख में बाधा उत्पन्न करेगा। कागज पर फोटो या किसी देवी-देवता की तस्वीर का विचार नहीं करना चाहिए।

भवन के फर्श में अगर कच्चा भाग अर्थात् मिट्टी बिल्कुल न हो, तो इस घर में शुक्र का निवास नहीं माना जाता। ऐसी स्थिति में उस परिवार की स्त्रियों को अशुभ परिणाम प्राप्त होते हैं। स्त्री पक्ष की उन्नति के लिए घर में गाय पालना तथा पेड़-पौधे लगाना शुभ रहता है।

जिस भवन के दक्षिण दिशा में मुख्य द्वार हो, तो उस घर की स्त्रियों के लिए अशुभ फलदायक होगा। उस परिवार का कोई आदमी भी सांसारिक सुख नहीं प्राप्त कर सकेगा। हां पति-पत्नी कभी सुखपूर्वक नहीं रह सकेंगे। अतः बड़ा दरवाजा मुख्य गेट दक्षिण से हटाकर बनाना चाहिए।

जन्मपत्रिका में दूसरे घर एवं बारहवें घर में शुभ ग्रह हों तथा आठ एवं ग्यारहवें भाव में बैठे ग्रह शत्रु हों, तो ऐसे जातक को मन्दिर अवश्य जाना चाहिए। वहां जाने से वह सब प्रकार के कष्टों से बचा रहेगा। अगर भवन में प्रवेश करते ही कोई बड़ा चूल्हा, भट्टी अथवा तन्दूर ऐसा हो, जो विवाह आदि उत्सवों में कभी-कभी प्रयोग में

आता हो, तो ऐसे घर में अगर कोई ऐसा बच्चा उत्पन्न हो जाए, जिसके आठवें घर में मंगल हो, तो उस घर के बुरे दिनों का प्रारम्भ होगा। एक-के-बाद-एक मुसीबतें आने के कारण उस परिवार को भारी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। ऐसे समय में अगर कोई इस प्रकार की भट्टी अथवा तन्दूर हो, तो उसकी जली मिट्टी को बहते पानी में बहा दें।

घरों में मूल्यवान वस्तुएं, जेवर, रुपया आदि रखने के लिए छिपे हुए गड्ढे बना दिए जाते हैं, अगर वे गड्ढे खाली ही पड़े रहें, तो घर के स्वामी की व्यर्थ एवं अनुपयोगी बातें ही होंगी, उनका वचन कभी पूरा नहीं होगा। अगर ऐसे गड्ढे में बादाम, छुहारे या कोई-न-कोई मीठी चीज रख दी जाए तो अनुकूल परिणाम प्राप्त होगा। आठ एवं बारह घरों में स्थित ग्रह आपस में शत्रु हों और दूसरा घर खाली हो, तो धर्म-स्थान में जाने से उस जातक को अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

भवन में प्रवेश करने पर दाहिनी ओर जहां जाकर मकान समाप्त हो, वहां पर जो कमरा हो उसमें प्रवेश करने के दरवाजे के अतिरिक्त रोशनी या हवा के जाने का कोई और मार्ग नहीं होना चाहिए। अगर वहां रोशनदान बना लिया जाए या एक और दरवाजा बनाकर रोशनी का प्रबंध कर लिया जाए तो वह घर बर्बाद हो जाता है।

आठ एवं बारह भावों में स्थित ग्रह आपस में मित्र हों या छठे घर में कोई शुभ ग्रह हो तथा दूसरा घर खाली हो, तो मन्दिर में जाना बहुत शुभ रहता है। अब नवग्रहों के अनुसार फल देखते हैं!

बुध : कोड़ियों को आग में जलायें और राख को जल में प्रवाहित कर दें। चाँदी के पैसे में छेद करके बहते पानी में प्रवाहित कर दें। अंगूठी में पन्ना पहनें। दुर्गा चालीसा का पाठ करें। दुर्गा जी के मन्दिर में प्रसाद चढ़ायें। फोका कद्दू दान में दें। धार्मिक संस्थानों में दान दें। बकरी दान में दें।

गुरु : पीपल का वृक्ष लगायें, उसे पानी दें और देखभाल करें। केसर, हल्दी, चने की दाल दान में दें। अगर जातक का पुत्र न हो तो हरिवंश पुराण का पाठ करें।

सूर्य : गेहूं, गुड़ और तांबे का दान करें। हरिवंश पुराण का पाठ करें। चूल्हे की आग को (रात के समय) दूध से बुझायें। कोई भी कार्य आरम्भ करने से पूर्व मीठा मुंह में डालकर थोड़ा जल पी लें।

चन्द्र : बहते जल में चाँदी बहायें। सोते समय पानी या दूध से भरा बर्तन सिराहने रख लें। सुबह उठकर उसे कीकर के पेड़ की जड़ में डाल दें। दूध न बेचें। चावल, चाँदी सदा अपने पास रखें। कुंवारी कन्याओं को हरे रंग के वस्त्र दें। रात के समय दूध न पियें। भैरों के मन्दिर में दूध का दान करें।

मंगल : तन्दूर में लगी हुई मीठी रोटी दान करें। रेवड़ी और बताशे तेज बहते पानी में प्रवाहित करें। मसूर की दाल और मृगछाला दान में दें। हनुमान चालीसा का पाठ करें।

शुक्र : भोजन करने से पहले अपनी थाली में से गऊ के लिए ग्रास निकालकर रखें, उसे गऊ को खिलायें। गऊदान करें। चरी का दान करें। घी, दही, कपूर और सफेद मोती दान करें। विधवाओं की सहायता करें। लक्ष्मी की उपासना करें।

शनि : आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को खिलायें। कौवों को रोटी दें। साबुत उड़द, तेल, चमड़ा, अंगीठी, चिमटा, शराब और स्प्रिट दान करें। शिव की उपासना करें।

राहु : नदी-जल की तेज धारा में नारियल बहायें। जौ को दूध से धोकर नदी-जल में बहा दें। यदि राहु की अशुभता के कारण क्षय रोग हो तो जौ को गौमूत्र में धोकर.उसे वन्द डिब्बे में अपने पास रखें। गौमूत्र से दांत साफ करें। मूली दान करें। बहते जल में कोयले प्रवाहित करें। सरसों और नीलम का दान करें। सफाई कर्मचारी को दान में दें। खोटा पैसा नदी के जल में बहायें।

केतु : कुत्तों को रोटी दें। तिल का दान करें। यदि जातक का पुत्र आज्ञाकारी न हो या मूत्र-विकार हो तो रेशम के धागे में चाँदी का छल्ला डालकर गले में पहनें। गणेशजी की उपासना करें। पुत्र पर कोई संकट आये तो 43 दिन तक काले कुत्ते को रोटी दें।

संतान-सुख

लाल किताब में पांचवें भाव को संतान का प्रतिनिधि माना गया है। पांचवें घर में नेक सूर्य संतान पक्ष की वृद्धि करता है। वही बद सूर्य के कारण संतान की हानि होती है। ऐसी स्थिति में संतान सुख के लिए बंदरों को गुड़ खिलाने से सूर्य नेक होता है। इसके अतिरिक्त सात अनाज परस्पर मिलाकर चींटियों को डालना चाहिए। आग जलाकर उसे दूध से बुझाना चाहिए।

केतु पांचवें भाव में स्थित होकर संतान के सुख में बाधा उत्पन्न कर रहा हो तो ऐसे व्यक्ति को दो रंगों का कम्बल दान करना चाहिए तथा कान में सोने का कुंडल धारण करने से भी केतु का अशुभ प्रभाव दूर होता है। केतु जिन जातकों को अधिक परेशानी दे रहा हो उन्हें विशेषकर अपनी बेटी तथा बहन के साथ कभी मार-पीट नहीं करनी चाहिए। अगर औलाद के भाव में दो या अधिक पाप ग्रह बैठकर अपना अशुभ प्रभाव डाल रहे हों तो दोनों ग्रहों के उपायों को करने से संतान-सुख मिलता है।

गुरु पांचवें घर में स्थित होकर संतान के सुख में बाधा उत्पन्न कर रहा हो तो शुद्ध केसर को घिसकर गुरुवार के दिन तिलक लगाना चाहिए। साथ ही सोने को धारण करने से भी गुरु की अशुभता में कमी आती है।

राहु पांचवें भाव में स्थित होकर संतान के सुख में बाधा उत्पन्न कर रहा हो तो ऐसे जातक को सदैव अपने पास चाँदी का एक चौकोर टुकड़ा रखना चाहिए। नागपंचमी के दिन जंगल में छोड़ देना चाहिए।

शुक्र पांचवें भाव में स्थित होकर संतान के सुख में बाधा उत्पन्न कर रहा हो तो ऐसे जातक को अपनी साफ-सफाई का विशेष ध्यान रखना चाहिए। सफेद और सुगंधित पुष्प बहते जल में बहाने चाहिएं।

पांचवें भाव में चंद्रमा अपना विष उगल रहा हो तो अपनी चारपाई के चारों पायों में तांबे की कील गाड़ने से चन्द्रमा का शुभ प्रभाव मिलता है। चंद्रमा को अनुकूल बनाने के लिए गुड़ को भूमि में दबाना चाहिए। इस प्रकार उपाय करने से संतान का सुख प्राप्त होता है। अगर संतान को कष्ट हो रहा हो, तो भी अनुकूलता मिलती है।

शनि पांचवें भाव में स्थित होकर संतान के सुख में बाधा उत्पन्न कर रहा हो तो शनि की अशुभता दूर करने के लिए जातक को बहते हुए जल में नारियल छोड़ना चाहिए। काले तिल काले कपड़े में बांधकर धरती में दबाना चाहिए।

बुध पांचवें भाव में स्थित होकर संतान के सुख में बाधा उत्पन्न कर रहा हो तो ऐसे जातक को अपनी नाक छिदवाकर चाँदी का छल्ला नाक में पहनना चाहिए। घर में गंगाजल पूजाघर में रखना चाहिए।

पंचम भाव में बद मंगल के प्रभाव के कारण संतान पर अशुभ प्रभाव पड़ रहा हो, तो संतान-सुख के लिए भिखारियों को गुड़ का दान करें। बच्चे के जन्म पर मिठाई के स्थान पर नमकीन बांटें।

अगर चन्द्रमा एकादश में हो तो जातक की पत्नी को प्रसूति-पीड़ा आरम्भ होने पर, उसकी माता को वह घर छोड़कर अन्यत्र चले जाना चाहिए। उसे 43 दिन पश्चात् शिशु को देखना चाहिए। पहले देखने पर शिशु का अनिष्ट होता है। अगर मंगल नौवें भाव में बैठा हुआ पीड़ित या अशुभ हो, तो जातक को अपनी भाभी की सेवा करनी चाहिए। जन्मपत्रिका में जो ग्रह अकेले होकर अशुभ भावों में बैठे हों, उनके अनिष्ट निवारण के लिए टोटके निश्चित रूप से प्रभावी होते हैं।

लाल किताब में बताए गए टोटके किसी भी समय प्रारम्भ कर सकते हैं, किन्तु एक बार शुरू करने के बाद 43 दिन तक लगातार करते रहें। 43 दिन पूरे होने से पहले किसी दिन भूल जाएं या परिस्थितिवश न कर सकें तो पुनः नये सिरे से ही आरम्भ करना होगा। ऐसी स्थिति में कुछ चावल दूध में धोकर, अपने पास रख लें। ऐसा करने पर पहले किये गये टोटके का फल कुछ-न-कुछ अवश्य मिल जायेगा। लाल किताब के टोटके दिन के समय ही करें। सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के पश्चात् रात्रि के समय इन टोटकों को करने से कोई लाभ नहीं होगा। जो टोटके विशेष रूप से रात्रि-काल के लिए बताये गये हैं, उन्हें रात्रि में किया जा सकता है जहां तक सम्भव हो, टोटके स्वयं ही करें।

गुरु – केसर का सेवन करें या नाभि पर लगायें।
शुक्र – गौशाला में चरी दान करें।
शनि – तेल में अपनी छाया देखकर यथाशक्ति दान करें।
राहु – मूली दान करें। बहते पानी में कोयला प्रवाहित करें।
केतु – कुत्तों को रोटी डालें।

सूर्य – बहते पानी में गुड़ प्रवाहित करें।

चन्द्र – रात को सोते समय दूध या पानी से भरा हुआ बर्तन सिराहने रखकर सोयें। प्रातःकाल उठते ही उसे कीकर की जड़ में उड़ेल दें।

मंगल – बहते पानी में रेवड़ियां प्रवाहित करें।

बुध – तांबे के सिक्के में या पत्ती में छेद करके पानी में प्रवाहित करें।

लाल किताब में अच्छे कर्म के द्वारा ग्रहों को शान्त करने के विषय में बताया है जिससे सब गरीब, दुःखिया और असहाय व्यक्तियों की सहायता हो सके और ग्रह तुरन्त शान्त हो जायें।

कुण्डली में सूर्य गुरु युति हो तो जातक को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। अशुभता-निवारण के लिए गुरु की वस्तुओं का प्रयोग करें। केसर खायें और सोने की अंगूठी पहनें।

सूर्य-शनि युति होने से जातक की पत्नी के स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। स्थिति में सुधार के लिए पत्नी के भार के बराबर चरी दान करें।

सूर्य-शनि युति में, जो अधिक बलवान हो उसकी वस्तुएं दान में दें। सूर्य बलवान हो, तो तांबा दान दें। शनि बलवान् हो, तो लोहा या तिल दान करें।

सूर्य-राहु युति हो तो तपेदिक आदि राहु जन्य अनिष्ट होते हैं। अशुभ प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए सूर्य ग्रहण के समय राहु की वस्तुएं-कोयला और सरसों दान करें या नदी-जल में बहा दें।

राहु-चन्द्र युति हो तो चन्द्र-ग्रहण के समय कोयला या सरसों बहते जल में प्रवाहित करें।

मंगल-बुध एक ही भाव में बैठे हों तो छोटी बहन के स्वास्थ्य को बुरी तरह प्रभावित करते हैं, क्योंकि बुध बहन का कारक है। उपाय के लिये मंगल की वस्तुएं शहद और सौंफ सुराही में रखकर निर्जन एकान्त में जमीन के नीचे दबा दें।

लाल किताब के अनुसार ग्रहों का शुभाशुभ जानने का सिद्धान्त यह है कि ग्रह जिस भाव का स्वामी होता है, उस भाव में स्थित होने पर शुभफल देता है।

प्रथम भाव में मंगल, द्वितीय में शुक्र, तृतीय में बुध, चतुर्थ में चन्द्र, पंचम में सूर्य, षष्ठ में बुध व केतु, सप्तम में शुक्र सदा शुभ फल देते हैं। ये ही इन भावों के स्वामी होते हैं। अष्टम भाव का स्वामी मंगल है। वह अष्टम में अकेला हो तो शुभ फल देता है, किन्तु इसी भाव में मंगल के साथ शनि या चन्द्र बैठा हो, तो मंगल भी अशुभ फल देता है।

नौवें भाव का स्वामी गुरु है। वह इस भाव में शुभ फल देता है। दसवां विश्वासघाती भाव है। इस भाव में बैठे हुए ग्रह विश्वासघाती हो जाते हैं। वे दूसरे और ग्यारहवें भाव में शुभफल देते हैं। ग्यारहवें भाव में शनि शुभफल देता है। बारहवें भाव में गुरु शुभ होता है।

जन्मकुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में होता है, वह ग्रह वर्षकुण्डली में भी जब उसी भाव में आता है, तब अपना फल देता है।

इसी प्रकार जन्मकुण्डली में ग्रह जिस भाव में उच्च का होता है, वह वर्षकुण्डली में भी उसी भाव में आता है, तब शुभफल देता है।

जिस वर्षकुण्डली में राहु चौथे भाव में हो, उसे वर्ष राहु के कार्य करवाने पर झगड़ा होता है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने लिखा है कि–

"सकल पदार्थ है जग माहीं,
भाग्यहीन नर पावत नाहीं।"

इस विश्व में सब प्रकार की सुख-सुविधा की वस्तु है लेकिन उसको प्राप्त होती है जिसकी किस्मत में लिखा है। किस्मत जन्मकुण्डली से पता चलती है। इसलिए विवाह (ब्याह) करते समय अपनी बराबरी का करना चाहिए तथा यह देखना चाहिए कि आप कितना व्यय कर सकते हैं? उसके हिसाब से करना चाहिए। ऊपरी चटक-मटक में नहीं आना चाहिए। सदैव अपनी बराबरी से विवाह करना चाहिए और सुख तथा दुःख की चिन्ता न करते हुए जो तुलसीदास जी ने लिखा है उस पर विचार करके करना चाहिए।



21 लाल किताब : पितृ ऋण

लाल किताब द्वारा ऋणों के अध्ययन के लिए लाल किताब के आधार पर जन्मपत्रिका का बना होना परम आवश्यक है, तभी लाल किताब के अनुसार जातक के जन्म का ऋण ज्ञात किया जा सकेगा। लाल किताब के अनुसार बनाई गई कुण्डली भारतीय ज्योतिष के अनुसार बनाई गयी कुण्डली से सर्वथा अलग होती है।

शास्त्रों के अनुसार देव ऋण, ऋषि ऋण एवं पितृ ऋण का जन्म-जन्मांतरों तक जातकों पर शुभ अथवा अशुभ प्रभाव रहता है, इसलिए 'पितृदेवो भव', कहा गया है। कहने का उद्देश्य यह है कि पिता द्वारा लिया गया प्रत्येक ऋण पुत्र को चुकाना पड़ता है।

मैंने एक पुस्तक में पढ़ा था पुस्तक को अपने जीवन में तीन बातें सदैव स्मरण रखनी चाहिएं। वह है–फर्ज, (कर्त्तव्य), कर्ज (ऋण) और मर्ज (रोग) जो भी इन बातों को स्मरण रखकर कर्म करता है, वह कभी कष्ट नहीं पाता है।

यह सर्वथा सत्य है कि पूर्वजों के कर्मों का फल (शुभ-अशुभ) उनकी संतानों को भोगना पड़ता है। इसे ही हम ऋण कहते हैं। जातक किस ऋण से पीड़ित है तथा उसका निवारण क्या है, इस विषय में अनेक सिद्धांत हैं।

अगर 5, 12, 2, 9 भाव में कोई भी ग्रह हो तो जातक पितृ ऋण से प्रभावित होगा। अगर नवम स्थान में गुरु के साथ शुक्र बैठा हो, चतुर्थ स्थान में शनि और केतु हों तथा चंद्रमा दशम स्थान में हो तो व्यक्ति पितृ ऋण से पीड़ित होगा–

लग्न से अष्टम में बुध और नवम में गुरु हो। द्वितीय में सौम्य बुध और नवम में शुक्र हो। तृतीय में बुध और नवम में राहु हो। चतुर्थ में बुध और नवम में चन्द्रमा हो। पंचम में बुध और नवम में सूर्य हो। षष्ठ में बुध और नवम में केतु हो। एकादश में बुध और नवम में शनि हो। द्वादश में बुध और नवम में गुरु बृहस्पति हो। 2, 5, 9 एवं 12वें भाव में गुरु बृहस्पति हो या शुक्र, बुध, राहु भी हों।

लक्षण–समय से पहले बाल सफेद हो जाएं, सुख-स्मृद्धि समाप्त हो जाए, बनते कार्यों में विलम्ब हो तो जातक पितृ ऋण से ग्रसित होता है।

उपाय–सूर्य को नमस्कार करें। यज्ञ करें। किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पहले मुंह मीठा करें और शीतल जल पिएं, फिर कार्य को करें। लाभ होगा।

मातृ ऋण–लाल किताब के अनुसार अगर जातक के जन्मांग में चतुर्थ स्थान में केतु हो, तो वह कोमल चन्द्रमा से पीड़ित होता है उस पर मातृ ऋण होता है।

लक्षण–घर की सम्पत्ति का नष्ट होना, पशुओं की मृत्यु, शिक्षा में बाधा, घर में अनेक प्रकार के रोग होना। अगर कोई व्यक्ति सहायता करने का प्रयत्न करता है, तो

वह भी संकटों से घिर जाता है और प्रत्येक कार्य में असफलता का सामना करना पड़ता है।

उपाय—मातृ ऋण से ग्रस्त व्यक्ति चाँदी लेकर बहते पानी में बहाने से इस ऋण से मुक्ति मिलती है।

स्त्री ऋण—अगर जातक की जन्मपत्रिका में द्वितीय-सप्तम भावों में सूर्य, चन्द्रमा एवं राहु स्थित हो, तो जातक शुक्र ग्रह से पीड़ित होता है। उसे स्त्री ऋण का दोष लगता है।

उपाय—कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से धन एकत्र कर 100 गायों को भोजन कराने से स्त्री ऋण से मुक्ति मिलती है।

गुरु ऋण—दूसरे, पांचवें, नवें और बारहवें भाव में शुक्र, बुध और राहु बैठे होने पर गुरु ऋण होता है। पीपल के वृक्ष को क्षति पहुंचाने अथवा कुटुम्ब के ईष्ट का परिवर्तन करने से यह ऋण होता है। इसके फलस्वरूप जातक को विशेषकर वृद्धावस्था में अनेक कष्ट भोगने पड़ते हैं। उसके जीवन भर की संचित पूंजी नष्ट हो जाती है।

उपाय—परिवार के प्रत्येक सदस्य से धन एकत्र करके दान में देना चाहिए तथा घर के निकट स्थित पीपल के पेड़ की देखभाल करें।

स्वऋण—पंचम भवन में अशुभ ग्रहों के होने से जातक को स्वऋण का दोष लगता है। परम्पराओं को ना मानने से यह ऋण होता है। इस ऋण के प्रभाव से जातक को कष्ट, मुकदमे में हार, राजदण्ड, जीवन में संघर्ष आदि प्रभावों से दो-चार होना पड़ता है।

उपाय—जातक को धन लेकर यज्ञ करना चाहिए।

परिजनों का ऋण—यदि जातक की जन्मपत्रिका में प्रथम-अष्टम में कुमार ग्रह बुध अथवा केतु हो, तो परिजनों के ऋण का दोष लगता है।

जातक संबंधियों से वार्तालाप नहीं करता। बालकों से घृणा करता है।

उपाय—अपने वंशजों से चाँदी लेकर नदी में प्रवाहित करें। माता को सम्मान दें।

बुध से बहिन का ऋण—लाल किताब के अनुसार, जन्मकुण्डली में तीसरे या छठे भाव में कोमल चन्द्रमा होने से बहन का ऋण होता है, बहिन पर अत्याचार करने, उसे घर से निकालने से यह ऋण होता है। इस ऋण से धन सबकी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जीवन नर्क के समान हो जाता है और उसे कोई सहायता नहीं मिल पाती है।

उपाय—इस ऋण से मुक्ति के लिए जातक नित्य फिटकरी से दांत साफ करें, नाक छिदवाएं। प्रवाहित कर कौड़ियां एकत्रित करके उन्हें नदी में प्रवाहित कर दें।

प्राकृतिक ऋण—अगर जातक के जन्मांग में षष्ठ भाव में कोमल चन्द्र हो, तो जातक केतु से पीड़ित होता है। इस योग में जातक पर प्राकृतिक ऋण होता है। प्रायः ऐसे जातक की संतान।

उत्पत्ति—कारण किसी की अपाहिज होती है।

उपाय–किसी विधवा की सहायता करें। कुत्तों को भोजन करवाएं, काला कुत्ता पालें तथा नाक और कान छिदवाएं।

अत्याचार करने पर ऋण–जातक अगर किसी पर वृथा ही अत्याचार करता है। अगर उस जातक के जन्मांग में दशम एकादश भाव में सूर्य, चन्द्र एवं मंगल हों, तो वह शनि से पीड़ित होता है। इस योग में अत्याचारी ऋण होता है।

परिवार में विपत्तियों का आवागमन बना लगा रहता है। घर टूटना, अपंगता, मृत्यु, बालों का झड़ जाना आदि अशुभ फल होते हैं।

उपाय–सपरिवार मजदूरों को भोजन कराना चाहिए। मछली पकड़कर एक ही जलाशय में डालकर उन्हें आटे की गोलियां खिलाएं। तवा, चकला एवं बेलन दान देना चाहिए।

जन्म से ऋणी–अगर जातक के जन्मपत्रिका के बारहवें घर में सूर्य, चन्द्र या मंगल बैठे हों, तो वह राहु से पीड़ित होता है। इस योग में जन्म से आने वाला ऋण होता है।

जातक के भवन के दक्षिणी भाग की ओर श्मशान भूमि होगी या फिर कोई भट्ठी होगी।

राहु के प्रभाव से जातक पर आरोप लगते रहते हैं और मुकदमे भी चलते रहते हैं। राजदण्ड भुगतना पड़ता है। काले पशु मरने लगते हैं। नाखून टूटने लगते हैं, क्षमता कम होने लगती है, शत्रु उभरने लगते हैं।

उपाय–श्री फल एकत्रित करके दरिया में प्रवाहित करें, मेल-जोल से रहें, चोटी रखें।

प्रभु ऋण–छठे भाव में चंद्र, मंगल होने से प्रभु ऋण होता है। लालच में आकर हत्या कर देने, विश्वासघात करने और नास्तिक प्रकृति का होने से यह ऋण होता है। यह ऋण होने पर जातक का कुटुम्ब बर्बाद हो जाता है। जातक की संतान नहीं होती है। उसका धन धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है।

उपाय–धन एकत्र करके कुत्तों को भोजन कराने से प्रभु ऋण से मुक्ति मिलती है।

हमारे ऋषि भी बार-बार यही शिक्षा देते रहे हैं कि कर्म अच्छा करते रहो, कोई कष्ट नहीं आयेगा। लाल किताब ने लिखा है कि चोटी रखने से गुरु का प्रभाव अच्छा हो जाता है और राहु की परेशानी से बचाव होगा। गुरु ज्ञान और विकास है तो राहु अन्धकार और रुकावट है और अगर देखा जाये तो हमारे सभी पूर्वज अपने सिर पर चोटी रखते थे जिससे उनमें सहनशीलता, धर्म, न्याय था। आज लोगों ने चोटी रखना छोड़ दिया है इसलिए राहु का प्रभाव बढ़ गया। अगर जातक अपने जीवन में सुख-शान्ति चाहते हैं तो सिर पर चोटी अवश्य रखें। इससे यह सिद्ध होता है कि लाल किताब ने पुराने रीति-रिवाजों पर बल दिया है।

पहले लोग पढ़े-लिखे कम थे इसलिए हमारे ऋषियों ने इस प्रकार का रीति-रिवाज बनाकर धर्म से जोड़ देते थे जिसको सब लोग धर्म के नाम पर करके लाभ उठा सकते थे; जैसे पीपल को जल चढ़ाना तथा परिक्रमा करना। गुरुवार के दिन पीपल के पेड़

के नीचे दीया जलाना। अब अगर देखा जाए तो पीपल ऑक्सीजन छोड़ता है। ऑक्सीजन स्वास्थ्य के लिए अच्छी है।

लाल किताब कर्म के ऊपर लिखी किताब है। अगर आप स्वयं को ठीक रखते हैं तो आपकी बहुत-सी समस्यायें स्वयं ही खुद हल हो जाती हैं। लाल किताब हमें जीने की शिक्षा देती है।

यही लाल किताब की आत्मा और सिद्धांत है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है–

हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता।
कहहि सुनहीं विधि सब सन्ता॥

लाल किताब एक है। लेकिन विद्वान्‌ों ने अपने अनुभव और ज्ञान के अनुसार उसका विवेचन किया है।

भाग्य बदलने के लिए तपस्या, जप, तप, उपवास करके लाभ उठाया जा सकता है; जैसे डॉक्टर दवा और परहेज बताते हैं वैसे ही ज्योतिषी आपको यह बतायेगा कि किस दिन का क्या उपाय करें?

कोई न काहु के सुख-दुःख के दाता,
निज-निज करम अनुहरत विधाता।

इस चौपाई के साथ अपनी बात पूर्ण करता हूं।



22 लाल किताब : भवन-निर्माण और टोटके

लोग आजकल भूमि खरीदते हैं और भवन-निर्माण कर लेते हैं। मध्यवर्गीय परिवार तो नक्शा बनाता ही नहीं। शहरी क्षेत्र में भी फ्लेटों की भरमार है और बनते जा रहे हैं। सम्पन्न लोग नक्शा बनवा लेते हैं, परन्तु विद्वान् स्पष्ट कहते हैं कि इस प्रकार बनवाया गया भवन मृत्यु से लेकर राजदण्ड तक और रोग से लेकर मृत्यु अथवा अनिद्रा तक प्रदान कर सकता है।

सामान्य लोगों के हृदय में दक्षिण दिशा को लेकर बहुत भय है। इसलिए कोई भी अपने भवन का मुख्य द्वार दक्षिण में नहीं रखना चाहता है। पश्चिम में कुछ अच्छा है। अतः दो-चार प्रतिशत भवन पश्चिम द्वार में मिल जाते हैं। भवनों के प्रायः पूर्व और उत्तरमुखी द्वार गुप्त हैं। अगर आपका मकान दक्षिण द्वार वाला है तो आप घर के चारों ओर द्वार रख लें, शुभ हो जायेगा।

वैदिक ज्योतिष शास्त्र में बारह राशियों को चार वर्णों और चार दिशाओं में बांट दिया है। कर्क, वृश्चिक, मीन राशि ब्राह्मण वर्ग की है इसलिए इस राशि वालों को पूर्व दिशा का द्वार शुभ है। सिंह, धनु, मेष राशि क्षत्रिय वर्ण है अतः इनके लिए दक्षिण द्वार वाले भवन शुभ हैं। वृष, कन्या, मकर राशि वैश्य वर्ण की है अतः इन राशि वालों को पश्चिम में और शूद्र वर्ण की राशि (मिथुन, तुला, कुंभ) वालों को उत्तर दिशा का द्वार शुभ है।

जन्मपत्रिका में लग्न से अष्टम भाव में ग्रह भवन की कुण्डली में (मकान से बाहर निकलते समय) जातक के बायें हाथ पर अपना शुभाशुभ फल करते हैं। नवम भाव को भवन का आंगन माना है। जहां पर वास्तु पुरुष का निवास है। अब भवन की कुण्डली में शुभाशुभ फल देखने के लिये कुण्डली में दर्शाये गये ग्रहों के स्थान पर उनके शत्रु ग्रहों की वस्तुएं न रखें वरना जन्मकुण्डली के अशुभ ग्रहों का किया गया उपाय अपना शुभ फल नहीं देगा।

इस संदर्भ में, मैं सबसे पहले शनि ग्रह को लेता हूं।

लाल किताब के अनुसार, भवन का सम्बंध शनि ग्रह से है। वास्तु के विषय में शनि के प्रभाव क्या हैं, देखने का प्रयत्न करते हैं?

प्रथम भाव—अगर शनि लग्न में मंदा होकर बैठा हो, तो यह जातक को हर प्रकार से कष्ट देता है। ऐसा जातक जब भी भवन-निर्माण करेगा उसे अशुभ परिणाम मिलेंगे।

द्वितीय भाव—ऐसे जातक को भवन जब भी जैसा मिले, ले लेना चाहिए या जैसा भी बने, बनने देना चाहिए।

तृतीय भाव—इस स्थान का शनि धन एवं संतान पर प्रतिकूल प्रभाव देता है। तृतीय भाव शनि वाले जातक अगर भवन बनवाना चाहते हैं, तो उन्हें भूखंड पर तीन कुत्ते अवश्य पालने होंगे।

चतुर्थ भाव–इस स्थिति वाले जातक को अपने नाम से भवन नहीं बनवाना चाहिए।

पंचम भाव–लाल किताब के अनुसार इस भावस्थ शनि वाले जातक को संतान-हानि, या संतान को कष्ट जैसे अशुभ फल मिल सकते हैं। अगर अड़तालीस वर्ष की आयु से पहले जातक भवन बना रहा हो, तो उसे एक भैंस जंगल में छोड़नी चाहिए।

षष्ठ भाव–39 की आयु-उम्र के पश्चात् ही भवन-निर्माण हितकारी रहेगा। उपर्युक्त आयु से पहले छठे भाव में बैठे शनि के प्रभाव से जातक जब भी भवन बनाएगा, उसकी लड़कियों के लिए शुभ नहीं रहेगा।

सप्तम भाव–सातवें भाव में बैठे शनि वाले जातकों को बना-बनाया भवन खरीदना शुभ रहेगा। अगर ऐसा जातक पैतृक भवन में रहेगा तो शुभ रहेगा।

अष्टम भाव–अष्टम भाव में शनि बैठा हो तथा जन्मपत्रिका में राहु-केतु अशुभ या मंदे हों, तो ऐसे जातक को भवन नहीं बनाना चाहिए।

नवम भाव–जातक की जन्मपत्री के नवम् भाव में शनि बैठा हो तथा जातक की पत्नी गर्भवती हो, तो ऐसा जातक कभी भी भवन न बनाए।

दशम भाव–दशमस्थ शनि के कारण जब भी जातक भवन का निर्माण पूरा करेगा, तब से ही धन में कमी आने लगेगी, या धन हानि प्रारम्भ होने लगेगी।

एकादश भाव–इस भाव के शनि के कारण 55 की आयु के पश्चात् ही भवन बनाएं, तो वह शुभ परिणाम देने वाला रहेगा।

बारहवां भाव–भवन सरलतापूर्वक बनता है। इस शनि वाले जातकों को लाल किताब परामर्श देती है कि निर्माण कार्य के चलते भवन के कार्य को न रोकें।

भवन की स्थिति की गणना 2 एवं 7वें भाव से की जाती है। दो की स्थिति भवन की स्थिति बताती है और 7वां उसका सुख-दुःख बताता है। एक ही नक्षत्र में बनाया गया भवन प्रायः शुभ होता है।

भवन के लिए जन्मकुण्डली से गणना भवन के स्वामी अर्थात् परिवार के मुखिया से की जाती है, जो भवन-निर्माण कराता है।

भाव 10 से भाव 12 तक जो ग्रह होंगे, उनका प्रभाव बायीं ओर होता है। ग्रहकुण्डली के अनुसार, जो ग्रह भाव एक से भाव नौ तक हों, वे अपना प्रभाव घर में प्रवेश करते समय की मुद्रा के अनुसार करते हैं।

शनि एवं राहु+केतु में सम्बन्ध बन रहा हो और शनि अशुभ हो। शनि जब राहु-केतु के साथ हो और बुरा हो। इस स्थिति में प्रायः भवन बिक जाता है।

जातक की वर्षकुण्डली के अनुसार जब शनि जब राहु-केतु से शुभ सम्बन्ध बनायेगा। शनि+राहु+केतु जब दृष्ट होगा; तब भवन नष्ट हो जाएगा।

भवन-निर्माण के लिये 90 डिग्री के चारों कोण वाली भूमि उत्तम मानी गयी है। यह आयताकार या वर्गाकार हो सकती है; पर लम्बाई चौड़ाई की दूनी न हो। भूमि मरी हुई, बंजर, पथरीली, पानी के गड्ढे आदि को भरकर बनायी गयी और दक्षिणोन्मुखी कभी नहीं होनी चाहिये।

भवन के विषय में भी कोण एवं लम्बाई-चौड़ाई से सम्बन्धित तथ्य उपर्युक्त ही होंगे। पांच कोणीय, तीन, आठ, तेरह, अट्ठारह कोण वाली भूमि अशुभ होगी। तीन

कोणीय–भाई–बन्द, रिश्तेदारों की कलह–झगड़े से मौत, अग्नि–हानि। पांच कोणीय–सन्तान की हानि। आठ कोणीय–बलहीन, शक्तिहीन। तेरह कोणीय–फांसी, निःसन्तान। अट्ठारह कोणीय–मौतें।

मुख्य द्वार की स्थिति

दिशा	प्रभाव
पूर्व	उत्तम
पश्चिम	दूसरे स्तर का
उत्तर	नेकी और आचरण
दक्षिण	अशुभ

घर के द्वार स्वयं ही खुलते हों तो उन्माद और बंद हो तो कुल-नाश, भीतर खुले तो स्वामी-नाश, बाहर तो विदेश वास होगा। लाल किताव तो दक्षिण द्वार वाले भवन को रंडुओं के दुःख की जगह कहती है। स्त्रियों के लिए अशुभ, शराब, जुआ आदि कुकर्मों का स्थान। यह सब बातें विचारणीय हैं। दक्षिण दिशा मुख्य द्वार के लिए सदैव बुरी नहीं होती। व्यापारिक कार्यों के लिए वह उत्तम होगी, अगर सामने सड़क या कोई मार्ग हो दक्षिण दिशा केवल कुछ नहीं करती उसके साथ अन्य वास्तुदोष 70 या 80 प्रतिशत हों तो ही दक्षिण द्वार अशुभ फल देता है। इसलिए द्वार के अतिरिक्त भी अन्य सिद्धांतों के हिसाब से वास्तु दोष दूर करना श्रेष्ठ होगा। पूर्वनिर्मित मकान में न तोड़-फोड़ करें न इतना व्यय करें, आंतरिक व्यवस्था वास्तु की दिशाओं के हिसाब से परिवर्तित कर लें।

गली बन्द का मकान या हवा के प्रभाव पर बना मकान बच्चों के लिये अशुभ होता है। घर में उत्तर एवं पश्चिम की ओर पैर करके सोना उत्तम है। पूर्व एवं दक्षिण की ओर पैर करके सोना अशुभ। मार्ग पर सोने से नेत्र का रोग होता है।

भवन के आसपास वृक्ष न लगायें। सन्तानपक्ष क्षतिग्रस्त होगा और मकान उजाड़ हो जायेगा। सीमा क्षेत्र में पीपल हो, तो उसमें पानी डालें। वास्तुशास्त्र के अनुसार, जिस वृक्ष की छाया भवन पर पड़ती है, उसे सीमा-क्षेत्र में ही माना जाता है–वरना बर्बादी होगी।

श्मशान पर बना भवन अशुभ होता है। कछुआ-पीठ भूमि पर बना भवन या पश्चिम–दक्षिण ढाल वाला भवन सन्तानहीन बनाता है।

कीकर का वृक्ष उखाड़ दें। यह निःसन्तान करता है। कुआं हो, तो उसमें गुड़ डाल दिया करें।

पुष्य नक्षत्र में बना भवन शुभ होता है। गृह–प्रवेश के समय कुछ दान दें।

जन्मकुण्डली में शनि तीसरे भाव में हो, तो केतु का उपाय करें। शनि चौथे खाने में हो तो मकान 45 वर्ष की आयु के पश्चात् बनवायें। बुजुर्गों पर अशुभ प्रभाव होता है।

अगर पश्चिम में शयनकक्ष, मेहमान का कमरा पश्चिम-उत्तर में, पूजा अध्ययन,

बोरिंग उत्तर-पूर्व में, रसोई दक्षिण-पूर्व में, टॉयलेट दक्षिण-पश्चिम या उत्तर-पश्चिम में, ड्राइंगरूम को दक्षिण-पूर्व में परिवर्तित कर लें तो भवन शुभ फल देने लगेगा। जो लोग नये भवन बना रहे हों एवं उनका द्वार दक्षिण की ओर हो तो आग्नेय कोण से तीन भाग छोड़कर दो भाग में द्वार बनाना चाहिए। इस प्रकार बनाया भवन शुभफल दायक रहेगा।

दक्षिण द्वार के भवन में ठीक दरवाजे के सामने श्री हनुमान जी की आशीर्वाद की मुद्रा का चित्र दक्षिण मुख करके लगा दें। द्वार के ठीक पास एक आदमकद दर्पण लगा दें, इससे बुरी हवा का प्रवेश नहीं होगा। भवन के ईशान कोण में एक चाँदी का कलश जिसमें गंगाजल या पवित्र जल भरकर पूजा कर स्थापित कर दें तो वास्तुदोष शांत हो जाता है।

आइए पाठकों के लाभार्थ लाल किताब के अनुसार ग्रह मैत्री-चक्र प्रस्तुत कर दूं!

क्र.सं.	ग्रह	बराबर की ताकत के	मित्र	शत्रु
1.	बृ.	श. रा. के.	सू. चं. मं.	बु. शु.
2.	सू.	– – –	बृ. चं. मं.	शु. श. रा. से सूर्य ग्रहण के. से मध्यम
3.	चं.	श. शु. बु.	सू. बृ. मं.	के. से चं. ग्रहण रा. से मध्यम
4.	शु.	मं. बृ.	श. बु. के.	सू. चं. रा.
5.	मं.	श. शु. रा. मं. मध्यम होगा।	सू. चं. बृ.	बु. के.
6.	बु.	श. के. बृ. मं.	सू. शु. रा.	चं.
7.	श.	के. बृ.	बु. शु. रा.	चं. सू. मं.
8.	रा.	बृ. चं. से मध्यम होगा	बु. श. के.	श. सू. मं.
9.	के.	बृ. श. बु. सू. से मध्यम होगा।	शु. रा.	चं. मं.

भवन में नौ ग्रहों का स्थान–

गुरु बृहस्पति – हवा के मार्ग, दरवाजे, पूजा-पाठ का सामान आदि।
सूर्य – रोशनी वाला स्थान, धूप, सरकार से सम्बंधित फाइलें।
चन्द्र – पानी का साधन, माता-दादी का कमरा आदि।
शुक्र – कच्चा स्थान/दीवार, गाय बांधने का स्थान, संगीत का सामान, टी.वी., फिल्म, नाटक का स्थान, शयनकक्ष आदि।
शुभ मंगल – खाना खाने का स्थान आदि।
अशुभ मंगल – लड़ाई-झगड़े का सामान रखने का स्थान।

बुध – खाली स्थान या आंगन, सीढ़ियों, लड़कियों का कमरा आदि।

शनि – भारी संदूक, अंधेरा स्थान, शनि की वस्तुएं आदि।

राहु – भवन से निकलने वाली नाली, गंदा पानी इकट्ठा होने का स्थान या गटर, धुएं का स्थान आदि।

केतु – भवन में जिस कमरे में रोशनदान सबसे कम हों, लड़कों का कमरा आदि।

भवन की कुण्डली के अनुसार ग्रहों की वस्तुएं उनके अपने स्थान पर रखें, शत्रु या नीच ग्रहों के स्थान पर रखें। मित्र या अन्य ग्रहों के स्थान पर रखने पर प्राय: लाभ होता है।

जिस प्रकार के समय के अनुसार से परिस्थिति बदलती है, समाज बदलता है उसी प्रकार से समय के अनुसार लाल किताब में कुछ बदलने की आवश्यकता पड़ती है, जैसे पहले लोग नदी का पानी पीते थे। लाल किताब के अनुसार नदी में कच्चा कोयला जल प्रवाह से पानी साफ शुद्ध हो जाता था लेकिन आज नल और टंकी का पानी पीने के लिए उपलब्ध है इसलिए पानी स्वच्छ करने के लिए राहु को शान्त करने के लिए उपलब्ध है इसलिए पानी स्वच्छ करने के लिए राहु को शान्त करने के लिए कच्चा कोयला जल प्रवाह न करें बल्कि उसके स्थान पर मूली गरीबों में बांटने से कुछ परोपकार होगा।

ज्योतिष देश, काल, परिस्थिति, समय–इनको ध्यान में रखकर विचार करना चाहिए और ज्योतिष के द्वारा समाज सुधार, मानवता की सेवा, मानव कल्याण का परामर्श देना चाहिए तभी इस प्राचीन विद्या ज्योतिष से लाभ उठाया जा सकता है।

23 लाल किताब में मांगलिक दोष

मंगल ग्रह को कालपुरुष का पराक्रम माना गया है। इसे सेनापति भी कहा गया है। ज्योतिष के अनुसार यह तेजस्वी ग्रह है। मंगल को छोटे भाई, परिश्रम एवं पुरुषार्थ का कारक माना गया है। मंगल और चन्द्र की युति से घनागम होता है। मंगल जब शनि के साथ किसी भी प्रकार का योग बनाता है, तो जातक की रुचि चिकित्सा विज्ञान में होगी। खेल, पुलिस, सेना आदि की नौकरी का कारक भी माना गया है। मंगल का अशुभ प्रभाव वैवाहिक जीवन में घातक होता है। मांगलिक योग जन्मकुण्डली में 1, 4, 7, 8, 12 भाव में मंगल के होने से बनता है। अशुभ प्रभावों से बचने के लिए लाल वस्त्र, लाल मसूर की दाल, लाल चंदन, गुड़, गेहूं, लाल कनेर, का पुष्प, मूंगा रत्न, लाल रंग का बैल या गाय आदि वस्तुओं का दक्षिणा सहित दान करें। मंगल ग्रह के स्वामी मंगल मूर्ति रूप हनुमान हैं। अत: **"ॐ नमो भगवते आंजनेनाय महाबलाय स्वाहा"** इस अष्टादश अक्षरों वाले मंत्र का दस हजार जप करना चाहिए।

लाल किताब के अनुसार मंगल को शेर बताया गया है तथा मंगल किसी भी भाव में अकेला हो, तो जातक बकरियों में पलने वाले शेर की भांति होता है। अगर जन्मपत्रिका में सूर्य-बुध की युति हो, तो मंगल का फल प्राय: शुभ होता है। परन्तु सूर्य-शनि की युति होने पर मंगल अशुभ होता पाया गया है। मंगल पर राहु की दृष्टि तथा मंगल के साथ बुध की युति भी मंगल के प्रभाव में अशुभता उत्पन्न करती है।

सातवें भवन में मंगल दाम्पत्य जीवन में कलह का कारण बनता है। अगर शुभ हो, तो विवाह के पश्चात् अवश्य ही भाग्योदय होता है। सातवें भाव में मंगल बैठा हो तथा जन्मपत्रिका में सूर्य-शनि एक साथ हों, तो ऐसा जातक मंद भाग्य वाला होता है। स्त्री का सुख पूरा होगा। पैतृक सम्पत्ति का पूरा सुख मिलता है।

मंगल सात के समय अगर गुरु बृहस्पति या शुक्र पहले भवन में हो, तों जातक को जिस भी किसी वस्तु की इच्छा हो, वह जीवन में अवश्य मिलेगी। यहां पर बैठे अशुभ मंगल के प्रभाव को दूर करने के लिए, जब कभी बहन घर आए तो उसे कुछ न कुछ मीठी वस्तु भेंट में दी जाए। इसके अलावा ठोस चाँदी रखने से भी परिवार को समृद्धि प्राप्त होगी।

राहु, मंगल पंचम में बैठे हों तो उसके लिए लाल किताब ने उपाय लिखा है कि जातक रात को सोते समय अपने सिर के नीचे ठंडा जल रखें। प्रात: उठकर भवन के मुख्य द्वार के तरफ डाल दें, जहां पर उस जल का अपमान न हो। ऐसे जातक को खाना खाते समय सौंफ अपने पास रखनी चाहिए और रोटी खाने के पश्चात् सौंफ खा लेनी चाहिए। सौंफ मंगल है जो खाना पचाने में सहयोग करती है।

भाव के अनुसार उपचार

प्रभाव भाव–झूठ न बोलें, निःशुल्क वस्तु प्राप्त न करें अन्यथा भाग्य प्रभावित होगा। मिट्टी की सुराही में शहद डालकर सुनसान स्थान में दबा दें।

चतुर्थ भाव–चिड़ियों को मीठा डालें। हाथीदांत पास रखें। अगर मंगल का अशुभ प्रभाव होने पर आग लगने की घटनाएं हों, या जातक निःसंतान हो, या स्त्री को विशेष स्वास्थ्य दोष हो, तो चीनी की खाली बोरियां छत पर रखें। मंगलवार को मिट्टी के पात्र में शुद्ध मधु भरकर श्मशान में दबा दें।

सप्तम भाव–बुध की वस्तुएं निःशुल्क न लें। कच्ची मिट्टी की दीवार बार-बार बनाकर गिराते रहने से भी शुभ फल प्राप्त होता है। जब भी सगी बहन घर आये उसे मीठे के साथ ही वापस भेजें।

अष्टम भाव–झूठ न बोलें। परंपराओं का पालन करें। अधिक क्रोधी, या अधिक नम्र स्वभाव न रखें। स्वधर्म का पालन करें। घर में पीतल के पात्र रखें। चावल, दूध और चाँदी का दान न लें।

द्वादश भाव–शत्रुओं को क्षमा करें। किसी अन्य के झगड़े में न पड़ें। घर का आंगन खुला रखें। मिस्त्री का कार्य न करें। राहु को प्रसन्न करें। स्वधर्म का पालन करें। वैचारिकता जितनी आध्यात्मिक होगी उतना ही जीवन सुखी होगा।

फलित ज्योतिष शास्त्र में उल्लेखनीय ग्रन्थों में मंगल दोष का उल्लेख नहीं पाया जाता है। दक्षिण भारतीय पुस्तक में मंगलदोष का विवरण पाया जाता है। बहुत-से व्यक्ति मंगल दोष के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी न रख प्रायः जन्मपत्री को मंगली कह देते हैं। अभिभावक भी मंगली जीवन-साथी की खोज आरम्भ कर देते हैं।

जन्मपत्रिका में जन्म लग्न से–प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में मंगल होने से मंगल दोष होता है।

भावदीपिका में लिखा है–

"लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे स्त्रीणां भातृविनाशः स्यात् पूंसां भार्या विनश्यति।"

कुछ विद्वान्‌ों का मत है कि चन्द्र लग्न से प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम या द्वादश स्थान में मंगल होने पर मंगल दोष होता है; किन्तु यह पूर्ण सिद्ध नहीं होता है। इसी प्रकार मंगल दोष होने पर जीवन-साथी का देहान्त हो जाता है। यह विश्वास भी किया जाता है, जो सर्वथा सत्य नहीं है।

लग्न का मंगल–जातक के व्यक्तित्व का सूचक है, शारीरिक गठन, चरित्र, स्वभाव का सूचक है। लग्न में मंगल क्रोधी, जिद्दी, हट्टी बनाता है। लग्नस्थ मंगल वाले दुर्घटना का शिकार अवश्य होता है। लग्नस्थ मंगल वाले स्त्री-पुरुष अपने क्रोध पर नियंत्रण नहीं रख पाते हैं। क्रोध के कारण कुछ भी कर बैठते हैं। यहां से मंगल चतुर्थ गृहस्थ जीवन पर प्रभाव–चतुर्थ भाव मन का सूचक है अतः मन को भी नियन्त्रण में नहीं रख पाते हैं। घर से बाहर रहना अधिक पसन्द करते हैं। पुनः जीवन-साथी के प्रति भी क्रोधपूर्ण व्यवहार

रखता है। अष्टम भाव पर इसका प्रभाव होता है। सैक्स की मात्रा अधिक होने के कारण इसके भीतर दैहिक सुख अत्यन्त तीव्र होता है। अगर उपरोक्त भाव में क्षीण चन्द्रमा, शनि, राहु और सूर्य का साथ होता है तो कुप्रभाव में पूर्ण सहयोग मिलता है। अतः विवाहित जीवन दुःखी हो जाता है।

द्वितीय भाव का मंगल–जीवन-साथी को स्वास्थ्य सम्बन्धी कष्ट देता है, दूसरे सन्तान के विषय में भी रुकावट उत्पन्न करता रहता है एवं धन को भी नष्ट करता है और आयु के विषय में पूर्ण रूप से बाधक नहीं बनता है । इस मंगल के प्रभाव से स्त्री-पुरुष अवैध प्रेम भी कर बैठते हैं। जिसके कारण विवाहित जीवन कष्टमय हो जाता है। अगर दूसरे पापी ग्रह का साथ हो तो तलाक भी हो जाता है।

चतुर्थ भाव–सुख भाव, भवन, समाज, मन, परिवार आदि का सूचक है। विवाहित जीवन में चतुर्थ भाव का अत्यधिक महत्व है; क्योंकि यह पति-पत्नी का मन का सूचक एवं गृहस्थ सुख को प्रकट करता है। यहां से मंगल सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है, अतः पति-पत्नी के मधुर सम्बन्ध को कम करता है। चतुर्थ मंगल की विवाहित जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका है। सुखद गृहस्थ के वास्ते मन का स्थायी होना आवश्यक है। चलायमान, उत्तेजक मन दाम्पत्य जीवन के वास्ते पूर्ण हानिकारक होता है। विवाहित जीवन में संतुलन की आवश्यकता होती है। अगर मंगल के साथ राहु होता है, या राहु का दृष्टि-योग, युक्ति तो प्रायः विवाहित जीवन विच्छेद हो जाते हैं। अगर मन के स्वामी चन्द्रमा भी पाप प्रभाव हो तो पति या पत्नी एक-दूसरे से विश्वासघात करते हैं।

सप्तम भाव–विवाहित जीवन का सबसे अहम् भाव है। इस भाव से जीवन साथी के स्वभाव, प्रेम, स्वास्थ्य, शारीरिक सम्बन्ध आदि का विचार होता है। अतः इस भाव का मंगल बहुत ही महत्वपूर्ण होता है।

अष्टम भाव का मंगल–जीवन साथी के चुनाव में यह भाव भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। इस भाव से जीवन-साथी की आयु, गुप्त मनोविचार, परदेश, विनाश, लिंग, सुख आदि का विचार होता है। अष्टम भाव में बैठकर मंगल एकादश भाव–आय, रोग, सभा आदि का सूचक है। तृतीय भाव–साहस, हिम्मत, सहयोग आदि का सूचक है।

मैंने प्रायः पतिता स्त्री के जन्मांग में अष्टम मंगल को देखा। अष्टम मंगल प्रभावित स्त्री प्रायः घर छोड़कर भाग जाती है। दूसरे के साथ शारीरिक सम्बन्ध भी स्थापति कर लेती है। यह घटना पुरुषों के साथ भी होती है।

द्वादश भाव का मंगल–शय्या-सुख, भोग-रोग, काम, बंधन, दाम्पत्य सुख आदि पर पूर्ण प्रभाव होता है। यहां से मंगल तृतीय, षष्ठ भाव एवं सप्तम भाव को देखता है। अगर इस मंगल पर पाप ग्रह का प्रभाव हो तो ऐसे स्त्री-पुरुषों के भीतर काम अधिक होता है। दैहिक सुख के आगे कुल मर्यादा का भी ध्यान नहीं रखते। अगर पूर्ण-पाप प्रभाव में हो तो विवाहित जीवन विच्छेद होने का योग बन जाता है। दूसरे के साथ जीवन-यापन भी करते हैं।

विद्वान् ज्योतिषगण मंगल दोष के विषय में पूर्ण विचार देने से पूर्व भली-भांति से जन्मपत्रिका का अध्ययन कर लें। आपकी त्रुटी से किसी का सुखी जीवन दुःखी हो सकता है।

अगर मंगल चतुर्थ और सप्तम भाव में हो और किसी भी रूप में किसी क्रूर ग्रह से युक्त, मध्यस्थ दृष्टि न हो तो मंगल दोष नहीं होता है। मंगल गुरु बृहस्पति सप्तम होने से मंगल दोष लगता है।

अगर स्वराशि के मंगल 1, 4, 7, 8 या 12 भाव हों तो मंगल दोष नहीं लगता है। अगर वर और कन्या दोनों के जन्मांग में मंगल द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम, द्वादश और लग्न में हो तो मंगल दोष समाप्त हो जाता है।

अगर मंगल जन्मपत्री में 1, 2, 4, 7, 8, 12 भाव में हो और कन्या या वर की जन्मपत्री में शनि 1, 2, 4, 7, 8, 12 भाव में हो तो भी मंगल दोष नहीं लगता है। अगर मंगल शनि के राशि में हो तो भी मंगल दोष समाप्त हो जाता है।

आइए मंगल के साथ अन्य ग्रहों के रंगों का परिचय प्राप्त करें। ग्रहों के रंग इस प्रकार हैं–

नेपच्यून–भूरा, हरा, नीला मिश्रित; शनि–कला, गेरूआ; शुक्र–नीला, सफेद, बैंगनी; गुरु–केसरी, संतरी, पीला; बुध–हरा; चन्द्रमा–सफेद, सूर्य, सुनहरा; मंगल–लाल; राहु–काला, सफेद; यूरेनस–मिश्रित। केतु–मिश्रित, सफेद, काला, पीला।

उपरोक्त प्रत्येक ग्रह की श्रेणी में एक विशिष्ट रंग आता है। अब इसका प्रयोग करने के लिए यह आवश्यक है कि इन सब श्रेणीबद्ध रंगों की विशिष्टता और अशुभता को जाना जाए। जिस जातक से हमें हाल-चाल जानना हो उससे उसके प्रिय रंग के विषय में पूछें। मान लो वह बताता है–लाल, तो समझ लो कि वह मंगल-प्रधान जातक है। मेष अथवा वृश्चिक उसकी राशि है। सम्भवतः वह मार्च-अप्रैल अथवा अक्टूबर-नवम्बर महीने के मध्य उत्पन्न हुआ हो।

इसके विपरीत जो जातक नया भूरा-हरा-नीला मिश्रित रंग पसंद करते हैं, उनका स्वामी ग्रह नेपचून होता है। यह ग्रह रहस्यपूर्ण जीवन और घटनाओं का सूचक है। इसके प्रभाव क्षेत्र में उत्पन्न जातक को जीवन की विषमताओं और सुखद आश्चार्यों के मध्य गुजरना पड़ता है। यात्राएं अधिक होती हैं। मादक पदार्थ, सम्मोहन, जादू, करिश्मा तथा सट्टे आदि पर धन व्यय होता है। कल्पनाओं में रहते हैं। स्वभाव से निर्भीक, चिंताओं से मुक्त परन्तु संवेदनशील होते हैं। 25वें वर्ष तक उतार-चढ़ाव देखने के पश्चात् 35वें वर्ष में इनका जीवन स्थिर होने लगता है।

मंगल अशुभ अथवा बद होने पर जातक धनवान होते हुए भी साधारण जीवन व्यतीत करेगा तथा धन का कभी सदुपयोग नहीं कर पाएगा। पारिवारिक विवाद उत्पन्न होंगे तथा अपने दिए हुए वचन से जातक मुकर जाएगा। मंगल बद हो तथा शुक्र शत्रु राशि में बैठा हो, तो प्रायः गृहस्थी बर्बाद हो जाती है। जातक को लड़ाई-झगड़े का भय होता है।

मंगल अगर शुभ हो तब जातक को पैतृक सम्पत्ति का सुख प्राप्त होता है। वह स्वप्रयासों से उन्नति करके धनी बनता है। उसे सम्पत्ति से लाभ होता है। अपने अधीनस्थ व्यक्तियों का हर प्रकार से सहयोग एवं सुरक्षा करेगा। ससुराल अच्छी होगी। जातक पाक कला में निपुण होगा। अगर शुभ मंगल द्वितीय भाव में हो, तो ऐसा जातक धनी होगा।

कुटुम्ब बड़ा होगा एवं सम्पत्ति का सुख भी प्राप्त होगा। मितव्ययी होगा तथा धन व्यय करने से पहले सोच-विचार करेगा। अपने विचारों पर स्थिर रहेगा।

अंत में पारम्परिक वैदिक ज्योतिष के अनुसार–

मंगल–मेष मूल त्रिकोण 12 अंश स्वक्षेत्र 18 अंश मंगल जहां होता है वहां से 4–8–7 भाव से पूर्ण दृष्टि से देखता है। 5 और 9 भाव को द्विपाद और 3–10 भाव को पाद दृष्टि से देखता है।

मंगल मकर राशि में 0.28 अंश तक उच्च का होता और कर्क राशि 0.28 अंश तक नीच का होता है। मंगल दो राशियों का स्वामी है–अग्नि और जल। मेष अग्नि और वृश्चिक जल तत्व का है। अतः जातक जीवन में मंगल दो प्रकार की भूमिका निभाता है। कठोर और दयालू। दाहक और शीतल। सुख और दुःख।

मंगल तरूण ग्रह है। युवा अवस्था का सूचक है। इसके नेत्र लाल हैं। स्वभाव में उदारता एवं कठोरता दोनों हैं। त्रिदोष में पित्त की प्रधानता है। शरीर गठित होता है। चंचल स्वभाव का होता है। हड्डी की भीतर की शक्ति है। मंगल 18 से 20 वर्ष की आयु का सूचक है। ग्रीष्म ऋतु का सूचक है। मंगल मानव में उत्तेजना उत्पन्न करता है। स्त्री रजस्वला भी मंगल के कारण होती है। मंगल राष्ट्रभक्त होता है। देश, समाज, राष्ट्र के लिए अपने जीवन को पूर्ण रूप से समर्पित कर देता है। समय को भली-भांति समझता है। सत्य का पालना करता है। पूर्ण त्यागमय जीवन भी यापन करता है। इसके भीतर आध्यात्मिक चेतना भी होती है। जादू-टोना, तंत्र-मंत्र जानता है अथवा अनुष्ठान करता है।

O

24 लाल किताब और आपका भवन

जन्मपत्रिका के माध्यम से किसी भी व्यक्ति के भवन की स्थिति को बतलाया जा सकता है। लाल किताब में भी इस संदर्भ में विवरण दिया गया है। जन्मपत्रिका के पहले भाव से आगे चलकर आठवें घर तक जो ग्रह बैठे हों, उनके कारकत्व के अनुसार स्थितियां भवन से बाहर निकलने पर दायीं ओर उपस्थित होंगी। इसी प्रकार अगर जन्मपत्रिका में बारह से लेकर नौवें भाव तक जो ग्रह उपस्थित हों, भवन से निकलने पर बाएं हाथ की ओर उन ग्रहों से प्रभावित मकान होंगे।

लक्ष्मी अत्यन्त चंचल होती है और खूब कमाने के पश्चात् भी परिवार में बचत नहीं रहती, जिससे लोग दुःखी रहते हैं। धन कमाना एक अलग बात है और उसका संचय करना दूसरी बात है। धन के साथ अगर शास्त्र सम्मत योजना भी जुड़ी हो तो न केवल धन संग्रहण बल्कि उसके व्यय और बचत पर नियंत्रण किया जा सकता है। ऋषियों ने वैदिक विद्याओं में उन सब बातों का निवेश कर दिया था जो धन के आगमन, धन का संग्रहण, धन का नियोजन और धन के रूप परिवर्तन के नियमों के रूप में आज भी उपलब्ध है। वास्तु से बहुत शीघ्र किसी चमत्कार की आशा नहीं करनी चाहिए, परन्तु यह अवश्य ज्ञात किया जा सकता है कि किस दिशा से, किस माध्यम से, किस ग्रह से कितना धन और किस रूप में आएगा?

भवन की दिशायें



आइए अब थोड़ी ग्रहों की जानकारी लेते हैं!

राहु

(वयस्कों से सम्बंधित रोग, झगड़े राहु, छत, बलाये बद) बाहर से भीतर जाते समय उस भवन में दाएं हाथ पर कोई गड्ढा होगा। बड़े दरवाजे की दहलीज के बिल्कुल नीचे से भवन का पानी बाहर निकलता होगा। भवन के सामने का पड़ौसी संतानरहित होगा या उस मकान में वीरानी होगी। भवन (मकान) की छतें अनेक बार बदली गई

हों, पर दीवारें न बदली गई हों। भवन के साथ कोई भट्टी हो, कोई कुआं, गंदा पानी जमा करने का गड्ढा समीप में ही हो। भवन में नाली का गंदा पानी जिस तरफ निकलता हो वह दिशा जन्मपत्रिका में राहु की स्थिति को दिखाती है। अगर भवन में नाली न हो तो धुआं निकलने की जगह राहु की स्थिति को बतलाती है।

छाया ग्रह केतु

बच्चों से सम्बंधित केतु खिड़कियां, दरवाजे बताएगा। बुरी हवा, धोखे, कोने का भवन होगा। तीन तरफ भवन एक तरफ खुला या तीन तरफ खुला एक तरफ मकान या स्वयं उस भवन की तीन दिशाएं खुली होंगी। केतु के भवन में नर संतान चाहे लड़के, चाहे पोते तीन से अधिक कभी नहीं होंगे। अगर एक लड़का तो तीन पोते अगर तीन लड़के तो एक पोता या एक ही लड़का और एक ही पोता होगा। इस भवन के दो तरफ कोई मार्ग होगा, साथ का भवन कोई न कोई अवश्य खण्डहर भवन गिरा हुआ अथवा कुत्तों के आने-जाने का खाली मैदान होगा। अगर भवन में रोशनदान अधिक हों, तो जिस कमरे अथवा जिस स्थान पर सबसे कम रोशनदान होंगे, वह स्थान केतु का होगा।

सेनापति मंगल

मंगल ग्रह गुरु बृहस्पति चन्द्र, सूर्य के साथ चलता है, मगर उनके दाएं या बाएं सुरक्षाकर्मी के समान होगा। भवन का द्वार उत्तर-दक्षिण होगा, कच्चे या पक्के होने की शर्त अनिवार्य नहीं। स्त्री-पुरुषों, जानवरों के आने-जाने की बरकत देगा।

भवन का द्वार केवल दक्षिण में होगा। भवन के पास अथवा भवन के ऊपर किसी वृक्ष का साया, हलवाई की दुकान और भट्टी अवश्य होगी। मकान के साथ श्मशान होगा। निःसंतानों का साथ होगा और हो सकता है कि वहां रहने वाला स्वयं भी निःसंतान हो।

तेजस्वी सूर्य

सूर्य रोशनी का मार्ग बतलाएगा। भवन का द्वार पूर्व की ओर होगा, आंगन भवन के मध्य में होगा। आग के सम्बंध आंगन में होंगे। हो सकता है कि पानी का सम्बंध भवन से बाहर निकलते हुए दाएं हाथ पर ही हो। इधर-उधर किसी और जगह न होगा।

कोमल चन्द्र

चन्द्र धरती तथा सम्पत्ति का स्वामी है और सूर्य से मिलता है। भवन के प्रथम अथवा बाहर की चारदीवारी के साथ लगा या लगता हुआ और अगर दूर भी हो, तो जातक के अपने कुछ कदमों तक उस भवन से और उस मकान के बिल्कुल सामने कुआं या तालाब आदि या बहता हुआ पानी अवश्य होगा। धरती के भीतर से प्राकृतिक पानी को चन्द्र लेंगे, बनवाटी नल चन्द्र न होगा। झरने आदि भी सौम्य चन्द्र गिने जाते हैं।

कुमार बुध

भवन के चारों ओर की सीमा में हर ओर से खाली या खुला होगा। अकेला ही होगा, वृक्षों का साथ होगा। गुरु बृहस्पति अथवा चन्द्र के साथ बुध का साथ कभी न होगा और अगर होगा तो वह भवन बुध की दुश्मनी का पूरा प्रमाण देगा।

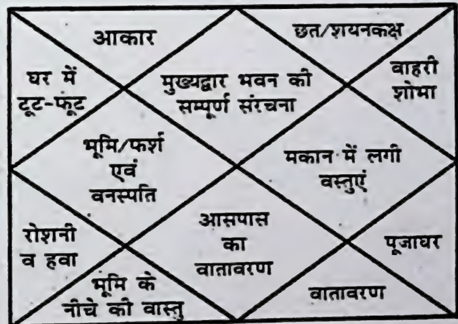
गुरु बृहस्पति

गुरु हवा के मार्गों से सम्बंधित होगा। भवन का आंगन किसी भी कोने में होगा। चाहे प्रारम्भ में, चाहे अंत में, चाहे दाएं या बाएं, मगर मध्य में कभी न होगा। भवन का द्वार उत्तर-दक्षिण न होगा। हो सकता है कि पीपल का पेड़ या कोई मंदिर आदि भवन में या साथ ही हो। इसके साथ ही राजदरबार से सम्बंधित वस्तुएं जहां रखी होती हैं, वहां पर भी गुरु बृहस्पति का प्रतिनिधित्व होता है। भवन में जो भी वस्तुएं बाहर से लाकर रखी गई हों और भवन में रहने वाले प्राणी चन्द्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। भवन में बनी हुई कच्ची दीवार, घर में पाली हुई गाय या अन्य सुख-समृद्धि के सामान शुक्र का स्थान बतलाते हैं।

पापग्रह शनि

भवन में यह शनि चारदीवारी से सम्बंधित होगा। सूर्य के एकदम विपरीत चलता है, भवन का बड़ा दरवाजा पश्चिम की ओर होगा। स्मरण रखें भीतर के द्वार किसी भी ग्रह में नहीं माने गए हैं। भवन की अंतिम कोठरी जो बाहर से भवन के भीतर प्रवेश करते समय दायें हाथ की ओर हो, पूरी अंधेरी होगी। जब तक उसमें रोशनी का प्रबंध न हो शनि का फल उत्तम रहेगा। भवन में लकड़ियों का स्थान अथवा लोहे का सामान जिस जगह हो, वह शनि की स्थिति का संकेत करता है।

भवन को ग्रहों के अनुसार बनाने का एक मात्र उद्देश्य सुख-समृद्धि धन प्राप्त करना है। आइए इस रहस्य को भी प्रकट करें। चंचला लक्ष्मी के सबसे अधिक उदाहरण अग्निकोण से प्राप्त होते हैं। इस कोण में ऊर्जा देने की क्षमता होती है। जो भवन के स्वामी अग्निकोण में सोते-बैठते हैं या कार्यालय के प्रमुख इस कोण में अपना चैम्बर बनाते हैं, उनमें धन कमाने की प्रवृत्ति आ जाती है। ऐसा तब भी पाया गया है, जब पूरे भूखण्ड में केवल पश्चिम दिशा के मध्य में निर्माण हो और दक्षिण दिशा के मध्य में बिल्कुल निर्माण नहीं हो। अग्निकोण से प्राप्त धन प्रायः चंचल होता है और अगर उस धन का व्यय किसी कारण से न होने पाए तो अनेक प्रकार की दुर्घटनाएं हो सकती हैं। अग्निकोण से आपतित दुर्घटनाएं प्रायः संतानों पर आती हैं, परन्तु अगर दक्षिण दिशा के द्वार के या दक्षिण-पश्चिम दिशा से पश्चिम दिशा की ओर निकलते ही द्वार हों या इन स्थानों में दूषित रचनाएं हों तो दुर्घटनाएं या मृत्यु न होकर आर्थिक हानि के रूप में परिणाम मिलते हैं। अगर इन स्थितियों में परिवर्तन लाए जा सकें तो धन दुःख का कारण नहीं बनता है।



पश्चिम दिशा के मध्य में निर्माण और द्वार हो तो धन आता है। पश्चिम दिशा से आए हुए धन में विशेष बात होती है कि अगर ऐसा व्यवसाय किया जाए कि दैनिक धन संग्रहण सम्भव हो तो व्यवसाय बहुत तीव्रता से चलता है। धन

के उचित प्रबंध के लिए संतानों को गुणवान बनाना आवश्यक है अन्यथा धन से उत्पन्न दोष घर में प्रवेश कर जाएंगे। इस धन में भागीदारी की अपार सम्भावनाएं होती हैं।

ऐसे में अगर दक्षिण दिशा में भी कोई अनुचित द्वार हो जाए तो यह महान विनाश का कारण बन सकता है। पश्चिम दिशा मध्य में अगर दोषपूर्ण रचनाएं बना ली जाएं, जिनमें जल संग्रहण की व्यवस्था, अधिक ताप उत्पन्न करने वाली व्यवस्थाएं जैसे कारखानों में भट्टी या स्मैल्टरा तथा बहुत अधिक वाइब्रेशन उत्पन्न करने वाली रचनाएं हों तो धन व्यवस्थाएं दूषित होने लगती हैं।

भवन के भीतर लगाई हुई तुलसी धन, पुत्र प्रदान करने वाली होती है। तुलसी के दर्शन से सुवर्णदान का फल प्राप्त होता है। मकान के पूर्व दिशा और दक्षिण भाग में मालती, जूही, कुन्द, माधवी, केतकी, नागेश्वरी, मोतिश्या, श्याम, धतूरा, मौलसिरी और अपराजिता लगाए जाएं तो ऐसे पुष्प वाले उद्यान को शुभ माना गया है। भवन-निर्माण में सेमल, इमली, खजूर, निर्गुण्डी, गूलर, धतूरा। बरगद और रेण्ड—इन लकड़ियों को कभी काम में नहीं लाया जाना चाहिए। निषिद्ध वृक्षों को भवन के समीप नहीं लगाना चाहिए। पाकर, गूलर, आम, नीम और कांटे वाले दग्ध वृक्ष, वट वृक्ष (पीपल), कैथ, अगस्त्य, ताड़, और इमली अशुभ माने गए हैं। अगर ये वृक्ष दक्षिण या पश्चिम में हों तो अवश्य हानि कराते हैं। बबूल, दूध वाले वृक्ष, कपास, निर्गुण्डी, आंवला, वट, अरण्ड और दुर्गन्धयुक्त वृक्ष दातुन के लिए निषेध बताए गए हैं। तुलसी की मिट्टी लगाकर स्नान करना शुभ माना गया है। आह्वान में पुष्प, आसन में कुशा और पाद्य में श्यामदूर्बा और पराजिता का प्रयोग शुभ माना गया है। अर्घ्य और पुष्पांजलि में सुंदर और गंध वाले पुष्पों का प्रयोग शुभ माना गया है। स्नान के जल में चंदन, खस, कपूर, कुमकुम और अगरु, मधुपर्क में आंवला तथा कमल, धूप में अष्टगंधा और दीपक में कपूर का प्रयोग किया जाता है। पीले रंग का यज्ञोपवीत वस्त्र में पीताम्बर, भूषण में सोना और गंध के स्थान पर कुमकुम और चंदन का प्रयोग किया जाता है। फूलों में तुलसी की मंजरी, अश्वनों में चावल और नैवेद्य में भांति-भांति के अन्न काम में लिए जाते हैं। ताम्बूल में लौंग और इलायची मिलाना शुभ माना गया है। अत: इनको उत्पन्न करना भी शुभ माना गया है।

आयुर्वेद में रोहिणी, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, मूल, विशाखा, पुष्य, श्रवण, अश्विनी और हस्त नक्षत्र में वृक्षों को उगाने के लिए श्रेष्ठ माना है, हालांकि कुछ अन्य वनस्पतियों के लिए जो कि औषधि के प्रयोग में आती हैं, कुछ और नक्षत्रों को भी अच्छा बताया गया है।

भवन में नारियल का वृक्ष धनप्रदायक होता है। नारियल का वृक्ष अगर आश्रम या ईशान कोण या पूर्व दिशा में हो, तो पुत्र देने वाला होता है। अगर पूर्व दिशा में आम का वृक्ष हो तो संपत्तिदायक है। बेल, कटहल, जंभीरी नींबू और बेर के वृक्ष पूर्व दिशा में संतान देते हैं, दक्षिण में धन देते हैं तथा किसी भी दिशा में लगाने पर प्रचुर धन संपत्ति देते हैं। इन वृक्षों से गृहस्थ की उन्नति होती है। जामुन, अनार, केला तथा आंवले के वृक्ष पूर्व दिशा में बंधु-बांधवों को बढ़ाने वाले और उनसे प्रेम रखने वाले होते हैं। अगर दक्षिण में स्थित हो, तो मित्रों में वृद्धि करते हैं। सुवाक वृक्ष दक्षिण में धन और पुत्र देने वाले होते हैं। पश्चिम में हर्ष प्रदान करते हैं तथा ईशान कोण में विशेष शुभ होते हैं।

प्रिय पाठकों को इस विषय में अनेक व्यक्तियों के जन्मपत्र और उनके भवन की स्थिति को देखकर कुण्डली बनाकर परस्पर मिलान करके दीर्घ अनुभव लेकर इस दिशा में आगे प्रयत्न करना चाहिए।

लाल किताब और आपका भवन

पहला भाव–बैठक, ड्राइंगरूम, शेष सारा मकान।

दूसरा भाव–भवन किस प्रकार का होगा? छोटा या वड़ा।

तीसरा भाव–भवन में उपलब्ध सुख के साधन। तृतीय भाव का सम्वंध भवन में रखे शस्त्रों से है। यहां पर अगर शुभ ग्रह हो, तो घर में वेकार हथियार रखना अशुभ होता है।

चतुर्थ भाव–पूर्व एवं उत्तर दिशा का कारक है। पेड़ और पौधों में फलों के वृक्षों का कारक यह भवन है। जल रखने का स्थान, नल का कारक है।

पंचम भाव–भवन के भीतर जहां से वायु और प्रकाश आता हो। इसका सीधा सम्वंध पंचम भाव से है।

षष्ठ भाव–नाना का घर, भानजे का घर सुन्दर होगा अगर छठे भाव में शुभ ग्रह हों तब–वर्ना नहीं।

सातवां भाव–लड़कियों के रिश्तेदारों के भवन की स्थिति बतलाता है।

आठवां भाव–भवन कैसा होगा? स्मृद्ध या उजाड़ होगा।

नौवां भाव–वृक्ष या पौधे की जड़, भवन त्रिकोण, वर्गाकार होगा।

दसवां भाव–भवन में लगे सामान; जैसे लकड़ी, ईंट, लोहा, पत्थर को दर्शाता है।

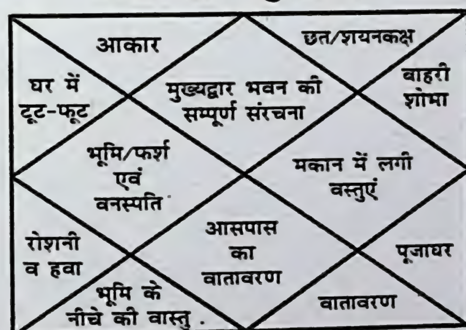
ग्यारहवां भाव–भवन की वाहरी शोभा दिखाता है। भवन की पशिचमी दीवार का प्रतिनिधि भाव है।

बारहवां भाव–सोने या विश्राम का स्थान; अर्थात् श्यनकक्ष, पड़ौसी से सम्वंध तथा पड़ौसी का भवन कैसा होगा?

इस प्रकार आप कुण्डली के माध्यम से भवन की स्थिति जान सकते हैं। इसी के आधार पर लाल किताव के उपाय भी कर सकते हैं।

भवन की कुण्डली अग्र प्रकार से समझें–

भवन की कुण्डली



25 ग्रहों की युतियां और सरल उपाय

लाल किताब ज्योतिष प्रेमियों के मध्य एक अत्यन्त लोकप्रिय पुस्तक है। लाल किताब की चर्चा उसके सरल उपायों को लेकर भी की जाती है। ग्रह शांति के लिए लाल किताब के उपायों को ज्योतिष प्रेमी बड़े विश्वास से बतलाते हैं। सबसे प्रमुख बात उपायों की सरलता एवं उस पर होने वाला कम व्यय है। ज्योतिष प्रेमी लाल किताब के उपायों को जानने के लिए उत्सुक भी रहते हैं।

ब्रह्मांड (Zodiac) के कण-कण में व्याप्त नारायण की तीन शक्तियों को काल ही गति देता है। तीनों लोकों में काल का साम्राज्य सर्वोच्च है। सृष्टि की हर रचना मरणशील है, परन्तु काल (समय) अनंत है, अनादि है।

मृत्युलोक पर काल की रहस्यमयी गति मानव मस्तिष्क को सदा ही भ्रमित करती रहती है। सुख के पलों में समय भागता अनुभव होता है, परंतु वेदना के समय में इसकी गति धीमी प्रतीत होती है। ज्योतिषीयों के अनुसार इस समय का सीधा सम्बंध चारों ओर घूमते ग्रहों की गति से है। 12 राशियों व 27 नक्षत्रों से सजे इस चक्र में नवग्रहों का भ्रमण उस घड़ी को दर्शाता है, जो सूर्य के प्रकाश से "अहोरात्रि" की प्रक्रिया को जन्म देकर समय का बोध कराती है। "अहो" का अर्थ है दिन यानि प्रकाश का आरम्भ तथा "रात्रि" का अर्थ है रात यानि अंधकार का उदय। अगर "अहोरात्रि" का पहला तथा आखिरी अक्षर हटा दिया जाए, तो बचता है—होरा यानि दिन के उदय और रात्रि के प्रारम्भ के मध्य का समय। संसार में, पर होरा जन्म और मृत्यु के मध्य झूलते प्रारब्ध को दर्शाता है। ज्योतिषियों ने काल के इस खण्ड में कालपुरुष की कुण्डली की रचना की। ज्योतिष का सम्पूर्ण रहस्य कालपुरुष की कुण्डली में ही छिपा है।

27 नक्षत्रों की छाया में घूमती 12 राशियां कालपुरुष की देह के 12 अंगों को दर्शाती हैं। क्रमानुसार मेष से मीन तक ये राशियां कालपुरुष के मस्तिष्क, मुख, हाथ, दिल, पेट, कूल्हे, पेडू, लिंग, जांघें, घुटने, लात व पांव का उद्घोष करती हैं। होराशास्त्र के अनुसार, संसार के पूर्व क्षितिज पर मेष राशि के उदय के साथ ही कालपुरुष की आत्मा (सूर्य) ने देह में तथा देह ने लग्न के रूप में कुण्डली के प्रथम भाव में प्रवेश कर पहली सांस ली। शेष 11 राशियां भी क्रमानुसार कुण्डली के ग्यारह भावों में समा गयीं। यही प्रारम्भ था इस नश्वर संसार में जीवन का।

सतत गोचर में आज भी ये ग्रह कालपुरुष के ऊर्जा केन्द्रों को प्रभावित कर जीवन का संचालन कर रहे हैं। कालपुरुष की कुण्डली ज्योतिष शास्त्र की रचना का आधार है। मानव योनि में कुण्डली के 12 भाव जन्म से मृत्यु तक प्रारब्ध के विभिन्न रूपों को दर्शाते हैं। जन्म के समय इन भावों में समाई राशियां प्रारब्ध को मानव देह से जोड़ती है, जिसके द्वारा जातक सुख या दुःख का अनुभव करता है। नवग्रहों की विभिन्न भावों में स्थितियां प्रारब्ध को ही दर्शाती हैं, जो दशानुसार नवग्रहों से प्रभावित होकर जातक

के पुरुषार्थों को जगाते हैं। पुरुषार्थ से कर्म का निर्माण होता है तथा कर्म से प्रारब्ध का। जातक की जन्मपत्रिका में वह राशि जो शुभ ग्रहों के प्रभाव में है, जातक के उस अंग को शक्ति प्रदान करती है, इसी प्रकार वे राशियां जो क्रूर ग्रहों के प्रभाव में हैं–जातक के अंगों को रोग प्रदान करती हैं।

लाल किताब में फलादेश के सिद्धांतों को समझने से पूर्व ग्रहों एवं भावों की प्रवृत्ति का पूर्णरूपेण अध्ययन अनिवार्य रूप से करना होगा। लाल किताब में लग्न में सदैव एक अंक लिखा जाता है। किसी भी जातक की कुण्डली लाल किताब के अनुसार बनाने के लिए पारम्परिक ज्योतिष के अनुसार बनायी गयी कुण्डली में ग्रह स्थिति उन्हीं भावों में रहती है, केवल कुण्डली के विभिन्न भावों में अंकित संख्या परिवर्तित हो जाती है।

मनीषियों के अनुसार, समय की दो प्रमुख विशेषताएं ये हैं–1. निरंतर गतिशीलता और 2. समय अपनी निश्चित गति से सदैव चलता रहता है और वह परस्पर विरोधी गुण-धर्मों को आश्रय देता है। इसलिए एक ही समय में जन्म एवं मृत्यु, हार एवं जीत, लाभ एवं हानि और सुख एवं दुःख जैसी परस्पर विरोधी घटनाएं होती हैं। वस्तुतः समय को इन परस्पर विरोधी घटनाओं के सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव से बल मिलता है जिससे उसमें गतिशीलता बनी रहती है। इस प्रकार समय का स्वभाव है कि वह एक ही समय में कुछ लोगों को शुभ और कुछ लोगों को अशुभ लगता है।

यह समय किसके लिए शुभ और किसके लिए अशुभ है, इसका निर्णय परिणाम पर आधारित है। जिस जातक को इच्छित परिणाम मिलता है उसके लिए वह समय शुभ और जिसको अनिच्छित परिणाम मिलता है, उसके लिए वह समय अशुभ होता है। इस प्रकार इच्छाओं की पूर्ति हो, वह समय शुभ और जब इच्छाओं की पूर्ति न हो, वह समय अशुभ माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार दिन के विभिन्न समयों को भिन्न-भिन्न ग्रहों का प्रतिनिधि माना जाता है। सूर्य निकलने के पश्चात् दिन का प्रथम भाग गुरु बृहस्पति के आधिपत्य में होता है। दोपहरबाद का समय सूर्य का कहलाता है। चाँदनी रात चन्द्र का प्रतिनिधित्व करती है। रात्रि में चाँदनी के अभाव में समय का प्रतिनिधित्व शुक्र करता है। काली रात में जब बादल आकाश में छाए हुए हों, तो उस दिन का प्रतिनिधि शनि होता है। रात्रि से पहले संध्या का समय राहु का होता है। प्रातःकाल सूर्योदय का समय केतु का प्रतिनिधित्व करता है। दोपहर का समय मंगल का प्रतिनिधित्व करता है।

मंत्रों में अथाह शक्ति होती है और इसके द्वारा रोगों का निदान सम्भव है। कहा जाता है जो मन को स्पंदित कर दे, वही मंत्र है। ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार जिस ग्रह का अधिकार प्राणी के जिस अंग पर होता है, वह उसी अंग को दुष्प्रभावित करता है और उसी ग्रह की दशा, महादशा, अंतर्दशा, मारकदशा, अंतर, प्रत्यंतर आदि में यह अपना प्रभाव दिखाता है। ज्योतिष में यह स्पष्ट वर्णन भी है कि कौन-सा रोग किस ग्रह के अशुभ होने से होता है और इसका निदान क्या है?

ज्योतिष में जातक के शरीर के रक्त पर मंगल का अधिकार माना जाता है। जन्म-पत्रिका में मंगल तथा उसके साथ बैठने वाले अन्य ग्रहों की स्थिति को देखकर यह पता लगाया जा सकता है कि किसी जातक को रक्तचाप होने की सम्भावना है या

नहीं? कुण्डली में मंगल अगर बलवान् हो और क्रूर अथवा अग्नि तत्व प्रधान ग्रहों के साथ बैठा हो तो उच्च रक्तचाप तथा अगर निर्बल हो और क्षीण चंद्र के साथ बैठा हो, तो निम्न रक्तचाप देता है। मंगल को मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी माना जाता है। कालपुरुष की कुण्डली में ये राशियां क्रमशः सिर और गुप्तांगों का प्रतिनिधित्व करती हैं। स्त्री जातक की कुण्डली में चन्द्र-मंगल के योग से मासिक धर्म होता है। यहां अगर मंगल बद हो, तो रक्त में विकार उत्पन्न करता है। अगर जन्मपत्रिका में षष्ठ भाव में शनि के होने और शुक्र के दुष्प्रभावी होने के कारण होती है। इसमें अगर मंगल बद हो, तो रक्त में विकार उत्पन्न करता है। अगर जन्मपत्रिका में षष्ठ भाव में शनि के होने और शुक्र के दुष्प्रभावी होने के कारण होती है। इसमें अगर मंगल भी शामिल हो, तो ब्लडशूगर की सम्भावना बलवती हो जाती है। अतः यदि केवल मधुमेह हो, तो शुक्र और यदि ब्लडशूगर हो, तो मंगल एवं शुक्र दोनों की शांति करनी चाहिए। हालांकि इस रोग में प्रधानता शुक्र की ही रहती है क्योंकि ज्योतिष में शुक्र को जननांगों और वीर्य का कारक माना जाता है। इस तरह शुक्र के अशुभ होने पर गुप्त रोगों की ही सम्भावना रहती है। अतः ऐसे जातकों को शुक्र की आराधना करनी चाहिए। जातक के हृदय पर सिंह राशि का प्रभाव होता है, जिसके स्वामी राजा सूर्य माने जाते हैं। अतः हृदय से सम्बंधित रोगों का कारक सूर्य को माना जाता है। कुण्डली में यदि सूर्य पाप से आक्रांत हो या शनि के साथ हो, तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।

लाल किताब की एक विशेषता यह भी है कि लाल किताब में दिए गए सूत्रों के आधार पर ज्योतिषी ऐसे जातक को भी उपाय बता सकता है जिसकी जन्मपत्रिका न हो।

लाल किताब में ग्रहों की स्थिति को समझने के लिए पर्याप्त चिन्तन करना चाहिए तभी लाल किताब के उपाय समझ में आ सकते हैं। लाल किताब में ग्रह अपना भाव बनाकर कारकत्व भी बदल देते हैं। चौथे घर में चन्द्रमा को माता का प्रतिनिधि माना जाता है, वहीं छठे भाव में बैठा चन्द्रमा नानी का प्रतिनिधि भी बन जाता है। बारहवें घर में बैठा चन्द्रमा स्वास्थ्य का प्रतिनिधि होता है। इस प्रकार विभिन्न भावों में ग्रहों की स्थिति उनके कारकत्व में भिन्नता उत्पन्न कर देती है। लाल किताब में उपायों का विचार करते समय इसका ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। लाल किताब में ग्रहों की स्थिति को व्यावहारिक रूप से समझने के लिए ग्रहों के अशुभ होने की निशानियां भी बतायी गयी हैं, जिनको पहचानकर सम्बंधित ग्रहों का सटीक उपाय किया जा सकता है।

लाल किताब में जातक को अच्छा इन्सान, गृहस्थ बनने के ऊपर बल दिया गया है, अगर मनुष्य अच्छा गुण अपना लेता है तब उसकी बहुत-सी परेशानी कम हो जायेगी। लाल किताब ने हाथ के नाखून को राहु माना है, अब अगर कोई जातक अपना नाखून बढ़ा लेता है तब समझो उसके ऊपर राहु का बुरा प्रभाव पड़ना प्रारम्भ हो जाएगा क्योंकि उसके नाखून में गन्दगी चली जायेगी और जो कुछ खाये-पीयेगा उसके शरीर के भीतर गन्दगी जाकर रोग उत्पन्न कर देगी। मनुष्य जैसा खान-पान बना लेता है उसका प्रभाव उसके ऊपर पड़ना शुरू हो जाता है।

लाल किताब ने शुक्र को पत्नी और राहु को राक्षस माना है। अब अगर किसी जातक की कुण्डली में शुक्र, राहु एकसाथ बैठे हैं या उनकी दृष्टि में बैठे हैं और जातक की पत्नी नाखून बढ़ाना शुरू कर देगी या पत्नी दिन में काला सुरमा डालकर दिन भर आंखें झपकाती फिरेगी तब जातक स्वयं परेशानी में आ जाएगा।

जन्मपत्रिका में शनि छठे घर में बैठा होगा तब उस जातक का मकान या तो गली के अन्त में होगा या दो गलियों वाला मकान होगा; अर्थात् उसका मकान दो गलियों के मध्य में होगा।

जहां पर दो हकीम बैठते हैं उनके विचारों में अन्तर होता ही है, इसी प्रकार अलग-अलग ज्योतिषियों के विचारों में कुछ न कुछ फर्क होता है लेकिन हर ज्योतिषी का अपना-अपना अनुभव होता है, उनमें से जो अच्छा लगे उसे अपना लें, जो अच्छा न लगे उसे छोड़ दें।

ज्योतिष के अनुसार वैज्ञानिक बनने के लिए परिस्थितियां और गुण प्रदान करने में ग्रहों की महती भूमिका होती है। वैज्ञानिक बनने के ज्योतिषीय योग इस प्रकार हैं–

नवांश कुण्डली में शुक्र पराक्रम भाव में बैठकर शुभ मंगल से दुष्ट हो, तो जातक परिश्रमी और व्यवसायी होगा। लाभेश सूर्य अष्टमस्थ होकर धन भाव में स्थित हो और पराक्रम को देखे, तो जातक को शोध से यश दिलाता है।

वैज्ञानिक बनने के लिए आवश्यक है कि जातक में तीक्ष्ण बुद्धि के साथ-साथ कठिन परिश्रम की भी क्षमता हो। इसके लिए कुण्डली में मंगल और बुध का लग्नेश होना अनिवार्य है।

दशम भाव में पंचमेश शुक्र का उच्च राशिस्थ होना जातक को मेधावी बनाकर उत्कृष्ट बुद्धि प्रदान करता है। ऐसा जातक अपने अनुसंधान से ख्याति अर्जित करता है।

कुण्डली का पंचम भाव विद्या और बुद्धि का भाव है अत: पंचम भाव में शुभ ग्रह स्थिति होना आवश्यक है। इस भाव में दशमेश और पराक्रमेश की युति होना, लाभ या लाभेश से दृष्टि सम्बन्ध होना जातक को मेधावी बनाता है और वह अनुसंधान क्षेत्र में सम्मान प्राप्त करता है।

जन्मकुण्डली का अष्टम भाव शोध अनुसंधान और खोज का भाव होता है। इस भाव में यदि लग्नेश और पंचमेश की युति हो, तो वह जातक को अनुसंधान क्षेत्र में सफलता दिलाती है। अष्टमेश और लग्नेश का राशि परिवर्तन योग भी जातक को वैज्ञानिक बनाने में सहायता करता है।

लग्न में बैठा मंगल जातक को बुद्धिमान बनाता है। यह जातक को मानसिक रूप से क्रियाशील बनाता है। इससे वह अन्तर्प्रज्ञा का धनी बनता है, जो उसे इस क्षेत्र में मार्गदर्शन करती है।

अगर चन्द्र कुण्डली के छठे भाव में अष्टमेश बुध और पराक्रमेश शनि की युति हो, तो वह अनुसंधान क्षेत्र से जातक को लाभ देती है।

श्रीमद्भागवत गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने लिखा है कि यह सारा विश्व मेरे से उत्पन्न हुआ है और मेरे में ही समा जायेंगे इसलिए भगवान हमारे माता-पिता हैं और

हम लोग उनकी सन्तान हैं लेकिन कर्म अनुसार इस विश्व में अपने अच्छे और बुरे कर्मों को भोगता है। श्रीकृष्ण कहते हैं कि भाग्य के साथ में पुरुषार्थ करो अब कुछ लोग कहते हैं कि अगर भाग्य है तभी पुरुषार्थ होगा लेकिन भगवान हम सबको अवसर प्रदान करते हैं लेकिन उनमें से कुछ लोग उसका उपयोग करके ऊपर जाते हैं और कुछ लोग दुरुपयोग करके नीचे चले जाते हैं। अशुभ स्थिति से बचने के लिए ही उपाय करे जाते हैं।

ज्योतिष प्रकाश देकर मार्ग दिखाती है और अगर जातक ज्योतिष के नियम का पालन करते हैं तो अपनी किस्मत बदल सकता है। अब कुछ लोग कहते हैं कि जो भगवान ने लिख दिया वह बदला नहीं जा सकता है लेकिन मेरे विचार से वह बदला नहीं जा सकता है लेकिन कुछ उपाय करके कम किया जा सकता है। विद्वानों का मत है कि जब रोगी हो जाते हैं तब डॉक्टर के पास क्यों जाते हैं; अगर सर्दी का मौसम है तो गर्म कपड़े क्यों पहनते हैं? अगर रात को अंधेरा है तब मोमबत्ती क्यों जलाकर प्रकाश करते हैं? डॉक्टर के पास जाना, वातावरण के हिसाब से कपड़ा, अंधेरे में लाईट जलाना यह सब हमारे उपाय हैं।

ग्रहों की युति

युति का अर्थ है, एक से अधिक ग्रहों का एक ही भाव में स्थित होना। इस स्थिति में प्रायः ग्रहों की अलग-अलग स्थिति के अनुसार जो फल होते हैं, वे बदल जाते हैं। अतः एक से अधिक ग्रहों की युतियों के फल यहां दे रहा हूं।

युति एवं निदान

गुरु बृहस्पति+सूर्य

शुभ प्रभाव। नेक, अक्लमन्द, साहसी, लम्बी आयु, सन्तानसुख, मान-सम्मान जागता भाग्य।

मान-प्रतिष्ठा की हानि, असफलता, धनहानि, व्यक्तित्व हानि, लालची, चालाक, कुल को डुबोने वाला।

उपाय

पिता-पुत्र साथ रहें और साथ ही कारोबार करें।

पिता की चारपाई सोने के लिये प्रयुक्त करें।

घर में केसर स्थायी रूप से रखें।

सोने की अंगूठी पहनें।

गुरु बृहस्पति+चन्द्र

भावुक, विवेकी, सुख देने वाला, बुढ़ापे में आराम, भाग्यवान।

भावुकता में ठगे जाना, निराशा, असफलता, आंसू बहाने वाला, उम्मीदों पर जीने वाला।

उपाय

नदी में तांबे का सिक्का डालें। लड़कियों का आशीर्वाद प्राप्त करें। चाँदी का खाली बर्तन फर्श में नीचे दबायें। केतु ग्रह के लिये दोरंगे पत्थर अंगूठी में पहनें। खेत में कुआं

न खुदवायें। मंगल एवं शनि की वस्तुयें घर में न रखें। गाय, माता, परिवार की लड़कियां, पत्नी, नानी आदि की सेवा करना शुभ होगा।

गुरु बृहस्पति+शुक्र

मान-प्रतिष्ठा, भाग्यवान, भाइयों से सहयोग करने वाला, हुनरमन्द।

सेक्स पीड़ित, दुराचरण से धन-सम्पत्ति का विनाश, निर्धन, झगड़े, सन्तान उत्पत्ति में व्यवधान, दूसरी औरत के सम्बन्ध से हानि, शान्तिरहित।

उपाय

- बुध का उपाय करें।
- शुक्र का उपाय करें।
- गैर औरतों से सम्बन्ध न बनायें।
- आचरण ठीक रखें।

गुरु बृहस्पति+मंगल

अधिकारयुक्त धनी, विवेकी, ज्ञानवान, सुन्दर सन्तान।

सांस की तकलीफ, रोग, सन्तान पर अशुभ प्रभाव, भाग्यहीन।

उपाय

- दान करें।
- शनि को नेक करें।
- काली गाय की सेवा करें।

गुरु बृहस्पति+बुध

ब्रह्मज्ञानी उपदेशक, साहसी, खुशहाल, सन्तान (लड़का) की उत्पत्ति के बाद भाग्य जगेगा, पूजापाठी, सुखी, लम्बी आयु वाला।

मूर्ख, धनहीन, कायर, अय्याश, बीमार, भाग्यहीन।

उपाय

- शुद्ध चाँदी की तार नाक में डालें।
- खाण्ड (चीनी) बर्तन में रखकर धरती में दबायें।
- बुध को उच्च करने का उपाय करें।

गुरु बृहस्पति+शनि

उपदेशक, सन्त, धनहीन, बुढ़ापे में आराम, दूसरों का भला करने वाला, होशियार।

काम-पीड़ा, रोग, औरत का सुख सामान्य, ठग, हिम्मती, शनि या बृहस्पति में शनि मन्दा तो अंगहानि, बृहस्पति मन्दा तो धन और बुद्धि की हानि, दोनों मन्दे तो धन एवं अंग दोनों की हानि, सन्तान पर भूत-प्रेत का प्रभाव।,

उपाय

- मांस और मदिरा से बचें।
- शनि का उपाय करें।
- काली गाय की सेवा करें।
- गणेशजी की पूजा करें।
- बुध की चीजें घर में नहीं रखें।

गुरु बृहस्पति+राहु

सुखी, दुश्मन पर विजय, हुनरमन्द।

2, 12 खानों को छोड़कर जहां भी होगा, अशुभ होगा।

उपाय

- स्वर्ण धारण करें।
- आचरण सही रखें।
- केतु एवं चन्द्रमा का उपाय करें।
- गाय के जूठे पानी से मंगल की चीजों को धोकर दान करें।
- किसी अनाज को दूध में धोकर 43 दिन तक नदी में प्रवाहित करें।

गुरु बृहस्पति+केतु

सुखी, दूसरों के दर्द से सहानुभूति रखने वाला, धनी, भविष्यज्ञाता।

खुदगर्जी, मन्दभाग्य, नर-सन्तान में बहीन, पहले लड़के या लड़की का सुख नसीब न होगा, निर्धन।

उपाय

- पीला नींबू मन्दिर में दें।

सूर्य+चन्द्र

सुख-शान्ति, बुढ़ापा आराम से गुजरेगा।

आकस्मिक मौत, पत्नी, बहिन-बेटी से अनबन।

उपाय

- मांस-मदिरा सेवन न करें।
- मंगल का उपाय करें।
- माता की सेवा करें।

सूर्य+शुक्र

आत्मिक बल का स्वामीं, स्त्रियों का प्रिय, तीर्थयात्री।

औलाद की आयु कम, पिता कम उम्र में जाये, असफलता, स्त्रीपक्ष से दुर्बल।

उपाय

- पत्नी को सोना धारण करायें।
- पत्नी के वजन के बराबर अनाज धर्मस्थान में दान दें।
- शादी तय हो, तो गुड़ त्याग दें।
- परायी औरत से बचें।
- चन्द्रमा को उच्च करें।
- गाय दान करें।

कुछ विशिष्ट युतियां और उपाय

सूर्य+चन्द्र—मांस से बचें।

सूर्य+शुक्र—दुर्गा का अनुष्ठान करें।

चन्द्रमा+शुक्र 2 में—कुआं न ख़ोदें, न खुदवायें। लाल धागा कलाई पर बांधें।

चन्द्रमा+शनि–शनि और केतु का उपाय करें।

दृष्टि क्षीण–रात भर खुले आसमान के नीचे पानी रखकर सुबह पीयें।

शनि+चन्द्रमा अशुभ हों–तो सूर्य का उपाय करें।

चन्द्रमा+राहु की युति हो–तो चन्द्र, मंगल एवं गुरु का उपाय करें।

चन्द्रमा+केतु–बुध एवं केतु की वस्तुयें दान करें।

मंगल+बुध–मंगल का उपाय करें।

मंगल+शनि–घोड़ी के प्रसव के बाद पहली धार का दूध शीशे के बर्तन में बन्द करके घर के मध्य में दबायें, चन्द्रमा का उपाय करें, स्त्री पक्ष की सेवा करें।

मंगल+राहु–मिट्टी के बर्तन में राहु की वस्तुयें पानी में बहायें, मंगल का उपाय भी करें।

बुध+शनि–विवाद से बचें।

बुध+राहु–कच्ची मिट्टी की सौ गोलियां बनाकर नियमित रूप से एक गोली प्रतिदिन किसी धर्मस्थान में डालें।

बुध+शुक्र–पानी में रेवड़ियां बहायें।

बुध+बृहस्पति–नाक छिदवायें और उसमें चाँदी का तार नौ दिन रखें, खाण्ड (चीनी) से भरा बर्तन दबायें।

गुरु बृहस्पति+चन्द्रमा–केतु की वस्तुयें एवं चाँदी घर के कोने में दबायें, कुंवारी कन्याओं की सेवा करें, बहते जल में तांबे का सिक्का प्रवाहित करें, श्मशान में जल डालें।

गुरु बृहस्पति+सूर्य–सोना घर में स्थापित करें, पुरानी चारपाई सोने के लिये प्रयुक्त करें, पिता के साथ रहें।

गुरु बृहस्पति+शनि–परायी स्त्री से बचें, शनि का उपाय करें, चन्द्रमा का उपाय करें, शिव की पूजा करें, मुफ्त का उपहार न लें।

गुरु बृहस्पति+राहु–सोना धारण करें, मंगल का दान करें, जौ को दूध से धोकर 43 दिन पानी में बहायें, केतु का उपाय करें।

गुरु बृहस्पति+केतु–पीले नींबू मन्दिर में दान करें।

शुक्र+बुध–11 में हों, तो बकरी का दान करें, लड़की को गाय दें, सोने के खोल लगी मोती की माला को दूध में धोकर धारण करें।

शुक्र+शनि–तांबे का पैसा पानी में बहायें।

शुक्र+राहु–कच्चे नारियल के फल का दान करें, स्त्री की बायीं कलाई में चाँदी का छल्ला डालें, नीला फूल पानी में 43 दिन तक बहायें।

शनि+राहु–बादाम और नारियल भूनकर या आग पर चढ़ाकर न खायें।

राहु+केतु–तांबा एवं शुद्ध चाँदी धारण करें, लाल मुंह वाले बन्दर को गुड़ खिलायें।

सूर्य+चन्द्र+राहु–दुर्गा का अनुष्ठान करें।

सूर्य+चन्द्र+केतु–दुर्गा का अनुष्ठान करें।

सूर्य+बुध+शुक्र–कान में सोना पहनें, काला+सफेद कुत्ता पालें, चाँदी का छल्ला पहनें, लड़की की शादी के समय तांबे के घड़े में मूंग के दाने भरकर नदी में प्रवाहित कर दें।

सूर्य+बुध+राहु–चन्द्रमा का उपाय करें।

चन्द्रमा+मंगल+शनि–मंगल का उपाय करें।

चन्द्र+मंगल+राहु–मीठा हलुआ खायें और बांटें।

चन्द्र+बुध+शनि–गुरु की वस्तुयें दान करें।

बुध+शनि+राहु–तीनों का उपाय करें।

गुरु बृहस्पति+चन्द्र+बुध–2 एवं 4 में हों तो बुध का उपाय करें। अन्य हों, तो गुरु बृहस्पति का उपाय करें।

गुरु बृहस्पति+चन्द्र+शनि–शनि का उपाय करें।

गुरु बृहस्पति+चन्द्र+केतु–केतु का उपाय करें।

गुरु बृहस्पति+मंगल+बुध–सोना धारण करें, कुंवारी कन्या को बादाम खिलायें, बकरी को कच्चे चने खिलायें।

गुरु बृहस्पति+बुध+शनि–बुध की वस्तुयें प्रवाहित करें।

गुरु बृहस्पति+शनि+राहु–शनि की वस्तुयें भूमि में दबायें।

शुक्र+बुध+शनि–अपने भोजन में से गाय एवं कुत्ते को खिलायें।

चन्द्र+शुक्र+मंगल+बुध–लड़की का विवाह जल्दी करें।

शुक्र+मंगल+बुध+राहु–दक्षिण द्वार के नीचे चाँदी का पत्तर दबायें।

भाग्य का लिखा कभी नहीं मिटता–यह सत्य है, जिसे हर युग में विद्वानों ने घोषित किया है। अपनी स्थिति के अनुसार कुछ उपाय कर सकता है, जिससे उसे अपने अस्तित्व के लिए हानिकारक स्थिति से बचाव हो सके। कारण स्पष्ट है। वह कर्म कर सकता है और अपने कर्म के द्वारा अपनी स्थिति के कारण को कुछ सीमा तक बदल सकता है। टोटकों एवं उपचारों से भी बस इतना ही किया जा सकता है। लाल किताब ने भी स्पष्ट कहा है कि ग्रह प्रभाव से नहीं बचा जा सकता। उपाय केवल शंकित ग्रहों के होते हैं। यह कदापि नहीं समझना चाहिये कि टोटके एवं उपचार सभी स्थितियों के लिये पूर्णत: कष्टों को दूर करने वाले हैं। हां, इनसे उस प्रभाव को कम किया जा सकता है।

आप ज्योतिष शास्त्र का उपयोग अपने दैनिक कार्यों में भी कर सकते हैं। दैनिक व्यवहार में आने वाले दिन, सप्ताह, पक्ष, मास, वर्ष, अयन का ज्ञान ज्योतिष-शास्त्र से ही होता है। अनपढ़ किसान भी यह जानता है कि किस नक्षत्र में वर्षा उत्तम होती है, बीज कब बोना चाहिए, फसल कब काटनी चाहिए। इस विषय में "घाघ भडूरी की कहावतें" सुविदित हैं जिसमें ज्योतिष विज्ञान के मूल सिद्धांतों का उपयोग स्पष्ट दिखता है।

"लाल किताब" में ज्योतिष विज्ञान के विभिन्न सिद्धान्तों का सारगर्भित विश्लेषण किया गया है। इस किताब में ज्योतिष "गागर में सागर" की तरह समाया हुआ है। इसके अध्ययन से ज्योतिष का ज्ञान और उपाय (निदान) सरलता से तथा शीघ्र हो जाता है। लाल किताब को पढ़ने से शुभाशुभ का ज्ञान हो जाता है और सफलता सहचरी बन जाती है। इसमें वर्णित ज्ञान को व्यवहार में लायेंगे तो जीवन में धन और सुख की प्राप्ति निश्चय ही होगी।

असीमित परेशानियों और तनाव के वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति ज्योतिष और उसके सरल उपाय की ओर आकर्षित हो जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं, मनुष्य का भविष्य देखना एक बहुत ही कठिन कार्य है? कोई हस्तरेखा द्वारा, कोई चेहरा देखकर ऐसी सटीक भविष्यवाणी करते हैं कि सुनने वाले आश्चर्य में डूबे रह जाते हैं। इन विधियों में से केवल ज्योतिष एक सम्पूर्ण ज्ञान है। इसका जितना अभ्यास किया जाये उतनी ही इसमें सफलता मिलती है। केवल कुछ सिद्धान्तों के ज्ञान से ही सफल ज्योतिषी बनना असम्भव है। इसमें अभ्यास, अनुभव और श्रम तीनों की बहुत आवश्यकता है। अगर आप थोड़ा इधर-उधर देखें, या समाचार-पत्र देखें तो पायेंगे समाचार-पत्रों के लघु विज्ञापन वाले भाग में आजकल बरसाती ज्योतिषियों की बाढ़-सी आयी हुई है। इन ज्योतिषियों के विज्ञापनों का नियमित प्रकाशन तो सामान्य बात है। बंगाल का जादू, देवी दुर्गा का शक्ति यंत्र, तंत्र-मंत्र, झाड़-फूंक, मुफ्त परामर्श चैलेंज जैसे मनमोहक शब्दों का प्रयोग ये अपने विज्ञापनों में करते हैं। ये ज्योतिषी शहरों में घूमते रहते हैं और हद दो महीने में लौटकर पुनः उसी शहर में आ जाते हैं और समाचार-पत्रों में धुआंधार विज्ञापन प्रकाशित करते हैं।

सड़क छाप ज्योतिषी होटलों में पहुंच गए। प्राचीन प्रामाणिक भारतीय ज्योतिष विधा को बदनाम करने वाले इन व्यवसायी ज्योतिषियों का धंधा खूब फल-फूल रहा है। हर एक विज्ञापन में मानव-जीवन की जटिल समस्याओं के समाधान का दावा सहज ही परेशानियों से घिरे लोगों को आकर्षित करता है। सामाजिक समाज में ज्योतिष के ऊपर अंधविश्वास है। हर व्यक्ति यूं भी भविष्य के प्रति चिन्तित रहता है।, लोगों की इस प्रवृत्ति का लाभ ये ज्योतिषी उठा रहे हैं। इन व्यवसायी ज्योतिषियों को विद्या से क्या लेना-देना, इनका काम तो केवल रोजी-रोटी कमाना है। इन्हीं लोगों के कारण ज्योतिषी बदनाम हो रहे हैं और हमारी प्राचीन धरोहर ज्योतिष कराह रही है।

हमारे ज्योतिष शास्त्र के अनुसार बृहस्पति, शुक्र, बुध और शुक्ल पक्ष का चन्द्र यह शुभ ग्रह हैं। शनि, राहु, केतु, मंगल और सूर्य को क्रूर ग्रह बतलाया जाता है। ज्योतिष विज्ञान द्वारा शनि, राहु और केतु इनमें अशुभ फल का अनुमान लगाया जाता है। पाराशर के सिद्धान्तों के अनुसार प्रत्येक लग्न के लिए शुभ और अशुभ ग्रह अलग-अलग होते हैं। विद्वानों, ज्योतिषियों ने अपने अनुभवों के अनुसार यह स्पष्ट किया है। प्रत्येक लग्न के ग्रह शुभ और अशुभ होते हैं।

इन ग्रहों के विषय में भी ज्योतिषियों के विचारों में बहुत अन्तर है। कई ज्योतिषियों ने कुम्भ लग्न के लिए बृहस्पति को अशुभ बतलाया है और कइयों ने शुभ। मकर लग्न के लिए कई ज्योतिषियों ने बुध को शुभ बतलाया है और कइयों ने अशुभ। आखिर यह मतभेद क्यों? अगर हम ज्योतिष को विज्ञान मानते हैं तो यह मतभेद होना ही नहीं चाहिए। मेरे ज्ञान के अनुसार जब कोई ग्रह किसी लग्न में शुभ फल दे देता है और इस प्रकार के कुछ उदाहरण मिल जाते हैं तो वह उस ग्रह को उस लग्न के लिए शुभ मान लेते हैं। इसी प्रकार शुभ ग्रह किसी लग्न की जन्मपत्री में अशुभ फल देता है तो ज्योतिषी वर्ग उसको उस जन्म-लग्न वाली कुण्डली के लिए अशुभ मान लेते हैं। भारतीय ज्योतिष

एक वृहद् ज्ञान है। ज्योतिष का आरम्भ सभ्यता के आरम्भ से हुआ। उस समय की स्थितियों और वर्तमान स्थिति में बहुत अन्तर है। इसमें बहुत खोज की आवश्यकता है। मैं इस योग्य नहीं कि ज्योतिषियों के सिद्धान्तों पर टिप्पणी करूं। मेरा लक्ष्य ज्योतिष को सरल विज्ञान का रूप देने का है।

मैंने अनुभव से पाया है कि लाल किताब इस विषय में सटीक है। वह पाठक को सिद्धांतों में ना उलझाकर सीधे उपायों की ओर प्रेरित करती है। यह ठीक भी है। सिद्धान्त, योग तो विद्वानों के लिए हैं, साधारण जातक तो अपनी समस्या का सरल निदान चाहता है और वह उसे लाल किताब से प्राप्त हो जाता है।

किसी जातक के विषय में सटीक भविष्यवाणी करने के लिए उसकी जन्मकुण्डली के लग्न जिससे शरीर देखा जाता है, सूर्य जिससे आत्मा का ज्ञान मिलता है और चन्द्र जिससे मन और भावना का पता चलता है, को देखना परम आवश्यक है।

विश्व में कौन ऐसा जातक है जो सुखी जीवन की कामना न करता हो और सुखी जीवन सफलता के पथ पर पहला पग है। विश्व के रचयिता की ओर ध्यान और सेवा का लक्ष्य वास्तव में प्राणियों की सेवा के द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। जीवन को सुखी बनाना तभी सम्भव हो सकता है जब हम यह जानें कि जीवन को कष्टमय बनाने वाली कौन-सी वस्तुएं हैं, जीवन को सुखी बनाने वाले कौन-से उपाय हैं और जीवन को सफलता की ओर ले जाने वाली कौन-सी क्रियाएं हैं।

सटीक फल कथन में सदैव सुगमता और प्रभावशाली उपाय के लिए वर्षफल कुण्डली, जन्मकुण्डली, अन्य षडवर्ग का विस्तृत विश्लेषण करना आवश्यक है। यों तो विंशोत्तरी दशा, अन्तरदशा तथा वर्षफल एक-दूसरे के पूरक हैं लेकिन भविष्य में फल विवेचन, उपचार हेतु "वर्षफल पद्धति" बहुत उपयोगी पायी गयी है। वर्षफल के विशेष महत्व का एक कारण यह भी है कि इसमें फल कथन की अवधि केवल एक वर्ष की होती है। वर्षफल के द्वारा जानकारी लेकर व्यापारी गण उसके अनुरूप अपने व्यापार की रूपरेखा बना सकते हैं।

केवल दक्षिण को छोड़कर सम्पूर्ण भारत में जन्मपत्री में दो लग्न बनाये जाते हैं। एक जन्म लग्न और दूसरा चन्द्र लग्न। जन्म लग्न को शरीर समझा जाये तो चन्द्र लग्न मन है। बिना मन के शरीर का कोई अस्तित्व नहीं और बिना शरीर के मन का कोई मूल्य नहीं। जिस प्रकार शरीर और मन हर प्राणी के लिए आवश्यक है उसी प्रकार जन्म लग्न और चन्द्र लग्न दोनों की स्थिति किसी भविष्यवाणी और उपचार करने के लिए परम आवश्यक है।

अशुभ और शुभ समय देखने के लिए दशा, अन्तरदशा और प्रत्यन्तर दशा देखी जाती है। यह सब चन्द्र से ही निकाली जाती है। किसी और ग्रह से यह दशा नहीं निकलती। ग्रहों, नक्षत्रों की स्थिति हर समय बदलती रहती है। ग्रहों की बदलती स्थिति का प्रभाव विशेषकर चन्द्र कुण्डली से ही देखा जाता है जिसे शनि, चलत में चन्द्र से तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में हो तो शुभ फल देता है और दूसरे भावों में हानिकारक होता है। अब हम तनिक उपचार की ओर ध्यान करेंगे।

मानव शरीर जल, पृथ्वी, वायु, अग्नि, आकाश–इन पांच तत्वों को मिलाकर बनता है। इन तत्वों में असंतुलन आ जाये तो वह शरीर में रोग पैदा कर देते हैं। जैसे अगर वायु की कमी हो जाये तो मनुष्य को कई प्रकार के रोग जिसमें वायु का महत्वपूर्ण योग होता है, वह उत्पन्न हो जाते हैं। वायु के असन्तुलन के कारण दमे की बीमारी हो जाती है। इसी प्रकार जिस जातक में जल की कमी अथवा अधिकता होगी तो उसे जल के कारण जो रोग सम्भव है, वह उन रोगों से पीड़ित हो जायेगा। अगर हम सब राशियों, ग्रहों और उनका सम्बन्ध पांचों तत्वों से देखेंगे तो व्यक्ति किस रोग से पीड़ित है उसको समझना असम्भव नहीं। मानव पांच तत्वों से बना है। प्रत्येक तत्व का स्वामी इस प्रकार है–

क्र०सं.	तत्व	स्वामी ग्रह
1.	पृथ्वी	बुध
2.	जल	चन्द्रमा, शुक्र
3.	अग्नि	सूर्य, मंगल
4.	वायु	शनि
5.	आकाश	बृहस्पति

प्रत्येक राशि और प्रत्येक ग्रह किसी-न-किसी तत्व से सम्बन्धित हैं। इसके तुलन से कफ, वात, पित्त आदि के कारण कई रोग हो जाते हैं। इस समस्या को समझने के लिये हमें यह समझना चाहिये कि निरोगी होने और रोगी होने में अन्तर क्या है? स्वस्थ वह है जिस जातक की देह पुष्ट है, वह अपना कार्य नियम अनुसार करते हैं। रोगी वह है जिससे प्राणी का कोई भी अंग कार्य को ठीक प्रकार से नहीं कर सकता। यह रोग दो प्रकार से उत्पन्न होते हैं–एक तो वंशगत वातावरण और रहन-सहन के कारण। रोग का दूसरा कारण है दुर्घटना, जहर, छुआछूत की बीमारी, मौसम में परिवर्तन। रोग के पहले कारण जन्म और वातावरण के कारण होते हैं। यह जातक के वश में नहीं होते, परन्तु दूसरे रोगों का पता लगाकर उनसे किस प्रकार मुक्ति पायी जा सकती है? इस विषय में ज्योतिष विज्ञान से बहुत सहयोग लिया जा सकता है। मनुष्य के शरीर को 12 राशियों में बांटा गया है और प्रत्येक राशि मनुष्य के अंगों के विषय में ज्ञान देती है; जैसे–

1. मेष : सिर, पेट, मस्तिष्क, आंखें, दिमाग
2. वृष : मुख, नेत्र, हड्डी, मांस
3. मिथुन : गला, सांस लेने की नली
4. कर्क : वक्षस्थल, फेफड़ा, रक्त
5. सिंह : पीठ, हृदय, अंतड़ी, जिगर, दिल
6. कन्या : पेट का ऊपरी भाग, अंतड़ियां, हड्डी, मांस
7. तुला : कमर, गुर्दा, श्वास क्रिया
8. वृश्चिक : जननेन्द्रिय, गुर्दा

9. धनु : जांघ और इनकी नसें, मल स्थान
10. मकर : जोड़ की हड्डियां और मांस
11. कुम्भ : घुटना, घुटने की हड्डी, मांस और श्वास क्रिया
12. मीन : चरण, सुपत्ती और पैर की अंगुलियां और उनकी नसें

इसी प्रकार जन्मकुण्डली को भी 12 बराबर भागों में बांटा गया है। प्रत्येक भाव का जातक के शरीर से सम्बन्ध का विवरण इस प्रकार है–

प्रथम भाव से : मुंह, दांत, जीभ, मस्तक
दूसरे भाव से : दाहिना नेत्र
तीसरे भाव से : कान, गर्दन, हाथ
चौथे भाव से : पेट, कन्धा
पांचवें भाव से : कमर के ऊपर का भाग
छठे भाव से : दाहिना पांव व गुप्त भाग
सातवें भाव से : नाभि, पेट का मध्य भाग
आठवें भाव से : बायां पांव व गुप्त भाग
नवम भाव से : कमर के ऊपर का भाग
दशम भाव से : पेट, कंधा
ग्यारहवें भाव से : बायां हाथ, कान, गर्दन
बारहवें भाव से : बायीं आंख, पैर का तलुवा

"लाल किताब" दैवी इच्छा तथा प्रारब्ध का दर्शन कराने वाली पुस्तक होने के कारण इसकी अत्यन्त विनम्रता, आस्था तथा शुद्धि के भाव से विचार करना चाहिए। कुछ लोग इसे अनास्था की दृष्टि से देखते हैं, उनके लिये अच्छी बात तो यही होगी कि ये अपने विचारों को अपने तक अथवा अपने वर्ग तक ही सीमित रखें और ज्योतिष व ज्योतिषियों की गूढ़ता और श्रेष्ठता का उल्लंघन न करें। अगर वह अपने भविष्य के स्वयं निर्माता होने के प्रति अत्यधिक विश्वासी हैं, तो उन्हें अपनी समस्त शक्तियां जनता का कल्याण करने में लगानी चाहिएं या फिर अपने दुःखी जीवन को सुधारने अथवा अपना स्वयं का स्वास्थ्य इतना बढ़िया बनाने का यत्न करना चाहिए कि वृद्धावस्था, रोग अथवा मृत्यु सदैव के लिए समाप्त हो जाएं। उनके लिए सिरदर्द करने वाली तथा जिनके विषय में उन्हें कुछ भी ज्ञान नहीं है, ऐसी मान्यता प्राप्त अध्ययन की शाखा के उन्मूलन में उन्हें अपना समय नहीं गंवाना चाहिए। "लाल किताब" और इसमें वर्णित उपचार को ठीक प्रकार से समझने के लिए आइये पहले हम थोड़ा नौ ग्रहों के बारे में भी जान और समझ लें!

1. सूर्य : पित्त, जलन, हृदय रोग, नेत्र रोग, जिगर, कोख में बीमारी, चर्म रोग, अस्थि, शत्रुओं से भय, अग्नि, अस्त्र या विष से पीड़ा, स्त्री या पुत्रों से पीड़ा, चोर या चौपायों से भय, सर्प से भय आदि।
2. सौम्य चन्द्रमा : निद्रा रोग, आलस्य, कफ, अतिसार, शीत ज्वर, भूख न लगना, स्त्रियों से व्यथा, खून-खराबी, जल से भय, थकावट आदि।

3. सेनापति मंगल : अधिक प्यास लगना, पित्त ज्वर, अग्नि, विष या शस्त्र से भय, कुष्ठ, नेत्र रोग, पेट में फोड़ा, हड्डी के भीतर की कमी, खुजली, चमड़े में खुदरापन, देहभंग, चोरों से भय, भाई, मित्र-पुत्रों से कलह, शत्रुओं से भय आदि।

4. शुक्र : रक्त की कमी, कफ और वायु के दोष से नेत्र रोग, मूत्र रोग, जननेन्द्रिय में रोग, पेशाब करने में कष्ट, वीर्य की कमी, संभोग में आनन्द की कमी, शरीर में निर्बलता तथा चेहरे पर कान्तिहीनता आदि।

5. कुमार बुध : भ्रान्ति, तर्क शक्ति न रहे, चिन्ता से मन उल्टा सोचने लगे, मन में चिन्ता, भय, गलत धारणा हो जाये। यह सब भ्रान्ति के लक्षण हैं। कटु बोलना, नेत्र रोग, गले का रोग, नासिका रोग, वात-पित्त-कफ ज्वर, बीमारी, चर्म रोग, पीलिया, दुःस्वप्न, खुजली, यह सब बुध के कारण होता है।

6. गुरु बृहस्पति : पेट का फोड़ा-रसोली आदि एपेन्डिसाइटिस, अंतड़ियों का ज्वर, मूर्च्छा-यह सब रोग कफ के दोष से होते हैं। कान के रोग आदि।

7. पापग्रह शनि : वात और कफ के द्वारा उत्पन्न रोग, टांग में दर्द, थकान, भ्रान्ति, शरीर के भीतर बहुत उष्णता हो जाये, चोट, हृदय रोग से चोट-यह सव राशियां भाव और ग्रह मिलकर कई प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

यह सब राशियां भाव और ग्रह मिलकर कई प्रकार के रोग उत्पन्न करते हैं।

ज्योतिष विज्ञान के अनुसार जातक को अपने पूर्वजन्म के कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है। यह विज्ञान बतलाता है कि जातक का भाग्य जन्म के समय ही लिख दिया जाता है और भाग्य की रूपरेखा क्या होगी, उसी का गणित जन्म-समय की कुण्डली से लगाया जाता है। यही कारण है कि एक मां-बाप की दो संतानों को लिया जाये तो दोनों का स्वभाव, आचार-विचार अलग-अलग होता है। भाग्य भी अलग होता है। गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि मानव को केवल कर्म करना चाहिए, फल की चिन्ता नहीं; अर्थात् कर्म से फल बदल जाता है और यहीं से आशा की किरण फूटती है कि अच्छे कर्म करके बुरे समय को सुधारा जा सकता है, कष्ट को कम किया जा सकता है। हां, यह आवश्यक है कि जातक उपाय करके कष्ट को कम करे।

"लाल किताब" में कष्ट निवारण हेतु मुख्यतः दो उपाय किए जाते हैं क्योंकि कष्ट के दो ही विशेष कारण होते हैं। जातक की कुण्डली में कुछ ग्रह ऐसे होते हैं कि वे शुभ फल देने वाले होते हैं पर वह शुभ फल दे नहीं पाते हैं। इनको किसी भी उपाय से बल दिया जाये तो वह जातक को शक्ति प्रदान करेंगे कि वह कठिनाइयों का सामना कर सकें। ग्रहों को सबल बनाने हेतु उससे सम्बन्धित उपाय करना लाभकारी होता है। यहां पर यह तथ्य अच्छी प्रकार से समझ लेना चाहिए कि हमेशा बली ग्रह जो किसी

कारणवश निर्बल हो गया है उसी का उपाय करना चाहिए ताकि सबल होकर पर्याप्त लाभ दे सके।

दूसरे तरह के ग्रह वह होते हैं जो कुण्डली में अशुभ होते हैं लेकिन सबल होते हैं। वह जातक को सदा ही नुकसान पहुंचायेंगे। इस स्थिति में अगर हम उस ग्रह का उपचार करवा दें तो वह और भी सबल हो जायेगा; अर्थात् उसकी हानि करने की क्षमता और बढ़ जायेगी। इसी कारण जातक को लाभ नहीं होता है अपितु ज्योतिष विज्ञान बदनाम हो जाता है। ऐसे ग्रहों से शुभ फल पाने हेतु उपाय तो करना ही होगा। जप, दान आदि करके क्रूर ग्रह को प्रसन्न किया जाये जिससे वह शुभ फल प्रदान करे। यह बात अवश्य हो जाती है कि कब उपाय करना है। बिना इसकी जानकारी के किया गया उपाय बेकार रहता है और बदनामी ज्योतिष विज्ञान पर लगती है। अतः जब भी उपाय करना हो तो बहुत ही सोच-समझकर करना चाहिए, अन्यथा आशा के अनुरूप फल नहीं प्राप्त होता है।

ज्योतिष विज्ञान में प्रत्येक राशि का फल अलग-अलग होता है। मेष राशि के जातक साहसी, अहंकारी तथा दयालु होते हैं। वृष राशि के जातक स्वार्थी एवं सांस्कारिक कार्यों में बुद्धिमान तथा दक्षता से कार्य लेने वाले होते हैं। मिथुन राशि के जातक का स्वभाव विद्याध्ययनी एवं शिल्पी है। कर्क राशि के जातक सौम्य स्वभाव, समोदयी व सांसारिक उन्नति के लिए प्रयत्नशील और समयानुसार चलते हैं। सिंह राशि के जातक का स्वभाव लगभग मेष राशि वाले जातक जैसा ही होता है लेकिन उदारता अधिक होती है। कन्या राशि वाले जातक विचारशील, झगड़ालु, ज्ञानप्रिय, कार्य सम्पादक तथा कुशल राजनीतिज्ञ होते हैं। वृश्चिक के जातक मर्यादाशील, त्यागी पर अधिकारप्रिय होते हैं। मकर राशि के जातक उच्च स्थिति की आकांक्षा रखने वाले होते हैं। कुम्भ राशि के जातक नवीन वस्तुओं का आविष्कार करना, विचारशील, शान्त तथा धार्मिक होते हैं। यह सर्वश्रेष्ठ होते हैं। मीन राशि के जातक ज्ञानी, दयालु पर झगड़ालु होते हैं।

ज्योतिष विज्ञान वेदों का ही एक अंग है। ज्योतिष द्वारा जातक की विशेषताओं का ज्ञान मिलता है, इससे पता चलता है कि किस समय लाभ होगा और कब हानि या खेद होगा। वेदों में ज्योतिष का प्रयोग मानव जाति के कल्याण के लिये है। आज समस्याएं अनेक हैं, ज्योतिष से हर समस्या का निदान पाना असम्भव है। ज्योतिष का महत्व अपूर्णता को देखना और उपाय द्वारा प्राप्त करना है, परन्तु आज हम ज्योतिषी से यह जानना चाहते हैं कि हम शत्रु को कब और कैसे मारें? क्या कार्य करें जिससे दूसरे की जेब खाली कर लें। वेदों से जातक का कल्याण करके सुख पहुंचाना चाहते हैं। आज मानव की इच्छाएं बहुत बढ़ गयी हैं। इन इच्छाओं को पूरा करने के साधन कम हैं। प्रत्येक जातक अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए उपायों को अपनाना चाहता है क्योंकि साधन कम हैं इसलिये उलझनें बढ़ जाती हैं। हमारी इच्छाएं कुछ अच्छी और कुछ बुरी हैं। इनको पूरा करने में अनेक बाधाएं आती हैं। इन सबको दूर करने के लिए उपायों का सहयोग लेना आवश्यक हो जाता है। उपायों के लिए लाल किताब सबसे उत्तम है। यह समय की कसौटी पर परखी गयी पुस्तक है।

बहुत-से विद्वान् ज्योतिषी जन्मपत्री देखते ही उसके विषय में बतलाना प्रारम्भ कर देते हैं। उसमें कुछ सत्य होता है और कुछ असत्य हो जाता है। फलित बतलाने से पहले यह देखना आवश्यक है कि किस विषय के बारे में है, क्योंकि ग्रहों का प्रभाव, भिन्न-भिन्न वस्तुओं पर एक ही समय में और एक ही स्थान पर अलग-अलग होता है। इसी प्रकार एक ग्रह एक जातक के लिए जो प्रभाव डालता है वही दूसरे पर डालेगा—यह बिल्कुल आवश्यक नहीं है।

जन्मकुण्डली में 12 भाव होते हैं जो जीवन के हर समय का सटीक ज्ञान देते हैं। जातक के रूप-रंग, सुख-दुःख, मन की स्थिति, सफलता-असफलता इत्यादि सभी की जानकारी इन्हीं भावों से प्राप्त होती है। प्रथम भाव में रंग-रूप, स्वास्थ्य; दूसरे से धन, परिवार, आंख और वाणी; तीसरे से भाई-बहन, वीरता, शूरता; चौथे से विद्या भारती, माता, घर, वाहन, आरामदायक वस्तुएं; पांचवा भाव संतान, वंश, बुद्धि, छठे से रोग, चोट, शत्रु, ऋण; सातवें से पति-पत्नी, व्यापार, साझेदार और विवाद सम्वंधी विवरण व आठवें भाव से मृत्यु; नवें से पिता, भाग्य और धर्म; दसवें से लाभ, बड़े भाई तथा बारहवें भाव से हानि, व्यय, यात्रा और बुरे कर्मों का पता चलता है।

ग्रह-शान्ति के लिए किया गया उपाय वस्तुतः विगत जीवन के उस अपकर्म का प्रायश्चित्त है, जो सम्वंधित ग्रह की किरणों के द्वारा हमें बार-बार पीड़ित करता है। उपायों के द्वारा हम उस ग्रह की रश्मियों का आह्वान करते हैं ताकि प्रभाव डालकर अनुकूल परिवर्तन कर सकें, यह सिद्ध हो चुका है उपाय इसमें सहायक बनते हैं।

यह पहले ही लिखा जा चुका है कि ग्रह-शान्ति का सर्वोत्तम उपाय केवल दान है, जो जातक इसमें कठिनाई अनुभव करते हैं, उन्हें सम्वंधित ग्रह के औषधि स्नान, जड़ी धारण एवं तंत्र द्वारा उपाय अपनाना चाहिए। सम्वंधित ग्रह की जड़ी विधिपूर्वक धारण करना अथवा उससे स्नान बहुत लाभप्रद रहता है।

ज्योतिष विज्ञान के अनुसार ग्रहों की पीड़ा शान्त करने हेतु कुछ विशिष्ट जड़ियों के द्वारा स्नान करने का भी विधान है। ये पदार्थ सहज सुलभ हैं तथा यह चमत्कारिक प्रभावों को दिखलाते हैं। स्नान हेतु प्रयुक्त जड़ियों का प्रयोग रात्रि में पहले स्वच्छ जल में भिगो दिया जाता है। दूसरे दिन प्रातः उन्हें छान लिया जाता है। छने हुए जल को स्नान के जल में मिलाकर स्नान किया जाता है। इसमें थोड़ा गंगाजल भी डाल लें। इस प्रकार के स्नान ग्रहों से सम्बन्धित दिनों में ही किए जाते हैं। निम्नलिखित सूची में ग्रहों की जड़ियों तथा स्नान के दिनों को जाना जा सकता है।

यह स्नान कुछ दिनों तक करने पर इसके चमत्कारिक प्रभाव को अनुभव किया जा सकता है। विभिन्न ग्रहों की पीड़ा शान्त करने हेतु विभिन्न प्रकार के उपायों का भी विधान है। इस विधान के अन्तर्गत कुछ साधारण उपायों से ग्रह-पीड़ा शान्त की जाती है।

ज्योतिष विज्ञान में ग्रहों की पीड़ा शान्त करने हेतु विशिष्ट वस्तुओं के दान करने, प्रवाहित करने का भी प्रावधान है। वास्तव में ग्रह हमारे शरीर में निरन्तर रहते हैं, ग्रह

की रश्मियां जातक पर ऋणात्मक प्रभाव डालती हैं। जब हम उस ग्रह के अनुरूप उपाय करते हैं, तब हमारी मानसिकता में परिवर्तन आ जाता है। यही परिवर्तन उस ग्रह का ऋणात्मक प्रभाव हमारे ऊपर से समाप्त कर देता है।

ज्योतिष विज्ञान एवं लाल किताब

यूं तो ज्योतिष विज्ञान एवं लाल किताब में ग्रहों के बुरे प्रभावों को नष्ट करने हेतु अनेकों उपायों का वर्णन किया गया है, जिन्हें सम्पन्न करके कोई भी जातक अपने ऊपर से किसी भी ग्रह के अनिष्ट फलों को दूर कर सकता है, फिर भी कुछ और उपचार दिए जा रहे हैं, जिन्हें करके कोई भी लाभ उठा सकता है!

चन्द्र की पीड़ा हेतु

"ॐ हिम् नमः शिवाय" का जप करें। सफेद पुष्प सोमवार को कुएं में अथवा बहती नदी में प्रवाहित करें। चाँदी के पात्र में जल पीयें, सूर्यास्त के बाद दूध पीना, पिलाना वर्जित है। सोमवार को बबूल में दूध चढ़ावें।

मंगल की पीड़ा हेतु

मूसर की दाल तथा गुड़ मंगलवार को ग्रहण करें, गणेशजी के दर्शन करें। गहरे लाल पुष्पों को बहते जल में प्रवाहित करें। काली मिर्च खावें, मंगल की होरा में निर्जल रहें।

बुध की पीड़ा हेतु

बुधवार को इलायची एवं तुलसी पत्र खायें तथा इलायची जल में प्रवाहित करें। बुधवार को मुट्ठी-भर हरी मूंग भिखारियों को दान करें। बुध को होरा में निर्जल रहें।

बृहस्पति (गुरु) की पीड़ा हेतु

12 चमेली के पुष्प लेकर जल में प्रवाहित करें। पीले कनेर के पुष्प गुरु की प्रतिमा पर चढ़ावें। स्वर्ण के पात्र में जल पीयें। पीले वस्त्र किसी भी सौभाग्यवती को देवें, गुरु की हीरा में निर्जल रहें।

शुक्र की पीड़ा हेतु

सफेद पुष्पों को नदी में प्रवाहित करें, "ॐ नमः" का जप करें, गऊ को ज्वार खिलायें। उड़द एवं शुद्ध घी का सेवन करें। शुक्र की होरा में निर्जल रहें।

शनि की पीड़ा हेतु

कपूर को खोपरे के तेल में मिलाकर सिर में लगावें, काले उड़द जल में प्रवाहित करें। काले उड़द की एक मुट्ठी भिखारियों को दें, लोहे के पात्र में जल भोजनादि वर्जित है, शनि की होरा में निर्जल रहें।

सूर्य की पीड़ा हेतु

रविवार दोपहर में दही, चावल का सेवन करें। 21 कमल के फूलों को गणपति पर चढ़ावें। रविवार को नमक का त्याग करें, सूर्य की होरा में निर्जल रहें।

राहु की पीड़ा हेतु

शनि की होरा में निर्जल रहें। काले धतूरे के पुष्प शिवजी पर चढ़ावें। लोहे के पात्र में जलादि ग्रहण करना वर्जित है।

केतु की पीड़ा हेतु

लोहे के पात्र में जलादि ग्रहण करना वर्जित है, शनि एवं गुरु की होरा में निर्जल रहें।

इस प्रकार ग्रहों की पीड़ा शान्त करने हेतु विधान है। इन उपायों के पीछे वैज्ञानिक कारण यह है कि उपाय की वस्तुएं जिस रंग की होती हैं सम्बंधित ग्रह की किरणें भी उसी रंग की होती हैं। अत: जैसे ही उक्त किरणें उस उपाय से टकराती हैं वैसे ही वे परावर्तित हो जाती हैं, क्योंकि यह एक प्रामाणिक तथ्य है कि जिस वस्तु को हम जिस रंग का देखते हैं, वह वस्तु वही रंग हमारी ओर फेंकती है। इस प्रकार उस ग्रह की हानिकारक किरणों से हमारी रक्षा होती है। इन उपायों के पीछे यही एक वैज्ञानिक कारण है।

अंत में "लाल किताव" में पूर्ण आस्था तथा पूर्णत: गम्भीरतापूर्वक परिणाम जानने की इच्छा वाले भी ज्योतिष के ज्ञान का पूर्ण लाभ नहीं उठा पाते क्योंकि वे उनका उपयोग गलत रूप में करते हैं। वे प्राय: अपनी जन्मकुण्डली उन विद्वानों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं और यह इच्छा रखते हैं कि ज्योतिषी उनके विगत और भविष्य दोनों ही समयों का पूर्ण विवरण उनको तुरन्त बतला दें। यह भी मान लिया जाये कि ज्योतिषी को अपने अध्ययन में पूर्ण निपुणता प्राप्त हो चुकी है, तो भी किसी जीवन की घटनाओं का गणितीय अनुमान लगाने में तो उसे थोड़ा-बहुत समय लगेगा ही। तब फिर उस ज्योतिषी से यह कैसे आशा लगायी जा सकती है कि वह जब कभी दो-चार क्षणों के लिए अपनी धुंधली, अपूर्ण जन्मकुण्डली लेकर चले आने वाले व्यक्ति को सटीक भविष्यवाणियां तुरन्त बतला दें।

प्रिय पाठकों! भविष्य जानने, उपाय पूछने से पूर्व आपको अपने भीतर धैर्य उत्पन्न करना होगा और विद्वान् ज्योतिषी को अध्ययन और चिंतन के लिए पर्याप्त समय देना होगा।

26 लाल किताब के उपाय

लाल किताब एक प्राचीन पुस्तक है, यह किसी धर्म या सम्प्रदाय से नहीं बल्कि सभी के विश्वास से जुड़ी है। आज लाल किताब और उसके उपायों को लेकर काफी चर्चा है। ज्योतिषी गण इसके पक्ष व विपक्ष में अपने-अपने तर्क दे रहे हैं। इस पर बहस का प्रारम्भ होना एक अच्छी बात है जो कि आवश्यक भी थी।

ज्योतिष शास्त्र एक विज्ञान है। जिसे हजारों वर्ष के अनुसंधान के पश्चात् ऋषि-मुनियों द्वारा बनाया गया है। समय-समय पर इसकी उपयोगिता सिद्ध ही होती रही है। कोई भी वस्तु जो उपयोग में नहीं आती है वह शीघ्र ही चलन से बाहर हो जाती है। उसी प्रकार जब कोई शास्त्र अनुपयोगी होता है, तो लोग उसे शीघ्र ही भूल जाते हैं। पर आज भी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है, जो निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। शायद ही कोई ऐसी पत्र, पत्रिका होगी जिसमें राशिफल व भविष्यवाणियां न छपती हों।

जिस प्रकार वैज्ञानिक कुछ वर्षों की खोज के पश्चात् कोई दवा तैयार करते हैं—इसी प्रकार ज्योतिष शास्त्र हजारों वर्षों के अनुसंधान और परीक्षण के पश्चात् तैयार किया गया है।

उदाहरण के लिए; विद्वान् ज्योतिषी बिना जातक को देखे केवल उसकी जन्मपत्रिका देखकर उसके विषय में सब कुछ बता देता है। इसके साथ ही जीवन में कौन-सी घटना कब घटेगी, इसकी भी जानकारी दे देता है। अगर कोई ज्योतिषी जन्मपत्रिका को देखकर सटीक भविष्वाणी नहीं कर पाता है तो अवश्य ही उसके अध्ययन में कमी है, क्योंकि ज्योतिषशास्त्र तो स्वयं में सिद्ध विज्ञान है। भूचक्र में घूमते नवग्रहों का प्रभाव प्रत्येक जातक पर थोड़ा-बहुत हो सकता है, क्योंकि देशकाल, वातावरण, सामाजिक स्थिति, मानसिक स्थिति व सहन करने की क्षमता इत्यादि अलग-अलग होते हैं।

जब जातक पर ग्रहों के प्रभाव से कष्ट आता है तो वह ज्योतिषी के पास जाता है। ग्रहों के कष्ट के निवारण का उपाय ढूंढने के लिए लाल किताब में अनेक उपाय हैं, पर उपायों की भी एक सीमा होती है। भाग्य का लिखा तो कोई बदल ही नहीं सकता, पर ज्योतिष के उपायों से कष्ट को कम अवश्य किया जा सकता है।

आज ज्योतिष विज्ञान पर पत्र-पत्रिका निकालने वाले विद्वान् सज्जनों को स्वयं को देखना होगा कि वह एक ओर तो यह ज्योतिष को आगे बढ़ाने की है और स्वयं ही दूसरी ओर धन के लोभ में लोगों में भ्रम पैदा करने का प्रयत्न भी करते हैं व पाखंड फैलाते हैं। मित्रों, आज भय नौसीखियों से नहीं क्योंकि कोई भी शास्त्र हो, प्रारम्भ में तो रुचि रखने वाला हर व्यक्ति नौसीखिया ही होता है। अभ्यास से ही विद्वान् बनता है। विश्व में किसी भी शास्त्र का ऐसा कोई विद्वान् उत्पन्न नहीं हुआ है जिसने शास्त्र सीखकर जन्म लिया हो। वास्तविक भय तो हमारे स्थापित विद्वानों

से है, जो धन कमाने के लोभ में बिना परीक्षण किए अवैज्ञानिक तरीके से ज्योतिष समस्याओं का समाधान करने का दावा करते हैं, क्योंकि लोग इन पर विश्वास करते हैं। प्रिय मित्रों! आज इस शास्त्र को विरोधियों से इतना भय नहीं जितना अपनों से है।

प्रत्येक जातक यह चाहता है कि उसके पास धन, नाम, लाभ हो, उसका काम-काज अच्छा चले, उसका स्वास्थ्य अच्छा रहे। अगर देखा जाए तो कुछ लोग शीघ्र सफलता प्राप्त कर लेते हैं जबकि दूसरे लोग सारा जीवन परिश्रम करते रह जाते हैं और एक साधारण-सा जीवन व्यतीत करते हैं। क्षेत्र कोई हो, हर क्षेत्र में छोटे एवं बड़े लोग होते हैं। हमें यह देखना है कि कौन-से ग्रह अच्छा व्यवसाय देते हैं और कौन-से योग हैं-जिस कारण जातक अपने जीवन में अच्छे स्थान पर शीघ्र पहुंच जाते हैं।

आइए अब हम अशुभ या बद ग्रहों का प्रभाव वदलने के सरल उपाय एक दृष्टि में प्रस्तुत कर रहे हैं!

जन्मकुण्डली में स्थित सूर्य के शुभ-अशुभ फल

सूर्य (SUN)



खाना नं० 1

अशुभता दूर करने के सरल उपाय-

- गुड़ खाकर, पानी पीकर कार्य आरम्भ करें।
- तांबे की मुद्रिका में साढ़े 5 रत्ती वजन का रत्न नीलम, रविवार के दिन अनामिका उंगली में धारण करें।
- बहते पानी में गुड़ बहाएं।
- कच्चा दूध सूर्योदय के पश्चात् लगातार 41 दिन तक दान करें।
- रात को साते समय दूध से आग बुझाएं।
- बिना छत के मकान में हैंडपम्प लगावें।

खाना नं० 2

अशुभता दूर करने के सरल उपाय-

- किसी से मुफ्त की वस्तुएं प्राप्त नहीं करें।
- प्रसाद, लंगर आदि न खायें।
- औरतों से कभी न झगड़ें।
- नारियल, बादाम, तेल मंदिर में चढ़ावें।
- दूध ना पिएं।
- कच्चा दूध दान करें।

खाना नं० 3

अशुभता दूर करने के सरल उपाय–

- दूसरों की भलाई करने से अशुभता दूर होगी।
- चरित्र को ठीक रखें।
- चोरी के माल से दूर रहें।
- कुएं में चार ग्राम चाँदी का टुकड़ा गिरावें।
- बिना छेद वाला तांबे का पैसा, एक-एक रोज 40 दिन लगातार बहते जल में प्रवाहित करें।
- लाल मुंह वाला बन्दर पालें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- अंधे व्यक्ति को भिक्षा दें।
- कुत्ता और गाय की सेवा करें।
- तांबे के पैसे में छेद कर 41 दिन तक लगातार एक-एक पैसा बहते जल में डाले।
- साबूत मूंग तांबे की गड़वी में भरकर जल में प्रवाहित करें।
- भिखारी को रोटी खिलावें।
- तांबा दान करें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- लाल मुंह वाले बन्दर को पालें।
- 6 रत्ती वजन का रत्न माणिक्य सोने की मुद्रिका में रविवार को जड़वाकर धारण करें।
- घर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में रखें।
- रविवार का उपवास करें और सूर्य को गुड़-शक्कर के मीठे जल का अर्घ्य प्रदान करें।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- बन्दर को गुड़ खिलावें।
- मित्रों को दावत देते रहें।
- चाँदी या दरिया का पानी घर में रखें।
- मंदिर में दान देते रहें।

- रात में सिरहाने में एक गड़वी जल रखें और सुबह बाहर फेंक दें। इससे पिता की आयु बढ़ेगी।
- धर्म-स्थान में रहने वाले कुत्ते को खुराक देते रहें।
- रात में रोटी खाने के पश्चात् आग दूध से बुझावें।

खाना नं० 7

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काले रंग की गाय की सेवा करें।
- ताम्बे के 7 चौकोर टुकड़े प्रति वर्ष रविवार के दिन धरती में गाड़ें।
- दूध और दही दान न करें।
- रोटी खाने से पहले भोजन का कुछ भाग आग में आहुति डालें।
- ऐसे जातक की स्त्री को रविवार का उपवास करना चाहिए।
- भूरी भैंस का पालन करें।

खाना नं० 8

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काले कुत्ते घर में पालें।
- दक्षिण दिशा में भवन का द्वार न बनावें।
- घर में सफेद गाय ना पालें।
- काली गाय की सेवा करें।
- मीठा खाकर काम शुरू करें।
- जिसकी कुण्डली में सूर्य आठवें खाने में बैठा हो तो वह व्यक्ति बहुत बीमार मृत्यु सय्या पर सोए व्यक्ति के पास न बैठे, क्योंकि उनके सामने मृत्यु नहीं आती।
- चाँदी दान न करें।
- दूध न पियें।
- पराई स्त्री से संभोग न करें।
- ताम्बे का बिना छेद वाला पैसा, 43 दिन एक-एक पैसा लगातार बहते जल में डालें।
- तांबे के 4 नाग बनवावें और चारों नाग एक ही दिन गंगा नदी में समर्पित कर दें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- पीतल का बड़ा बर्तन संदूक में बन्द करके रखें तो शुभ फल प्राप्त होगा।
- पीतल का बर्तन ही घर में उपयोग करें।

- स्टील के बर्तन उपयोग करना बन्द कर दें।
- चाँदी, दूध, दही और चावल में से कोई एक वस्तु या सम्भव हो तो सभी वस्तुएं सोमवार के दिन दान किया करें।
- पीले रंग के 5 फूल शिव मंदिर में लगातार 100 दिन चढ़ावें।
- कुकर्म और गलत कार्यों से बचें।
- रविवार को गेहूं दान करें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- छेद किया हुआ तांबे का पैसा 43 दिन तक लगातार जल में प्रवाहित करें।
- हैंडपम्प आंगन में होना अनिवार्य।
- काली गाय या भैंस नहीं पालें।
- शवर्तती रंग (हल्का पीला) की टोपी सदैव सिर में लगाए रखें या पीले रंग पगड़ी बांधें।
- सिर को नंगा कभी न रखें।
- भूरी भैंस का पालन करें।
- काला कपड़ा कभी न पहनें।
- सत्य बोलने की आदत डालें।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- रात को मूली सिरहाने में रखकर प्रातःकाली मंदिर में चढ़ावें।
- काला कपड़ा, काले माह, काले तिल, सरसों का तेल, नीलम, शनिवार के लिए दान करें।
- बादाम न खावें न दान में लें।
- घर का मुख्य द्वार पूर्व दिशा में रखें।
- भगवान सूर्य को प्रातःकाल मीठा जल अर्घ्य प्रदान करें।

खाना नं० 12

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- धर्म का पालन करते रहें।
- झूठी गवाही न दें।
- रविवार के दिन 40 नीले फूल धरती में दबावें।
- ससुराल से बिजली का सामान मुफ्त में लेने से बर्बादी होगी।
- लोहे का उद्योग या व्यापार न करें।

जन्मकुण्डली में स्थित चन्द्र के शुभ-अशुभ फल

चन्द्र (MOON)



खाना नं० 1

अशुभता फल निवारण के सरल सरल उपाय–

- पीपल के वृक्ष की जड़ में जल चढ़ावें।
- नित्य ही प्रात:काल उठकर दादी मां एवं माताजी के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त करें।
- समुद्र यात्रा के समय या नदी पार करते समय तांबे का पैसा जल में प्रवाहित करें।
- चारपाई के चारों पावों में लोहे की कील गाड़ दें।
- शीशे के बर्तन में पानी या दूध न पियें।
- चाँदी की अंगूठी में साढ़े 5 रत्ती वजन का मोती जड़वाकर सोमवार के दिन धारण करें।
- दूध और दही दान करें।
- चाँदी के पांच बर्तन घर में रखें और उसी में रिश्तेदारों व मित्रों को भोजन करावें, सम्भव हो तो स्वयं भी उसी में भोजन करें।
- चावल व चाँदी सोमवार के दिन माता से दान लेकर जीवन भर संभालकर रखें।
- 'लाल मूंगा' साढ़े 5 रत्ती सोने की मुद्रिका में धारण करें।
- कभी-कभी आधा ग्लास जल बरगद के पेड़ की जड़ में डालें।
- सफेद गाय पालें।
- स्त्री नौकरानी घर के काम-काज हेतु रखें।

खाना नं० 2

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- भवन की नींव में चाँदी का पत्तर दबा द्रें।
- हरे रंग का कपड़ा 43 दिन लगातार कुंवारी कन्या को दान करें।
- टूटी केतली या खराब मिक्सी यदि घर में पड़ी है तो बेच डालें।
- घर में भगवान शिव से सम्बन्धित वस्तुएं आदि न रखें।
- घर में नित्य ही दादी व मां के चरण छूकर आशीर्वाद प्राप्त करें।
- सफेद रंग की गाय पालें।
- ससुराल के सदस्य से 50 ग्राम वजन का चौकोर ईंट दान लें।
- चन्द्र की वस्तुएं घर में कायम रखें।

- दूध व दही बहते जल में सोमवार के दिन बहावें।
- माताजी से चावल व चाँदी दान लेकर संभालकर रखें।

खाना नं० 3

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- धन-सम्पत्ति के लिए घोड़ा और गाय पालें।
- कन्या के जन्म पर चन्द्र की और पुत्र के जन्म पर सूर्य की वस्तुएं दान करें। अन्य समय में सूर्य की वस्तुएं दान करने से लाभ होगा।
- प्रति वर्ष कुएं में चाँदी का चौकोर टुकड़ा गिरावें।
- गौदान व कन्यादान करना लाभकारी होगा।
- सत्य बोलें।
- रविवार का उपवास करें और प्रातःकाल सूर्योदय होने पर मीठे जल का अर्घ्य प्रदान करें।
- माता दुर्गा की उपासना करें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- जब भी कोई शुभ कार्य आरम्भ करें तो जल या दूध से भरा कुम्भ भवन के मुख्य द्वार पर स्थापना करें।
- सोमवार के दिन कच्चा दूध भिखारी को अथवा मंदिर में दान करें।
- दूध क़दापि न बेचें।
- पहाड़ी स्थानों की सैर करते रहें।
- दादा-पोता-नाती मिलकर यज्ञ करें।
- सफेद कुत्ता पालें।
- सोमवार का उपवास रखें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- सोमवार के दिन सफेद कपड़े में चावल व मिश्री बांधकर जल में 11 दिन बहावें।
- पहाड़ों की सैर करें।
- किसी को धोखा नहीं दें।
- सत्य बोलने की आदत डालें।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- 24 वर्ष से पहले कुआं, नलका, छबील न लगावें।

- श्मशान भूमि व अस्पताल में नलका लगावें।
- रात को दूध न पिएं।
- रात्रि के समय फटा दूध, दही या पनीर भोजन में उपयोग कर सकते हैं।
- स्वभाव के लिए आवश्यक हो तो दूध दिन में ही पिया करें।
- लगातार 40 दिन स्नान-भूमि में जाकर स्नान करें।
- कभी-कभी धर्म-स्थान में सूर्य, चन्द्र, मंगल व बृहस्पति की वस्तुएं मंदिर में जाकर दान करें।
- चाँदी के अंगूठी में मोती 6 रत्ती जड़वाकर धारण करें।

खाना नं० 7

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- ससुराल से चाँदी, चावल व मिसरी दान में लेकर संभालकर रखें।
- माता की सेवा करते रहें।
- घर आए मित्रों को दूध पिलावें।
- दूध कभी न बेचें।
- शादी के दिन पत्नी के पिता के घर से चाँदी, चावल व दूध दान लेकर अपने घर आवें।
- चाँदी की अंगूठी धारण करें।

खाना नं० 8

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- जन्म से आठ वर्ष के भीतर तक शुद्ध चाँदी का चन्द्रमा गले में धारण करें।
- संतान की रक्षा हेतु अथवा सन्तान-प्राप्ति हेतु श्मशान किनारे श्मशान भूमि का जल घर में सदैव रखें।
- बड़े-बूढ़ों का आशीर्वाद प्राप्त करना, उनके चरण धोना लाभकारी होगा।
- बड़ों के नाम पर दूध का दान, पितृ श्राद्ध करने पर रोग से बचाव होगा।
- घर में चन्द्र की वस्तुएं रखना लाभकारी होगा।
- चाँदी की मुद्रिका धारण करें।
- श्मशान भूमि पर नलका लगवावें।
- नाक छेदन करवावें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- धर्म-कर्म में समय दें।
- सोमवार का उपवास रखें।

- चन्द्रग्रहण के समय सूखा नारियल जल में प्रवाह करें।
- चाँदी की मुद्रिका में 5 रत्ती मोती जड़वाकर धारण करें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- पीला पुखराज स्वर्ण में बृहस्पतिवार के दिन धारण करें।
- रात को दूध न पिएं।
- बरसात के या नदी के पानी में चाँदी का 50 ग्राम का चौकोर टुकड़ा डालकर शीशे के बर्तन में घर में रखें।
- दवाई की दुकान हो तो पानी वाली दवा न बेचें।
- राजनीति से दूर रहें।
- घर में दूध देने वाला पशु न रखें।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- भैरों मंदिर में दूध चढ़ावें।
- यदि जातक संभोग में निर्बलता अनुभव करता हो तो संभोग के समय सोने की सलाक को आग में गरम कर, लाल बना के दूध में 11 दिन लगातार बुझावें।
- जातक के जन्म होने पर उसकी दादी 43 दिन तक मुंह न देखे।
- कुआं या नलका लगाने से माता और सन्तान दोनों की मौत हो सकती है अतः कुआं व नलकूप न लगावें।
- जातक की स्त्री रात में चावल का भोजन न करे।
- घर में पत्थर के टुकड़े न रखें।
- 121 खोए के पेड़े (दूध-चीनी से बना) दरिया में डालें।
- 11 किलो दूध गरीबों में बांटें। यह कार्य सोमवार के दिन करें।
- समुद्र-यात्रा न करें।

खाना नं० 12

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- "लाल मूंगा", लहसुनिया और पन्ना धारण करें।
- नीम के पत्ते उबालकर उबला पानी ठंडा कर घर में बोतल में रखें।
- वर्षा का पानी बोतल में बंद करके रखें।
- पानी का घूंट पीकर कार्य शुरू करें।
- जन्म से बारह वर्ष तक चाँदी का चन्द्रमा गले में धारण करें।
- सोमवार के दिन शिवलिंग पर दूध चढ़ावें।

जन्मकुण्डली में स्थित मंगल के शुभ-अशुभ फल

मंगल (MARS)



खाना नं० 1

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- मंगलवार का उपवास रखें।
- हनुमान चालीसा का पाठ नित्य करें।
- अपने भवन के भीतर हाथीदांत या उससे बना सामान कभी न रखें।
- मिट्टी के घड़े में गुड़ भरकर विरान स्थान में दबावें।
- लाल रूमाल सदैव ही पास में रखें।
- 28 वर्ष के बाद मांगलिक लड़के (लड़की) से ही विवाह करें।
- सदा सत्य बोलें।
- सिरहानी व बिस्तरे कवर, सोफे व खिड़की के पर्दे आदि लाल रंग के इस्तेमाल करें।

खाना नं० 2

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- साढ़े पांच रत्ती वजन का रत्न मूंगा, चाँदी, सोने की अंगूठी में जड़वाकर, मंगलवार के दिन धारण करें।
- ठीक दोपहर दिन में छोटे बच्चों में फल बांटे।
- मंगलवार का उपवास रखें।
- 5 छुहारे जल में उबालकर जल प्रवाह करें, यह कार्य लगातार 5 दिन करते रहें।
- लाल रूमाल सदैव पास में रखें।

खानां नं० 3

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- हाथी का दांत या हाथी दांत से बनी वस्तुएं घर में रखें।
- लाल मूंगा साढ़े 5 रत्ती वजन का मंगलवार के दिन अंगूठी में (सोना) धारण करें।
- मृगछाला का घर में उपयोग करें।
- गऊमुखी मकान में निवास करें।
- चापलूस मित्रों से बचाव रखें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- भवन का दरवाजा दक्षिण दिशा में हो या मकान से बाहर निकलते समय आग सम्बन्धी कार्य दाएं और बाएं तरफ पानी हो।
- मकान के ऊपर वृक्ष की छाया, कीकर या बेरी का वृक्ष आंगन में, पिछली दीवार के साथ लगता पीपल का कटा हुआ वृक्ष हो। मकान के दाएं-बाएं बड़भूझे की भट्टी, मकान के अन्दर कब्र या कब्र के साथ मकान, श्मशान आदि हो।
- मृगछाला पर रात्रि के समय सोना परम लाभकारी होता है।
- तीन धातु की मुद्रिका धारण करें।
- 400 ग्राम रेवड़ियां नदी की बहती धारा में प्रवाहित करें। यह कार्य 7 मंगलवार करें।
- मीठी वस्तुओं का व्यापार न करें।
- बिना जोड़ वाला चाँदी का कड़ा दाहिने हाथ में धारण करें।
- मिट्टी के घड़े में शहद भरकर जमीन में दबावें।
- देवताओं की प्रतिमा घर में स्थापित नहीं करें।
- बन्दर पालें।
- समय-समय पर गंगास्नान करते रहें।
- सफेद या लाल वस्त्र ही धारण करें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- रात्रि में सोते वक्त तांबे की गड़वी में पानी भरकर पलंग के नीचे रखें। प्रातःकाल उस पानी को पीपल की जड़ में चढ़ावें।
- नीम का वृक्ष आंगन में लगावें।
- साढ़े 5 रत्ती का लाल मूंगा सोने की मुद्रिका में जड़वाकर मंगलवार के दिन धारण करें।
- 6 रत्ती लहसुनिया चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार के दिन धारण करें।
- बेरी व इमली के वृक्ष के पास निवास न बनावें या ऐसे वृक्ष आंगन में भी न लगावें।
- कांच के बर्तन में शहद भरकर मंगलवार के दिन वीरान स्थान में दबावें।
- मंगलवार का उपवास रखें।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- घर के आंगन में बेर, शहतूत व इमली का पेड़ हो तो काट डालें।

- लाल कपड़े में चार किलो जौ बांधकर गौ के पेशाब द्वारा उसे गीला कर नदी में प्रवाह कर दें।
- नौ वर्ष से नीचे की कुंवारी कन्याओं का पूजन करें, घर में भोजन करावें और उन्हें दूध दान करें।
- रात को तांबे की गड़वी में जल सिरहाने के पास रखें और सुबह पीपल के वृक्ष की जड़ में डाले।
- चावल, दूध व चाँदी सोमवार के दिन ब्राह्मण को दान करें।
- चार सूखे नारियल जल में प्रवाहित करें।
- लगातार 5 दिन तक काले नमक की डली अपने हाथ से गौमाता को खिलावें।
- मंगलवार को हनुमानजी को प्रसाद चढ़ावें—सिन्दूर भी चढ़ावें।

खाना नं० 7

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- दही की लस्सी मंगलवार के दिन पिया करें।
- बहन व बुआ को मीठी वस्तुएं खिलाते रहें।
- बुआ और बहन को लाल कपड़े दान करें।
- चाँदी की ठोस गोली अपनी पॉकेट में हर समय रखें।
- घर में 60 ग्राम चाँदी का ईंट सदैव रखें।
- लाल मूंगा साढ़े 5 रत्ती सोने की अंगूठी में धारण करें।
- दूध से मीठा हलवा बनाकर बच्चों में बांटा करें।

खाना नं० 8

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- तंदूर में लगाई मीठी रोटी कुत्तों को 43 दिन तक देते रहें।
- विधवा का आशीर्वाद लेते रहें और विधवा स्त्री की मदद करें।
- मंगलवार को हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- लाल रंग का रूमाल अपने पास सदैव रखें।
- बंसरी में शक्कर भरकर वीराने में दबावें।
- अंगीठी, भट्ठी या तंदूर छत पर में रखें।
- तीन धातुओं की अंगूठी पहनें।
- चाँदी की चेन गले में धारण करें।
- आठ किलो या 800 ग्राम रेवड़ियां दान करें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- मंगलवार के दिन हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ावें और भोग लगावें।

- मंगलवार को हनुमान चालीसा दान करें और स्वयं भी पाठ करें।
- तांबे के 7 चौरस (चौकोर) पीस बनाकर धरती में गाड़ दें।
- रत्न पन्ना सवा छः रत्ती चाँदी की मुद्रिका में बुधवार को जड़वावें व धारण करें।
- लाल मूंगा साढ़े 5 रत्ती स्वर्ण या तांबे की अंगूठी में धारण करें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- मंगलवार को हनुमान को गुड़ का प्रसाद चढ़ावें।
- मंगलवार को शाम के समय केवल एक समय मीठा भोजन करें।
- दूध धरती पर गिरने से भी बचावें।
- निपुत्र, काना व काले व्यक्ति की सेवा करें और उन्हें दान दें।
- सोने की जंजीर गले में धारण करें।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काला कुत्ता पालें।
- केसर का तिलक लगावें।
- "पीला पुखराज" साढ़े 5 रत्ती सोने की मुद्रिका में वीरवार को धारण करें, पंडित से सलाह लेकर।
- सोने का छल्ला बिना जोड़ वाला धारण करें।

खाना नं० 12

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- चाँदी की चेन धारण करें।
- घर में 100 ग्राम चाँदी का चौकोर ईंट हर समय रखें।
- मंगलवार को मीठा भोजन करें और मिठाइयां बच्चों को बांटें।
- कुत्ते को मीठी रोटी खिलावें।
- लाल मूंगा साढ़े 5 रत्ती को सोने की मुद्रिका में मंगलवार को जड़वावें और मंगलवार को ही धारण करें।
- लाल रूमाल सदैव अपने पास रखें।
- 1 किलो या 4 किलो बतासे बहते जल में प्रवाह करें।

जन्मकुण्डली में स्थित बुध के शुभ-अशुभ फल

बुध (MERCURY)



खाना नं० 1

अशुभ फल निवारण के सरल सरल उपाय–

- कांसे के बर्तन में देसी घी, देसी कपूर व शक्कर डालकर बहते जल में प्रवाहित करें।
- सूराख वाला तांबे का पैसा 21 दिन (इक्कीस दिन) लगातार बहते जल में गिरावें।
- फटकरी से नित्य दांत साफ करें।
- कन्याओं का पूजन करें।
- घर में संगीत वाद्य यंत्र न रखें।
- मिट्टी की 6 कटोरी में तेल भरकर धरती में दबावें।
- लाल रंग छोड़कर अन्य किसी रंग का कुत्ता पालें।
- हरे रंग से परहेज रखें।
- साली को साथ न रखें।
- नाक का छेदन करावें।

खाना नं० 2

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- नाक छेदन कराकर 90 दिन तक चाँदी धारण करें। नाक छेदन मध्य में करावें।
- कुंवारी कन्याओं को भोजन कराते रहें और उनके पांव छूकर आशीर्वाद प्राप्त करते रहे।
- साढ़े 5 रत्ती पन्ना रत्न बुधवार के दिन चाँदी की अंगूठी में जड़वा कर बुधवार को ही धारण करें।
- तोता, भेड़, बकरी-पालन न करें।
- हरे रंग का कपड़ा आदि इस्तेमाल नहीं करें।
- दुर्गा की स्तुति करें।

खाना नं० 3

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- रात के समय साबुत मूंग पानी में भिगोकर सुबह गाय को खिलावें। यह कार्य 43 दिन लगातार करने से सफलता मिलती है।
- पलाश या ढाक के पत्ते दूध से धोकर वीरान स्थान में दबावें। दबाते वक्त मिट्टी खोदने वाला औजार उसी स्थान पर छोड़ दें। यह कार्य दिन में ही बुधवार के दिन करें परन्तु कोई देखे नहीं।

- बकरी दान करें।
- हर रोज फिटकरी से दांत धोएं।
- पक्षियों की सेवा करें।
- पीले रंग की कौड़ियां जलाकर, राख दरिया में बहावें। यह कार्य सात दिन लगातार करें।
- 6 रत्ती रत्न पन्ना बुधवार के दिन चाँदी में जड़वाकर, बुधवार को ही धारण करें।
- पागल खाने में फल दान करें और दमे रोग की दवाइयां मुफ्त बाटें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- मन की शान्ति के लिए चाँदी का चौकोर पत्थर चाँदी की जंजीर में गले में धारण करें।
- सोने की जंजीर धारण करें।
- 43 दिन तक केसर का तिलक लगावें।
- चाँदी का बना हुआ बिना जोड़ वाला छल्ला बाएं हाथ की उंगली में धारण करें।
- पलाश के तीन पत्तों को दूध से धोकर जमीन में दबा दें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- गले में तांबे का पैसा धारण करने से धन में वृद्धि होती है।
- निवास स्थान के भीतर या बाहर इमली, बाँस या कीकर का वृक्ष न उगावें, यदि लगा हो तो काट दें।
- साढ़े 5 रत्ती वजन का मोती चाँदी की अंगूठी में सोमवार के दिन जड़वाकर सोमवार को ही धारण करें।
- दूध वाली बकरी पालें।
- नाकछेदन करावें।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- वर्षा का पानी सफेद बोतल में भरकर खेत में दबा दें।
- पन्ना रत्न साढ़े 5 रत्ती चाँदी की मुद्रिका में बुधवार को जड़वावें, बुधवार को ही धारण करें।
- उत्तर दिशा में बहन, बुआ और लड़की का विवाह न करें।

- उत्तर दिशा के द्वार वाले मकान में न रहें।
- चीनी गड़वी में भरकर वीराने में दबा दें।
- सोने की चेन गले में धारण करें।
- कन्याओं को भोजन करावें और पांव छूकर आशीर्वाद लें।

खाना नं० 7

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काले रंग की गाय पालें और उसकी सेवा करें।
- तीन सौ मिट्टी की गोलियां बनाकर छाया में सुखा लें। सौ–सौ गोलियां तीन धर्म–स्थानों में जाकर रख दें।
- सवा किलो मूंग 5 बुधवार को बहते जल में प्रवाहित करें।
- रत्न पन्ना साढ़े 5 रत्ती, सफेद, जराकन 6 रत्ती चाँदी की मुद्रिका में जड़वाकर धारण करें।
- बुधवार के दिन हरा चारा गाय को खिलावें या गऊशाला में दान करें।

खाना नं० 8

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- 43 दिन लगातार पीले रंग का कपड़ा दरिया में धोवें।
- दुर्गा का पूजन करें एवं कुंवारी कन्याओं का पूजन करें।
- चाँदी की जंजीर पहनें।
- मिट्टी के बर्तन में चीनी भरकर, ठूठी (सूखे नारियल गिरी का आधा भाग) से ढककर श्मशान में दबा आवें।
- तांबे की गड़वी में साबुत मूंग भरकर, तांबे के ढक्कन से गड़वी के मुख के टांके से बंद कर दरिया में तैरावें।
- मृगछाया पर रात्रि के समय सोएं।
- लाल वस्त्र घर में इस्तेमाल न करें।
- पागलखाने में फल दान करें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- नाकछेदन करावें और उसमें 96 दिन तक सोना या चाँदी धारण करें।
- हरे रंग के वस्त्र से परहेज करें।
- लोहे की गोली लाल रंग से पेंट करके जेब में रखें।
- तोता या बकरी अपने पास नहीं रखें।
- चावल, चने की दाल 43 दिन तक लगातार बहते पानी में बहावें।
- रत्न पन्ना सवा छः रत्ती वजन का चाँदी की अंगूठी में बुधवार को जड़वाकर बुधवार को ही धारण करें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काले माह 43 दिन तक लगातार नदी में प्रवाहित करें।
- शराब, मांस-मछली, अण्डे आदि कभी भी ग्रहण न करें।
- शनि का उपाय मददगार होगा।
- नीलम धारण करें।
- अंधे लोगों को लड्डू खिलावें।
- बांसुरी में चीनी भरकर प्रतिवर्ष धरती में दबावें।
- चार सूखे नारियल बहती नदी में डालें।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- गले में तांबे का छिद्र वाला पैसा लाल डोरे में धारण करें।
- लोहे की गीली, लाल रंग से रंगा हुआ पैसा जेब में सदैव रखें।
- साधु-संतों की संगति से बचें।
- मांस, मछली, अण्डे, शराब का सेवन नहीं करें।

खाना नं० 12

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काले कुत्ते पालें।
- नाकछेदन करावें।
- लोहे का छल्ला शनिवार के दिन बनाकर शनिवार को ही धारण करें।
- शुद्ध केसर का तिलक लगावें।
- कोरा मिट्टी का घड़ा बहती नदी में बहावें।
- पीला धागा गले में हर समय धारण किए रहें।
- गणेशजी की पूजा बुधवार को किया करें।
- मंदिर में रेता दान करें।

जन्मकुण्डली में स्थित बृहस्पति के शुभ-अशुभ फल

बृहस्पति (JUPITER)



खाना नं० 1

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- पीला पुखराज साढ़े 5 रत्ती वजन का सोने की अंगूठी में जड़वाकर बृहस्पतिवार को ही धारण करें।

- बृहस्पतिवार के दिन पीला मीठा चावल बनाकर बच्चों में बाटें।
- गुरु बृहस्पतिवार का उपवास रखें, एक समय शाम को मीठा भोजन करें।
- पीला कपड़ा बृहस्पतिवार को नदी में बहावें।
- पीले रंग का रूमाल अपने पास रखें।
- मिट्टी के बर्तन में गुड़ भरकर धरती में दबावें।

खाना नं० 2

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- चने की दाल पीले कपड़े में बांधकर मंदिर में चढ़ावें।
- केसर का तिलक लगावें।
- 40 दिन लगातार मंदिर में जातक माथा टेकें।
- अतिथियों को भोजन करावें और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें।
- दूसरों का भला करने से प्रगति होगी।
- पीला पुखराज साढ़े 5 रत्ती का सोने की अंगूठी में जड़वाकर वृहस्पतिवार को धारण करें।

खाना नं० 3

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- दुर्गा पूजन एवं कन्याओं का पूजन करना बहुत जरूरी है।
- कुंवारी कन्याओं को मीठा भोजन कराते रहें।
- पीला पुखराज साढ़े 5 रत्ती का सोने की अंगूठी में वीरवार को जड़वा कर धारण करें।
- पीले रंग का रूमाल सदैव जेब में रखें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- पीला पुखराज साढ़े 5 रत्ती वजन का सोने की अंगूठी में बृहस्पति वार को जड़वाकर बृहस्पतिवार को ही धारण करें।
- बाज का स्ट्रेच्यू भवन के मुख्य द्वार पर लगावें।
- धर्म-स्थान का प्रसाद न खावें और लंगर नहीं लगावें।
- गंगाजल अपने मकान के भीतर नहीं रखें।
- पराई स्त्री से दूर ही रहें।
- पिता और माताजी की आज्ञा पालन करें।
- बांसुरी में चीनी भरकर वीराने स्थान में दबावें।
- पीले रंग का रूमाल जेब में रखें।
- मन्दिर निर्माण हेतु धन प्रदान करें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काले कुत्ते पालें।
- नित्य प्रात: गणेश का पूजन किया करें।
- मन्दिर का प्रसाद न खावें।
- मुफ्त का माल नहीं ले।
- रत्न लहसुनिया साढ़े छ: रत्ती की अंगूठी में जड़वाकर धारण करें।
- साधु-संतों व ब्राह्मणों की सेवा करें।
- चन्दा नहीं वसूलें, धर्म के नाम पर।
- कफ़न दान करें।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- नित्य ही पीपल के वृक्ष की जड़ में पानी डालें।
- सोने की जंज़ीरी गले में पहनें।
- एक काला कुत्ता पालें।
- 40 दिन तक लगातार मुर्गियों को दाना डालते रहें।
- मुर्गी पालें।
- पानी वाले कुएं में 21 वीरवार जलेबी हर रोज पाव मात्रा में गिरावें।

खाना नं० 7

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- शिव की अराधना करें।
- सोमवार का उपवास रखें।
- सोमवार को शिवलिंग पर दूध चढ़ावें।
- धन के लिए रप्तक व एक चन्दन लाल कपड़े में बांधकर कैश बॉक्स में रखें।
- नित्य केसर का तिलक लगावें।
- पीला वस्त्र भूल से भी धारण न करें।
- निवास स्थान के भीतर मंदिर न बनावें।
- सफेद पुखराज सवा छ: रत्ती चाँदी की अंगूठी में सोमवार को जड़वावें और सोमवार को ही धारण करें।

खाना नं० 8

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- शमशान भूमि में पीपल का वृक्ष लगावें।
- फकीर या साधु को दान देते रहें।

- गले में सोने की जंजीरी धारण करें।
- रूद्राक्ष की माला गले में धारण नहीं करें।
- मस्तक में हल्दी या केसर का नित्य ही तिलक लगावें।
- मंदिर बनाने हेतु दान दिया करें।
- चरित्र उत्तम रखें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- धर्म-कर्म से कभी विमुख ना होवें, वरना बर्वाद हो जायेंगे।
- नित्य ही प्रातःकाल स्नान से पवित्र होकर मंदिर में जाकर माथा टेकें और पूजा-पाठ करें।
- साधु-संतों से दूर रहें।
- बिना जोड़ वाला सोने का छल्ला दाहिने हाथ की उंगली में धारण करें।
- पीली सरसों दरिया में 43 दिन लगातार बहावें।
- निवास के भीतर मंदिर बनाने की भूल न करें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- मस्तक या पगड़ी या पगड़ी पर पीले केसर का तिलक लगावें।
- नाक-साफ करके काम शुरू करें।
- लगातार 43 दिन तक तांबे का कांसा दरिया में डालें।
- नेकी नहीं करें।
- ग्रहण के समय बादाम, नारियल, उड़द, तेल दान करें।
- छः मिट्टी की कौली लेकर उसमें सरसों का तेल भरकर कीचड़ में दबावें।
- सुरमा की डिब्बी वीराने में गाड़ें।
- गाय को हरा चारा बुधवार के दिन डालें या गौशाला में दान करें।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- कफ़न दान करें।
- भाई से मिलकर व्यवसाय करें।
- चरित्र उत्तम रखें।
- पिता, गुरु और पंडितों से आशीर्वाद प्राप्त करते रहें।
- रात्रि में सोते वक्त सिरहाने में पीतल की गड़वी में जल रखें। प्रातःकाल उसे पीपल की जड़ में चढ़ावें। यह कार्य 40 दिन लगातार करें।

खाना नं० 12

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- मस्तक पर केसर का तिलक लगावें।
- सिर पर चोटी रखें।
- सिर ढक कर रखें।
- नाक का पानी साफ करके ही कोई कार्य आरम्भ करें।
- रत्न लहसुनिया साढ़े 5 रत्ती चाँदी की अंगूठी में धारण करें।
- पीपल के वृक्ष की जड़ में रोजाना ही जल चढ़ाया करें।
- साधु-संतों को दान दें।

जन्मकुण्डली में स्थित सूर्य के शुभ-अशुभ फल

शुक्र (VENUS)



खाना नं० 1

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- गुड़ कभी न खावें।
- दिन में संभोग न करें।
- जल में दही डालकर स्नान करें।
- काली गाय पालें और उसकी सेवा करें।
- कन्या दान करें।
- सरसों अधिक, सहित छः रंग के अनाज मिलाकर; अर्थात् सतरंगा अनाज शुक्रवार के दिन दान करें।
- गौ दान करें।
- गले में सोने की चेन धारण करें।
- रत्न हीरा या सफेद जिरकन स्वर्ण की अंगूठी में शुक्रवार को जड़वाकर शुक्रवार को ही धारण करें।

खाना नं० 2

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- 2 किलो आलू हल्दी से पीला करके मंगलवार के दिन गाय को खिलावें।
- 200 ग्राम गाय का घी हल्दी से कुछ पीला करके महीने के प्रथम मंगलवार को हर महीने मंदिर में चढ़ावें।
- पराई स्त्री से सम्पर्क न करें।
- कच्ची ढाई, ईंट शुक्रवार के दिन दरिया में डाले।
- 40 दिन लगातार कच्चा कोयला जलाकर दूध से छींटे मारकर बुझावें।

खाना नं० 3

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- शुक्रवार का उपवास रखें।
- सफेद वस्त्र धारण करें।
- स्त्री की सलाह लिए बिना कोई कार्य न करें।
- संगीत की वस्तुएं घर में कदापि न रखें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- स्त्रियों के साथ अवैध सम्बन्ध कायम करने से दूर रहें।
- गौ दान करें।
- सन्तान की कमी चन्द्र के उपाय द्वारा दूर करें।
- यदि पत्नी बीमार हो तो मिट्टी के छोटे वर्तन में शहद भरकर मकान की छत पर तालाब की मिट्टी में दबावें। आडू की 5 गुठली में छिद्र करके, छिद्र में सुरमा भरकर वीराने स्थान पर जमीन में गाड़ें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- चरित्र (चाल-चलन) सदैव ठीक रखें।
- 'गुप्तांग' को लगातार 40 दिन तक दूध की लस्सी या दही से धोवें।
- गाय पालें (सफेद) और उनकी सेवा करें।
- चाँदी का छल्ला बिना जोड़ वाला उंगली में धारण करें।
- विवाह के वक्त या दुल्हन पसंद करने जाते समय काला या नीला वस्त्र धारण नहीं करें।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- चाँदी की गोली सदैव पॉकेट में रखें।
- पत्नी बीमार हो तो वे गुप्तांग को लाल रंग की दवाई से धोएं।
- जातक की पत्नी जमीन पर भूल से भी नंगे पांव न चले, हर समय जुराब पहने रहे, क्योंकि नंगे पांव पत्नी के चलने से धन बर्बाद हो जाता है।
- 50 ग्राम चाँदी का चौकोर टुकड़ा सदैव कैश बॉक्स में रखें।
- चावल व कच्चा दूध सोमवार को दान करें।
- शीशे की बोतल में गंगाजल भरकर शुक्रवार के दिन खेत वाली जमीन में दबावें।
- विवाह में पत्नी की डोली घर लाते समय ससुर दो टुकड़े चौरस सोना दहेज में लेकर ही आवे।

- शुक्रवार का उपवास करें।
- सफेद वस्त्र धारण करें।

खाना नं० 7

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- सफेद गाय नहीं पालें। लाल गाय पालें और उसकी सेवा करें।
- पत्नी बीमार रहती हो तो उसके वजन के मुताबिक या वजन का दसवां हिस्सा ज्वार मंदिर में चढ़ावें।
- माता-पिता की सेवा करते रहें।
- गन्दे नाले में लगातार 43 दिन नीला फूल डालें।
- शुक्रवार के दिन कांसे का बर्तन मंदिर में दान करें।
- बीमार रहने पर अपने वजन का हरा चारा शुक्रवार के दिन गऊशाला में दान दें।
- शुक्रवार का उपवास करें।

खाना नं० 8

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- मंदिर में माथा टेकें, दान करें।
- किसी का जमानती न बनें।
- बिना सींग वाली काली गाय की सेवा करें।
- जिमीकंद, गाजर 800 ग्राम अथवा आठ किलो शुक्रवार के दिन मंदिर में चढ़ावें या जल प्रवाह करें।
- गंदे नाले में तांबे का पैसा या नीला फूल 43 दिन तक लगातार गिरावें।
- कन्यादान करें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- लाल रंग की गाय पालें और उसकी सेवा करें।
- मकान की नींव में चाँदी और शहद दबायें।
- नीम के पेड़ की जड़ में चाँदी की छोटी पत्तरी 43 दिन लगातार दबायें।
- पत्नी रोगी हो तो चाँदी की बनी चार धार वाली चूड़ियां लाल रंग से रंगाकर पहनावें।
- शुक्रवार का उपवास रखें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- शनि के उपाय से लाभ होगा।

- शनि की वस्तुएं दान करें।
- बकरी या गाय पालें।
- 8 किलो काले माह दरिया में डालें।
- 4 सूखे नारियल बहती दरिया में बहावें।
- वैष्णवी भोजन करें।
- सुरमा की डिब्बी खेत में गाड़ें।
- लड्डू दान करें, अन्य वस्तु नहीं।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- विवाह के समय काली या लाल गाय अवश्य दान करें।
- स्वर्ण भस्म खाने में उपयोग करें।
- शुक्रवार को तिल दान करें।
- विधवा स्त्री से आशीर्वाद प्राप्त करते रहें।
- बुधवार के दिन हरा चारा गाय को खिलावें या गऊशाला में दान दें।
- मूंग (साबुत) 7 किलो बुधवार के दिन बहते दरिया में डालें।

खाना नं० 12

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- पत्नी का आदर करें।
- स्त्री के नाम पर गाय दान करें।
- लाल या काली गाय पालें।
- पत्नी के हाथों 40 नीले फूल चौराहे पर बृहस्पतिवार के दिन दबायें।
- तांबे का पैसा गन्दे नाले में 40 दिन लगातार गिरावें।
- रत्न उप्पल साढ़े 6 रत्ती वजन का लोहे की मुद्रिका में धारण करें।

जन्मकुण्डली में स्थित शनि के शुभ-अशुभ फल

शनि (SATURN)



खाना नं० 1

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- 43 दिन लगातार मंदिर जाकर भगवान से क्षमा याचना करें।
- माथे में तेल भूल से भी न लगावें।
- शनिवार को तेल दान न करें।
- मस्तक पे दूध या दही का तिलक लगावें।
- ससुराल की प्रगति हेतु दूध पिलावें।

- प्रसन्नता के समय में कोई भी बाजा घर में न बजावें।
- सिक्का धातु से बने 12 सांप जल में प्रवाह करें या 4 तांबे के सर्प प्रवाह करें।

खाना नं० 2

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- सांप को दूध पिलावें।
- मछली, भैंस, कौआ, मजदूर को भोजन प्रदान करें।
- शनिवार के दिन कुएं में दूध गिरावें।
- रात को दूध न पिएं।
- गुरु–ब्राह्मणों की सेवा करें।
- दही का तिलक लगावें।
- सिर में तेल कभी न लगावें।
- शनिवार को तेल दान भूल से भी न करें।

खाना नं० 3

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काले कुत्ते पालें।
- मकान की छत पर एक अंधेरी कोठरी बनावें।
- मकान के भीतर कुआं या हैंडपम्प न लगावें।
- निवास स्थान के भीतर या मकान के मुख्य द्वार पर पत्थर गाड़कर नहीं रखें।
- केतु का उपाय करें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- सांप को भूल से भी मारें नहीं।
- कच्चा दूध जलयुक्त कुएं में डालें।
- एक बोतल शराब बहती दरिया में गिरावें।
- कौओं को दाने डालें।
- काली भैंस पालें या उसे रोटी खिलावें।
- रात को दूध न पियें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- पुराने मकान में या अंधेरी कोठरी में जंग लगा हथियार या साबुत मूंगी सदैव रखें।
- अपने भार का दसवां हिस्सा, बादाम दरिया में शनिवार के दिन बहावें।
- काला कुत्ता पालें।

- अपने घर में कुछ न कुछ मात्रा में सोना, चाँदी और तांवा अवश्य रखें।
- राहु या केतु हो तो गुड़, दूध, सौंफ घर में जलावें।
- गुड़, चावल, केशर, शहद, लाल मूंगा, कुआं या बरसात का पानी, घर में सदैव कायम रखें। सभी वस्तुएं अलग-अलग रखें।
- 100 बादाम मंदिर में ले जाकर चढ़ावें-मंदिर शनिदेव का हो। वहां पर 50 बादाम दान कर दें और 50 बादाम घर में लाकर पवित्र जगह पर अमानत रख दें। खाने की भूल नहीं करें।
- अपने हाथ से मीठा कभी न बांटें।
- किसी आयोजन पर नमकीन वस्तुएं बांटे।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय-

- मिट्टी के बर्तन में सरसों तेल भरकर खड़ा बर्तन तालाब में दबावें। तेल में पहले अपना मुख देख लें।
- कारोबार के लिए बुध का उपाय करें।
- सन्तान के लिए एक सफेद और एक काला कुत्ता पालें।
- चार सूखे नारियल या बादाम बहती दरिया में बहावें।
- चमड़े का जूता-चप्पल, बैग आदि भूल से भी उपयोग न करें।
- शनिवार का उपवास रखें।

खाना नं० 7

अशुभता फल निवारण के सरल उपाय-

- शनि जाग रहा हो तो बांसुरी में चीनी भरकर खेत में गाड़ें।
- यदि शनि सोया हो तो मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर खेत में दबावें।
- काली गाय की सेवा करें।
- पराई स्त्री से संभोग न करें।
- अदालत में जाते समय सुगंधित फूल जेब में रखें।

खाना नं० 8

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय-

- नित्य ही स्नान करते समय पानी में थोड़ा कच्चा दूध गिरावें और पत्थर के चौकोर टुकड़े लकड़ी के फट्टे पर पैर रखकर स्नान करें। कच्ची जमीन पर पांव रखकर स्नान भूल से भी न करें।
- 8 किलो उड़द में सरसों तेल मिलाकर बहती दरिया में बहावें-यह कार्य शनिवार को ही करें।
- चन्द्र मंदा हो तो आठ सौ ग्राम कच्चा दूध सोमवार के दिन दरिया में बहावें। सात सोमवार लगातार यह कार्य करें।

- नशाखोर मत बनें।
- गले में चाँदी की जंजीरी पहनें।
- 50 ग्राम चाँदी का चौकोर टुकड़ा घर में सदैव रखें।
- सोमवार के दिन चावल दान करें।
- कोने में भवन नहीं बनावें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- पीला पुखराज सवा छः रत्ती वजन का स्वर्ण या तांबे में बृहस्पतिवार को ही धारण करें।
- मकान की छत पर कबाड़ का सामान कदापि न रखें।
- पीला रूमाल सदैव पास में रखें।
- मिट्टी के बर्तन में साबुत मूंग भरकर दरिया में बुधवार के दिन प्रवाहित करें।
- 100 ढाक के पत्तल को दूध में धोकर बहती दरिया में प्रवाहित करें।
- बृहस्पतिवार का उपवास रखें।
- बृहस्पतिवार को पीला प्रसाद बांटें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- अपने नाम से मकान न बनावें।
- अंधे भिखारी को केवल लड्डू ही दान करें।
- जंग लगा हथियार मकान में कदापि न रखें।
- बृहस्पतिवार का उपवास रखें। बृहस्पति प्रसन्न हो तो इस खाने में शनि भी प्रसन्न।
- पीले रंग का रूमाल अपने पास रखें।
- कमरे में खिड़की आदि के पर्दे, सिरहानी कवर, सोफा कवर, रजाई, बिस्तरे का कवर आदि पीले रंग के प्रयोग करें।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय—

- शुभ कार्य के समय में किसी आयोजन पर, मिट्टी के घड़े में जल भरकर मुख्य द्वार पर रखें।
- सरसों तेल और शराब सूर्योदय होने पर मुख्य द्वार के पास जमीन पर गिरावें—43 दिन लगातार।
- किसी से धोखा ना करें।
- पराई स्त्री का सेवन न करें।

खाना नं० 12

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- घर की अंधेरी कोठरी में काले कपड़े में 12 बादाम बांधकर रख दें। यह बांदाम की पोटली लोहे के पात्र में रखें और सदैव के लिए रहने दें।
- झूठ बिल्कुल न बोलें।
- किसी से धोखा न करें।
- मांस व शराब आदि का सेवन न करें।
- चाँदी से बने 7 चौकोर पत्तरे भीतर गिरावें।
- द्रव्य सिक्के से बने 4 सर्प व चार सूखे नारियल बहती दरिया में प्रवाहित करें।

जन्मकुण्डली में स्थित राहु के शुभ-अशुभ फल

राहु (DRAGONS HEAD)



खाना नं० 1

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- 400 ग्राम या 4 किलो सिक्का बहती दरिया में शनिवार को बहावें।
- काले-नीले वस्त्र न पहने।
- चाँदी की जंजीरी या चौकोर टुकड़ा गले में धारण करें।
- चार नारियल शनिवार के दिन दरिया में बहावें।
- आठ किलो कच्चा कोयला नदी में बहावें।
- मिट्टी के बर्तन में चार किलो जौ भरकर ऊपर से कच्चा दूध डालकर दरिया में बहावें।
- रत्न गोमेद चाँदी की मुद्रिका में जड़वाकर धारण करें।

खाना नं० 2

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- हाथी ने जहां पांव रखा हो, उस जगह की मिटटी उठाकर कुएं में गिरावें।
- चाँदी की ठोस गोली जेब में रखें।
- विवाह के बाद ससुराल से बिजली का सामान न लें।
- लंगर, प्रसाद आदि न खावें।
- सोमवार के दिन दूध दान करें।
- चाँदी का बिना जोड़ वाला छल्ला उंगली में धारण करें।
- माता की सेवा सदैव करते रहें, तो सुखी रहेंगे।

खाना नं० 3

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- हाथीदांत या हाथीदांत से बने सामान घर में अवश्य रखें।
- वर्ष के आरम्भ में बांसुरी में चीनी भरकर धरती में गाड़ें, यह कार्य हर वर्ष करें।
- साढ़े 5 रत्ती वजन का रत्न गोमेद चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर धारण करें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- चाँदी की ठोस गोली जेब में रखें।
- 400 ग्राम धनियां दरिया में बहावें।
- चाँदी की जंजीरी गले में पहनें।
- 400 ग्राम बादाम बहती दरिया में बहावें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- चाँदी का हाथी घर में रखें।
- मकान की दहलीज में चाँदी का बना पत्थर गाड़ें।
- शराब, मांस व पराई स्त्री के सेवन से दूर रहें।
- पत्नी के सिरहाने 5 मूली रात में रखकर प्रात: मंदिर में लगातार 41 दिन दान करें।
- रात्रि में सोते वक्त विस्तर पर मृगछाला बिछाकर सोयें।
- कोनेदार भवन में न रहें।
- निवास स्थान के अन्दर शहतूत और बेरी का वृक्ष न लगावें।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काला कुत्ता पालें।
- सिक्के की गोली एवं कांच की गोली हमेशा जेब में रखें।
- भवन में काले शीशे लगावें।
- भाइयों से लड़ाई भूल से भी न करें।
- चार किलो जव (जौ) में गौमूत्र मिलाकर मिट्टी के नए बर्तन में भरकर बहती दरिया में बहावें।
- सिक्का धातु का बनी 100 ठोस गोलियां बहती दरिया में गिरावें।

खाना नं० 7

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- 7 सूखे नारियल बहती नदी में बहावें।
- टिन में गंगाजल भरकर उसमें चाँदी का चौकोर टुकड़ा डालकर, टांका लगाकर पीपा बन्द कर घर में कायम रखें, जब गंगाजल सूख जाए तो फिर पीपा में भर दें परन्तु टांका पुनः लगा दें।
- यदि विवाह 21 वर्ष की आयु से पूर्व हुआ हो या करना हो तो चाँदी की कटोरी में गंगाजल भरकर उसमें चाँदी का चौकोर टुकड़ा डालकर पूजास्थल पर सुरक्षित रखें। जल सूखने पर, और जल ऊपर से डाल दें।
- तांबे के 7 टुकड़े कच्ची धरती में गाड़ें।
- गंगास्नान करें।
- 41 दिन लगातार रात्रि के समय कच्चे कोयले जलाकर दूध से छींट मारकर बुझावें।

खाना नं० 8

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- 4 किलो सिक्का आठ टुकड़े में बनाकर दरिया में बहावें।
- एक सिक्का प्रतिदिन दरिया में लगातार 43 दिन बहावें।
- 4 सूखे नारियल नदी में बहावें।
- चाँदी से बना 4 ग्राम का चौकोर टुकड़ा हर समय जेब में रखें।
- घर के आंगन में अंगीठी, लकड़ी आदि न जलावें और न ही सिगरेट-बीड़ी पिएं, नहीं तो धन नष्ट हो जाएगा।
- 8 किलो कच्चा कोयला और 8 किलो काले माह बहती दरिया में डालें।
- पड़ोस में भड़भूजे की भट्ठी हो तो कभी-कभी उसमें तांबे का पैसा डालें।
- नया मकान बनावें तो पुराने मकान के बाले या ईंट छत पर जरूर लगावें।
- घर का छत लिन्टर वाला नहीं बनावें। कच्ची छत बनावें।
- भवन का मुख्य द्वार हाथी जितने कद का निर्माण करावें।
- छत पे लकड़ी या लोहे आदि का कोई भी कबाड़ न रखें।
- रस्सी आदि के गोले छत पर भूल से भी न रखें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काला कुत्ता अवश्य पालें।
- परिवार का मुखिया न बनें।
- ससुराल से अच्छे सम्बन्ध बनाए रखें।

- मस्तक पे केसर का तिलक लगावें।
- सिर पे चोटी रखें।
- सोनें की जंजीर गले में धारण करें।
- शराब व मांस का सेवन न करें।
- चाँदी से बना हाथी (50 ग्राम चाँदी का) घर में सदैव कायम रखें।
- गंगास्नान करते रहें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- सिर को नंगा न रखें। किसी भी रंग की टोपी अवश्य धारण करें।
- मंगल का उपाय करते रहें।
- चौपाया पशु पालें।
- पड़ोसी से प्राप्त वस्तुएं अपने पशु को न खिलावें।
- मकान का प्रधान दरवाजा हाथी जितने कद का निर्माण करें।
- तांबे का बना बिना जोड़ वाला छल्ला उंगली में धारण करें।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- गले में सोना धारण करें।
- लहसुन, प्याज व मसूर की दाल न खावें।
- चाँदी के ग्लास में पानी पियें।
- बृहस्पतिवार के दिन चने की दाल, हल्दी पीले कपड़े में बांधकर दान करें।
- 4 सूखे नारियल दरिया में बहावें।
- चार किलो सिक्का (धातु) वीरवार के दिन बहती नदीं में गिरावें।
- रत्न नीलम भूल से भी धारण न करें।
- सिगरेट–बीड़ी न पियें।
- घर के आंगन में धुएं वाली अंगीठी या भट्ठी न बनावें।
- मांस व मदिरा का सेवन न करें।

खाना नं० 12

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- रात में सिरहानी के नीचे सौंफ और लाल मूंगा रखें।
- सिरहानी का कंवर लाल रंग के इस्तेमाल करें।
- 40 दिन नीले फूल निवास स्थान के कच्ची जमीन में दबावें।
- चाँदी का बना (100 ग्राम वजन का) हाथी सदैव घर में रखें।

जन्मकुण्डली में स्थित केतु के शुभ-अशुभ फल

केतु (DRAGONS TALE)



खाना नं० 1

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- सन्तान कष्ट में हो तो मंदिर में कम्बल दान करें, परन्तु दोपहर के समय में।
- बन्दर को गुड़ खिलावें।
- दोनों पांवों के अंगूठे में चाँदी का बिना जोड़ वाला छल्ला पहनें और सफेद धागा भी अंगूठे में बांधकर रखें।
- नित्य ही केशर का तिलक लगावें।
- काला, सफेद कुत्ता पालें।
- निवास स्थान में टूटा मकान हो या पास में उजड़ा मकान हो तो उसमें मूंग के दाने 400 ग्राम गिरावें।
- चाँदी की जंजीर गले में धारण करें।

खाना नं० 2

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- केशर का तिलक लगावें। मस्तक पे काला तिलक कभी न लगावें।
- गले में सोने की चेन धारण करें।
- किसी शुभ कार्य हेतु जाते समय सफेद या काले कुत्ते को रोटी डालें।
- समय-समय पर घर में फकीर को भोजन कराया करें।

खाना नं० 3

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- केशर का तिलक लगावें।
- गुरु बृहस्पति की वस्तुएं बहती दरिया में प्रवाह करें।
- शारीरिक कष्ट होने पर सोना शरीर में धारण करें।
- दक्षिण मुख के द्वार वाले मकान में निवास न करें।
- भाई-बान्धवों की सदैव सहायता करते रहें।
- घर के पास में कोई मकान उजड़ा हो तो महीने में एक बार मूंग पानी में भिगोकर उस मकान में छिड़कते रहें।

खाना नं० 4

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- सोना, पीले वस्त्र, गेहूं गुरु को रविवार के दिन दान देकर सन्तान- प्राप्ति हेतु आशीर्वाद प्राप्त करें।

- चने की दाल पीले वस्त्र में बांधकर बृहस्पतिवार के दिन बहती नदी में प्रवाहित करें।
- काला कुत्ता पालें।
- मन की शान्ति हेतु चाँदी का विना जोड़ वाला छल्ला उंगली में धारण करें।
- गुरु की सेवा करते रहें।
- बृहस्पति को उपवास करें। एक समय पीले रंग का मीठे चावलों का भोजन करें।

खाना नं० 5

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- मंगलवार को पीले वस्त्र, पीली मिठाइयां दान करें।
- सोमवार के दिन दूध (कच्चा) और चीनी दान करें।
- विवाह के समय दहेज में ससुराल से चारपाई अवश्य लें।
- रत्न लहसुनिया सोने की अंगूठी में धारण करें।
- घर में काला या सफेद कुत्ता पालें।

खाना नं० 6

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काला कुत्ता पालें।
- बाएं हाथ के अंगूठे से तीसरी उंगली में सोने की अंगूठी पहनें।
- रत्न लहसुनिया साढ़े 5 रत्ती चाँदी की अंगूठी में धारण करें।

खाना नं० 7

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काला कुत्ता पालें।
- सात रंग के अनाज दान करें।
- चरित्रवान् बनें।
- काला या सफेद कम्बल मंदिर में दान करें।
- भिखारी को घर बिठाकर भोजन करावें।

खाना नं० 8

अशुभ-फल निवारण के सरल उपाय–

- स्त्री को स्वस्थ रखने हेतु चाल-चलन ठीक रखें। कुत्ते को रोटी डालें।
- शुभता व सफलता पाने हेतु काला या सफेद कम्बल धर्म-स्थान में दान करें।
- कान छिदवाकर सोना पहनें।
- केशर का तिलक लगावें।
- काला कुत्ता घर में पालें।

खाना नं० 9

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- कान छिद्वाकर सोना धारण करें।
- सोने का चौकोर पत्थर घर में सदैव रखें।
- बुधवार के दिन मंदिर व सफाई करने वाले कर्मचारी की झाडू दान करें।
- रत्न लहसुनिया साढ़े छः रत्ती सोने की मुद्रिका में बुधवार को जड़वावें।
- सोने की चेन गले में धारण करें।

खाना नं० 10

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- चाँदी के बर्तन में शहद भरकर सदैव घर में रखें।
- चरित्र ठीक रखें।
- 48 वर्ष की आयु पार कर लेने के बाद काला कुत्ता अवश्य पालें।
- काला या सफेद कम्बल मंदिर के पुजारी को दान करें।
- चाँदी के बर्तन में कच्चा दूध भरकर घर की कच्ची धरती में दबावें।
- कांसे के बर्तन में या चाँदी के बर्तन में शहद भरकर भवन की नींव में गाड़ें।

खाना नं० 11

अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- काला कुत्ता पालें।
- 11 मूलियां पत्नी के सिरहाने में रात को लगातार 43 दिन रखकर प्रातः दान करें।
- रोटी बनाने हेतु घर का चकला-बेलन काला या सफेद रंग का उपयोग करें। यह वस्तु पत्थर की होनी चाहिए।
- 21 दिन रात्रि के समय सिरहाने के पास गड़वी में जल भरकर रखें और सुबह होते ही पीपल के वृक्ष की जड़ में डालें।
- शनिवार का उपवास करें।
- शनिवार को काला कपड़ा धारण करें।

खाना नं० 12

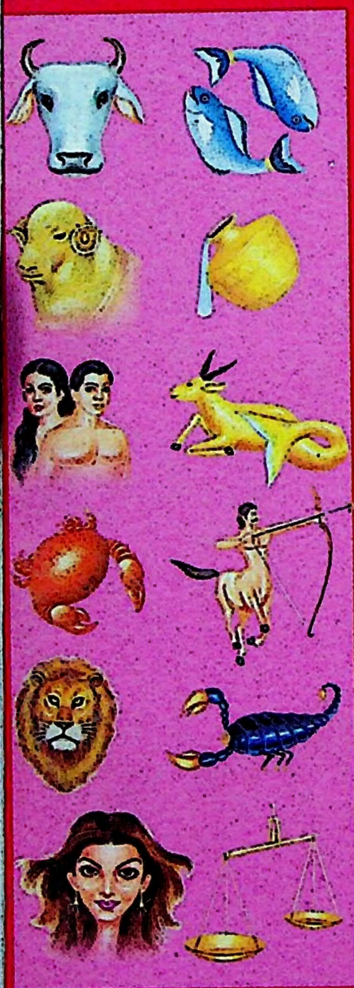
अशुभ फल निवारण के सरल उपाय–

- नित्य गणेशजी की पूजा किया करें।
- काला कुत्ता पालें।
- रत्न गोमेद साढ़े 5 रत्ती चाँदी की मुद्रिका में शनिवार के दिन धारण करें।
- मिट्टी के नए बर्तन में गुड़ भरकर निवास स्थान में दबावें।
- संतानहीन की धरती कभी न खरीदें।



लाल किताब

"लाल किताब" ज्योतिष शास्त्र का एक ऐसा प्रमाणिक ग्रन्थ है जिसके फलादेशों को विश्व भर में सर्वाधिक सटीक माना जाता है। ग्रह-नक्षत्रों की प्रतिकूलता की जानकारी एवम् सरल टोने-टोटकों द्वारा उनके दुष्प्रभावों को प्रभावहीन करके मनोनुकूल फल प्राप्ति के लिए यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुई है। इस पुस्तक में उपयोगी सिद्धांतों एवम् सूत्रों का इतने सरल ढंग से उल्लेख किया गया है कि ज्योतिष विद्या से अन्जान कोई भी साधारण मनुष्य इस पुस्तक के सूत्रों एवम् सिद्धांतों का अध्ययन करके अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में परिवर्तित कर सकता है।



A.H.W. HARI SERIES

राधा पॉकेट बुक्स